शरीर लक्षण विज्ञान

(तिल-मस्सा-लहसन विचार)



हिन्द पुस्तक भण्डार

खारी बावली, दिल्ली-110006

वृहद् सामुद्रिक विज्ञान खण्ड-११

शरीर-लक्षण-विज्ञान

(तिल-मस्सा-लहसन विचार)

[मनुष्य-शरीर के विभिन्न अङ्गों की आकृतियों को देखकर उसके स्वभाव, चरित्र एवं शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त कराने वाली सैकड़ों चित्रों से सुसज्जित अपूर्व पुस्तक, तिल, मस्सा, लहसन, भौंरी आदि के विचार सहित।]

लेखक

राजेश दीक्षित



पुस्तक भण्डार का नया नाम
इस पुस्तक के प्रकाशक का नया पता

हिन्द पुस्तक भण्डार

खारी बावली, दिल्ली-६ फोन : २६६३१४

शो रूम : नई सड़क, दिल्ली-६

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

लेखक
राजेश दीक्षित

मूल्य
स्वदेश में
विदेश में



मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस
सोनीपत (निकट दिल्ली)

दो शब्द

'वृहद सामुद्रिक विज्ञान' का ग्यारहवां खन्ड 'शरीर-लक्षण-विज्ञान' आपके हाथ में है। इस खण्ड में शरीर के मुख्य विभाग—उन्मान, मान, गति, संहति, सार, वर्ण, स्नेह स्वर, प्रकृति, सत्व, अनूक, क्षेत्र तथा मृणा, शरीर का चेतना यन्त्र, मनुष्य का मस्तिष्क और उसकी बनावट, विभिन्न मानसिक शक्तियां तथा मस्तिष्क में उसके क्षेत्र, ललाट पर पाई जाने वाली रेखाएं, कार्तिकेयन प्रणाली द्वारा हस्त-परीक्षा, मानव शरीर के विभिन्न अंग और उनकी बनावट का जातक के चरित्र, स्वभाव तथा जीवन पर प्रभाव आदि विषयों के साथ ही तिल, मस्सा, लहसन तथा भौंरी के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों के विभिन्न मतों का एकत्र सङ्कलन किया गया है।

किसी भी विषय को समझने में पाठकों को तनिक भी असुविधा न हो, इस उद्देश्य से पाठ्य सामग्री में सम्बन्धित लगभग साढ़े तीन सौ चित्र देकर इस पुस्तक की उपयोगिता को अधिकाधिक बढ़ाने का प्रयत्न किया गया है।

प्राचीन शास्त्रकारों ने कहा है कि केवल हाथ की रेखाओं को देखकर ही किसी मनुष्य के चरित्र, स्वभाव अथवा जीवन में घटने वाली घटनाओं के शुभाशुभ का सही-सही ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता, इस हेतु उसके अन्य शारीरिक लक्षणों को देखना भी आवश्यक है। इसीलिए सामुद्रिक शास्त्र वेत्ताओं ने हस्त परीक्षा को मुख्य विधान मानकर, अङ्ग लक्षण शास्त्र का ही एक अंग माना है। अतः जो महानुभाव हस्त-परीक्षा के जिज्ञासु हों, उन्हें शारीरिक-लक्षणों का भी पूर्ण ज्ञान कर लेना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रस्तुत खण्ड में केवल पुरुषों से सम्बन्धित शारीरिक-लक्षणों का ही प्रस्तुती-

करण किया गया है। स्त्रियों के शारीरिक लक्षणों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए 'स्त्री सामुद्रिक' शीर्षक अगले खण्ड को पढ़ना चाहिए।

जिन महानुभावों एवं विद्वानों की कृतियों द्वारा इस पुस्तक सामग्री-चयन में सहयोग लिया गया है, उन सभी के प्रति हम श्रद्धा-सहित नतमस्तक हैं।

महोली की पौर, मथुरा
श्रावण कृष्ण २, सं २०२५ वि

—राजेश दीक्षित

समर्पण



दैनिक 'अमर उजाला' आगरा
के यशस्वी सम्पादक
सुहृदयवर
श्री डोरीलाल जी अग्रवाल
को सस्नेह

कराग्रे वसते लक्ष्मी:

कर मध्ये सरस्वती ।

कर मूले स्थितो ब्रह्मा

प्रभाते कर दर्शनम् ॥

विषय-सूची

अङ्ग-विद्या अथवा लक्षण शास्त्र १७–४१

शरीर के मुख्य विभाग १८, उन्मान १६, मान २०, गति २०, संहति २१, सार २२, मेद २२, मज्जा २२, त्वचा २२, हड्डी २४, शुक्र २५, रक्त २७, गन्ध २८, मांस २८, वर्ण २८, स्नेह २६, स्वर ३०, प्रकृति ३४, सत्व ३६, अनूक ३६, क्षेत्र ३७, मृजा ३६,

चेहरे-पशु-पक्षियों की आकृति से समानता रखने वाले ४२–५३

सिंह के समान आकृति ४३, ऊंट के समान आकृति ४४, घोड़े के समान आकृति ४५, भेड़ के समान आकृति ४५, बैल के समान आकृति ४६, कौए के समान आकृति ४७, ईगल के समान आकृति ४७, तोते के समान आकृति ४८, भेड़िये के समान आकृति ४८, वनमानुष के समान आकृति ४६, भैंसे के समान आकृति ५०, हिरन के समान आकृति ५०, बिल्ली के समान आकृति ५१, कुत्ते के समान आकृति ५१, गधे के समान आकृति ५१, उल्लू के समान आकृति ५२ सूअर के समान आकृति ५२, फैरट के समान आकृति ५२, चीते के समान आकृति ५२, आवश्यक निर्देश ५३

चेतना-यन्त्र, मनुष्य का सिर और मस्तिष्क ५४–७०

चेतना यन्त्र ५४, सिर ५६, सिर का परिमाण ६१, सिर का माप ६२ ललाट ६३, सिर का आकार ६६, लम्बा सिर, ६८, छोटा सिर ६८, ऊंचा सिर ६६, गोल सिर ६६, वर्गाकार सिर ६६, ऊंचा और चौड़ा सिर ६६, नीचा और चौड़ा सिर ७०, ऊंचा और संकरा सिर ७० ।

मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्र तथा मानसिक शक्तियां ७१–१३३

काम-वासना ७६, वात्सल्य-प्रेम ७७, समाज तथा देश-प्रेम की भावना ७९, मैत्री-भावना ८०, झगड़ालू प्रवृत्ति अथवा युद्ध-प्रियता ८१, विध्वंसक वृत्ति ८२, गोपनीयता की वृत्ति ८३, स्वार्थी एवं अधिकार वृत्ति ८४, सृजनात्मक एवं अन्वेषक प्रवृत्ति ८६, आत्म-सम्मान की भावना ८८, आत्म-प्रशंसा की भावना ८९, सतर्कता एवं सन्देह-शीलता की प्रवृत्ति ९१, दयालुता की प्रवृत्ति ९२, धार्मिकता एवं श्रद्धा की भावना ९४, दृढ़ता की भावना ९६, जागरूकता एवं न्याय-प्रियता ९८, आशावादिता ९९, धार्मिक-भावना १०१, सौन्दर्य प्रेम एवं आदर्शवादिता १०३, हास्य-विनोद की प्रवृत्ति १०५, बनावटीपन तथा नकल करने की प्रवृत्ति १०७, वर्गीकरण तथा वस्तु निर्देशन की प्रवृत्ति १०९, नियम-निष्ठा तथा स्मरण-शक्ति १११, उचित-न्याय एवं परिमाण की स्मृत्ति ११३, स्पर्श-शक्ति ११३, रंगों का परिज्ञान ११६, स्थान-रुचि एवं भ्रमणेच्छा ११६, गणितज्ञता एवं मूल्यांकन वृत्ति ११९, प्रबन्ध-पटुता १२१, घटनाओं की स्मृति १२३, घटना काल की स्मृति १२३, स्वर-ज्ञान १२३, भाषा-ज्ञान १२७, विश्लेषण एवं वर्गीकरण की प्रवृत्ति १२९, जिज्ञासा वृत्ति १३२।

अन्य विषयों का ज्ञान १३४–१३८

खान-पान की प्रवृत्ति १३४, एकाग्रता की भावना १३६, भाषा की स्मृति १३८।

ललाट और उसकी रेखाएं १३९–१८१

प्राच्य मत १३९, ललाट की रेखाओं द्वारा आयु विचार १४९, पाश्चात्य मत १५४, आवश्यक निर्देश १७७, मुख-मन्डल पर विभिन्न

राशियों का निवास १७७, मुख-मण्डल पर विभिन्न ग्रहों का स्थान १८०,

हाथ के द्वारा चरित्र-परीक्षा १८२–३०९

कार्तिकेयन प्रणाली १८३, काल-गणना १८५, हथेली पर मुख्य रेखाओं तथा विभिन्न स्थानों की स्थिति १८५, हाथ की रेखाओं का वर्णन १८६ दाएं हाथ की रेखाएं १८६, रोहिणी १८६, पाशा १९०, बाला १९१, मही १९२, हृद्गत सत्वदाजाया १९२, इन्दिरा १९३, मुंजिका १९४, कन्धु १९५, कमला १९५, काम हस्तिका १९६, रतिप्रदा १९७, हेमवल्ली १९७, पत् १९८, पवित्र तनु १९९, कृता २००, महामति २००, पति २०१, कलेशा २०२, हार २०३, मन्दोष्णादा २०४, निष्ठा २०४, धात्री २०५, गोपी २०६, प्रियव्रता २०७, धेनुका २०८, धर्मा २०८, धनप्रदा २०९, गोदा २१०, हन्त्री २१०, गोमती २११, धनिला २१२, ऊर्ध्व-रेखा २१३, माधवी २१४, मति २१४, कन्डु २१५, कनिष्ठा २१६, सौराष्ट्रिका २१७, स्फुस्तनु २१८, रुक्मप्रभा २१९, भवित्री २१९, कपिला २२०, कामवल्ली २२०, कन्दली २२१, युक्ता २२२, गुलिनी २२३, अरुणा २२४, वीर कन्टका २२४, हस्ता २२५, महिष्ठा २२६, गुर्विणी २२६, धन्विनी २२७, रागदन्तिका २२८, गीं २२९, कालहृत २३०, कृता २३०, विष्णुगी २३१, वरिष्ठा २३२, देवी २३३, महीत्पाता २३३, स्मृति २३४, ऊह्या २३५, केलिका २३५, वृत्ति २३६, आश्रयपावनी २३७, राजी २३७, नीडा २३८, जाला २३९, मरालि नेत्रिका २३९, गोध्नी २४०, वृत्ता २४१, शतहृदा २४२, मेदुरा २४२, रात्रि २४३, अत्युच्चा २४४, कमठध्वस्तिका २४४, अमला २४५, वाणी २४६, हेम वेदिका २४६,

(उ) बाएं हाथ की रेखाए २४७

रोहिणी २४७, कोर्परा २४८, करिनी २४६, मेहा २४६, लोहिका २५०, करिदन्तुरा २५१, बालहृदया २५२, वसु प्रेक्षा २५२, चेतसा २५३, घनि २५४, यवक्या २५५, राग बधिरा २५५, मदयन्तिका २५६, हेमवती २५७, रति २५७, हृद्या २५८, वसुघ्नी २५६, रोम विश्वसु २६०, गजाह्वया २६०, घरणी २६१, मेचकः २६२, मोचिका २६३, मुचि २६३, असिघ्नी २६४, सुरुचिः २६५, पाही २६६, लुटिः २६६, तण्डु २६७, प्रियङ्गवी २६८, ज्योत्स्नी २६८, हताशा, २६६, दवब्दिट् २७०, कपर्दि २७१, अपराजिता, २७१, दुग्धा २७२, मुग्धा २७२, सोर्मिः २७३, अमुका २७४, कोर्परस्थितिः २७५, कर्मन्दिघी २७५, श्लथा २७६, गुर्वी २७७, दमना २७८, वंशवर्द्धिनी २७८, पूता २७६, त्रियालिका २८२, देवी २८१, महापूर्वा २८१, देविका २८२, परिस्तीर्णा २८३, परिधि २८४, वर्तुला २८४, सिंहिका २८५, मनुः २८६, यविष्ठा २८७, भूति २८७, अधिका २८८, दण्डी २८६, रूता २६०, बास्तीष्पति २६०, केश गण्डस्थला २६१, पतिः २६२, पंगु २६३, अनन्तकः २६३, श्रीवल्ली २६४, रोहितं २६५, कम्बु २६६, सिरा २६६, नीरा २६७, श्ववृता २६८, लामा २६६, मातुलानी २६६, माधवी ३००, महिष्ठा ३०१, रुक्मकण्ठिका ३०२, रोहिष्ठा ३०२, विशेष टिप्पणी ३०३, रेखाओं के विशेष योग ३०३

मनुष्य-शरीर के अन्य अंग

मानव-शरीर के विभिन्न अंग ३१०

मनुष्य के पांव और उनके लक्षण ३११–३२७

सर्वोत्तम ३१२, उत्तम, ३१३, मध्यम ३१३, अधम ३१३, निकृष्ट

३१४, पांव का अंगूठा ३२०, पांव की उंगलियां ३२१, पांव की उंगलियों के नाखून ३२३, पांव का ऊपरी भाग ३२४, गुल्फ (टखने) ३२४, एड़ी ३२४, अन्य बातें ३२५, पिंडली जंघा और टांगें ३२५, रोएं ३२६, घुटने ३२६,

अन्य अंगों के लक्षण ३२८–३५६

आंखें ३२३, भ्रू (भौंह) ३३१, बरौनी ३३५, पलकें ३३५, दृष्टि ३३६, कान ३३६, नाक ३३८, छींकना ३३९, होठ और अधर ३३९, दांत ३४१, जिह्वा ३४२, तालु ३४२, कपोल ३४२, चिबुक और हनु ३४३, ग्रीवा (गर्दन) ३४४, कांख ३४५, कंधा ३४५, बाहु (भुजा) ३४६, हंसली ३४६, वक्षःस्थल (छाती) ३४७ उर-स्थल (हृदय) ३४७ स्तनाग्रभाग ३४८, पेट (उदर) ३४८, नाभि ३४९ ,कुक्षि ३४९, पार्श्व ३५०, पीठ ३५०,कटि (कमर) ३५१, नितम्ब ३५१, शिश्न (पुरुष-जननेन्द्रिय) ३५१, अण्डकोष ३५२, मूत्र की धार ३५३, हंसी ३५३ रुदन ३५३, मुख ३५३, मस्तक के केश ३५४, आवश्यक ज्ञातव्य ३५४, शरीर में नक्षत्रों तथा ग्रहों का वास ३५५

तिल विचार ३५७–४१६

प्राच्य (भारतीय मत) ३५८, उत्तर-चिन्ह वाले तिल ३५८, शनि रेखा स्थित तिलों का फल ३५९, शुक्र-रेखा स्थित तिलों का फल ३६१, मंगल-रेखा स्थित तिलों का फल ३६२, सूर्य-रेखा स्थित तिलों का फल ३६२, शुक्र-रेखा स्थित तिलों का फल ३६३, बुध-रेखा स्थित तिलों का फल ३६४, चन्द्र-रेखा स्थित तिलों का फल ३६५, बाईं कनपटी पर स्थित तिलों का प्रभाव ३६६, बाईं भौंह पर स्थित तिलों का प्रभाव ३६७, बाईं बरौनी पर स्थित तिलों का प्रभाव ३६७, बाईं नेत्र पक्ति के नीचे के तिल ३६७, दाईं कनपटी पर स्थित तिलों का प्रभाव ३६८, दाएं कान तथा आंख

की बरौनी के मध्य स्थित तिलों का प्रभाव ३६८, दाईं भौंह तथा बरौनी के मध्य स्थित तिलों का प्रभाव ३६८, नासिका के ऊपरी दक्षिण भाग के तिल ३६६, दाईं बरौनी पर स्थित तिलों का प्रभाव ३६६, नासिका के ऊपरी मध्य भाग के तिल ३६६, नासिका के दाएं भाग के तिल ३७०, नासिका के बाएं भाग के तिल ३७०, कण्ठ स्थित तिल ३७१, बाएं कान के ऊपरी भाग के तिल ३७१, बाएं कान के मध्य-निम्न भाग के तिल ३७१, ऊपरी होठ के तिल ३७१, निचले होठ के तिल ३७२, चिबुक के तिल ३७२, बाए गाल के तिल ३७२, दाएं कान के तिल ३७३, दाएं गाल के तिल ३७३, आवश्यक टिप्पणी ३७३, बिना उत्तर चिन्ह वाले तिल ३७५, सिर तथा ललाट के तिल ३७५, भौंह तथा आंखों के तिल ३७५, मुंह के किसी स्थान पर स्थित तिलों का प्रभाव ३७६, वक्षःस्थल पर स्थित तिल ३७७, हाथों पर स्थित तिल ३७७, पांव के किसी भाग के तिल ३७८, स्त्रियों के विभिन्न अंगों पर तिल ३७६, पाश्चात्य-मत ३८१, ललाट प्रदेश के तिल ३८३, नेत्र प्रदेश के तिल ३८६, नासिका प्रदेश के तिल ३६४, कानों के समीप काले तिल ३६६ कपोल प्रदेश के तिल, ४०१, हनु प्रदेश के तिल ४०५, चिबुक प्रदेश के तिल ४१०, अन्य स्थानों पर पाए जाने वाले तिल ४१३

मस्सा, लहसन, भौंरी विचार ४१७–४२७

मस्सा ४१७, लहसन ४२२, भौंरी ४२४

"यज्जातकं व्यास पराशराख्यो,
श्री सूर्य कात्यायन छागलेयैः।
कृतंतदैवाद्य महंब्रवीमी,
युक्तं सुसामुद्रिक युक्तिभेदैः।"

नवरंध्राणि हस्तांघ्रि, पृष्ट नाभि शिरोवपुः ।
कंठ वक्षोदरोर्वादि, सहरेखं परीक्षयेत् ।।

× × ×

शरीरावर्त गतिच्छाया, स्वर वर्ण गंध सत्वानि ।
दृष्टि शीलादि चिह्नानि, विज्ञाय फलमीरयेत् ।।

अंग-विद्या अथवा लक्षण-शास्त्र

'अंग-विद्या' अथवा 'लक्षण-शास्त्र' 'सामुद्रिक-विज्ञान' का ही एक महत्वपूर्ण विभाग है। जिस प्रकार हाथ की रेखाओं को देखकर जातक के भूत-भविष्य तथा वर्तमान काल में घटने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है, उसी प्रकार अंग-विद्या द्वारा जातक की मुखाकृति, शरीर की बनावट, हाव-भाव, चाल-ढाल तथा अन्य क्रिया-कलापों को देखकर उसके स्वभाव, चरित्र, रुचि एवं अन्य विषयों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त होता है।

भारतीय लक्षण-शास्त्र बहुत प्राचीन हैं। आज से सहस्रों वर्ष पूर्व लिखे गए पुराण, स्मृति, रामायण, महाभारत आदि संस्कृत ग्रन्थों में मनुष्य शरीर के विभिन्न शुभ-अशुभ लक्षणों का उल्लेख पाया जाता है।

आधुनिक काल में पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण अनुसन्धान किए हैं; परन्तु चूंकि प्रत्येक दिशा के निवासियों की शारीरिक बनावट एवं मुखाकृति भिन्न-भिन्न प्रकार की होती हैं, अतः भारतीय स्त्री-पुरुषों के लिए पाश्चात्य लक्षण-शास्त्र की उपयोगिता उतनी अधिक ठीक नहीं बैठ पाती जितना कि भारतीय विद्वानों का मत ठीक रहता है।

अतः हम यहां पर भारतीय मत को प्रधानता देते हुए, भारतवासियों पर ठीक लागू होने वाली पश्चिमी विद्वानों की मान्यताओं का समन्वय स्थापित करते हुए मनुष्य की आकृति एवं उसके विभिन्न शारीरिक-लक्षणों के प्रभाव का वर्णन करेंगे।

शरीर के मुख्य विभाग

शरीर के किन-किन विभागों को देखकर जातक के चरित्र, स्वभाव आदि की परीक्षा करनी चाहिए। इस सम्बन्ध में 'वृहत् संहिता' का एक श्लोक यह है—

"उन्मान मानगति संहति सारवर्ण,
स्नेहं स्वरं प्रकृति सत्व मनूकमादौ।
क्षेत्रं मृजां च विधिवत्कुशलोविलोक्य,
सामुद्र विद्वदति यातमनागतं वा ॥"

भावार्थ—(१) उन्मान (शरीर की ऊंचाई), (२) मान (शरीर का वजन), (३) गति (चाल), (४) संहति (शारीरिक अंगों का एक दूसरे से मिलान अर्थात् जोड़), (५) सार (मेद, मज्जा, चर्म, हड्डी, शुक्र, रुधिर एवं मांस), (६) वर्ण (शरीर का रंग), (७) स्नेह (त्वचा की चिकनाई) (८) स्वर (कण्ठ से निकलने वाली आवाज), (९) प्रकृति (मनुष्य का स्वभाव), (१०) सत्व (मनुष्य के विशेष गुण अथवा चित्त के धर्म), (११) अनूक (पूर्व जन्म को सूचित करने वाली मुखाकृति), (१२) क्षेत्र (शरीर के विभिन्न भाग अथवा अवयव तथा (१३) मृजा (शरीर की कान्ति)—इन्हें कुशलता पूर्वक देखकर सामुद्रिक शास्त्र का विद्वान जातक के भूत तथा भविष्य का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

अब हम उक्त तेरह विभागों के सम्बन्ध में भारतीय विद्वानों के मत का क्रमिक उल्लेख करते हैं केवल 'क्षेत्र' अर्थात् शरीर के विभिन्न अवयवों का वर्णन सबसे अन्त में किया जाएगा।

उन्मान

सीधे खड़े होने पर मनुष्य के शरीर की जो ऊंचाई हो, उसे 'उन्मान' कहा जाता है।

शरीर की ऊंचाई नापने की विधि यह है कि एक धागा लेकर खड़े हुए मनुष्य के चरणतल से मस्तक के सर्वोच्च भाग की ऊंचाई नापी जाए। जितनी ऊंचाई हो धागे पर वहीं चिन्ह लगाकर तोड़ दिया जाए। तत्पश्चात् जिस मनुष्य के शरीर का नाप लिया गया है, उसके हाथ की मध्यमा उंगली के द्वितीय पर्व की जितनी चौड़ाई हो, उसे एक 'अंगुल' के बराबर मानकर, उसके अनुपात से पूर्वोक्त माप वाले धागे को नापा जाए। यदि उक्त परिमाण के अनुसार धागे की लम्बाई १०८ अंगुल की हो तो उसे 'उत्तम', यदि १०० अंगुल की हो तो उसे 'मध्यम' और यदि ९० अंगुल की हो तो उसे निकृष्ट समझना चाहिए।

कुछ विद्वानों के मतानुसार क्रमशः १०८, ९६ तथा ८४ अंगुल की लम्बाई उत्तम, मध्यम तथा निकृष्ट होती है।

कुछ विद्वान अंगुल के परिमाण के लिए मध्यमा उंगली के मध्य पर्व की अपेक्षा अंगूठे के मध्य भाग की चौड़ाई को एक अंगुल के बराबर मानने की बात कहते हैं।

उन्मान के अनुसार १०८ अंगुल लम्बाई के शरीर वाला व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करने वाला, दीर्घजीवी तथा सुखी होता है। मध्यम तथा 'निकृष्ट' ऊंचाई के शरीर वाले क्रमशः मध्यम तथा निकृष्ट फल प्राप्त करते हैं।

उक्त परिमाण के अनुसार लम्बाई जितनी न्यूनाधिक हो, उसका फल भी उतना ही न्यूनाधिक समझना चाहिए। 'उत्तम' श्रेणी की

लम्बाई से अधिक लम्बा शरीर तथा न्यूनतम लम्बाई से भी कम लम्बा शरीर अच्छा नहीं माना जाता।

मान

शरीर का मान अर्थात् भार (वजन) के अनुसार शुभाशुभ फल ज्ञात करने के लिए २० वर्ष से कम की आयु वाली स्त्री तथा २५ वर्ष से कम की आयु वाले पुरुष के शरीर का मान (वजन) लेना व्यर्थ होता है, क्योंकि इससे कम आयु वाले स्त्री-पुरुषों के शरीर का वजन निश्चित नहीं किया जा सकता।

परिपक्वावस्था वाले मनुष्य के शरीर का वजन यदि 'डेढ़ भार' हो तो वह उच्च पद प्राप्त करने का अधिकारी होता है। 'एक भार' वजन वाला व्यक्ति अत्यन्त धनी होता है तथा 'आधा-भार' वजन वाला व्यक्ति सुखी होता है। इससे कम भार वाला व्यक्ति दुःखा जीवन व्यतीत करता है।

'एक भार' का वजन कितना होता है इसे जानने के लिए निम्नलिखित तालिका को ध्यान में रखना चाहिए।

५ गुंजा (घुंघची)	का	१ माशा
१६ माशे	का	१ कर्ष
४ कर्ष	का	१ पल
१०० पल	का	१ तुला
२० तुला	का	१ भार

गति

'गति' मनुष्य के चलने का ढंग अर्थात् 'चाल' को कहा जाता है। गति के सम्बन्ध में विभिन्न ग्रन्थों के मत का सार संक्षेप निम्नानुसार समझना चाहिए।

(१) हंस, तोता अथवा गिद्ध जैसी चाल वाला व्यक्ति राजा अथवा विपुल ऐश्वर्यशाली होता है।

(२) हाथी, सिंह तथा बैल जैसी चाल वाला व्यक्ति भाग्यवान होता है।

(३) नेवले जैसी चाल वाला व्यक्ति धनी होता है।

(४) सियार, गधा, भैंसा, गिरगिट, खरगोश अथवा हरिण जैसी चाल वाला व्यक्ति सम्मान-हीन एवं दुःखी जीवन व्यतीत करता है।

(५) कौए तथा उल्लू जैसी चाल वाला व्यक्ति दुःखी, भयभीत तथा शोकाकुल बना रहता है।

(६) कुत्ता, ऊंट, सुअर तथा मेढ़ा जैसी चाल वाला व्यक्ति भाग्य-हीन होता है।

(७) व्याघ्र तथा मोर जैसी चाल वाला व्यक्ति राजा होता है।

(८) मेंढक जैसी चाल वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

(९) जिनके चलते समय शब्द न हो, वे व्यक्ति उच्च पद को प्राप्त करते हैं।

(१०) जिनके चलते समय शब्द हो, वे व्यक्ति दरिद्री होते हैं।

संहति

शरीर के एक अंग के दूसरे अंग से 'मिलान' को 'संहति' कहा जाता है।

(१) यदि शरीर के सभी अंग अपने-अपने उचित स्थान पर एक-दूसरे से ठीक-ठाक मिले हुए हों तो जातक सुखी और दीर्घायु होता है।

(२) यदि शरीर के अंगों की 'संहति' ठीक न हो और उनमें कहीं शिथिलता, ढीलापन अथवा ऊंचाई-नीचाई हो तो उसे दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए।

सार

शरीर के (१) मेद (चरबी), (२) मज्जा (हड्डी के भीतरी भाग), (३) चमड़ी (त्वचा), (४) हड्डी; (५) शुक्र (वीर्य), (६) रक्त तथा (७) मांस—इन सातों को 'सार' कहा जाता है।

(१) **मेद**—जिस व्यक्ति के शरीर में 'मेद' (चरबी) की अधिकता हो। वह सुन्दर, धनी, स्थिरमति, नित्य प्रसन्न रहने वाला तथा कम क्रोध करने वाला होता है।

(२) **मज्जा**—जिस व्यक्ति में 'मज्जा' की अधिकता हो वह धन-सन्तान युक्त होता है।

(३) **त्वचा**—जिस व्यक्ति के शरीर की चमड़ी (त्वचा) चिकनी हो, वे धनी होते हैं। जिनकी त्वचा कोमल हो, वे सुन्दर होते हैं और जिनकी त्वचा पतली हो, वे बुद्धिमान होते हैं।

शरीर की त्वचा के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों का मत निम्नलिखित है—

(क) यदि शरीर की त्वचा चिकनी और कोमल हो अर्थात् 'शिशु' की त्वचा की भांति मुलायम एवं तरोताजा दिखाई दे, ऐसे व्यक्ति भावुक, स्नेहशील तथा मधुरभाषी होते हुए भी तुनुक मिजाज तथा संवेगात्मक प्रवृत्ति के होते हैं। उनकी शारीरिक तथा मानसिक प्रतिक्रियाओं में बाल्यावस्था जैसी अपरिपक्वता होती है। वे अपनी सहायता के लिए अन्य व्यक्तियों पर निर्भर रहते हैं। यदि कोई उनकी भावुकता का मजाक बनाये तो उनके हृदय को अत्यधिक ठेस पहुंचती है।

(ख) यदि शरीर की त्वचा चिकनी और दृढ़ (ठोस) हो, जो देखने में स्वच्छ चमकीली तथा लचीली हो, तो ऐसा व्यक्ति सौंदर्य प्रमी होता है। ऐसे व्यक्ति का किसी भी क्षेत्र अथवा रूप में मलिनता अथवा गन्दगी पसन्द नहीं होती। वह स्वभाव का शान्त तथा मृदु संगीत का प्रेमी होता है। सौंदर्य की रक्षा के लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। ऐसे व्यक्ति रईसी तबियत के, सुसंस्कृत, सुरुचि-सम्पन्न, आचार-विचारों में मार्मिक तथा कलात्मक रुचि के होते है।

(ग) यदि शरीर की त्वचा रुखी हो तो ऐसा व्यक्ति रुखे स्वभाव का, शक्तिशाली, बात-चीत तथा वेष-भूषा में फूहड़, अशिष्ट, परिहास करने वाला, खुलकर हँसने वाला, परिश्रमी दौड़-धूप तथा खेल-कूद में रुचि लेने वाला एवं स्पष्ट वक्ता होता है। उसकी आवाज ऊंची तथा भारी होती है। उसे तोखी आवाज वाले वाद्य-यन्त्र अच्छे लगते हैं। ऐसा व्यक्ति वस्तुओं की खरीद करते समय उसकी सुन्दरता अथवा कोमलता पर ध्यान न देकर उनके टिकाऊपन पर अधिक ध्यान देता है।

(घ) रूखी और कड़ी त्वचा वाले व्यक्ति में शारीरिक शक्ति अप-रमित होती है। ऐसे व्यक्ति की आवाज बुलन्द होती है। वह चिकनी-चुपड़ी बातों को पसन्द नहीं करता। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शक्ति प्रयोग का हामी, अपने विचारों पर अत्यधिक दृढ़ तथा स्पष्ट-वक्ता होता है। अपने किसी उद्देश्य अथवा स्वार्थ को पूरा करने के लिए भी वह किसी के आगे झुकना अथवा खुशामद करना पसन्द नहीं करता। वह कठिन परिश्रम करता है, परन्तु फिर एकाएक कुछ समय अथवा दिनों के लिए आलसी भी बन जाता है।

(ङ) रूखी और लटकती हुई त्वचा वाला व्यक्ति मानसिक रूप से अधिक सक्रिय नहीं होता, यद्यपि उसमें शारीरिक तथा वाणी को

शक्ति पर्याप्त मात्रा में पाई जाती है। वह शारीरिक शक्ति का अनिच्छा से तथा वाणी की शक्ति का अतिटेक से प्रयोग करता है। वह अपनी बात सुनने पर जोर देता है, उस समय यदि कोई व्यक्ति उसे डाट-डपट कर चुप करना चाहे तो वह लड़ने पर उतारू हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने पक्ष पर, फिर चाहे वह गलत हो क्यों न हो, दृढ़तापूर्वक अड़ा रहता है। उसकी गति विधियां धीमी और सुस्त होती हैं।

(च) काली और चिपचिपी त्वचा वाला व्यक्ति विवेकयुक्त तथा निर्णयात्मिका बुद्धि का होता है। वह प्रत्येक कार्य को बड़ी सावधानी से करता है। हर समय सावधान बने रहने की प्रवृत्ति के कारण वह लाभ के अनेक अवसरों को चूक जाता है, जिसके कारण उसके आत्मविश्वास में कमी आ जाती है और हीनता की भावना उत्पन्न होती है। ऐसे व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में खिन्न तथा चिड़चिड़े हो जाते हैं। दूसरों की प्रगति तथा उन्नति को देखकर नाक-भौंह सिकोड़ने का उनका स्वभाव होता है।

(छ) भूरी, मट मैली अथवा काले रंग की त्वचा वाले व्यक्ति निराशावादी तथा अशान्त प्रकृति के होते हैं, परन्तु उनमें निरीक्षण की अद्भुत शक्ति पाई जाती है। वह सब बातों को शान्तिपूर्वक समझने का प्रयत्न करता है। तथा क्षुब्ध होता हुआ नहीं जान पड़ता। ध्यान को केन्द्रित करने में ऐसे व्यक्ति अधिक कुशल होते हैं। संकट के समय वे विश्वसनीय तथा धार्मिक विचारों के बन जाते हैं। ऐसे व्यक्ति की स्मरण शक्ति भी तीव्र पाई जाती है।

(४) हड्डी—जिस व्यक्ति के शरीर की हड्डियां मोटी होती हैं, वे शक्तिशाली, सुन्दर तथा विद्वान होते हैं। पतली हड्डियों वाले व्यक्ति दुर्बल तथा प्रायः कम पढ़े-लिखे और असुन्दर आकृति वाले होते हैं। जिनकी हड्डियों में दृढ़ता हो, वे दीर्घजीवी होते हैं।

चित्र संख्या २ में मनुष्य के शरीर की भीतरी हड्डियों को प्रदर्शित किया गया है। चित्र में दी गई संख्याओं का विवरण नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

(१) खोपड़ी, (२ और ३) जबड़े, (४) गर्दन का जोड़, (५) हंसली, (६) कन्धे की हड्डी, (७, ८ और १०) पसलियां, (६) बाजू की हड्डी, (११) पहुंचे की हड्डी, (१२) कूल्हे की हड्डी, (१३) उंगलियों की हड्डी, (१४) घुटने की चिपनी, (१५) पिंडली की हड्डी, (१६) टखने, (१७) तलवे की हड्डियां, (१८) पांव के अंगूठे और उंगलियों की हड्डियां (१९) पिंडली की हड्डी, (२०) जांघ की हड्डी, (२१) कलाई की हड्डी, (२२) बांह की निचली हड्डी, (२३) बांह के ऊपर की हड्डी तथा (२४) रीढ़ की हड्डी।

(५) **शुक्र**—वीर्य सब सारों में प्रधान है, जिसका वीर्य शक्तिशाली हो, उसके सभी सार बलवान होते हैं।

शुक्र की अधिकता वाले व्यक्ति सुन्दर, बलवान, बुद्धिमान, स्थिरमति, साहसी तथा दीर्घजीवी होते हैं। ऐसे व्यक्ति की आंखों की ज्योति तीव्र होती है तथा चेहरे पर तेज पाया जाता है।

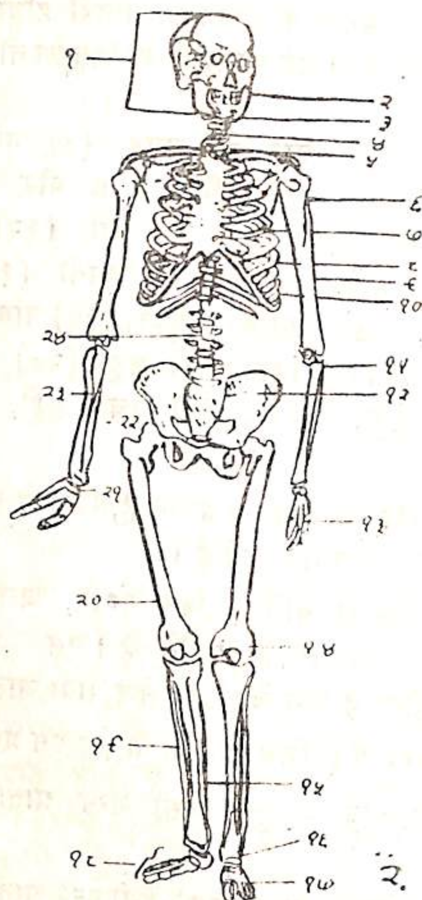
वीर्य के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के मत इस प्रकार हैं।

(क) जिसके वीर्य में पुष्प जैसी गन्ध आती हो, वह राजा होता है।

(ख) जिसके वीर्य में मधु (शहद) जैसी गन्ध आती हो, वह बहुत धनी होता है।

(ग) जिसके वीर्य में मछली के शरीर जैसी गन्ध आती हो, वह बहुत पुत्रवान होता है।

(घ) जिसके शरीर में मांस जैसी गंध आती हो, वह बहुत भोगी (विषयी) होता है।



[मनुष्य शरीर के विभिन्न अंग]

(ङ) जिसके शरीर में मद्य (शराब) जैसी गन्ध आती हो, वह यज्ञ करने वाला होता है ।

(च) जिसके वीर्य में क्षार जैसी गन्ध आती हो, वह निर्धन होता है ।

(छ) यदि वीर्य का रंग कुछ पीलापन लिए हुए श्वेत हो तो वह शुभ तथा श्रेष्ठ होता है।

(ज) जिस व्यक्ति को सहवास के समय वीर्य स्खलन में अधिक देर लगे, वह अल्पायु होता है और जिसे थोड़ी देर लगे, वह दीर्घायु होता है।

(६) **रक्त**—जिस व्यक्ति के शरीर में 'रक्त' की अधिकता होती है, उनके होठ, मसूड़े, जीभ, पलक के भीतरी भाग, तालु, हथेली, तथा पांवों के तलवों में लालिमा पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति तेजस्वी, परिश्रमी, दीर्घायु, प्रसन्न मुख तथा सुखी होते हैं।

जिनके शरीर में रक्त की कमी होती है, वे निस्तेज, कान्तिहीन, आलसी, स्वल्पायु तथा दुःखी होते हैं।

(क) यदि रक्त का रंग लाल कमल के रंग का हो तो ऐसा व्यक्ति धनवान् होता है।

(ख) यदि रक्त का रंग शुद्ध प्रवाल जैसा लाल हो तो वह व्यक्ति धन-ऐश्वर्य सम्पन्न, अधिकारी तथा उत्तम कोटि का पुरुष होता है।

(ग) यदि रक्त का रंग लाख के समान लाल वर्ण का हो तो उसे अत्यन्त श्रेष्ठ समझना चाहिए।

(घ) यदि रक्त के रंग में ललाई के साथ श्यामता भी हो तो ऐसा व्यक्ति पाप-कर्म करने वाला होता है।

(ङ) यदि रक्त के रंग में ललाई के साथ कुछ पीलापन भी हो तो उस व्यक्ति को मध्यम श्रेणी का समझना चाहिए।

(च) यदि रक्त के रंग में कुछ सफेदी अथवा नीलापन हो तो ऐसा व्यक्ति दुःखी रहता है और उसके कन्याएं अधिक होती हैं।

(छ) यदि रक्त का रंग काला अथवा श्वेत हो तो उसे अशुभ रोग तथा अल्पायु-कारक समझना चाहिए।

(७) **गंध**—मनुष्य के शरीर से निकलने वाली गंध के विषय में शास्त्रकारों ने नीचे लिखे अनुसार कहा है—

(१) जिसके शरीर से प्याज, लहसुन, सड़े हुए मांस, मछली, नीम, अण्डा, चर्बी, पिष्ठा अथवा मूत्र जैसी गंध आती हो, वह व्यक्ति क्रूर कर्म करने वाला, हिंसक स्वभाव का तथा विश्वास के अयोग्य होता है। इसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

(२) यदि शरीर से चन्दन, कस्तूरी; अगरु, कपूर, चमेली, तमाल, गुलाब पुष्प अथवा प्रथम वर्षा के समय पृथ्वी से निकलने वाली गंध जैसी गंध आती हो तो उसे सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए। ऐसे व्यक्ति धनी, सुखी भोगी तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होते हैं।

(८) **मांस**—जिस व्यक्ति के शरीर में मांस अधिक हो, उसका स्पर्श सुखकर हो तथा ऐसा जातक खूब सोता भी हो तो वह धनी, सरल तथा दीर्घायु होता है। शरीर में मांस कम होने पर इसके विपरीत फल समझना चाहिए।

वर्ण

शरीर अथवा मुख के रंग ३ प्रकार के बताये गए हैं।

(१) गौर, (२) श्याम और (३) कृष्ण।

इन तीन मुख्य रंगों के अनेक भेद होते हैं। परन्तु वे सभी भेद इन्हीं तीनों रंगों के अन्तर्गत आ जाते हैं। शरीर के रंग के सम्बन्ध में विद्वानों का मत नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

(१) कमल पुष्प की केशर के समान वर्ण वाला व्यक्ति 'गौर' होता है।

(२) प्रिपंगु के पुष्प के समान वर्ण वाला व्यक्ति 'श्याम' होता है।

(३) काजल की भांति काले वर्ण वाला व्यक्ति 'कृष्ण' होता है।

गौर तथा श्यामवर्ण शुभ माने जाते हैं तथा कृष्ण वर्ण अशुभ माना गया है।

गौर वर्ण वाले व्यक्ति दयालु स्वभाव के होते हैं। श्वेत अथवा पीले वर्ण वाले व्यक्ति रोगी होते हैं तथा काले वर्ण वाले व्यक्ति बलवान होते हैं। चमकदार काला वर्ण अशुभ माना जाता है।

स्नेह

'स्नेह' अर्थात् चिकनाई को शरीर के निम्नलिखित पांच स्थानों में देखना चाहिए—

(१) वाणी, (२) जिह्वा, (३) दांत, (४) आंख तथा (५) नाखून।

उक्त सभी स्थानों पर यदि चिकनापन हो तो जातक धनी, सन्ततिवान, सौभाग्यशाली, स्वस्थ तथा सुखी होता है। यदि इन स्थानों पर चिकनाई न होकर रूखापन हो तो जातक निर्धन होता है।

जिसकी वाणी में स्निग्धता (कोमलता) होती है, वह व्यक्ति लोकप्रिय, यशस्वी तथा सुखी होता है।

जिसकी जिह्वा में स्निग्धता होती है वह प्रिय भाषण करने वाला होता है।

जिसके दांतों में स्निग्धता होती है, उसे श्रेष्ठ भोजन प्राप्त होता है।

जिसकी आंखों में स्निग्धता होती है, वह सब लोगों का प्रिय तथा सौभाग्यशाली होता है।

जिसके नाखूनों में स्निग्धता होती है, वह धनी तथा स्वस्थ होता है।

शरीर के अन्य अंगों की चिकनाई के सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिसके केशों तथा नखों में स्निग्धता होती है, उसके सभी कार्य बिना प्रयत्न के ही सिद्ध हो जाते हैं।

(२) जिसकी त्वचा चिकनी होती है, उसे शय्या-सुख तथा अन्य प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

(३) जिसके पांव चिकने होते हैं, उसे वाहन-सुख प्राप्त होता है।

(४) जिसके चेहरे पर स्निग्धता होती है, उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

स्वर

कण्ठ से जो ध्वनि (आवाज) निकलती है, उसे 'स्वर' कहा जाता है। यहां पर स्वर का आशय संगीत के स्वर से न होकर, सामान्य वार्तालाप के समय निकलने वाले कण्ठ-स्वर से है।

प्राचीन आचार्यों ने कण्ठ-स्वर के निम्नलिखित भेद कहे हैं—

(१) गंभीर—जो अपने आदि, मध्य तथा अन्त में एक-सा हो।

(२) दुन्दुभि—जिसे सुनकर सब लोगों को प्रसन्नता प्राप्त हो।

(३) स्निग्ध—जिसमें हर्ष, क्रोध, भय, दैन्य आदि किसी प्रकार का भाव प्रकट न हो तथा जो सुनने वालों को रुचिकर लगे।

(४) महान्—अनेक लोगों द्वारा वार्तालाप करते समय जो स्वर सब लोगों की आवाज से अलग तथा अच्छा सुनाई दे।

(५) अनुनादी—जिसे दूर से धीरे-धीरे बोलने पर भी भली भांति सुना जा सके।

उक्त पांचों प्रकार के स्वर 'शुभ' माने गए हैं। जिन लोगों के स्वर

इस प्रकार के होते हैं, वे विद्वान, दानी, भोगी, यशस्वी, गुणी, सुखी, पुण्यात्मा तथा स्त्री-पुत्र, धन आदि सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करने वाले होते हैं।

निम्नलिखित ७ प्रकार के स्वर 'अशुभ माने गए हैं—

(१) **विस्वर**—बोलते समय घरघराहट-सी होना अर्थात् आवाज का एक-सा न निकलना।

(२) **अति स्वर अथवा चण्ड स्वर**—अर्थात् जोर जोर-से बोलना, जैसाकि किसी को डांटते अथवा धमकाते समय बोला जाता है।

(३) **भग्न स्वर अथवा खण्डित स्वर**—बोलते समय बीच-बीच में हकलाना।

(४) **क्षार स्वर**—बोलते समय तुतलाना अथवा किसी अक्षर को छोड़ जाना।

(५) **रुक्ष स्वर**—यह स्वर पूर्वोक्त 'स्निग्ध स्वर' के विपरीत होता है।

(६) **जर्जरित स्वर**—फूटे कांसे जैसी आवाज का निकलना।

(७) **निम्न स्वर**—आवाज का अत्यन्त धीमा होना, जैसे वह कण्ठ में ही अटकी रह जाए।

उक्त सातों प्रकार के स्वर अशुभ माने जाते हैं।

इसके अतिरिक्त बोलने के ढंग के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का सार-संक्षेप नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) स्वर का कठोर अथवा वाक्यों का कटु (कड़वा) होना तथा बोलते समय मुंह से थूक के छींटे निकलना—इन्हें कुलक्षण समझना चाहिए। ऐसे व्यक्ति हठी; क्रोधी, निर्दय, कठोर, स्वार्थी, कृपण, ठग, उच्छृंखल तथा तामसिक वृत्ति के होते हैं।

(२) मेघ ध्वनि-हंस चक्रवाक अथवा कौवा पक्षी के स्वर के समान जिनकी आवाज हो—ऐसे लोग राजा होते हैं ।

(३) पानी में घड़े को डुबाते समय जो आवाज होती है, वैसे स्वर वाले व्यक्ति उच्चपद को प्राप्त करते हैं ।

(४) दुन्दुभि, मृदंग हाथी, बैल तथा सिंह जैसे स्वर वाले व्यक्ति राजा (ऐश्वर्यशाली) होते हैं ।

(५) गधा, कुरर तथा बालकों के समान जिनका कण्ठ-स्वर हो—वे व्यक्ति क्रूर तथा दुःखी होते हैं ।

(६) भेड़िया, ऊंट, सुअर, कौआ तथा उल्लू की आवाज से जिनका कण्ठ-स्वर मिलता है, वे लोग दुष्ट स्वभाव के होते हैं ।

(७) जो व्यक्ति बिना हिचकिचाहट के, सामान्य रूप से तेजी से तथा सावधानी के साथ बोलता है, वह शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ तथा सावधान होता है । वह हंसमुख, सुखी, प्रसन्न तथा व्यवहार-कुशल होता है ।

(८) जो व्यक्ति ऐसी तेजी से बोलता है कि शब्द दौड़ते हुए से जान पड़े, वह सजीव तथा उत्साह पूर्ण व्यक्तित्व वाला एवं निरन्तर गतिशील होता है । वह किसी तरह के विवाद में पड़ना पसन्द नहीं करता । ऐसे व्यक्ति कभी-कभी चिड़चिड़े तथा व्यग्र-स्वभाव के भी पाए जाते हैं, परन्तु वे उद्दण्ड नहीं होते ।

(९) धीमी तथा नपी-तुली आवाज से बोलने वाला व्यक्ति सतर्क, परिश्रमी, शंकालु तथा अनिश्चयी-स्वभाव का होता है ।

(१०) रुक-रुक कर धीमी आवाज में बोलने वाला व्यक्ति सतर्क, भीरु तथा दूसरों पर निर्भर रहने वाला होता है । उसमें आत्म-विश्वास की कमी पाई जाती है ।

(११) हकलाकर बोलने वाला व्यक्ति हीनत्व भावना से पीड़ित तथा स्नायविक गड़बड़ी का शिकार होता है। परन्तु यदि उसे उत्साहित किया जाए तो वह उन्नति करता है तथा अपने स्वामी के प्रति वफादार सिद्ध होता है।

(१२) बोलते समय खांसने अथवा मठारने वाला व्यक्ति उत्तेजित, अधीर तथा आवेशपूर्ण स्वभाव का एवं महत्वाकांक्षी होता है।

(१३) जिसकी आवाज हुंकारयुक्त अर्थात् भारी और बादलों की गरज जैसी हो, उसे यदि सब लोगों पर हुक्म चलाने दिया जाए तो वह सन्तुष्ट रहता है। यदि उसकी कोई बात काट दी जाए तो वह क्रोध में भर जाता है। वह रूखे तथा अशोभनीय व्यवहार वाला तथा निर्बलों की मजाक उड़ाने वाला होता है।

(१४) जिसकी आवाज कुत्ते के भौंकने जैसो हो, वह अनुशासन प्रिय, व्यवस्था-प्रिय तथा निश्चित नियमों पर चलने वाला होता है। वह कठोर तथा रूखे व्यवहार का आदि होता है, भले ही उससे दूसरे लोग अप्रसन्न क्यों न रहें।

(१५) बच्चों की तरह बोलने वाला व्यक्ति सरल, लज्जात्यु, आमोद-प्रमोद प्रिय तथा आलसी स्वभाव का होता है।

(१६) दूसरे लोगों के बातचीत करते समय बीच-बीच में टोकने-वाला व्यक्ति जिद्दी संवेगात्मक तथा रूखे स्वभाव के होते हैं। यद्यपि उनके पास अच्छे विचार पर्याप्त मात्रा में होते हैं, परन्तु यदि उनके विचारों को पूर्ण रूप से स्वीकार न किया जाए तो उनका दृष्टिकोण शत्रुतापूर्ण हो जाता है।

(१७) अस्पष्ट शब्दों का उच्चारण करने वाले व्यक्ति लापरवाह स्वार्थी, सच्चे, ईमानदार, कुछ-कुछ दिवास्वप्न देखने वाले तथा अधिक सम्वेदनशील होते हैं।

(१८) असम्बद्ध शब्दों का उच्चारण करने से जो मुंह से गीली 'पट्र-पट्र' जैसी ध्वनि निकलने लगती है, ऐसे शब्द बोलने वाले व्यक्ति शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाले, जल्दी ही घबरा जाने वाले परन्तु अच्छे स्वभाव के होते हैं।

(१९) बहुत अधिक बोलने वाले व्यक्ति शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय, मानसिक रूप से आलसी, साहसी, बाहरी लोगों से कपटपूर्ण बातें करनेवाले तथा अपने प्रिय विषयों के बारे में ही घुमा-फिरा कर बोलते रहने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति अत्यधिक आग्रही होते हैं। और वे अपनी बात को सामान्यत: अन्य लोगों से मनवा भी लेते हैं।

(२०) उपदेश के रूप में बोलने वाले व्यक्ति उदार, कोमल, कुछ आडम्बर प्रिय, सत्यवादी तथा यात्रा प्रेमी होते हैं। वे दूसरों की भलाई करने के लिए भी प्रयत्नशील बने रहते हैं।

(२१) लच्छेदार बातें करने वाले व्यक्ति घमंडी, तुनुक मिजाज तथा दुर्बल इच्छा शक्ति वाले होते हैं। यदि उन्हें किसी काम में थोड़ी सी भी सफलता मिल जाए तो यह समझने लगते हैं कि जैसे सारा संसार उन्हीं के बल-बूते पर चल रहा है। ऐसे व्यक्ति सफलता पाकर अपनी औकात को भूल जाते हैं तथा असभ्य हो जाते हैं इन्हें अनेक-बार अपमान भी सहन करना पड़ता है।

प्रकृति

'प्रकृति' से तात्पर्य मनुष्य के 'स्वभाव' से है।

कुछ मनुष्य सतोगुणी कुछ रजोगुणी और कुछ तमोगुणी स्वभाव के होते हैं।

सामान्यत: मनुष्य को अपना स्वभाव पृथ्वी के पांच मुख्य तत्वों (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि, (४) आकाश और (५) वायु से प्राप्त होता है,

प्रत्येक मनुष्य का शरीर इन्हीं पंच तत्वों से निर्मित है। अतः उसके शरीर में जिन-जिन तत्वों की न्यूनाधिकता होती है, उन्हीं के अनुरूप उनकी प्रकृति भी बन जाती है।

भारतीय आचार्यों ने मनुष्य की प्रकृति को दस श्रेणियों में बांटा है। वे निम्नानुसार हैं—

(१) **मही प्रकृति**—इस प्रकृति के लोगों के शरीर से पुष्पों जैसी गन्ध निकलती है। उनकी श्वास भी सुगन्धित होती है। वे स्थिर स्वभाव वाले तथा सौभाग्यशाली होते हैं।

(२) **ताप-प्रकृति**—इस प्रकृति वाले व्यक्ति पानी अधिक पीते हैं। वे प्रिय-भाषण करने वाले, सुस्वादु भोजन के प्रेमी तथा रसिक स्वभाव के होते हैं।

(३) **अग्नि-प्रकृति**—इस प्रकृति वाले व्यक्ति चपल, क्रूर, क्रोधी; कठोर तथा अधिक भोजन करने वाले होते हैं।

(४) **वायु-प्रकृति**—इस प्रकृति वाले व्यक्ति चंचल तथा दुर्बल स्वभाव के होते हैं। उन्हें बहुत जल्दी क्रोध आ जाता है।

(५) **आकाश प्रकृति**—इस प्रकृति वाले व्यक्ति कुशल गायक, सुकुमार शरीर वाले, निपुण तथा अधिकतर अपना मुंह खुला रखने वाले होते हैं।

(६) **देव-प्रकृति**—इस प्रकृति वाले व्यक्ति स्वल्पक्रोध करने वाले त्यागी तथा स्नेही होते हैं।

(७) **मानव-प्रकृति**—इस प्रकृति वाले व्यक्ति सुशील. आभूषण तथा संगीत आदि के प्रेमी तथा व्यवहार कुशल होते हैं।

(८) **निशाचर-प्रकृति**—इस प्रकृति वाले व्यक्ति क्रोधी, उग्र, पापी तथा दुष्ट स्वभाव के होते हैं।

(६) **पिशाच-प्रकृति**—इस प्रकृति वाले व्यक्ति मलिन, चपल, बातूनी तथा मोटे अथवा अधिक अंग वाले शरीर के होते हैं।

(१०) **पशु-प्रकृति**—इस प्रकृति वाले व्यक्ति डरपोक, तथा बहुत अधिक भोजन करने की इच्छा रखने वाले तथा अधिक खाने वाले होते हैं।

सत्त्व

मनुष्य के विशेष गुण अथवा चित्त के धर्म विभिन्न प्रकार के होते हैं। परन्तु यहां सत्त्व से तात्पर्य मनुष्य की सद् वृत्तियों से ही समझना चाहिए।

'सत्त्व' अर्थात् सद्वृत्तियों वाले मनुष्य मनोविकारों से रहित, तेजस्वी सौभाग्यशाली, सुन्दर, धनी तथा शुभ गुण सम्पन्न होते हैं। जिस व्यक्ति में सत्त्व नहीं होता, वह सदैव दुःखी. चिन्तित तथा पराजित बना रहता है।

अनूक

पूर्व जन्म को स्वीकृत करने वाली मनुष्य की आकृति को 'अनूक' कहा जाता है।

भारतीय शास्त्रकारों के मतानुसार मनुष्य के पूर्वजन्म के कर्मों का प्रभाव उसकी आकृति पर पड़ता है, फलस्वरूप जिन लोगों ने पिछले जन्म में शुभकर्म किये होते हैं, उनके चेहरे मनुष्य जन्म में सिंह, बैल आदि श्रेष्ठ पशु-पक्षियों की आकृतियों से मिलते-जुलते होते हैं और जिन्होंने अशुभ कर्म किये होते हैं, उनके चेहरे, गधा, उल्लू आदि अशुभ पशु-पक्षियों की आकृति से मिलते जुलते हैं।

एक मान्यता यह भी है कि मनुष्य अपने पूर्व जन्म में पशु-पक्षी को

जिस योनि में होता है, उसका प्रभाव मनुष्य जन्म लेने पर उसकी आकृति पर भी परिलक्षित होता है। तथा उस आकृति के अनुरूप मनुष्य का स्वभाव भी उन पशु-पक्षियों के स्वभाव से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार भी मनष्य के चेहरे जिस पशु-पक्षी की आकृति से मिलते-जुलते हैं, उसमें उन्हीं पशु-पक्षियों के गुण स्वभाव तथा चरित्र को विशेषताएं पाई जाती हैं। इस सम्बन्ध में आगे एक अलग प्रकरण में विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया है।

क्षेत्र

मनुष्य के शरीर को १० क्षेत्रों अर्थात् १० भागों में बांटकर, शरीर के जिस भाग में शुभ लक्षण पाये जायें उसके अनुरूप आयु वाले भाग में सुख-समृद्धि तथा जिसमें अशुभ लक्षण पाये जायें। उसके अनुरूप आयुभाग में कष्ट होगा—ऐसा समझना चाहिए।

चित्र संख्या ३ में शरीर के १० क्षेत्रों को प्रदर्शित किया गया है। इन क्षेत्रों में शरीर के विभिन्न विभाग इस प्रकार गिने जाते हैं—

पहला भाग—दोनों पांव (टखनों सहित)।

दूसरा भाग—दोनों पिंडली और घुटने।

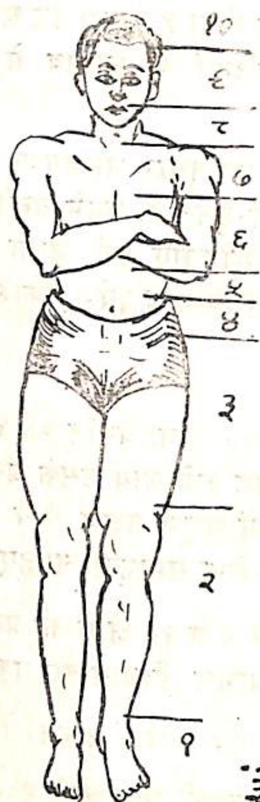
तीसरा भाग—दोनों घुटनों से लेकर कमर तक का हिस्सा।

चौथा भाग—कमर से नाभि तक का हिस्सा।

पांचवां भाग—पेट।

छठा भाग—हृदय तथा स्तन प्रदेश।

सातवां भाग—बाहु तथा हंसली की हड्डी।



[शरीर के दस विभाग अर्थात् क्षेत्र]

आठवां भाग—कंधे, कंठ तथा होठ।

नवां भाग —आंखें, भौहें तथा ललाट।

दसवां भाग—सिर।

जीवन का कौनसा भाग शुभ तथा अशुभ जाएगा: इसे जानने की विधि यह बताई गई है कि हस्त परीक्षा द्वारा जातक की आयु का

निर्णय करने के उपरान्त जो आयु आए उसे दस भागों में बांटकर, प्रत्येक आयु भाग के शरीर के विभिन्न क्षेत्रों में क्रमशः स्थापित करना चाहिए। अर्थात् यदि किसी जातक की आयु ८० वर्ष की निश्चित होती हो तो ८ वर्ष के १० आयु खण्डों में उसे विभाजित करके प्रत्येक आयु-खण्ड को शरीर के प्रत्येक विभाग में क्रमशः आरोपित करके, उस आयु खण्ड में सम्बन्धित शरीर के विभाग पर दृष्टि डालकर शुभाशुभ फल ज्ञात करना चाहिए।

जैसे किसी व्यक्ति की आयु ८० वर्ष की निश्चित होती है और उसके शरीर के अन्य अंगों के शुभ होने पर भी यदि उसका पेट अशुभ लक्षण-युक्त है तो उसके जीवन का पांचवां आयु-खण्ड अर्थात् ३३ से ४० वर्ष तक का जीवन अच्छा व्यतीत नहीं होगा। इसी भांति सभी जगह समझ लेना चाहिए।

शरीर का जो भाग जैसे शुभ अथवा अशुभ लक्षणों से युक्त होता है, उस आयु खण्ड में जातक के ऊपर उसका वैसा ही शुभ अथवा अशुभ प्रभाव पड़ता है।

सूखे, मांस-हीन, ढीले, खुरदरे अथवा नसें उभरे हुए अंग अशुभ माने जाते हैं।

मृजा

'मृजा' अर्थात् शरीर की कान्ति भी (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि, (४) आकाश और (५) वायु—इन पांच तत्त्वों की न्यूनाधिकता के फल स्वरूप वैसी ही पाई जाती है। शरीर की कान्ति द्वारा जातक के भीतरी गुण-अवगुणों का तथा उसके अनुसार जीवन पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव का पता चलता है।

'वाराह मिहिर' के मत से जातक के जीवन में जिस समय जिस ग्रह की महादशा अथवा अन्तरदशा चलती है, उसी के अनुसार

उसके शरीर की कान्ति बदलती रहती है। यह विषय ज्योतिष से सम्बन्धित है। अतः विस्तारमय से उसका उल्लेख यहां नहीं किया जाता।

शरीर की कान्ति के अनुसार जातक के जीवन चरित्र एवं स्वभाव का परिज्ञान प्राप्त करने के सामान्य नियम निम्नलिखित हैं —

(१) शरीर की कान्ति अग्नि प्रधान अर्थात् उत्तम तेजयुक्त हो तो जातक प्रतापी, शत्रुंजयी एवं पदवृद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

(२) यदि शरीर की कान्ति मृदु, स्निग्ध एवं विशेष लावण्य लिए हुए हो तो जातक जल प्रधान अथवा समुद्रीय वस्तुओं के व्यवसाय से धनोपार्जन तथा लोकप्रियता प्राप्त करता है।

(३) यदि शरीर की कान्ति अग्नि के समान लालिमा लिए हुए हो तो जातक में सहनशक्ति की कमी होती है।उसकी दृष्टि कुछ वक्र बनी रहती है तथा स्वभाव में तेजी और उग्रता आ जाती है। ऐसे व्यक्ति युद्ध क्षेत्र में विजय प्राप्त करने वाले होते हैं।

(४) यदि शरीर की कान्ति में कुछ श्यामता हो तो जातक अधिक क्रियाशील होता है। उसके शरीर में से स्वाभाविक रूप से सुगन्ध निकलती रहती है तथा केश, रोम तथा नख चिकने और मुलायम प्रतीत होते हैं।

(५) यदि शरीर की कान्ति कुछ पीलापन लिए हुए गौर तथा शान्त हो तो जातक सन्तोषी तथा धार्मिक प्रवृति का होता है। धन, विद्या तथा धर्म के क्षेत्र में उसे सफलताएं प्राप्त होती हैं।

(६) यदि शरीर की कान्ति में अधिक लावण्य तथा आकर्षण हो तो जातक को स्त्री सहवास तथा धनागम का सुख प्राप्त होता है।

(७) यदि शरीर की कान्ति विवर्ण, रुखापन लिए हुए तथा मलिन

हो तो जातक दरिद्रता, क्षोभ तथा संकटों से ग्रस्त रहता है। उसमें हिंसात्मक प्रवृत्ति बढ़ जाती है।

(८) यदि शरीर की कान्ति श्यामवर्ण, भस्मवर्ण तथा जली हुई मिट्टी जैसी अथवा विवर्ण हो तो उसे दुःख एवं दुर्भाग्यदायक अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

इस सम्बन्ध में शास्त्र का वचन है—

"क्षेत्र वंशाज्जायन्ते मनुजानां जगति दश दशा क्रमशः।
क्षेत्रष्व शुभेष्वशुभा दशा शुभेषु च शुभा प्रायः॥"

अर्थात् शरीर का जो क्षेत्र जैसे शुभ-अशुभ लक्षणों से युक्त होता है, वैसा ही फल उस आयु भाग में जातक को प्राप्त होता है।

पशु-पक्षियों की आकृति से समानता रखने वाले चेहरे

बहुत से स्त्री-पुरुषों के चेहरे विभिन्न पशु-पक्षियों की आकृति से मिलते-जुलते हैं। यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाए तो प्रत्येक स्त्री-पुरुष का चेहरा किसी न किसी पशु अथवा पक्षी की आकृति से समानता रखता हुआ अवश्य प्रतीत होगा।

मनुष्य का चेहरा जिस पशु अथवा पक्षी की आकृति से मिलता-जुलता है, उस पशु अथवा पक्षी के स्वभाव तथा गुण उस मनुष्य में भी विशेष रूप से पाये जाते हैं। यदि किसी मनुष्य का चेहरा दो भिन्न पशु अथवा पक्षियों की आकृति से मिलता-जुलता हो तो उसमें उन दोनों भिन्न पशु अथवा पक्षियों के स्वाभाविक गुणों का सम्मिश्रण समझना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि किसी पुरुष का सम्पूर्ण चेहरा सिंह की आकृति से मिलता-जुलता हो, परन्तु उसकी नाक तोते जैसी हो तो उस व्यक्ति में सिंह के स्वाभाविक गुणों के साथ ही तोते के गुण भी अल्प-मात्रा में अवश्य परिलक्षित होंगे। इसी के नियम के अनुसार सभी चेहरों की परीक्षा करनी चाहिए। नाक, कान, आंख तथा मुख चेहरे के ये चार ही मुख्य अंग ऐसे होते हैं, जिनमें किसी एक पशु अथवा पक्षी की आकृति से अलग भिन्नता पाई जा सकती है। जैसे बैल के समान चेहरे वाले मनुष्य की आखें बिल्ली जैसी हो सकती हैं, घोड़े के समान चेहरे वाले व्यक्ति के कान बन्दर जैसे हो सकते हैं अथवा बिल्ली जैसी आकृति वाले मनुष्य का मुंह ऊंट के समान (चौड़ा)

हो सकता है। अस्तु, चेहरे की परीक्षा करते समय इन सभी बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

इस प्रकरण में हम पशु-पक्षियों से मिलती-जुलती आकृति के चेहरे वाले मनुष्यों के चरित्र तथा स्वभाव के सम्बन्ध में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। मनुष्य तथा पशु-पक्षियों की आकृति में किस प्रकार समानता पाई जाती है, इसे स्पष्ट करने के लिए पशु-पक्षियों की आकृति से मिलते-जुलते स्त्री-पुरुषों के कुछ चेहरों के चित्र भी यहां दिए गए हैं। इससे पाठकों को विभिन्न चेहरों की परीक्षा करने में सुविधा रहेगी। जिन पशु-पक्षियों के चेहरों से मिलते-जुलते मनुष्य के चेहरों के चित्र यहां नहीं दिये गये हैं, उनके विषय में अनुमान से काम चलाकर सही निष्कर्ष निकाल लेना चाहिए।

सिंह के समान आकृति

सिंह के समान आकृति वाला मनुष्य (चित्र संख्या ४) स्थिर विचार तथा दृढ़ चरित्र वाला, महत्वाकांक्षी, यशस्वी, उदार, शान्त,





बुद्धिमान, शालीन, गम्भोर, साहसी तथा बलवान होता है। उसकी आकृति, वेशभूषा, वचन तथा कर्म सभी से बड़प्पन को गन्ध आती है। ऐसे लोग व्यर्थ ही किसी को परेशान नहीं करते, परन्तु शत्रु यदि बार बार क्षमा किये जाने पर भी अपनी शत्रुता पूर्ण कार्यवाहियों से बाज नहीं आता तो उसे ऐसा बदला देते हैं कि वह हमेशा के लिए ठण्डा हो जाता है।

ऐसी आकृति वाले व्यक्ति शरीर से हृष्ट-पुष्ट, व लष्ठ, सुन्दर तथा निर्भय स्वभाव के होते हैं। वे किसी बात की न तो चिन्ता करते हैं और न किसी संकट के आने पर उससे घबराते ही हैं। विपत्तियों का सामना करना तथा मुसीबतों पर विजय पाना उनके लिए खेल जैसा होता है।

ऊंट के समान आकृति

ऊंट के समान आकृति वाला मनुष्य (चित्र संख्या ५) अत्यन्त परिश्रमी होता है। वह स्वभाव से गम्भीर तथा शान्त दिखाई देता है,





५

परन्तु उसमें दूसरों के प्रति प्रेम अथवा सहानुभूति का सर्वथा अभाव

पाया जाता है। ऐसे लोग दूसरों से बातें करते समय ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो उन्हें चुभने वाले हों। सभ्य समाज में ऐसे व्यक्तियों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता।

घोड़े के समान आकृति

घोड़े के समान आकृति वाला मनुष्य (चित्र संख्या ६) स्वभाव का उदार परन्तु घमण्डी होता है। वह यात्रा-प्रेमी तथा चलते समय



६

लम्बे डग रखने वाला होता है। ऐसी आकृति वाले लोगों के शरीर प्रायः लम्बे तथा बलिष्ठ होते हैं। ये लोग परिश्रम करने से नहीं घबराते।

भेड़ के समान आकृति

भेड़ के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र संख्या ७) स्वभाव के सरल, विनम्र, भले, परन्तु जिद्दी और अनुकरण (नकल) करने की आदत वाले होते हैं। वे स्वयं अपना कोई मत निश्चित नहीं कर पाते अपितु दूसरों के बताये हुए रास्ते पर चलना अधिक पसन्द करते हैं।





७

बैल के समान आकृति

बैल के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र संख्या ८) अत्यन्त परिश्रमी होते हैं। वे प्रायः दूसरे लोगों के लिए ही परिश्रम करते रहते हैं





८

अर्थात् जिस प्रकार बैल के परिश्रम का लाभ किसान उठाता है, उसी प्रकार बैल के समान आकृति वाले पुरुष के परिश्रम का लाभ भी अन्य लोग उठाया करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह

करने में जागरूक रहते हैं तथा जिम्मेदारी के किसी भी काम को प्राणपण से पूरा करते हैं। खाली समय में ये लोग लापरवाह तथा आलसी स्वभाव के बन जाते हैं। उस समय इन्हें हिलना-डुलना तक पसन्द नहीं होता।

कौए के समान आकृति

कौए के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र संख्या) अत्यन्त चतुर, अशिष्ट, लोभी तथा बेहया होते हैं इनके मन में प्रत्येक वस्तु को





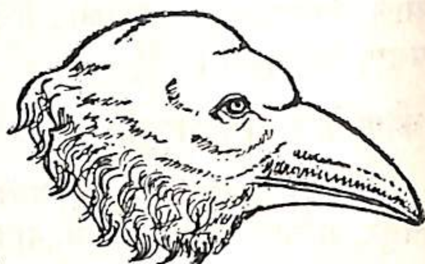
६

अपने लिए झपटने की इच्छा बनी रहती है। ऐसे लोग उद्दण्ड प्रकृति के होते हैं और समाज में इन्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता।

ईगल के समान आकृति

ईगल (चील जैसा पक्षी) के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र संख्या) साहसी, विचारों में दृढ़ तथा श्रेष्ठ चरित्र के होते हैं। ये लोग साहसी, बुद्धिमान तथा दूरदर्शी होते हैं। परन्तु इनमें भी दूसरों की वस्तु पर स्वयं अधिकार करने की इच्छा तथा चालाकी आदि की वृत्तियां संक्षिप्त मात्रा में पाई जाती हैं।



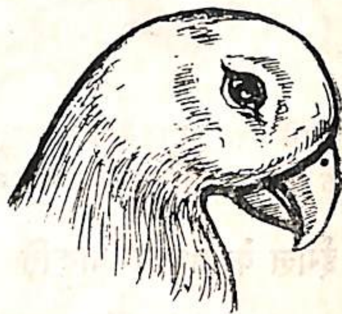


१०

तोते के समान आकृति

तोते के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र संख्या) बहुत बातूनी, लोभी तथा चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं। इन लोगों का ज्ञान ऊपरी





११

और दिखावटी होता है इनमें विचार शीलता का अभाव पाया जाता हैं यों, दूसरों की नकल उतारने में ऐसे लोग कुशल पाये जाते हैं।

भेड़िये के समान आकृति

भेड़िये के समान आकृति वालें मनुष्य (चित्र संख्या) ढोंगी,

बहाने बाज तथा झगड़ालू स्वभाव के होते हैं इनके हृदय में कोमलता का अभाव रहता है। इनमें धोखा देने की प्रवृत्ति विशेष पाई जाती





१२

है। ऐसे लोग मन-ही-मन दुःखी तथा उदास रहते हैं और परिश्रम द्वारा द्रव्योपार्जन करने के स्थान पर कहीं से आकस्मिक धन-लाभ की आशा में प्रतीक्षा रत बने रहते हैं।

वनमानुष के समान आकृति





१३

वनमानुष के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र संख्या १३) लोभी,

चालाक, फुर्तीले, नकलची प्रवृति के तथा दूसरों पर अपना रौब जमाने की चेष्टा करने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की दृष्टि बड़ी पैनी होती है, परन्तु इनमें गम्भीरता एवं बुद्धिमत्ता कम ही पाई जाती है।

भैंसे के समान आकृति

भैंसे के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र संख्या १४) शरीर से हृष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली, परन्तु आलसी और जड़बुद्धि होते हैं। इनमें





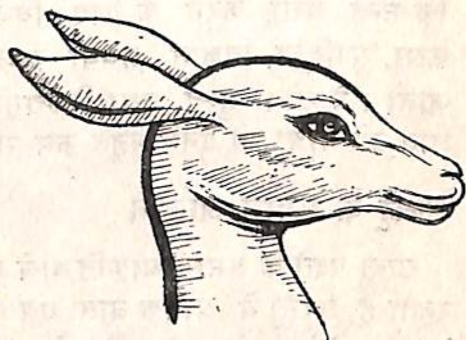
१४

विचार-शक्ति एवं गम्भीरता की बहुत कमी पाई जाती है। इनके शरीर की त्वचा मोटी होती है।

हिरन के समान आकृति

हिरन के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र संख्या १५) स्वभाव के चंचल, विचारों में अस्थिर तथा फुर्तीले होते हैं। ये लोग यात्रा तथा बनाव-सिंगार के प्रेमी होते हैं। देखने में भी ये अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होते हैं। प्रायः इस प्रकार के चेहरे पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक दिखाई देते हैं।





१५

बिल्ली के समान आकृति

बिल्ली के समान आकृति वाले मनुष्य घमण्डी खुशामदी, ऊपर से भल मन साहत तथा विनम्रता प्रदर्शित करने वाले, परन्तु भीतर से चतुर-चालाक एवं स्वार्थी होते हैं। इन लोगों के हृदय में किसी के भी प्रति सच्चा स्नेह नहीं होता।

कुत्ते के समान आकृति

कुत्ते के समान आकृति वाले मनुष्य स्वामिभक्त, साहसी तथा सच्चा स्नेह करने वाले होते हैं। इनमें दूरदर्शिता, गम्भीरता, उत्तर-दायित्व का निर्वाह करने की भावना तथा प्रत्येक निर्णय को शीघ्र क्रियान्वित कर देने आदि के गुण विशेष रूप से पाये जाते हैं।

गधे के समान आकृति

गधे के समान आकृति वाले मनुष्य अपने आप में ही मस्त रहने वाले होते हैं। उनमें आलस्य की मात्रा अधिक पाई जाती है। वे

परिश्रम का काम करने के लिए तब तक तैयार नहीं होते हैं, जब तक कि उन्हें वैसा करने के लिए विवश न किया जाये। ऐसे लोगों में कला, साहित्य, विज्ञान अथवा अध्ययन के प्रति कोई रुचि नहीं पाई जाती। ये लोग सुस्त तथा निरुद्यमी प्रकृति के होते हैं। बुद्धि तथा ज्ञान की मात्रा भी इनमें बहुत कम पाई जाती है।

उल्लू के समान आकृति

उल्लू पक्षी के समान आकृति वाले मनुष्यों में काल्पनिकता का अभाव रहता है, परन्तु वे प्रत्येक बात एवं कार्य में संयम का परिचय अवश्य देते हैं। प्रत्येक वस्तु को करीने से रखना इनका स्वाभाविक गुण होता है। इनमें साहस की भी कमी पाई जाती है, परन्तु ऐसा होते हुए भी ये किसी से दबकर नहीं रहते।

सूअर के समान आकृति

सूअर के समान आकृति वाले मनुष्य में कोमलता तथा दयालुता का अभाव पाया जाता है। ऐसे लोग अत्यधिक लापरवाह प्रकृति के होते हैं। खाने-पीने का इन्हें बहुत अधिक शौक होता है और ये लोग भोजन भी बहुत अधिक परिमाण में करते हैं!

फैरट के समान आकृति

फैरट (एक प्रकार का जंगली चूहे जैसा जानवर) के समान आकृति वाले मनुष्य अत्यन्त चालाक, झगड़ालू तथा अशान्त स्वभाव वाले होते हैं। इन लोगों में प्रत्येक विषय की जानकारी प्राप्त करने की भावना अत्यधिक पाई जाती है।

चीते के समान आकृति

चीते के समान आकृति वाले मनुष्य खुंख्वार स्वभाव के, फुर्तीले,

चालबाज तथा विश्वासघाती होते हैं। ऐसे लोगों को हिंसात्मक कार्यों में आनन्द आता है। इनमें दूरदर्शिता, निर्णायक बुद्धि की तीव्रता तथा गतिशीलता आदि गुण विशेष मात्रा में पाये जाते हैं, परन्तु ये अपने इन गुणों का उपयोग दूसरे लोगों को धोखा देने, ठगने अथवा हानि पहुंचाने के कामों में करते हैं। ऐसे लोग कब किस के प्रति क्या कर बैठेंगे, इसका कोई ठिकाना नहीं होता।

आवश्यक निर्देश

इस अध्याय में कुछ ही प्रमुख पशु-पक्षियों की आकृति से मिलते-जुलते चेहरे वाले मनुष्यों के स्वभाव एवं चरित्र के विषय में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

इसी के अनुसार अन्य पशु-पक्षियों की आकृति से मिलते-जुलते चेहरे वाले लोगों के गुण स्वभाव तथा चरित्र आदि के विषय में, उसी पशु-पक्षी के स्वाभाविक गुण-धर्म के आधार पर अनुमान लगा लेना चाहिए।



चेतना यन्त्र, मनुष्य का सिर और मस्तिष्क

चेतना-यन्त्र

मनुष्य के शरीर में अनेक प्रकार के अवयव होते हैं उनमें से प्रत्येक अवयव का एक-एक मुख्य-कर्तव्य निश्चित है। उदाहरण के लिए आमाशय का कार्य भोजन को पचाना, त्वचा का कार्य शरीर में उचित परिमाण में गर्मी रखने का प्रयत्न करना तथा रक्ताशय का कार्य रक्त का संचार करना है।

चेतना-यन्त्र का कार्य यह है कि शरीर के सभी अवयव ठीक समय पर अपने उचित कर्तव्य का पालन करते रहें। चेतना-यन्त्र के द्वारा ही शरीर के हृदय, फेफड़े, गुर्दे और कलेजा आदि अपना-अपना काम करते हैं। चेतना यन्त्र शरीर के सभी अवयवों का संचालन तथा सभी भागों का नियन्त्रण करता है।

जब हम किसी बात का स्मरण करते हैं तो यह कार्य भी चेतना यन्त्र के एक भाग द्वारा ही होता है।

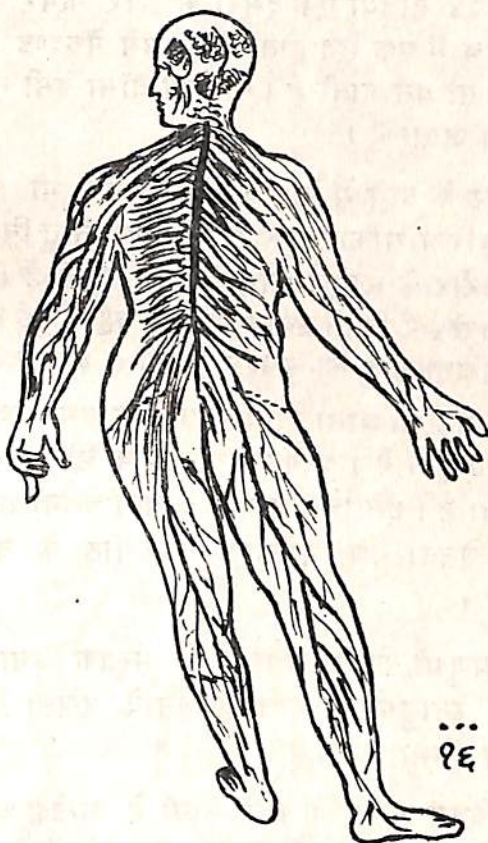
चेतना-यन्त्र के मुख्य भाग दो हैं—

(१) मस्तिष्क।

(२) पीठ का बांसा।

मस्तिष्क हड्डी के एक खोल में जिसे 'खोपड़ी' कहा जाता है सुरक्षित

रहता है तथा पीठ का बांसा रस्सी की तरह भेजे का लम्बा खिंचा हुआ भाग होता है। यह रस्सी कनिष्ठा उंगली के बराबर मोटी होती है।



[साधारण चेतना-यन्त्र]

चित्र संख्या १६ में शरीर के साधारण चेतना यन्त्र के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।

पीठ का बांसा भेजे के निचले भाग में जुड़ा रहता है तथा खोपड़ी में एक बड़े छेद द्वारा बाहर निकला होता है ।

मेरुदण्ड की २४ हड्डियां एक दूसरी के ऊपर कमर से लगी रहती हैं । इन सबके बीच में एक छेद होता है, जिससे मेरुदण्ड में हड्डियों की एक मजबूत नली सी बन जाती है । पीठ का बांसा इसी नली में कमर के नीचे तक चला जाता है ।

भेजे तथा पीठ के बांसे में से रेशम के धागे से भी अधिक महीन तथा कुछ मोटे विभिन्न आकार-प्रकारों के सूक्ष्म तन्तु निकले रहते हैं । ये चेतना तन्तु शरीर के सम्पूर्ण भाग में फैले रहते हैं । ये इतने घने होते हैं कि यदि शरीर में किसी स्थान पर एक महीन सुई भी चुभाई जाए तो वह किसी न किसी तन्तु को अवश्य चुभती है और दर्द होता है ।

मस्तिष्क और पीठ का बांसा दोनों ही धागे के समान असंख्य छोटे-छोटे तन्तुओं से बने हुए होते हैं । प्रत्येक तन्तु-रेशे के छोर पर एक गांठ के समान बढ़ाव होता है । इसे 'चेतना-गांठ' अथवा 'चेतना-अणु' कहा जाता है । ये छोटे-छोटे चेतना-अणु मस्तिष्क तथा पीठ के बांसा में सर्वत्र विद्यमान रहते हैं ।

इन चेतना-अणुओं की सहायता से ही मस्तक विचार करता है, स्मरण करता है, स्नायुओं को गतिमान बनाये रखता है तथा शरीर के सभी भागों का प्रबन्ध करता है ।

मस्तिष्क में केवल शरीर के अन्य भागों से सन्देश आता ही नहीं है, अपितु वह बाहर आज्ञाएं भी भेजता है, जिसके कारण नसें गतिवान् हो जाती हैं ।

यदि हमारी इच्छा घूमने-फिरने की हो तो मस्तिष्क स्नायुओं को आज्ञा देता है कि टांगों को चलाया जाए । यदि आंखों द्वारा यह सन्देश

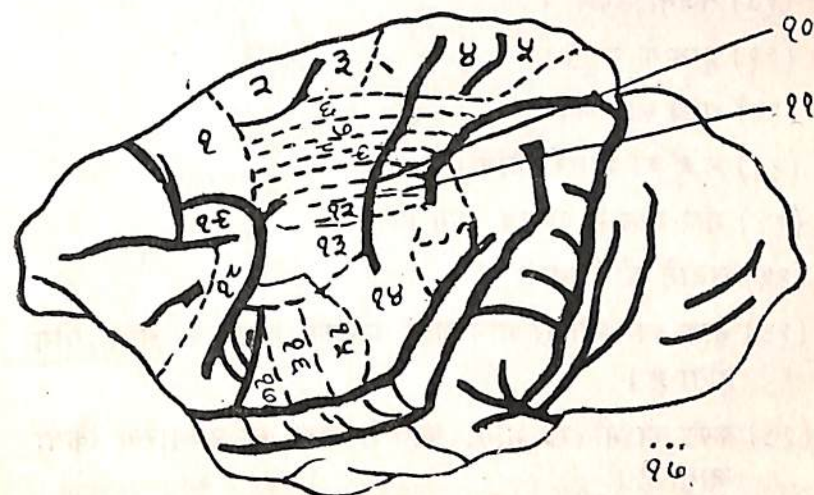
मिले कि समीप ही कोई सर्प है, तो मस्तिष्क द्वारा स्नायुओं को तुरन्त यह आदेश मिलता है कि शरीर को तुरन्त गतिवान बना दिया जाए अर्थात् उस स्थान से दौड़ा कर हटाया जाय।

यदि उंगली की नसों द्वारा मस्तिष्क तथा पीठ के बांसा को यह सन्देश मिले कि हाथ की उंगली किसी गर्म वस्तु को स्पर्श कर रही है तो मस्तिष्क तथा पीठ के बांसा द्वारा बांह के स्नायु को तुरन्त यह आदेश दिया जाता है कि वह उंगली को उस स्थान से हटा दे।

इसी प्रकार चेतना-तन्तुओं द्वारा सभी अवयवों से सन्देश प्राप्ति एवं आदेश-वितरण का कार्य किया जाता है।

मस्तिष्क द्वारा विचार, स्पर्श ज्ञान तथा स्मृति का कार्य सम्पन्न होता है। इसी के द्वारा शत्रुता एवं प्रेम भाव का निर्णय किया जाता है। इसे शरीर के प्रत्येक भाग का यह सर्वोपरि संचालक और शासक समझना चाहिए।

मस्तिष्क के किस भाग का शरीर के किस अवयव से विशेष सम्बन्ध रहता है, इसे नीचे दिये गए चित्र संख्या १७ में प्रदर्शित किया गया है।



पीछे चित्र में जिन स्थानों पर अंक लिखे गये हैं, उनके अनुसार मस्तक के उस भाग का मुख्य सम्बन्ध शरीर के निम्नलिखित भागों से समझना चाहिए।

(१) सिर को घुमाने की क्रिया।

(२) नितम्ब प्रदेश।

(३) घुटने और टखने।

(४) पांव के अंगूठे।

(५) पांव की उंगलियां।

(६) कंधे।

(७) कुहनियां।

(८) हाथ की कलाइयां।

(९) हाथों की उंगलियां।

(१०) तर्जनी उंगली।

(११) हाथ के अंगूठे।

(१२) आंख की पलकें।

(१३) मुंह का भीतरी भाग।

(१४) मुख-ओठ से वेष्टित भाग।

(१५) चवाने की क्रिया।

(१६) नाक का भीतरी भाग जहां उसका कण्ठ के साथ योग होता है।

(१७) कण्ठ का भीतरी भाग, जहां से शब्द का उच्चारण किया जाता है।

(१८) नेत्र प्र न्त अर्थात् आंखों को घुमाकर बगल से देखने की क्रिया।

(१९) सिर तथा आंखों का युगवत् संचालन।

सिर

मस्तिष्क के बाहरी आवरण को 'सिर' कहा जाता है सिर की बनावट जिस प्रकार की होतो है मानवचित गुणों की न्यूनाधिकता उसी मात्रा



में पाई जाती है। यदि सिर 'उच्च' श्रेणी का है तो उस व्यक्ति का

मस्तिष्क-शक्ति प्रबल होती है और उसीके अनुपात में उसमें अन्य मानवीय गुण भी अधिक होंगे। यदि सिर मध्यम श्रेणी का है तो मस्तिष्क शक्ति तथा अन्य मानवीय-गुण मध्यम मात्रा में होंगे और यदि सिर की बनावट निम्न श्रेणी की है तो मस्तिष्क-शक्ति तथा अन्य मानवीय गुण भी निम्न श्रेणी के ही होंगे।

चित्र संख्या १८ में सिर की तीन मुख्य (१) उत्तम (२) मध्यम तथा (३) निम्न श्रेणी की बनावटों का स्वरूप प्रदर्शित किया गया है।

उक्त चित्र में काली रेखा द्वारा सिर की जो सामान्य आकृति प्रदर्शित की गई है वह उत्तम कोटि की है। इसमें सिर के सभी भाग यथोचित अनुपात में उन्नत तथा पिचके हुए हैं। ऐसे सिर वाला व्यक्ति गुणवान्, योग्य, विचारवान, बुद्धिमान, साहसी, शिष्ट तथा विश्वासपात्र होता है।

इसी चित्र में दानेक्षर 'क' शीर्षक रेखा से सिर की जो आकृति दिखाई गई है। उसमें बुद्धि-कोष का आकार अधिक पिचका हुआ है। अतः निष्कर्ष रूप में ऐसे सिर वाला व्यक्ति सामान्य बुद्धि का होगा और उसमें विद्या, साहस, गुण, क्षमता, विचारशक्ति योग्यता आदि मानवीय-गुणों की भी कमी होगी।

इसी चित्र में दानेक्षर 'ख' शीर्षक रेखा द्वारा जो आकृति प्रदर्शित की गई है उसमें बुद्धि कोष का स्थान सामान्य से अधिक पुष्ट है। अतः ऐसे सिर वाले व्यक्ति का अत्यधिक बुद्धिमान होना निश्चित है, परन्तु बुद्धि-कोष के अत्यधिक उन्नत होने पर भी अन्य क्षेत्रों के असन्तुलित हो जाने के कारण, ऐसा व्यक्ति अन्य मानवीय गुणों से भी युक्त हो, यह आवश्यक नहीं है। ऐसे सिर वाले लोगों में दया, क्षमा, चतुराई, प्रेम, सहनशीलता आदि गुणों की कमी पाई जाती हैं। अक्सर

यह भी देखा जाता है कि ऐसे सिर वाले लोग अपनी तीव्र-बुद्धि का उपयोग दूसरे लोगों को धोखा देने अथवा हानि पहुंचाने के कार्यों में भी करते हैं। यदि किसी अच्छी दिशा में मुड़ जाएें तो ऐसे लोग अपनी तीव्र-मस्तिष्क-शक्ति का उपयोग नवीन आविष्कार अथवा अनुसंधान के कार्यों में भी कर सकते हैं। शरीर के अन्य लक्षणों को देखकर ही इन सबके विषय में अन्तिम निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

सिर का परिमाण

सिर का परिमाण बड़ा या छोटा हो तो केवल उसी से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि मनुष्य कम या अधिक बुद्धिमान अथवा गुणवान होगा।

सिर का परिमाण बड़ा होना बुद्धिमत्ता का लक्षण अवश्य है, परन्तु उसके लिए निम्नलिखित बातों पर भी ध्यान देना आवश्यक है—

(१) **सिर का परिमाण**—अर्थात् उसकी लम्बाई और ऊंचाई की न्यूनाधिकता।

(२) **सिर का वजन**—अर्थात् सिर का वजन में हल्का अथवा भारी होना बुद्धिमान् तथा महान् व्यक्तियों के सिर वजन में सामान्य लोगों की अपेक्षा अधिक भारी होते हैं।

(३) **वैशिष्ट्य पूर्ण**—अर्थात् ज्ञान तथा प्रवृत्ति-कोषों का अधिक वैशिष्ट्य पूर्ण होना। जिस प्रकार सूत के डोरे की अपेक्षा रेशमी डोरा अधिक चिकना, मुलायम, सुन्दर तथा मजबूत होता है, उसी प्रकार महान् व्यक्तियों के ज्ञान तन्तु तथा प्रवृत्ति कोष भी सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक विशिष्टता लिए होते हैं। इस विशिष्टता का अनुमान सिर के विभिन्न भागों के उन्नत होने से लगाया जा सकता है। शरीर के अन्य लक्षण मुख, नेत्र, वाणी आदि से भी विशिष्टता का ज्ञान

प्राप्त किया जाता है। सिर के विभिन्न भागों के उन्नत होने से जातक में किन-किन गुणों की विशेषता पाई जाती है, इसका वर्णन आगे किया जायेगा।

सिर का माप

सिर के कम या अधिक माप के अनुसार भी मनुष्य के कम या अधिक विद्वान्, गुणवान, साहसी आदि होने का अनुमान लगाया जाता है सिर का माप लेने का तरीका यह है—

एक फीता (इंची टेप) लेकर सिर के चारों ओर इस तरह से लपेटें कि दोनों कानों के ऊपर का हिस्सा, ललाट तथा सिर का पिछला हिस्सा माप के भीतर पूरी तरह आ जाए।

यदि माप की परिधि में सिर २१" (इक्कीस इन्च) का हो तो उसे बुद्धिमान् तथा गुणवान व्यक्ति का मस्तक समझना चाहिए। यूरोप आदि देशों में सिर का माप २२ इन्च होना अच्छा समझा जाता है। यदि सिर इससे भी बड़ा २२ से २४½" तक का हो तो माप जितना बड़ा हो, उसे उतना ही अधिक अच्छा तथा वैशिष्ट्य पूर्ण समझना चाहिए।

२४½" से बड़े माप का सिर हो तो उसे किसी बीमारी का लक्षण समझना चाहिए। २४½" से अधिक बड़े माप के सिर अच्छे नहीं माने जाते। इसी प्रकार २१ इंच से कम माप का सिर भी अच्छा नहीं माना जाता। यदि सिर का माप १८ इन्च से भी कम हो अथवा मस्तिष्क सिर के पीछे नीचे की तरफ हो तो ऐसे जातक में बुद्धि तथा मस्तिष्क शक्ति की अत्यधिक कमी समझनी चाहिए।

पुरुष के सिर की अपेक्षा स्त्रियों के सिर का माप कुछ छोटा होता है। जो गुण, तथा बुद्धि पुरुष के 21 इन्च वाले सिर में पाये जायेंगे, वही बुद्धि और गुण स्त्रियों के २० इन्च के सिर में मिलेंगे।

कुछ लोगों के सिर तो बहुत बड़े होते हैं, परन्तु फिर भी उनमें बुद्धि की कमी अथवा मूर्खता के लक्षण पाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में यह समझना चाहिए कि उस बड़े सिर वाले व्यक्ति के ज्ञान-कोषों में या तो क्षमता का अभाव है अथवा सिर का आकार ठीक नहीं है। परन्तु बड़े सिर वाले लोग बहुत कम संख्या में भी मूर्ख पाये जाते हैं। इसी प्रकार छोटे सिर वाले लोग बहुत कम संख्या में बुद्धिमान् देखे जाते हैं।

ज्ञान-कोष जितने अधिक विकसित और पुष्ट होते हैं मस्तिष्क का आकार उतना ही अधिक बड़ा होता है और उसीके अनुपात से मस्तिष्क का बाहरी आवरण भी बड़ा होता है। यदि किसी युवा पुरुष के सिर का माप १७ इन्च से कम हो तो यह निश्चित रूप से मान लेना चाहिए कि उसके मस्तिष्क का पूर्ण विकास नहीं हो पाया है।

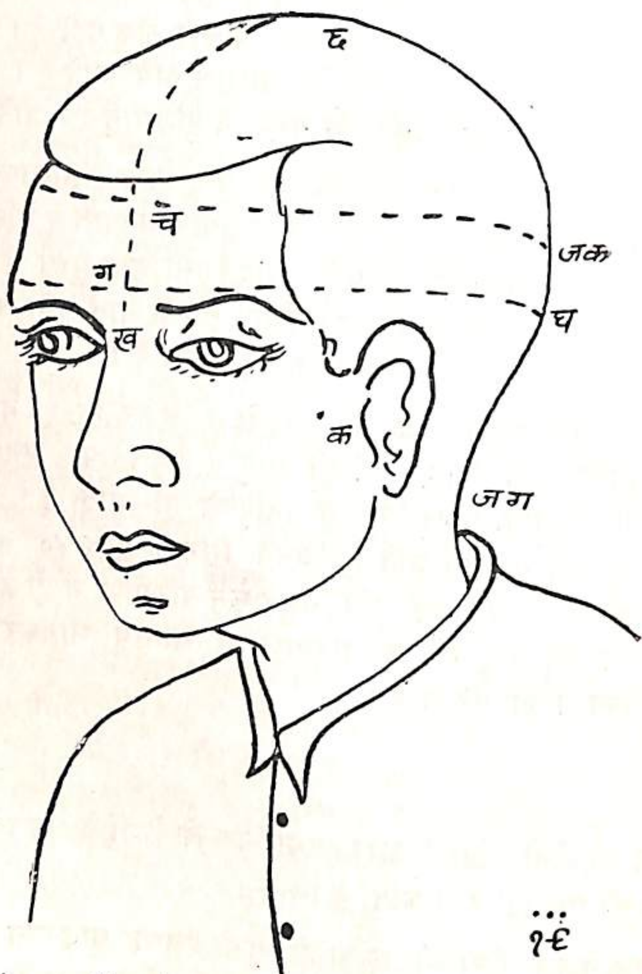
सिर के आकार की वृद्धि बाल्यावस्था से लेकर १९-२० वर्ष की आयु तक होती रहती है। २० वर्ष की आयु में पहुंचने पर मनुष्य के सिर का आकार प्रायः अन्तिम रूप से निश्चित हो जाता है। परन्तु कुछ अपवाद ऐसे भी पाये जाते हैं, जिनमें सिर की वृद्धि ४० वर्ष की आयु तक हुई है। परन्तु वह वृद्धि बहुत कम परिमाण में ही होती है अतः २० वर्ष की आयु तक के परिमाण को अन्तिम मानकर कोई निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

ललाट

आंख की दोनों भौहों से ऊपर तथा सिर के केशों से निचले खुले हुए भाग को 'ललाट' कहा जाता है।

ललाट केवल चौड़ा और ऊंचा हो, तभी मनुष्य बुद्धिमान होगा, यह जरूरी नहीं है। ललाट की चौड़ाई तथा ऊंचाई के साथ ही उसके उभार की परीक्षा भी करनी चाहिए।

ललाट को नापने की विधि नीचे दिये गए चित्र में प्रदर्शित की गई है।



१९

(क) उक्त चित्र में जिस स्थान पर 'ग' अक्षर लिखा हुआ है। उस स्थान पर फीते का एक सिरा रखकर उसे 'घ' अक्षर तक ले जाएं,

तत्पश्चात् सिर का एक चक्कर पूरा करके उसी 'ग' अक्षर तक वापिस चले आएं। यह ललाट के निचले भाग की एक लम्बाई हुई।

(ख) उक्त चित्र में जिस स्थान पर 'घ' अक्षर लिखा हुआ है, उस स्थान पर फीते का एक सिरा रखकर उसे 'ज क' अक्षर तक नापें, तदुपरान्त सिर का एक चक्कर पूरा करके उसी 'च' अक्षर तक वापिस चले आयें। यह ललाट के ऊपरी भाग की दूसरी लम्बाई हुई।

उक्त दोनों लम्बाइयों को नापने के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

(१) यदि पहली लम्बाई की अपेक्षा दूसरी लम्बाई आधी या पौन इन्च अधिक हो तो जातक परिश्रमी तथा कुशल व्यवसायी होता है।

(२) यदि दोनों लम्बाइयों का नाप २२½ इन्च के लगभग हो तो जातक विद्वान्, साहित्यकार तथा अध्ययनशील होता है।

(३) यदि दोनों लम्बाइयों का नाप २३ इन्च अथवा इससे अधिक हो तो जातक वैज्ञानिक अथवा आविष्कारक होता है।

(४) यदि दूसरी लम्बाई का नाप पहली लम्बाई की अपेक्षा १ इन्च के लगभग अधिक हो तो जातक विचारशील होते हुए भी क्रियाशील नहीं होता, अतः वह अपने विचारों एवं निश्चयों को कार्यरूप में परिणित नहीं कर पाता। केवल स्वप्नलोक में विचरण करता रहता है। ऐसे लोग सांसारिक-सफलताएं प्राप्त नहीं कर पाते।

ललाट की दूसरी लम्बाई का नाप नीचे लिखे अनुसार लेना चाहिए।

(क) चित्र में कान के बीच वाले जिस स्थान पर 'क' अक्षर लिखा हुआ है वहां से 'छ' अक्षर तक नापते हुए फीते को दूसरे कान के मध्य-भाग तक नापें।

(ख) चित्र में दोनों भौहों के बीच जिस स्थान पर 'ख' अक्षर लिखा हुआ है वहां से ऊपर के 'छ' अक्षर तक नापते हुए फीते को सिर के पीछे की ओर उस स्थान पर ले जायें जहां 'जग' अक्षर लिखे हुए हैं

तथा जिस स्थान पर सिर गर्दन से मिलता है।

उक्त दोनों लम्बाइयां भी अनुपात में बराबर होनी चाहिए। यदि दोनों लम्बाइयां समान हों तो उन्हें ठीक समझना चाहिए। यदि दोनों में कुछ अन्तर हो तो उसके प्रभाव को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

(१) यदि पहली लम्बाई की अपेक्षा दूसरी लम्बाई आधी इन्च अधिक हो तो जातक में आदर्श-वादिता, महत्वाकांक्षी तथा बौद्धिक-विकास के गुण अधिक होते हैं तथा प्रबन्ध-पटुता एवं स्वार्थ वृत्ति कम होती है।

(२) यदि पहली लम्बाई की अपेक्षा दूसरी लम्बाई १ इन्च अथवा उससे कुछ अधिक हो तो एसा व्यक्ति न्याय-प्रिय तथा शीघ्र प्रसन्न होने वाला होता है।

(३) यदि पहली लम्बाई की अपेक्षा दूसरी लम्बाई २ इन्च अथवा उससे भी अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक आदर्शवादी हो जाता है और उसे किसी के काम से सन्तोष नहीं मिल पाता।

(४) यदि दूसरी लम्बाई की अपेक्षा पहली लम्बाई अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, सावधान, चतुर, लालची, संग्रहशील, सब बातों को गुप्त रखने वाला तथा दूसरों का बुरा चाहने वाला होता है। वह आत्मिक-सुख अथवा नैतिकता का हामी बिल्कुल नहीं होता। ऐसे व्यक्ति में राजसिक तथा तामसिक गुण प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। यदि मष्तिक का भीतरी विकास भी अच्छा न हो तो ऐसे व्यक्तियों की चोरी, डकैती, अत्याचार, हिंसा आदि के कार्यों में प्रवृत्ति हो जाती है।

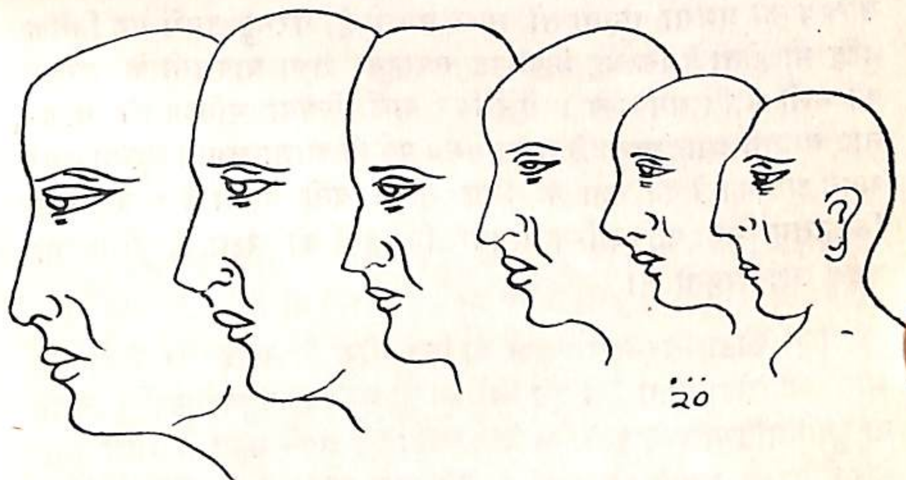
सिर का आकार

सिर के 'परिमाण' के सम्बन्ध में पहले लिखा जा चुका है। अब यहां सिर के आकार के सम्बन्ध में लिखा जा रहा है।

सिर के आकार से तात्पर्य उसकी लम्बाई, चौड़ाई, आगे अथवा पीछे की ओर झुकाव, गोलाई अथवा चपटापन आदि बातों से है।

सिर के आकार से मनुष्य के स्वभाव तथा चरित्र के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है।

चित्र संख्या २० में विभिन्न आकार वाले ६ सिरों को प्रदर्शित किया गया है। इनमें क्रमशः पहले सिर वाले व्यक्ति को सबसे अधिक बुद्धिमान्, दूसरे को उससे कम; तीसरे को उससे भी कम क्रमशः इसी प्रकार सबको एक दूसरे से न्यून बुद्धि वाला समझना चाहिए।



इन सिरों को ध्यान पूर्वक देखने से सिर के परिमाण तथा 'आकार' का अन्तर स्पष्ट हो जायेगा। साथ ही आगे की ओर उठे हुए पीछे की ओर मुड़े हुए तथा सिर के उतार-चढ़ाव एवं छोटे बड़े पन आदि के विषय में भी भली भांति जानकारी प्राप्त हो जायेगी।

इन चित्रों को ध्यान में रखकर विभिन्न लोगों के सिर की परीक्षा करने पर उनके प्रभाव तथा अन्तर को जानने में सहायता मिलेगी।

सिर के आकार के अनुसार मनुष्य के विषय में जानकारी प्राप्त करने का सामान्य तरीका निम्नानुसार है—

(१) **लम्बा सिर**—ऐसा सिर आंखों की भौहों से लेकर सिर के पिछले भाग तक लम्बाई लिए हुए होता है, ऐसे सिर पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक पाये जाते हैं।

ऐसे सिर वाला जातक अत्यधिक मैत्री पूर्ण तथा कुछ-कुछ गर्वीले स्वभाव का होता है। वह अपने पारिवारिक जोवन तथा सामाजिक बन्धनों के प्रति प्रेम रखता है। ऐसे सिर वाली स्त्री अपने कार्य तथा सौन्दर्य की प्रशंसा सुनना तो पसन्द करती है, परन्तु उसमें यह विवेक बुद्धि भी होती है कि वह निष्कपट सराहना तथा चापलूसी के अन्तर को भली भांति समझ ले। ऐसे सिर वाली स्त्रियां भविष्य की योज-नाएं बनातीं, आवश्कता से बहुत समय पूर्व ही आशा लगाये रखतीं तथा अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सतर्क बनी रहतीं हैं। वे अपने निकटतम मित्र, पारिवारिक अथवा प्रियजनों की रक्षा के लिए भी सदैव उद्यत रहती हैं।

(२) **छोटा सिर**–इस प्रकार का सिर भौहों से लेकर सिर के पिछले भाग तक छोटा होता है। ऐसे सिर वाले व्यक्ति बहुत फुर्तीले तथा बहुमुखी प्रतिभा वाले होते हैं। वे सरलता से अपने बहुत से मित्र बना लेते हैं परन्तु अपनी स्वार्थ-वृत्ति के कारण उन्हें शीघ्र ही खो बैठते हैं। ऐसे सिर वाले लोग यात्रा-प्रेमी मृदुभाषी दूसरों के भी मनोभाव तथा स्वभाव को पहिचान कर उनके अनुकूल बन जाने वाले तथा सरल स्वभाव के भी होते हैं। ऐसे व्यक्ति यदि अपनी अत्यधिक स्वार्थ-वृत्ति पर किसी प्रकार नियन्त्रण पा सकें तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु ऐसा हो पाना बहुत कठिन रहता है।

(३) ऊंचा सिर–ऐसे सिर वाला व्यक्ति परोपकारी, धार्मिक विचारों का, ईमानदार, विश्वास-पात्र, संयमी तथा मानवीय गुणों से परिपूर्ण होता है। वह अपने सभी साथियों को सुख पहुंचाने का इच्छुक रहता है। उसका व्यक्तित्व सौम्य तथा गौरवपूर्ण होता है, वह अपने व्यक्तिगत जीवन में भी नियमों का पालन करने वाला, आदतों में शिष्ट तथा सर्वत्र सम्मानीय होता है।

(४) गोल सिर–जो लगभग पूर्ण रूप से गोल दिखाई देता हो, ऐसे सिर वाला व्यक्ति अत्यधिक आत्मविश्वासी होने के कारण कुछ-कुछ उतावला, उच्छृंखल तथा चंचल होता है। उसके मन में नये-नये काम करते रहने की उमंगे उठा करती हैं। वह अधिक समय तक किसी एक ही काम में लगा नहीं रह सकता। वह बारम्बार अपने भाग्य की परीक्षा करना चाहता है। फलतः बार-बार व्यवसाय एवं विचार बदलते रहने के कारण उसे जीवन में सफलताएं बहुत कम प्राप्त हो पाती हैं।

(५) वर्गाकार सिर—इस प्रकार का सिर आगे और पीछे की ओर चपटा होता है। ऐसे सिर वाले व्यक्ति सतर्क और अन्ध विश्वासी होते हैं। किसी नये कार्य को आरम्भ करने में उन्हें भय लगता है, अतः वे नये क्षेत्र में जाने की इच्छा नहीं रखते। भले ही उनको उन्नति क्यों न हो रही हो, फिर भी वे उसे ठुकरा कर अपने पुराने पद अथवा काम से ही चिपके रहते हैं। ऐसे लोग बोल-चाल में भी फूहड़ होते हैं। वे अपनी प्रशंसा करने वाले व्यक्ति को भी झिड़कते और उपेक्षित करते हैं। परन्तु ऐसे लोग अत्यधिक परिश्रमी एवं लगनशील वृत्ति के अवश्य पाये जाते हैं।

(६) ऊंचा और चौड़ा सिर—ऐसा सिर ऊंचा तथा पीछे की ओर चौड़ा होता है। ऐसे सिर वाले व्यक्ति लड़ाकू स्वभाव के होते हैं,

परन्तु उनकी लड़ाई केवल अपने अधिकारों की रक्षा के लिए ही होती है। वे जान बूझकर स्वयं किसी से लड़ाई मोल लेना नहीं चाहते। ऐसे व्यक्ति व्यवहार में रूखे तथा मुंह फट होते हैं। वे अधिक आशावादी, गुप्त बातों को छिपाने में कुशल और विश्वास पात्र भी होते हैं।

(७) **नीचा और फैला हुआ (चौड़ा) सिर**—ऐसा सिर कानों के ऊपर की ओर नोचा तथा कानों के बोच में चौड़ा होता है। ऐसे सिर वाले लोग व्यावहारिक प्रकृति के, भौतिकवादी, नियमित कार्यों को खूब करने वाले, परिश्रमी; स्वार्थ-परक तथा अपनी इच्छानुसार चलने वाले होते हैं। ऐसे लोग अपने सम्पर्क द्वारा दूसरे लोगों को भी प्रसन्न कर सकते हैं, क्योंकि इनके साथ व्यवहार करना सरल होता है। इनमें कल्पना-शक्ति तथा तर्क-शक्ति की कमी पाई जाती है।

(८) **ऊंचा और संकरा सिर**—ऐसे सिर वाले व्यक्ति बड़े लगन-शील तथा आशावादी होते हैं। वे दैवी शक्ति अथवा भाग्य पर बहुत भरोसा करते हैं। ऐसे लोग किसी नये रास्ते पर चलना पसन्द नहीं करते, अपितु उन्हीं विधियों तथा तरीकों पर चलना चाहते हैं, जिनकी अन्य लोग पहले से परीक्षा कर चुके हैं। फलस्वरूप ऐसे व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में अग्रगामी अथवा अन्वेषक नहीं बन पाते। इन लोगों में कभी-कभी उद्दण्डता के लक्षण भी पाये जाते हैं।



मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्र तथा मानसिक शक्तियां

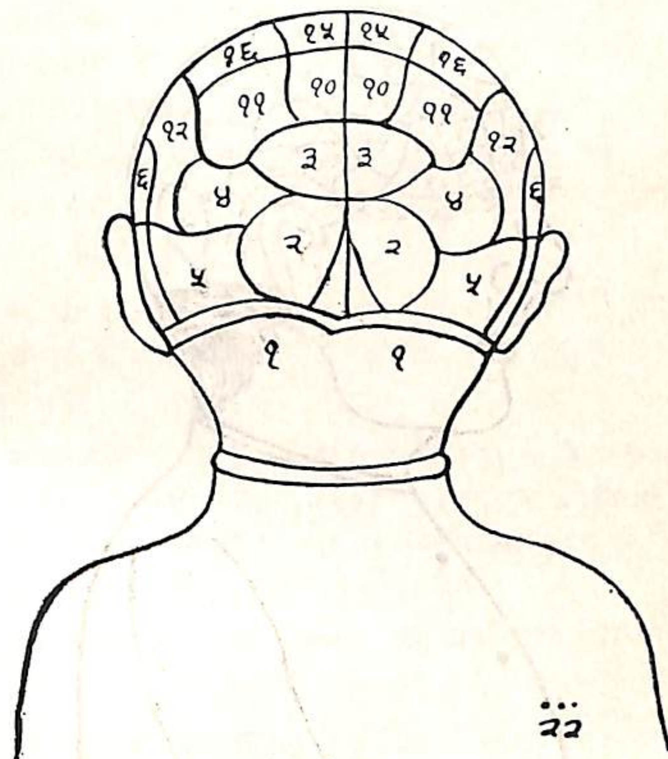
मस्तिष्क-विज्ञान (Phrenology) के पश्चिमी विद्वानों के मतानुसार सम्पूर्ण मस्तक बनावट का निरीक्षण करके मानव-चरित्र का विश्लेषण किया जा सकता है। उनका मत है कि 'मन' का निर्माण पैंतीस विभिन्न स्थानीय मानसिक-शक्तियों अथवा चारित्रिक लक्षणों से हुआ है और उनमें से प्रत्येक लक्षण एक विशिष्ट अंग अथवा मस्तिष्क के क्षेत्र में स्थित है। खोपड़ी के स्वरूप में प्रतिबिम्बित इनमें से प्रत्येक मानसिक शक्ति के आकार तथा विकास का सावधानी से निरीक्षण करके जातक की विशिष्टताओं का वर्णन किया जा सकता है।

विभिन्न मानसिक-शक्तियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए खोपड़ी को ३५ भागों में विभक्त किया गया है। चित्र संख्या २१, २२ तथा २३ में इन विभागों को प्रदर्शित किया गया है। प्रत्येक विभाग में उसकी संख्या लिख दी गई है, उससे सम्बन्धित मानसिक शक्ति का वर्णन अगले पृष्ठों में यथास्थान पर किया गया है।

कुछ मानसिक शक्तियों के लिए दो-दो स्थान निश्चित किये गये हैं और उन दोनों स्थानों में एक सी संख्या लिखी गई है।

उसका कारण यह है कि खोपड़ी को दायें तथा बायें दो अर्द्धांशों में बंटा हुआ माना गया है, अतः कुछ मानसिक-शक्तियां इन दोनों अर्द्धांशों में अपने सम्बन्धित स्थानों में पाई जाती हैं। अस्तु, मस्तिष्क-विज्ञान का अभ्यास करते समय किसी व्यक्ति के चरित्र के सम्बन्ध में

[खोपड़ी का अग्रभाग और उसके विभिन्न उपविभाग]



[खोपड़ी का पृष्ठ भाग और उसके विभिन्न उपविभाग]

किसी निर्णय पर पहुंचने से पूर्व उसकी खोपड़ी के दाएं और बाएं दोनों भागों की मानसिक स्थितियों के आधार पर ध्यान देना आवश्यक है।

मस्तक के उभार कुछ तो स्पष्ट रूप से आंखों द्वारा ही देखे जा सकते हैं, परन्तु कुछ की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए उंगलियों द्वारा उस स्थान का स्पर्श करना आवश्यक है।

मस्तिष्क-विज्ञान (Phrenology) के प्रतिपादक गल (Gull)



[खोपड़ी का दायां भाग और उसके विभिन्न उपविभाग]

तथा स्पर्जिम (Spurzheim) बन्धुओं का कहना है कि ३५ मानसिक-शक्तियों में २५ ऐसी हैं, जिनके उभार को जानने के लिए स्पर्श करना आवश्यक नहीं हैं, परन्तु निम्नलिखित दस मानसिक-शक्तियों की जानकारी के लिए उंगलियों की सहायता लेना आवश्यक होता है। उंगलियों द्वारा वृत्तियों का निरीक्षण करते समय उंगलियों को

संवेदन-शीलता को इतना विकसित करना चाहिए। जिससे कि वे मस्तिष्क के उभार के साधारण से साधारण अन्तर को भी ठीक से जानने में समर्थ हो सकें।

कई मानसिक-शक्तियों का क्षेत्र एक-दूसरे के बहुत समीप स्थित होता है, अतः परीक्षा करते समय सही क्षेत्र का ज्ञान एवं सावधानी रखना अत्यन्त आवश्यक है।

जिन १० मानसिक-शक्तियों के उभार का उंगलियों की सहायता से पता लगाना आवश्यक होता है, उनकी संख्या तथा नाम निम्न-लिखित हैं —

(१) काम-वासना, (२) वात्सल्य-प्रेम, (३) समाज तथा देश-प्रेम की भावना (४) मैत्री-भावना, (१२) सतर्कता एवं संदेहशीलता की प्रवृत्ति, तथा (१६) जागरूकता एवं न्याय-प्रियता—इन छै विभागों की अवस्थिति सिर के पिछले हिस्से में होती है।

(१७) आशावादिता—इस विभाग की अवस्थिति सिर के अगले हिस्से में है।

(५) झगड़ालू प्रवृत्ति अथवा युद्ध-प्रियता, (६) विध्वंसक वृत्ति तथा (७) गोपनीयता की वृत्ति—इन तीन विभागों की अवस्थिति कानों के पिछले हिस्से में है।

सिर के किस स्थान से किस मानसिक-वृत्ति के विषय में क्या ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है तथा इन विभागों के उन्नत होने से जातक के हाथ की बनावट तथा रेखाओं के स्वरूप पर क्या प्रभाव पड़ता है इसका विस्तृत विवरण आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

यहां एक बात यह निरन्तर स्मरण रखने योग्य है कि किसी मान-सिक शांति के उभार को देखकर केवल उसी के आधार पर यह

निष्कर्ष नहीं निकाल लेना चाहिए कि उस व्यक्ति में उस शक्ति से सम्बन्धित विशेषताएं अवश्य ही होंगी। किसी भी अन्तिम परिणाम पर पहुंचने के लिए पूरी खोपड़ी का निरीक्षण तथा विश्लेषण करके यह पता लगाना आवश्यक है कि एक शक्ति के उभार को किसी दूसरी शक्ति के उभार ने व्यर्थ तो नहीं बना दिया है और यदि व्यर्थ बना दिया है तो वह कितने अंश में बनाया है। इस प्रकार सम्पूर्ण शक्तियों के उभार की परीक्षा करने के उपरान्त ही किसी मानसिक शक्ति के प्रभाव सम्बन्धी अन्तिम निष्कर्ष पर पहुंचना ठीक रहता है।

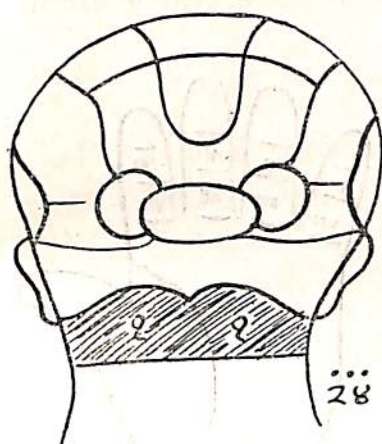
पाठकों की सुविधा के लिए अब हम प्रत्येक मानसिक-शक्ति के क्षेत्र, उसके महत्व, तथा उसका हाथ एवं हाथ की रेखाओं के स्वरूप पर पड़ने वाले प्रभाव का अलग-अलग सचित्र विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं, जो इस प्रकार है—

(१) काम-वासना

चित्र २४ में प्रदर्शित संख्या १ का भाग यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो तो जातक में काम-वासना आवश्यकता से अधिक पाई जाती है। इस मानसिक शक्ति का कार्य शारीरिक-प्रेम की भावना तथा वासनात्मक प्रवृत्ति को उत्पन्न करना है। यह उभार मनुष्य को उत्साह, बल तथा पुंसत्व शक्ति प्रदान करता है।

यह स्थान यदि सामान्य रूप से पुष्ट हो तो मनुष्य में प्रेम-शीलता तथा कामवासना भी सामान्य रूप से बलवान होती है। ऐसे लोग विपरीत सैक्स (यदि जातक पुरुष है तो स्त्री के लिए और स्त्री है तो पुरुष के लिए) के प्रिय बनने के हेतु तथा उन्हें इच्छित वस्तुएं भेंट करने के लिए अत्यधिक परिश्रम के कार्यों द्वारा धनो-पार्जन करते हैं। कभी-कभी उनका निजि आकर्षक व्यक्तित्व ही स्त्रियों को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त होता है। प्रत्येक स्थिति में, इस उन्नत स्थान

वाले व्यक्ति के जीवन पर सैक्स अथवा प्रेम-वासना का प्रभाव सबसे अधिक रहता है।



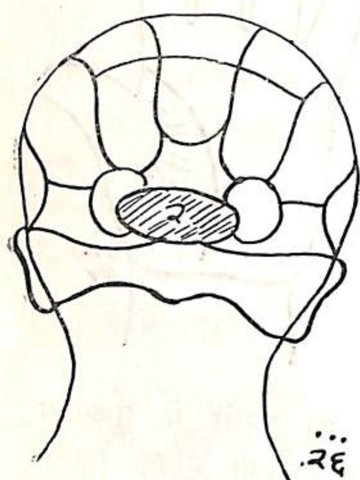


ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में शुक्र-क्षेत्र उभरा हुआ रहता है। शुक्र-क्षेत्र पर कम या अधिक रेखाएं अथवा क्रास चिन्ह भी होते हैं (चित्र संख्या २५) यदि शुक्र-क्षेत्र को कुछ रेखाएं अपूर्ण रूप से घेरे हुए हों, वे टूटी हुई हों अथवा दुहरी तिहरी हों तो जातक का आदर्श गिरा हुआ होता है। वह अपनी वासना तुष्टि के लिए उचित अनुचित का विचार भी नहीं करता, फलतः वह लोक निन्दित तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में असफल भी होता है।

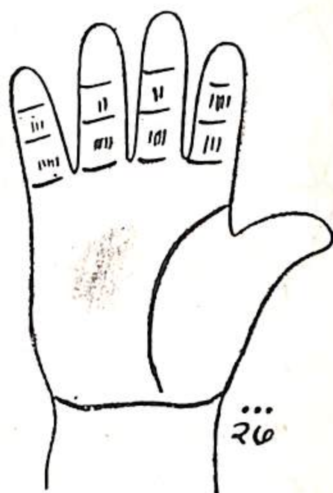
(२) वात्सल्य-प्रेम

चित्र २६ में प्रदर्शित संख्या २ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक में वात्सल्य-प्रेम की भावना अधिक पाई जाती है अर्थात्

ऐसे व्यक्ति अपनी सन्तानों को सामान्य से अधिक प्रेम करते हैं और उनके लालन-पालन पोषण तथा रक्षा में अधिक रुचि लेते हैं। यह स्थान पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के मस्तिष्क में अधिक उन्नत पाया जाता है। इसी कारण पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में वात्सल्य भावना अधिक पाई जाती है।



२६



२७

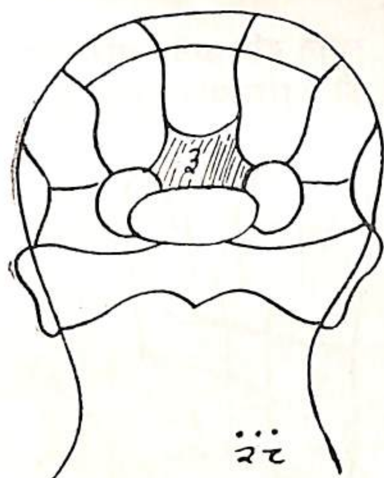
यदि मस्तक के इस भाग पर उभार बहुत अधिक हों तो ऐसे मस्तक वाली स्त्री केवल अपने बच्चों के लिए ही जोवित रहती है। यदि उसके स्वयं बच्चे न हुए तो या तो वह किसी दूसरे के बच्चे को गोद ले लेगी या फिर अपने सम्बन्धियों एवं पड़ोसियों के बच्चों का पालन-पोषण करने में रुचि लेगी ऐसी स्त्रो के हृदय में प्रत्येक बच्चे के लिए अपार स्नेह पाया जाता है। उन्हें बच्चों को छोड़कर किसी उत्सव, मेलं, तमाशे आदि में जाने की इच्छा ही नहीं होती। उन्हें बच्चे भी बहुत अधिक स्नेह करते हैं।

ऐसे उन्नत स्थान वाले जातक की हथेली में बुध-क्षेत्र अधिक उभरा रहता है तथा शुक्र स्थान भी उन्नत होता है, परन्तु उस पर 'क्रास' आदि

के चिन्ह नहीं होते । इन लोगों की उंगलियों पर छोटी-छोटी खड़ी तथा स्पष्ट रेखाएं पाई जाती हैं। (चित्र संख्या २७) ऐसे लोगों के सन्तानें चाहे कम हों अथवा अधिक हों वे सभी को समान रूप से अत्यधिक स्नेह करते हैं।

(३) समाज तथा देश-प्रेम की भावना

चित्र २८—में प्रदर्शित संख्या ३ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक को अपने घर, जाति, समाज तथा देश के लोगों से अत्यधिक प्रेम होता है।



२८



२९

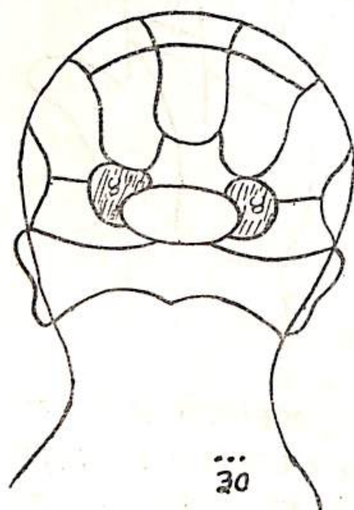
ऐसे व्यक्ति बाहर सैर-सपाटा करने की अपेक्षा अपने घर में रहना ही अधिक पसन्द करते हैं। यदि इस प्रकार के उन्नत भाग वाले हाथ में यात्रा-रेखा भी बलवान हो तो ऐसे व्यक्ति समाज अथवा राष्ट्र सेवा के कार्य के लिए यात्रा भी करते हैं।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति को हथेली में बृहस्पति का क्षेत्र विशेष रूप से उन्नत होता है। ऐसे लोग अपने घर में रहने, दावतें देने तथा अपने निवास-स्थान को प्रत्येक स्थिति में सजाये रखने के शौकीन होते हैं।

यदि ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा तथा यात्रा-रेखा का अथवा दोनों में से किसी एक रेखा का अभाव हो, हथेली मुलायम हो और उंगलियां चमचाकार न हों तथा नाखून छोटे हों तो जातक स्वाभाविक रूप से शासक वृत्ति का होता है। वह अपने घर तथा समाज के लोगों पर शासन करने में कुशल होता है।

(४) मैत्री-भावना

चित्र ३०—में प्रदर्शित संख्या ४ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक में मिलनसारी एवं मित्रता की प्रवृत्ति अधिक होती है।



३०


३१

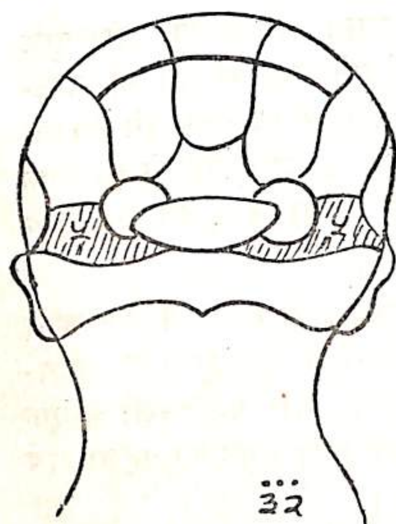
ऐसे लोगों के मित्रों की संख्या बहुत होती है और वे अपने मित्रों के लिए कुछ कष्ट उठाने के लिए भी प्रस्तुत रहते हैं।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में शुक्र तथा बृहस्पति के स्थान पुष्ट तथा उन्नत होते हैं, सूर्य-रेखा अच्छी होती है. अंगूठा कुछ छोटा होता है, उंगलियां वर्गाकार आकृति की होती हैं, हृदय-रेखा कांटेदार अथवा तीर को नोंक के समान आकृति वाली होती है तथा मस्तक-रेखा का ढलान चन्द्र-क्षेत्र की ओर होता है ।

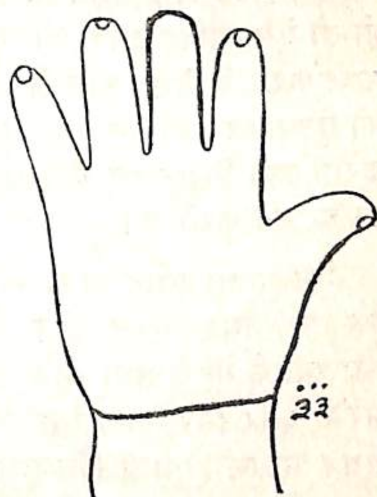
चित्र ३१ में इस प्रकार के स्थान तथा हथेली वाले व्यक्ति के हाथ में यदि सूर्य-रेखा स्पष्ट तथा अच्छे रूप में हो तो जातक उदार, भावुक तथा कवि-वृत्ति का भी हो जाता है । ऐसे लोग मित्रों से हर समय घिरे हुए पाये जाते हैं ।

(५) झगड़ालू प्रवृत्ति अथवा युद्ध-प्रियता

चित्र ३२ में प्रदर्शित संख्या ५ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति कभी दबकर नहीं रहते । वे किसी से झगड़ा हो जाने



३२


३३

पर शान्त नहीं होते । उन्हें जितना अधिक दबाने का प्रयत्न किया

जाता है, उनके मन पर उसकी उतनी ही अधिक तीव्र प्रतिक्रिया होती है। कठिनाइयों के कारण ये लोग घबराते नहीं हैं, बल्कि और भी उग्र-से-उग्रतर होते चले जाते हैं। ऐसे लोग यदि किसी से मुकद्दमे-बाजी में फंस जाते हैं तो फिर सर्वोच्च न्यायालय तक उसका पीछा नहीं छोड़ते।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेलो में मंगल के दोनों क्षेत्र अत्यधिक उभरे हुए तथा रेखा-विहीन होते हैं। चन्द्र-क्षेत्र चमकीला और चिकना होता है तथा नाखून सामान्यतः छोटे आकार के पाये जाते हैं (चित्र संख्या ३३)।

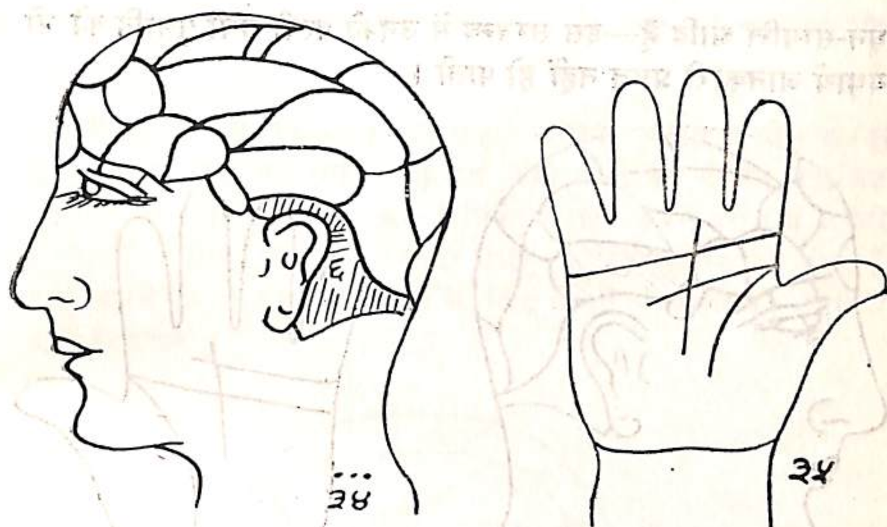
ऐसे लोग जिद्दी स्वभाव के भी होते हैं और जब अपनी हठ पर अड़ जाते हैं, तब किसी के समझाने से भी नहीं समझ पाते।

(६) विध्वंसक-वृत्ति

चित्र ३४ में प्रदर्शित संख्या ६ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति दूसरों को नुकसान पहुंचाने तथा वस्तुओं को नष्ट-भ्रष्ट करने में विशेष रुचि लेने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति पुराने मकानों को तुड़वाकर नया बनवाने, पेड़-पौधों को कटवाने, मैदानों को साफ कराने तथा बिखरे हुए कागजों को फाड़ने अथवा जला देने में आनन्द का अनुभव करते हैं।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में मंगल तथा चन्द्रमा के स्थान अधिक उन्नत होते हैं, हाथ में रेखाएं कम होती हैं, हृदय-रेखा अधिक गहरी तथा लाल रंग की होती है और वह हथेली के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी चली जातो है तथा अंगूठे का पहला पर्व अधिक मांसल होता है (चित्र संख्या ३५)।

ऐसे लोग निर्माण की अपेक्षा विध्वंस के कार्यों में अपनी शक्ति



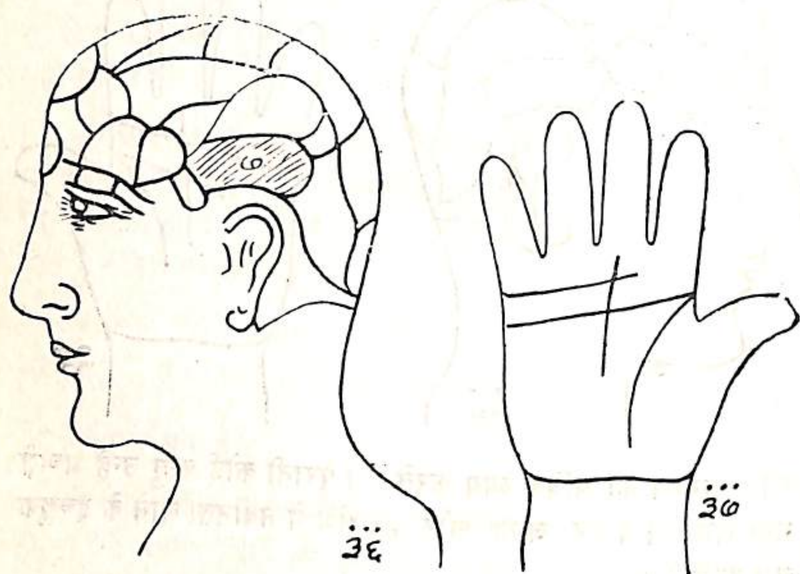
और सामर्थ्य को अधिक व्यय करते हैं। पुरानी कोई वस्तु उन्हें अच्छी नहीं लगती। वे हर जगह और हर क्षेत्र में नवीनता लाने के इच्छुक बने रहते हैं।

(७) गोपनीयता की वृत्ति

चित्र ३६ में प्रदर्शित संख्या ७ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति अपने विचारों को किसी दूसरे के समक्ष बिना किसी विशेष कारण के व्यक्त नहीं करता। ऐसे व्यक्ति चाहे कितने ही मिलनसार अथवा हंसमुख प्रतीत क्यों न होते हों, उनके मन के भेद को कोई नहीं पा सकता।

ऐसे व्यक्ति यदि कोई मकान बनवाते हैं तो उसमें गुप्त तहखाना अथवा अलमारी आदि अवश्य बनवायेंगे। छोटी-से-छोटी वस्तु को भी ताले में बन्द करके रखना उनका स्वभाव होता है। उनके पास कितनी

धन-सम्पत्ति आदि है—इस सम्बन्ध में उनकी पत्नी तथा पुत्रादि को भी यथार्थ जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती ।



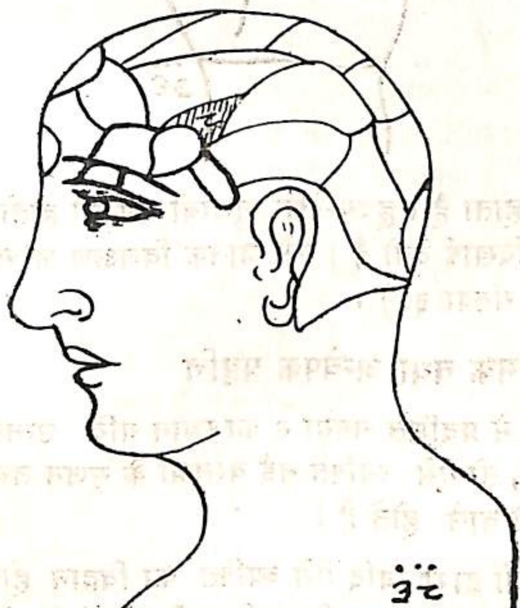
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में मस्तिष्क-रेखा बहुत संकरी (पतली) तथा सीधी पाई जाती है और वह सम्पूर्ण हथेली को काटती हुई एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली जाती है । हाथ की सभी उंगलियों की दूसरी गाठें उभरी हुई होती हैं, सभी उंगलियां लम्बी होती हैं तथा हृदय-रेखा पतली और छोटी होती है । ऐसे व्यक्ति किसी भी गुप्त भेद को छिपाये रखने में अत्यन्त कुशल होते हैं (चित्र संख्या ३७) ।

(८) स्वार्थ एवं अधिकार वृत्ति

चित्र ३८ में प्रदर्शित संख्या ८ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति में स्वार्थ तथा लोभ की भावना अत्यधिक

पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति धन प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बने रहते हैं तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को कष्ट अनुभव नहीं करते।

वे प्रत्येक वस्तु पर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं तथा अपनी मृत्यु के दिन तक भी अपने पुत्र एवं स्त्री आदि को भी स्व-उपार्जित सम्पत्ति पर किसी प्रकार का अधिकार नहीं करने देते। वे अपनी सम्पत्ति, जमीन, जायदाद, रुपया आदि को निरन्तर बढ़ाते रहते हैं और अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए किसी भी काम को करने में नहीं हिचकते।



ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में बुध-क्षेत्र अधिक उभरा हुआ होता है, मस्तक-रेखा अपने मोड़ वाले स्थान पर द्विजिह्वकार होती

है और उसका एक सिरा बुध-क्षेत्र को छूता हुआ निकल जाता है। उंगलियां गंठोली, चमचाकार तथा सामान्य रूप से मुड़ी हुई होती हैं।

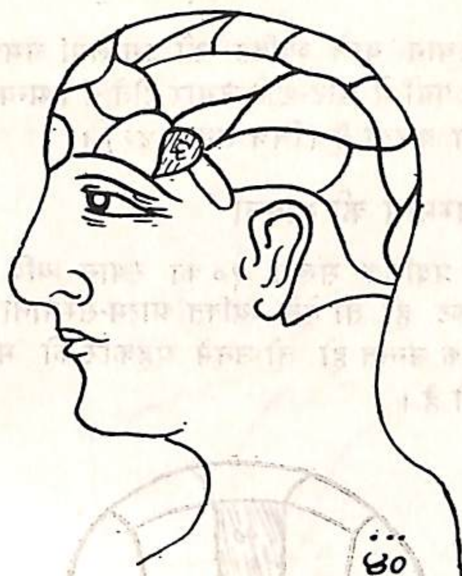


अंगूठा लम्बा होता है। हृदय-रेखा गुलाबी रंग की होती है तथा सूर्य-रेखा सुस्पष्ट दिखाई देती है। ऐसे जातक विलक्षण शक्तियों से सम्पन्न होते हैं (चित्र संख्या ३९)।

(९) सृजनात्मक तथा अन्वेषक प्रवृत्ति

चित्र ४० में प्रदर्शित संख्या ९ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति नई वस्तुओं के सृजन तथा अन्वेषण में अभिरुचि रखने वाले होते हैं।

अन्य लक्षणों द्वारा यदि ऐसे व्यक्ति का विद्वान होना सिद्ध होता हो, तो उसकी सृजनात्मक प्रवृत्ति साहित्य-निर्माण (ग्रंथ-लेखन) के काम में लगेगी और यदि उसमें लोभ एवं संग्रह-शीलता के लक्षण हों तो वह नये भवनों का निर्माण-कार्य करेगा। इसी प्रकार यदि व्यावसायिक



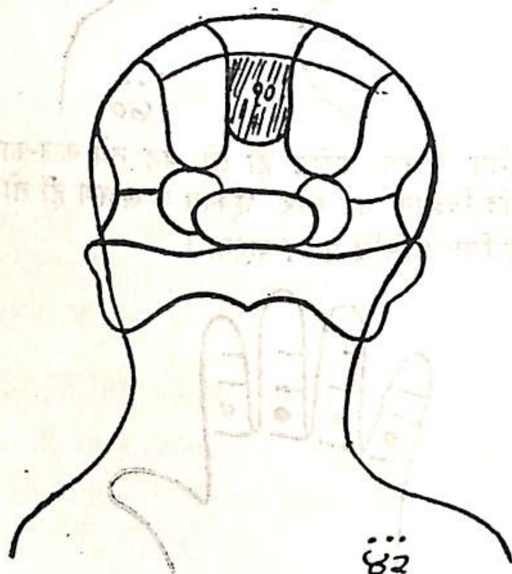
बुद्धि का विशेष लक्षण प्रतीत हो तो वह नये कल-कारखाने खड़े करेगा और यदि विज्ञान की ओर झुकाव के लक्षण हों तो वह नवीन आविष्कारों के लिए प्रसिद्धि प्राप्त करेगा।



ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की उंगलियां चमचाकार होती हैं तथा उनके प्रथम पर्वों में छोटे-छोटे उभार होते हैं। अन्य रेखाएं विविध प्रभाव वाली हुआ करती हैं (चित्र संख्या ४२)।

(१०) आत्म-सम्मान की भावना

चित्र ४२ में प्रदर्शित संख्या १० का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति आत्म-सम्मानी होते हैं। यदि यह भाग अत्यधिक उन्नत हो तो उनमें अहंकार की मात्रा भी विशेष रूप से पाई जाती है।



४२

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में यदि बृहस्पति-क्षेत्र अधिक उन्नत हो, शनि का क्षेत्र उन्नत अथवा रेखांकित हो, मस्तक-रेखा एवं जीवन-रेखा अपने उद्गम स्थान पर एक दूसरे से पूर्णतः

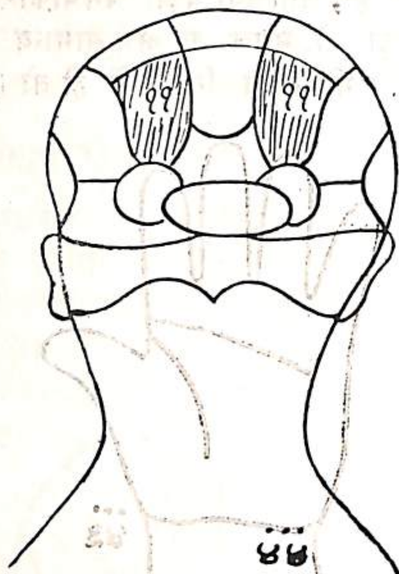
अलग तथा लम्बी हो, उंगलियां बड़ी, चमचाकार एवं गांठदार हों, अंगूठा बड़ा तथा कड़ा हो, मंगल का क्षेत्र सामान्य रूप से उठा हुआ हो तथा शनि का क्षेत्र भी समान स्थिति में हो तो (चित्र संख्या ४३)



जातक में धृष्टता के लक्षण भी पाये जाते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वतन्त्रता-प्रिय, स्वाभिमानी, अहंकारी तथा विद्रोही-भावना से सम्पन्न होते हैं।

(११) आत्म-प्रशंसा की प्रवृत्ति

चित्र ४४ में प्रदर्शित संख्या ११ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति आत्म-प्रशंसक होते हैं, साथ ही यह भी चाहते हैं कि वह व्यक्ति (जातक) जो भी छोटा या बड़ा काम करता है, अन्य सब लोग भी उसकी प्रशंसा किया करें। ऐसे व्यक्ति चापलूसी पसन्द होते हैं तथा खुशामद, प्रशंसा एवं चापलूसी द्वारा इनसे अपना स्वार्थ सिद्ध किया जा सकता है। धनिक वर्ग तथा अधि-कारी वर्ग के लोगों का यह स्थान प्रायः उन्नत पाया जाता है।



ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ की पहली उंगली प्रायः अधिक लम्बी (लगभग दूसरी उंगली के बराबर) होती है। सभी उंगलियां



चिकनी तथा नुकीली होती हैं। शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तथा सूर्य और बुध-क्षेत्र भी उन्नत हों तो जातक में भावुकता के साथ ही आत्म-प्रशंसा करने एवं दूसरों के मुंह से अपनी प्रशंसा सुनने की रुचि विशेष रूप से पाई जाती है (चित्र संख्या ४५)।

(१२) सतर्कता एवं सन्देहशीलता की प्रवृत्ति

चित्र ४६ में प्रदर्शित संख्या १२ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति अत्यधिक सतर्क एवं सन्देहशील स्वभाव के होते हैं। ये लोग प्रत्येक काम का आगा-पीछा सोचते हैं तथा अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर सन्देह करते हैं और यह सोचते हैं कि उस व्यक्ति के कारण उन्हें किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचे।



४६

जिन लोगों का यह भाग सामान्य रूप से उन्नत होता है, उनकी शंकाशीलता दूरदर्शिता के गुण में बदल जाती है और यदि यह भाग

अत्यधिक उन्नत हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक शक्की होता है और वह प्रत्येक व्यक्ति तथा कार्य के विषय में इतना अधिक सन्देह तथा


४७

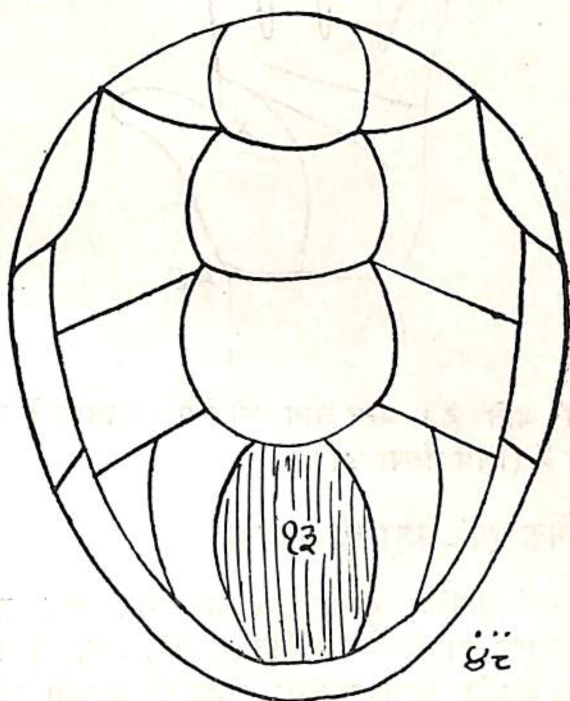
अविश्वास करता है कि इस प्रवृत्ति के कारण उसे अपने कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। यदि यह स्थान अत्यधिक नीचा हो तो ऐसे व्यक्ति सभी लोगों पर सहज ही में विश्वास कर लेते हैं, जिसके कारण उन्हें धोखा खाना पड़ता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति को उंगलियां गंठीली होती है तथा अंगूठा अनुपात से अधिक लम्बा होता है। इनकी हथेली में मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से बहुत दूर तक मिली हुई चलती है और वह सीधी तथा लम्बी होती है। मंगल का क्षेत्र दबा हुआ (निम्न) होता है (चित्र संख्या ४७)।

(१३) दयालुता की प्रवृत्ति

चित्र ४८ में प्रदर्शित संख्या १३ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति सज्जन और दयालु स्वभाव के

होते हैं, वे दूसरों के प्रति उपकार करते रहते हैं और उसका कोई बदला नहीं चाहते ।



ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति का शुक्र-क्षेत्र उठा हुआ होता है तथा 'क्रास' अथवा रेखाओं के चिन्ह होते हैं। बृहस्पति का क्षेत्र सौम्य होता है और उस पर आई हुई हृदय-रेखा कांटेदार अथवा तीर की नोंक जैसी सुन्दर होती है । मस्तक-रेखा लम्बी तथा चन्द्र-क्षेत्र की ओर कुछ झुकी हुई होती है । चन्द्र तथा मंगल के क्षेत्र भी उन्नत होते हैं, परन्तु उन पर कोई रेखा अथवा क्रास-चिन्ह नहीं होता । ऐसे व्यक्ति में उदारता, कृपालुता, दयालुता, सज्जनता आदि सभी सद्गुण विशेष

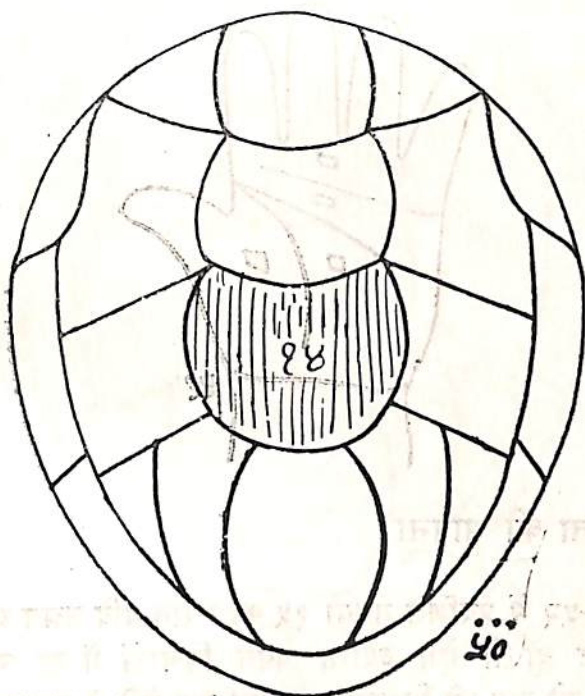


रूप से पाये जाते हैं। अन्य लोग भी ऐसे व्यक्तियों के सद्गुणों को प्रशंसा करते हैं (चित्र संख्या ४६)।

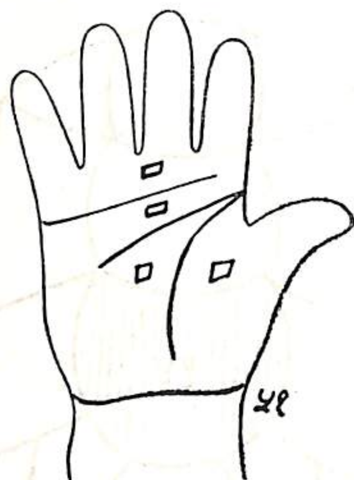
(१४) धार्मिक एवं श्रद्धा की भावना

चित्र ५० में प्रदर्शित संख्या १४ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति गुरुजन, देवता, ईश्वर, शास्त्र एवं अन्य बड़ों के प्रति सम्मान तथा श्रद्धा की भावना रखने वाले होते हैं।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ की उंगलियां अधिक लम्बी तथा चिकनी होती हैं। नाखून बड़े होते हैं, उंगलियों के पर्व चौकोर होते हैं। पहली उंगली कुछ लम्बी तथा नुकीली होती है और उसके पहले पर्व में गांठ नहीं होती। मंगल का क्षेत्र अस्पष्ट होता है। हथेली में कई गहरे चतुष्कोण चिन्ह होते हैं। चन्द्र-क्षेत्र रेखा-हीन उन्नत होता है तथा शनि का क्षेत्र भी उभरा हुआ होता है, जिसके कारण जातक



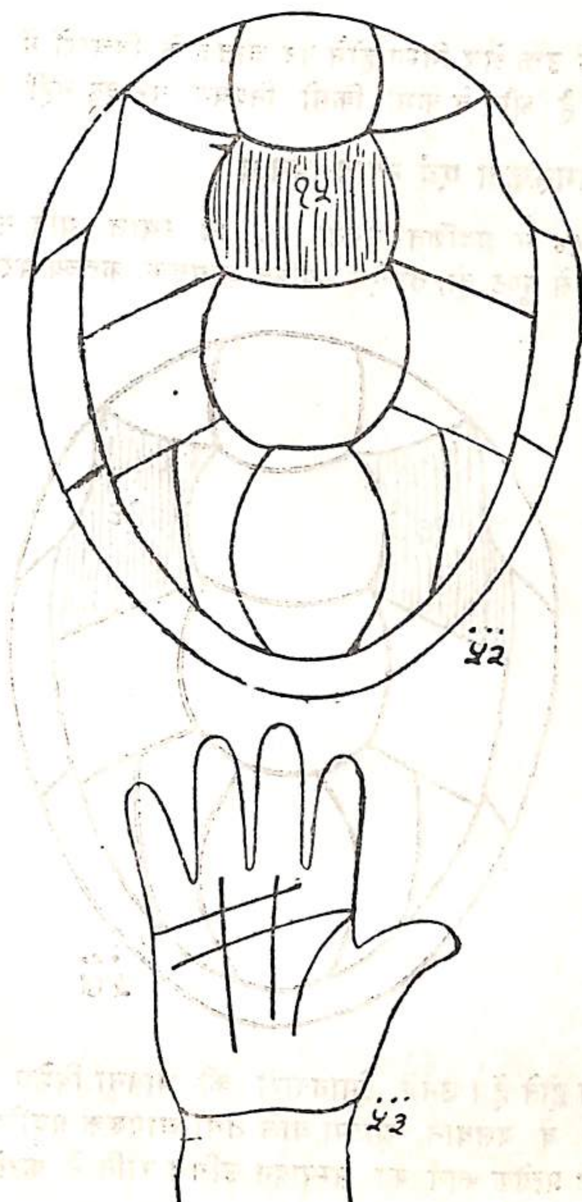
के हृदय में जीवन में आने वाले दुःखों के प्रति भय की भावना बनी रहती है। ऐसे लक्षणों वाले व्यक्ति ईश्वर में आस्था रखने वाले, नियम एवं कानूनों का पालन करने वाले, विनम्र, श्रद्धालु तथा धार्मिक विचारों के होते हैं (चित्र संख्या ५१)।



(१५) दृढ़ता की भावना

चित्र—५२ में प्रदर्शित संख्या १५ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति अपने विचारों में दृढ़ रहने वाले होते हैं। वे जो कुछ भी निश्चय एक बार कर लेते हैं उसका अन्त तक निर्वाह करते हैं। इन लोगों में किसी प्रकार की अस्थिरता नहीं पाई जाती।

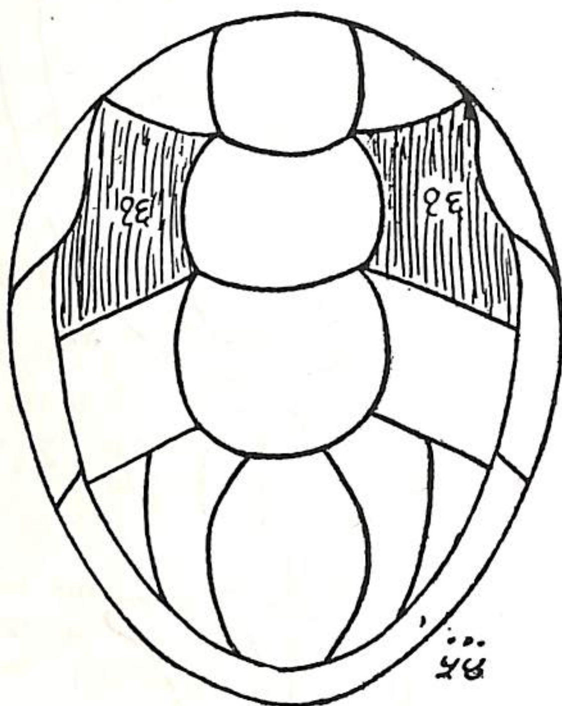
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में मस्तक-रेखा लम्बी होती है। कभी-कभी वह सम्पूर्ण हथेली को पार करती हुई-सी भी दिखाई देती है। उंगलियां लम्बी तथा चतुष्कोण कृति की होती हैं। उंगलियों के भीतरी भाग में तीसरे पर्व की हड्डी प्रायः पतली होती है। अंगूठा सामान्य रूप से चौड़ा तथा लम्बा होता है। मंगल के दोनों क्षेत्र भली-भांति उभरे हुए होते हैं। सूर्य-रेखा पुष्ट तथा बलवान होती है चन्द्र-क्षेत्र क्षीणप्रायः होता है। तथा बृहस्पति-क्षेत्र रेखा-हीन होता है।


१५
५२
५३

मस्तिष्क के उक्त क्षेत्र निम्न होने पर जातक के विचारों में अस्थिरता पाई जाती है और वे कभी किसी निश्चय पर दृढ़ नहीं रह पाते।

(१६) जागरूकता एवं न्याय-प्रियता

चित्र ५४ में प्रदर्शित संख्या १६ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति जागरूक, कर्त्तव्य-परायण तथा



न्याय-प्रिय होते हैं। उनमें ईमानदारी की भावना विशेष रूप से पाई जाती है। वे बलवान आत्मा वाले तथा जागरूक प्रवृत्ति के होते हैं तथा अपने प्रत्येक कार्य का सम्पादन उचित रीति से करते हैं।

ऐसे उच्च स्थान वाले व्यक्ति के हाथ की उंगलियां पर्व-ग्रंथियों से हीन तथा चतुष्कोण कृति की होती हैं। उंगलियों के नाखून छोटे होते हैं। मस्तक-रेखा सामान्य रूप से सीधी होती है। शुक्र तथा बृहस्पति के क्षेत्र पुष्ट होते हैं। मंगल का क्षेत्र रेखा-हीन होता है तथा बुध का क्षेत्र दबा हुआ (नीचा और लुप्त प्रायः) रहता है।



ऐसे लक्षणों वाले व्यक्ति अच्छे खेलों के प्रति रुचि रखने वाले, सच्चे, ईमानदार, प्रत्येक काम को समय पर करने वाले, न्याय का पक्ष लेने वाले तथा दूरदर्शी होते हैं (चित्र संख्या ५५)।

(१७) आशावादिता

चित्र ५६ में प्रदर्शित संख्या १७ का स्थान यदि उन्नत और बिशेष रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति आशावादी स्वभाव के होते हैं। वे कठिन परिश्रम द्वारा प्रतिकूल परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लिया करते हैं। ऐसे लोग किसी भी प्रकार की कठिनाई अथवा संकट

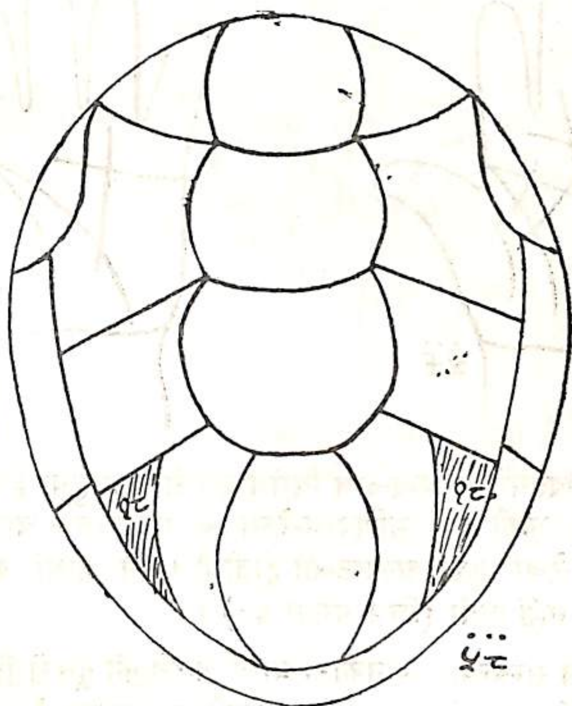
उपस्थित होने पर भी अपने धैर्य को नहीं खोते, फलतः अन्त में उन्हें सफलता प्राप्त हो जाती है।



ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति का क्षेत्र उभरा हुआ होता है, उंगलियां चिकनी तथा नुकीली होती हैं, मस्तक-रेखा पतली तथा चन्द्र-स्थान की ओर मुड़ी हुई रहती है, जा अन्त में कांटेदार अथवा तीर के चिन्ह से युक्त (द्विजिव्ह) हो जाती है। हृदय-रेखा अधिक लम्बी होती है। मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा एक-दूसरी से प्रायः अलग होती हैं। चन्द्र एवं शुक्र-क्षेत्र पूर्ण रूप से उन्नत होते हैं तथा शनि और बुध के क्षेत्र अवनत (अपुष्ट) होते हैं। अंगूठा छोटा तथा नुकीला होता है तथा अनामिका उंगली मध्यमा उंगली के बराबर लम्बी होती है (चित्र संख्या ५७)।

(१८) धार्मिक भावना

चित्र ५८ में प्रदर्शित संख्या १८ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक में धार्मिक-भावना विशेष रूप से पाई जाती है। यदि यह क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो जातक धार्मिक दृष्टि से अन्धविश्वासी भी हो जाता है।



५८

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली अत्यधिक कोमल होती है और उस पर रेखाएं भी अधिक पाई जाती हैं। उंगलियां नुकीली और चिकनी होती हैं। अंगूठा छोटा होता है तथा अन्तर्ज्ञान रेखा बड़ी तथा स्पष्ट होती है (चित्र संख्या ५९)।

योद्धा अथवा व्यवसाय वृत्ति वाले लोगों के हाथों में मंगल-क्षेत्र बड़ा तथा परिपुष्ट होता है। ऐसे लोगों के हाथों में अन्तर्ज्ञान सम्बन्धी योग्यता के विषय में स्पष्ट रूप से उठी हुई सूर्य-रेखा द्वारा जानकारी प्राप्त की जा सकती है।





ऐसे व्यक्तियों का चन्द्र-क्षेत्र विशेष रूप से उठा हुआ होता है तथा मस्तक-रेखा झुकी हुई मणिबन्ध-रेखा के समीप तक चली जाती है और मंगल-रेखा कुछ अस्पष्ट-सी होती है। ऐसे हाथों की शिराएं प्रभावशाली नहीं होतीं (चित्र संख्या ६०)।

अन्तर्ज्ञान सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने की दूसरी विधि शुक्र-क्षेत्र पर कटे हुए रेखा-चिन्हों का निरीक्षण करना है। ऐसा चिन्ह स्त्री जातकों की यौन-सम्बन्धी बीमारियों की ओर इंगित करता है। इस प्रकार के हाथ कोमल, चिकनी एवं छोटी उंगलियों तथा अंगूठे वाले होते हैं। ऐसे हाथों में शनि, बुध तथा चन्द्र-क्षेत्र विशेष उन्नत अथवा रेखांकित पाये जाते हैं। हथेली में छोटी-छोटी अनेक अस्पष्ट

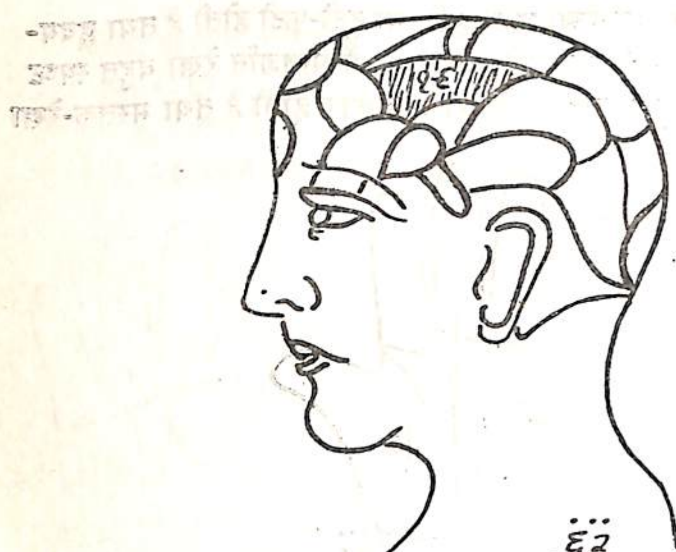
रेखाएं होती हैं, मस्तक-रेखा झुकी हुई तथा टूटी-फूटी होती हैं तथा हृदय-रेखा भी हीन होती है, फिर भी ऐसे हाथों में अन्तर्ज्ञान रेखा बहुत स्पष्ट दिखाई देती है। हृदय-रेखा प्रायः शृंखलाकार होती है तथा मस्तक-रेखा



झुकी हुई और अग्रभाग पर नक्षत्र-चिन्ह युक्त होती है (चित्र संख्या ६१)। स्त्री जातकों के रोग-मुक्त हो जाने पर ऐसी रेखाएं प्रायः लुप्त हो जाती हैं। गर्भावस्था अथवा अन्य बीमारियों के समय ऐसे लक्षण उनके हाथ में देखे जाते हैं, परन्तु प्रसव के पश्चात् लुप्त होने लगते हैं।

(१६) सौन्दर्य-प्रेम एवं आदर्शवादिता

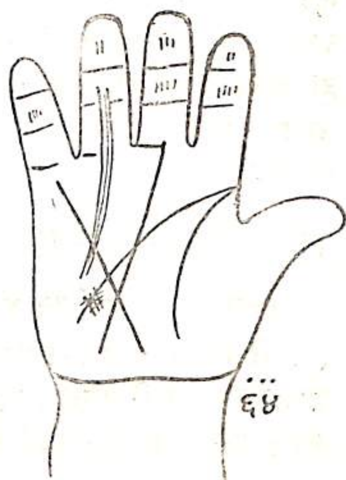
चित्र ६२ में प्रदर्शित संख्या १६ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक आदर्श-सौन्दर्य प्रेमी होता है। उसकी सौन्दर्य-प्रियता वासनात्मक नहीं होती। वह काव्य, कला, संगीत, चित्रकारी अथवा साहित्य—सभी में सौन्दर्य के उत्कृष्ट रूप का दर्शन करना चाहता है।



६२

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में यदि सूर्य-क्षेत्र अधिक उन्नत हो, सूर्य-रेखा स्पष्ट हो और उसका उद्गम सूर्य-क्षेत्र से ही


६३


६४

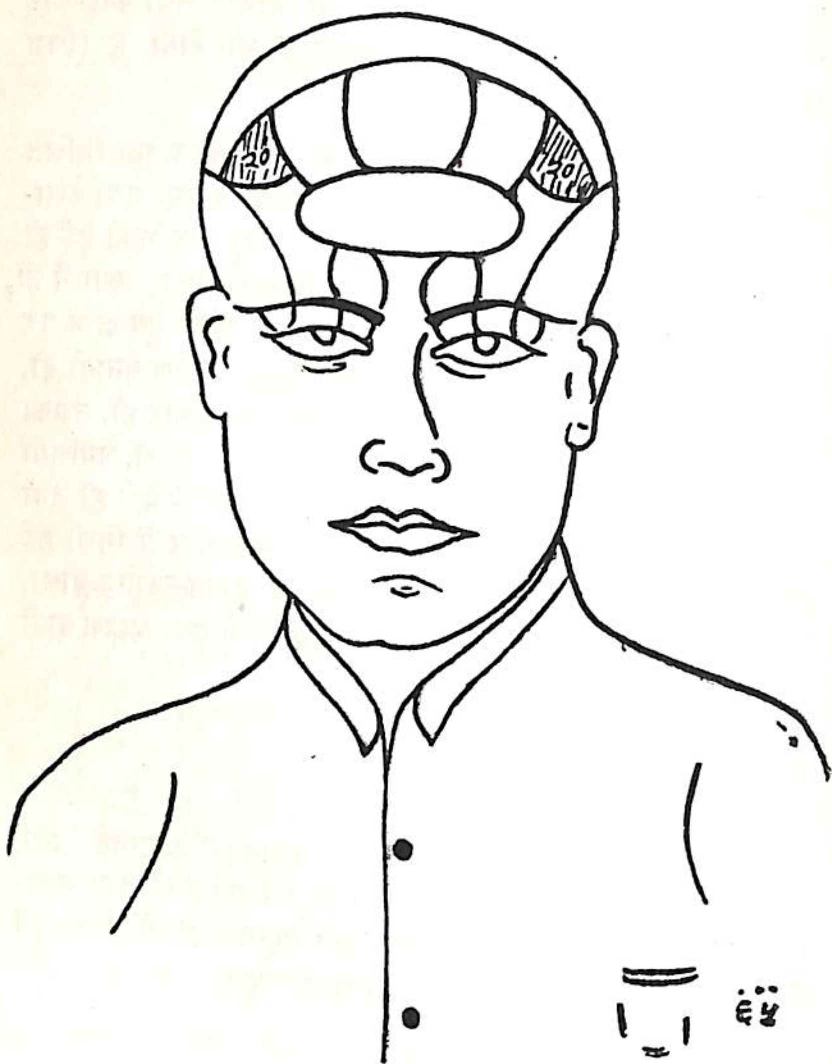
हुआ हो, उंगलियां चिकनी, आंशिक रूप से चौकोर तथा कोई-कोई सूच्याकार भी हों तो जातक क्षणिक-भावुक भी होता है (चित्र संख्या ६३)।

यदि उक्त प्रकार की उंगलियों वाले जातक का अंगूठा मिश्रित प्रकार का हो, उंगलियों के निचले सभी पर्व उभरे हुए तथा रेखा-हीन हों, मस्तक-रेखा बड़ी हो और चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तथा उसमें जाल की भांति अनेक सूक्ष्म शाखा-रेखाएं अधिक संख्या में हों, एक रेखा चन्द्र-क्षेत्र के मूल से उत्पन्न होकर सीधी बुध-क्षेत्र पर पहुंचती हो और भाग्य-रेखा को स्पर्श करती हुई त्रिकोण बनाती हो, हाथ की केवल तीसरी उंगली लम्बी तथा चमचाकार हो, उसका नाखून चौड़ा हो अथवा लम्बाई के साथ समुचित प्रकार का हो, उंगलियों के दूसरे और तीसरे पर्व पर अनेक क्षीण रेखाएं दिखाई देती हों तथा उनमें से कुछ रेखाएं सूर्य-रेखा की भांति चन्द्र-क्षेत्र से मिली हुई प्रतीत होती हों (चित्र संख्या ६४) तो जातक द्रवित-स्वभाव वाला, दयालु, गौरव एवं प्रतिष्ठा युक्त, सौन्दर्य प्रेमी तथा आदर्शवादी होता है।

(२०) हास्य-विनोद की प्रवृत्ति

चित्र ६५ में प्रदर्शित संख्या २० का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक हाजिरजवाब, हास्य-विनोद का प्रेमी तथा मजाकिया प्रवृत्ति का होता है। यदि यह भाग अनुन्नत हो तो जातक में हंसी-मजाक एवं विनोद की प्रवृत्ति का अभाव रहता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथों की उंगलियां लम्बी तथा सुन्दर होती हैं। नाखून बहुत छोटे होते हैं तथा शुक्र एवं मंगल का स्थान पूर्ण रूप से बढ़ा हुआ रहता है। ऐसे लोगों की हथेली में मस्तक-



१२०
१२०

रेखा जीवन-रेखा से बिल्कुल अलग पाई जाती है तथा प्रायः बृहस्पति का क्षेत्र भी उन्नत होता है। किन्हीं-किन्हीं लोगों के हाथों में बुध का क्षेत्र भी उठा रहता है (चित्र संख्या ६६)।



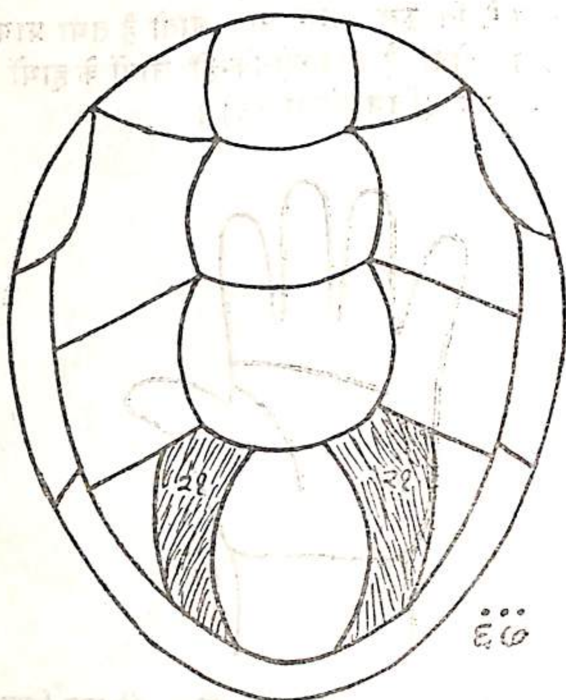
६६

ऐसे व्यक्ति दूसरे लोगों के साथ शीघ्र ही घुल-मिल जाते हैं। इनमें कुछ लोगों का तिरस्कार करने तथा कुछ की नकल उतारने की भावना भी पाई जाती है।

(२१) बनावटीपन तथा नकल करने की प्रवृत्ति

चित्र ६७ में प्रदर्शित संख्या २१ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक में दूसरों की नकल करने की प्रवृत्ति पाई जाती है तथा उसमें बनावटीपन की भावना अधिक होती है।

ऐसे व्यक्ति के हाथ में यदि विद्वता के अन्य विशिष्ट लक्षण भी हों तो जातक साहित्य-लेखन अथवा यन्त्र-निर्माण में अन्य लोगों का



अनुकरण करता है। यदि विद्वता के लक्षण न हों तो जातक दूसरों की नकल करने, लोगों का मजाक बनाने तथा चुहलबाजी करने में प्रवीण होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में बुध का क्षेत्र ऊंचा उठा हुआ रहता है, साथ ही शुक्र-क्षेत्र एवं सूर्य-क्षेत्र भी उन्नत होते हैं। हाथ की उंगलियां चिकनी तथा मिश्रित प्रकार की होती हैं। सूर्य-रेखा अच्छी होती है। हृदय-रेखा गहरी होती है तथा मस्तक-रेखा के मोड़ पर एक तीर जैसा बड़ा चिन्ह पाया जाता है जो शुभ होता



है ऐसे व्यक्ति के हाथ में यदि मंगल का क्षेत्र भी उन्नत हो तो उसे अत्यन्त शुभ फलकारक समझना चाहिए (चित्र संख्या ६८)।

(२२) वर्गीकरण तथा वस्तु-निर्देशक की प्रवृत्ति

चित्र ६९ में प्रदर्शित संख्या २२ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक में विश्लेषणात्मक बुद्धि विशेष पाई जाती है। वह उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने तथा संयुक्त विचारों अथवा वस्तुओं को अलग-अलग करने में निपुण होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में बुध-क्षेत्र उन्नत होता है। उंगलियां लम्बी तथा चिकनी होती हैं। वर्गीकरण की प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के हाथ की उंगलियां गांठदार तथा चमचाकार होती हैं।

अन्वेषण की वृत्ति वाले व्यक्ति की हथेली कोमल होती है तथा उंगलियों के नाखून छोटे होते हैं। मस्तक-रेखा लम्बी होती हुई बुध-



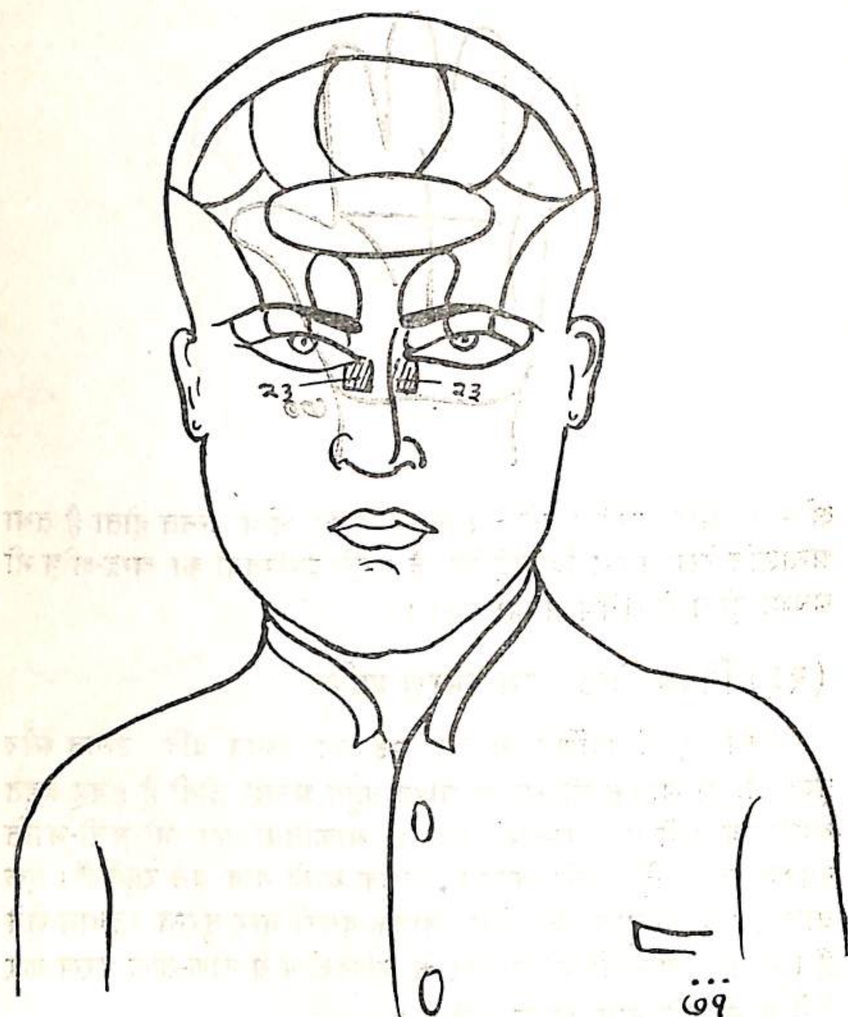


क्षेत्र की ओर झुकी रहती है। बृहस्पति का क्षेत्र उन्नत होता है तथा अन्तर्ज्ञान रेखा स्पष्ट दिखाई देती है। ऐसे व्यक्तियों का चन्द्र-क्षेत्र भी अच्छा होता है (चित्र संख्या ७०)।

(२३) नियम-निष्ठा तथा स्मरण-शक्ति

चित्र ७१ में प्रदर्शित संख्या २३ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक की स्मरण-शक्ति बहुत अच्छी होती है। वह बहुत समय पूर्व देखी गई वस्तुओं अथवा आकृतियों को भी भली-भांति स्मरण रखता है। उसे कविता, श्लोक आदि याद बने रहते हैं। एक बार देखे हुए मनुष्य को ऐसे जातक दूसरी बार तुरन्त पहचान लेते हैं। साथ ही वस्तुओं की आकार के दृष्टिकोण से ठीक-ठीक परख कर लेने में भी ऐसे लोग प्रवीण होते हैं।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में जीवन-रेखा कुछ झुक-कर हाथ के भीतर मुड़ी हुई सी शुक्र-क्षेत्र तक चली गई हो, सूर्य-रेखा



सुन्दर हो और उंगलियां चिकनी तथा सामान्य रूप से चौकोर हों (चित्र संख्या ७२) तो जातक कला के प्रति सम्मान रखने वाला होता है।



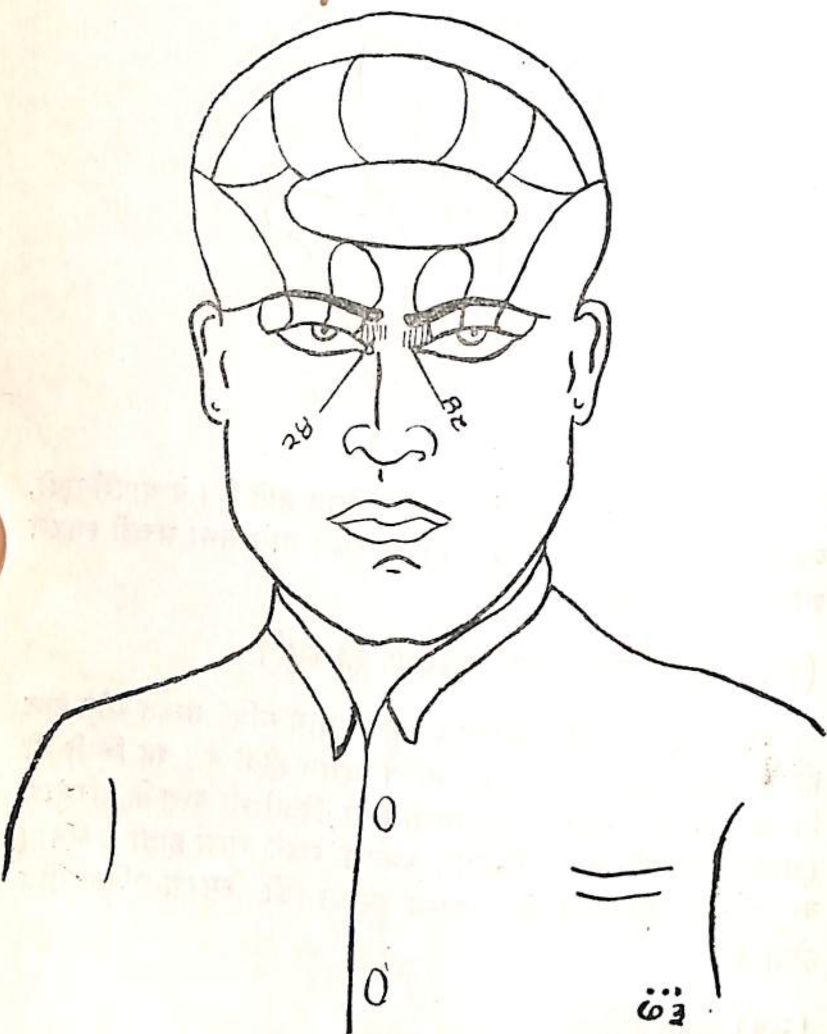
ऐसे लोग प्राय: चित्रकार अथवा संगीतज्ञ होते हैं। वे आदर्शवादी, व्यावहारिक, नियमों के प्रति निष्ठा रखने वाले तथा अच्छी स्मरण शक्ति वाले होते हैं।

(२४) उचित न्याय एवं परिमाण की स्मृति

चित्र ७३ में प्रदर्शित संख्या २४ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक की परखने की शक्ति उत्तम होती है। वह किसी भी विषय में उचित न्याय करने वाला तथा किसी भी वस्तु के परिमाण (लम्बाई-चौड़ाई) को भली-भांति स्मरण रखने वाला होता है अर्थात् वस्तुओं के परिमाण के सम्बन्ध में उसकी स्मरण-शक्ति तीव्र होती है।

(२५) स्पर्श-शक्ति

चित्र ७४ में प्रदर्शित संख्या २५ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक की स्पर्श-शक्ति उत्तम होती है। वह किसी भी वस्तुअ


२४
२८



को छूकर अथवा उसे हाथ में लेकर उसके वजन आदि का अनुमान भला-भांति लगा लेता है।

ऐसे व्यक्तियों की उंगलियां चमचाकार हों और उनके अग्रभाग गोलाई लिए हों, उंगलियां भीतर की ओर झुकी हुई हों तथा उनके पर्व गेंद की तरह उभरे हुए हों, तो जातक में श्रेष्ठ स्पर्श-शक्ति, पूर्ण सम-सीमान्तता तथा धैर्य—ये सभी गुण विशेष मात्रा में पाये जाते हैं।

(२६) रंगों का परिज्ञान

चित्र ७५ में प्रदर्शित संख्या २६ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक रंगों का परिज्ञान भली-भांति कर सकता है। वह रंगों के सूक्ष्मतम अन्तर का बड़ा पारखी होता है। ऐसे व्यक्ति रत्नों के रंगों की परीक्षा करने में भी अत्यन्त कुशल होते हैं।

कौन-सा जातक किस रंग का विशेष अनुभवी होता है—इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

यदि केवल मंगल का क्षेत्र अधिक उन्नत तथा विकसित हो तो जातक लाल रंग का विशेष पारखी होता है। यदि बृहस्पति और मंगल—दोनों क्षेत्र उन्नत हों, तो जातक भड़कीले रंगों का विशेषज्ञ होता है। यदि सूर्य-क्षेत्र उन्नत हो तो पक्के रंगों का, शनि-क्षेत्र उन्नत हो तो गहरे रंगों का, बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो हल्के रंगों का और यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत हो तो चांदी जैसे भूरे अथवा हल्के नीले रंग का विशेषज्ञ होता है। ऐसे उन्नत (चन्द्र-क्षेत्र वाले) जातक कंजी आंखों वाले होते हैं।

यदि शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक हल्के गुलाबी रंग का विशेष पारखी होता है।

(२७) स्थान-रुचि एवं भ्रमणेच्छा

चित्र ७६ में प्रदर्शित संख्या २७ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट





हो, तो जातक भ्रमण-शील एवं यात्रा-प्रेमी होता है। उसमें स्थान-परिवर्तन की विशेष रुचि पाई जाती है।

ऐसे जातक के हाथ में यदि चन्द्र-क्षेत्र ऊंचा उठा हुआ हो तथा सूर्य-रेखा अच्छी हो तो उसे थल यात्रा एवं जल-यात्रा करने का शौक होता है।



यदि चन्द्र-क्षेत्र के समीप मणिबन्ध-रेखा के ऊपर की ओर कुछ रेखाएं उठी हुई हों अथवा चन्द्र-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो (चित्र संख्या ७७) तो जातक को जल-यात्रा के समय किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ता है।

मणिबन्ध-रेखा से चन्द्र-क्षेत्र की ओर उठी हुई रेखाएं यात्रा-रेखाएं होती हैं। इन रेखाओं पर यदि द्वीप-चिन्ह हो अथवा चन्द्र-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो तो जातक को थल-यात्रा एवं जल-यात्रा के समय आकस्मिक दुर्घटनाओं का शिकार बनना पड़ता है।

(२८) गणितज्ञता एवं मूल्यांकन वृत्ति

चित्र ७८ में प्रदर्शित संख्या २८ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक किसी भी वस्तु का मूल्यांकन करने में निपुण होता है और उसकी तर्क-बुद्धि श्रेष्ठ होती है।



ऐसे उन्नत स्थान वाले जातक के हाथ की उंगलियां चौकोर हों, उसकी दोनों गांठें उन्नत हों, अंगूठा लम्बा हो, मस्तक-रेखा सीधी हो

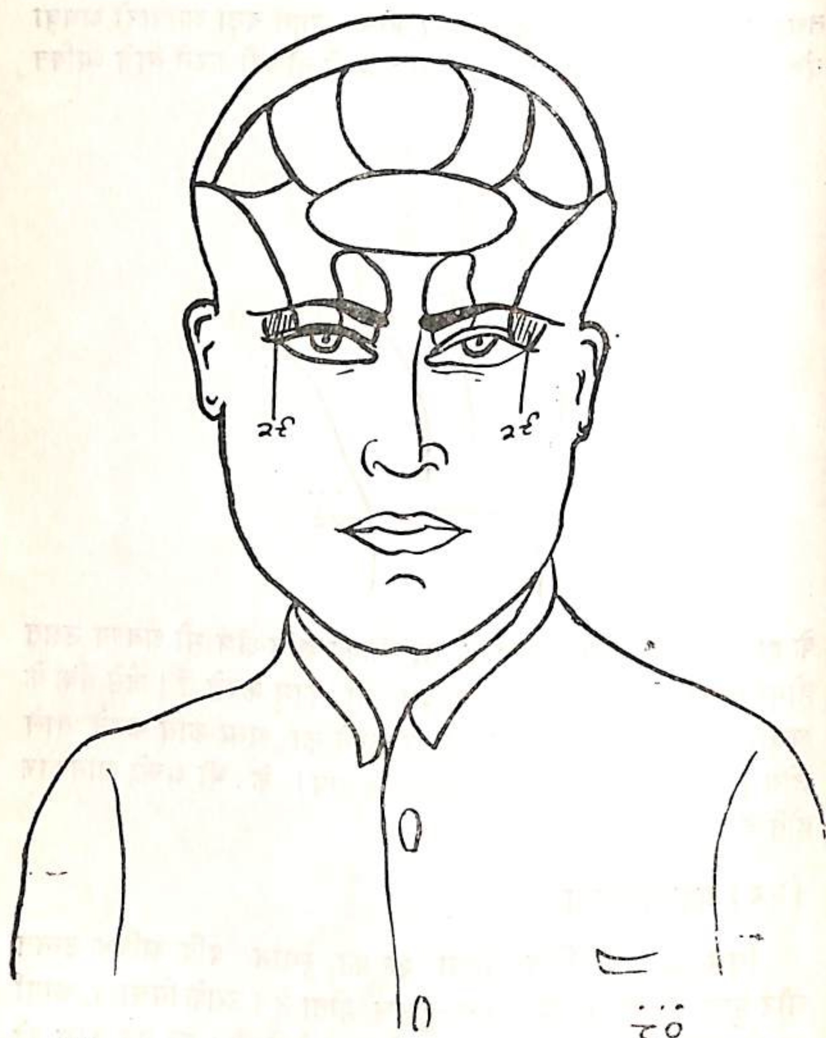
तथा बृहस्पति का क्षेत्र उन्नत हो तो जातक बहुत बड़ा व्यापारी अथवा बैंकर होता है(चित्र संख्या ७६)। यदि किसी नौकरी करने वाले व्यक्ति



के हाथ में ऐसे लक्षण दिखाई दें तो उसका शनि-क्षेत्र भी अवश्य उन्नत होगा। ऐसे लोग रुपयों के लेन-देन का काम करते हैं। जैसे बैंक के खजान्ची, कलैक्टर तथा धन इकट्ठा करने का अन्य कार्य करने वाले लोग। ऐसे लोग गणित (हिसाब-किताब) के भी अच्छे जानकार होते हैं।

(२६) प्रबन्ध-पटुता

चित्र ८० में प्रदर्शित संख्या २६ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक प्रबन्ध-कुशल होता है। उसके विचारों, कार्यों तथा व्यवहार में सर्वत्र सुव्यवस्था दिखाई देती है। वह हर काम को तरीके से करता है तथा प्रत्येक वस्तु को ठीक ढंग से रखने का आदी होता है।



८०

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथों की उंगलियां लम्बी तथा गांठदार होती हैं। उनके पर्व चौकोर तथा नाखून छोटे होते हैं। सामान्यतः बृहस्पति का क्षेत्र मुख्य रूप से उभरा हुआ होता है।

(३०) घटनाओं की स्मृति

चित्र ८१ में प्रदर्शित संख्या ३० का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक को पुरानी घटनाओं की अच्छी स्मृति बनी रहती है। वह घटनाओं के प्रति रुचि रखने वाला होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ में शुक्र-क्षेत्र का उभार अच्छा होता है। सामान्य रूप से चन्द्र, बृहस्पति तथा बुध के क्षेत्र भी अच्छे रहते हैं।

(३१) घटना-काल की स्मृति

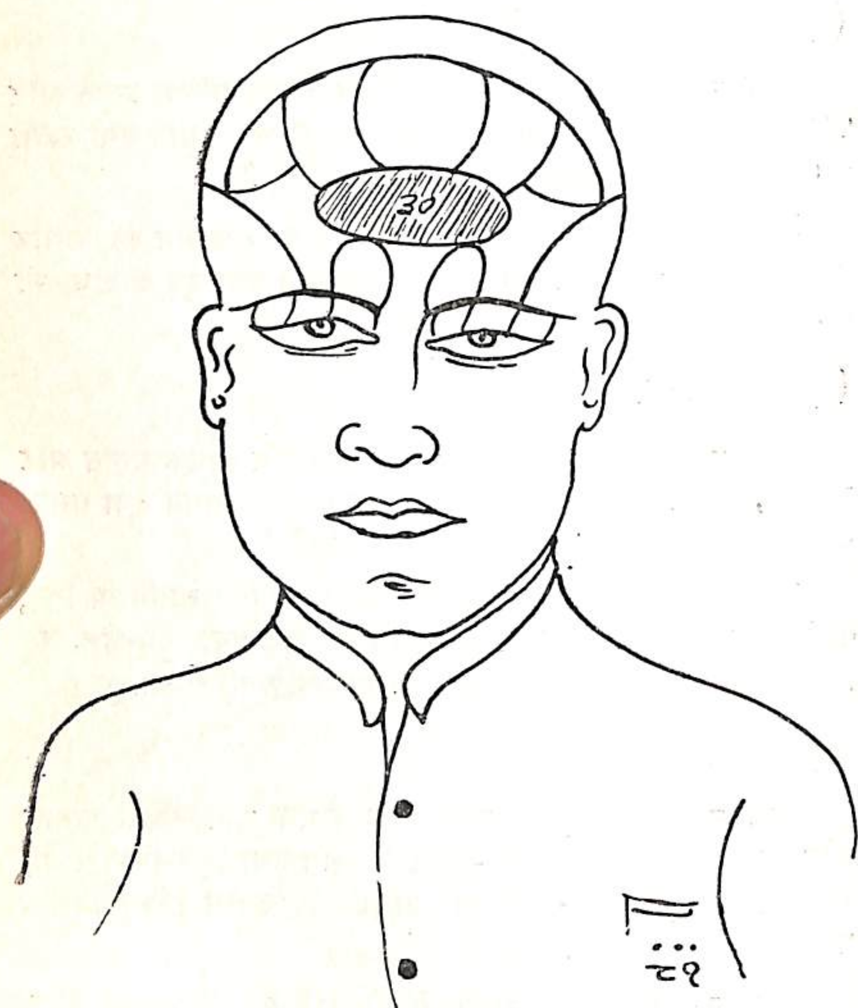
चित्र ८२ में प्रदर्शित संख्या ३१ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो; तो जातक को पुरानी घटनाओं के घटने का समय तथा समय-सम्बन्धी अन्य बातों की अच्छी जानकारी रहती है।

जातक के हाथ पर इस विषय से सम्बन्धित कोई अन्य विशेष चिह्न नहीं पाये जाते। केवल चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र तथा बुध-क्षेत्र की स्थिति को ध्यान में रखकर ही कोई विशेष निर्णय करना चाहिए।

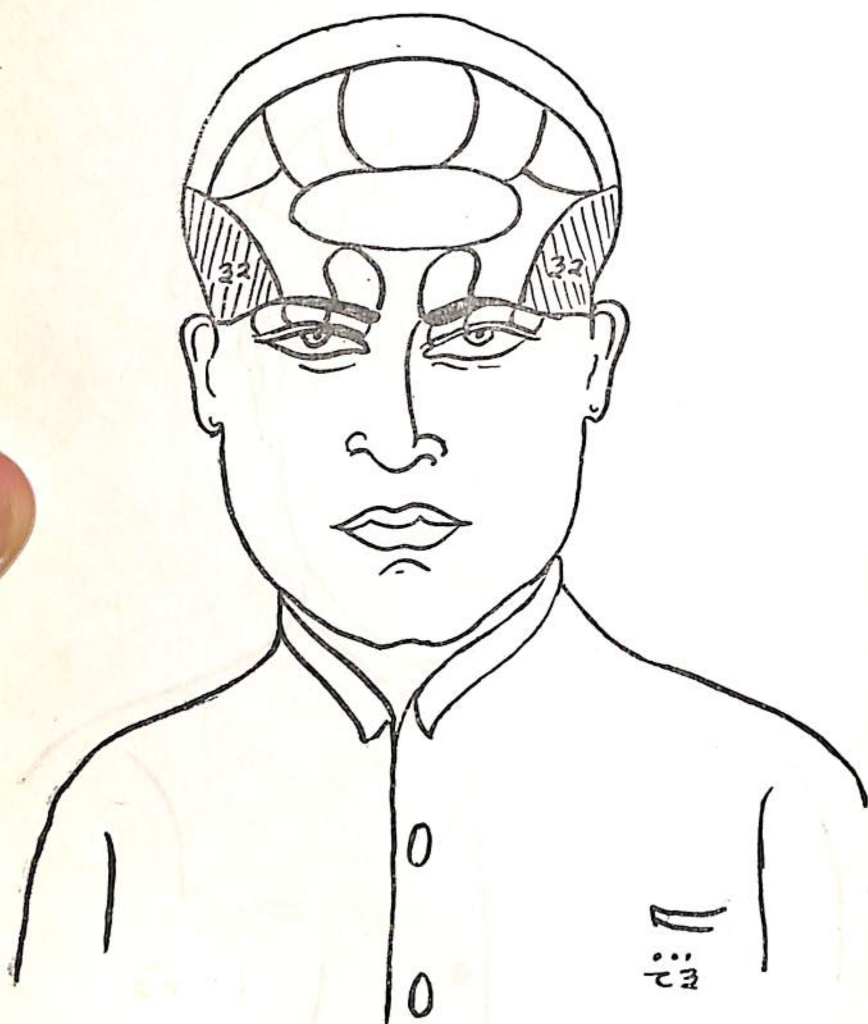
(३२) स्वर-ज्ञान

चित्र ८३ में प्रदर्शित संख्या ३२ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक गायन-वादन में कुशल तथा भिन्न-भिन्न रागों, रसों एवं तालों का सूक्ष्म-ज्ञान रखने वाला और उनका उचित विश्लेषण करने में कुशल होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्तियों की उंगलियों की लम्बाई, गाठें, उनके अग्रभाग, नाखूनों की बनावट तथा ग्रह-क्षेत्रों की उन्नत स्थिति की भिन्नता के अनुरूप उनकी स्वर सम्बन्धी योग्यता का पृष्ठ १२६-१२७ दिये गए अनुसार विश्लेषण करना चाहिए।


३०
ह
८१


२९
२९



यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक कल्पना प्रधान संगीत का (Hramony) विशेषज्ञ होता है । इसके लिए उंगलियों का गांठदार, चिकना, उन्नत पर्व वाली तथा पीछे की ओर झुका होना आवश्यक है ।

यदि शुक्र-क्षेत्र अधिक उन्नत हो, तो जातक भाव-प्रधान संगीत (Melody) का विशेषज्ञ होता है।

यदि बृहस्पति का क्षेत्र पुष्ट हो, तो जातक तीखे-स्वर वाले पीतल के बाजे, यान्त्रिक-संगीत, धार्मिक संगीत, (भजन आदि) तथा शान्ति पूर्ण ध्वनियों का श्रेष्ठ ज्ञाता होता है।

यदि शनि-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक मृत्यु-गीत (मर्सिया) का, सूर्य-क्षेत्र उन्नत हो तो विशुद्ध, साधारण एवं भावात्मक संगीत का, बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो यान्त्रिक संगीत एवं नृत्य-संगीत (Orchestral) का तथा मंगल-क्षेत्र अधिक उन्नत हो, तो युद्ध के प्रयाण गीतों का विशेषज्ञ होता है।

उंगलियां यदि लम्बी हों तो जातक शीघ्रता से बोलने वाला, मिश्रित प्रकार की हों तो रुचि में परिवर्तन रखने वाला तथा छोटी उंगलियों के साथ सूर्य-रेखा सूर्य की उंगली (अनामिका) के मूल तक पहुंच रही हो तो सभी प्रकार के सौन्दर्य का रागात्मक वर्णन करने में कुशल होता है।

(३३) भाषा-ज्ञान

चित्र ८४ में प्रदर्शित संख्या ३३ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो तो जातक का भाषा-ज्ञान अच्छा होता है। अर्थात् ऐसे जातक भाषा सीखने में पटु होते हैं और वे कई भाषाओं के जानकार भी होते हैं।

ऐसे उन्नत क्षेत्र वाले जातक के हाथ में यदि चन्द्र-क्षेत्र पूर्ण रूप से विकसित हो तथा मस्तक-रेखा खूब लम्बी हो (चित्र संख्या ८५) तो जातक को स्मरण-शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है।



इसी के साथ यदि मंगल-क्षेत्र भी पुष्ट हो तो उसे जातक की कार्य-क्षमता का प्रतीक समझना चाहिए।

यदि शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक सब लोगों के हृदय को जीत लेने की शक्ति रखता है। यदि मंगल, बृहस्पति तथा शुक्र के क्षेत्र उन्नत हों तो जातक की वक्तृत्व शक्ति स्पष्ट तथा श्रेष्ठ होती है।

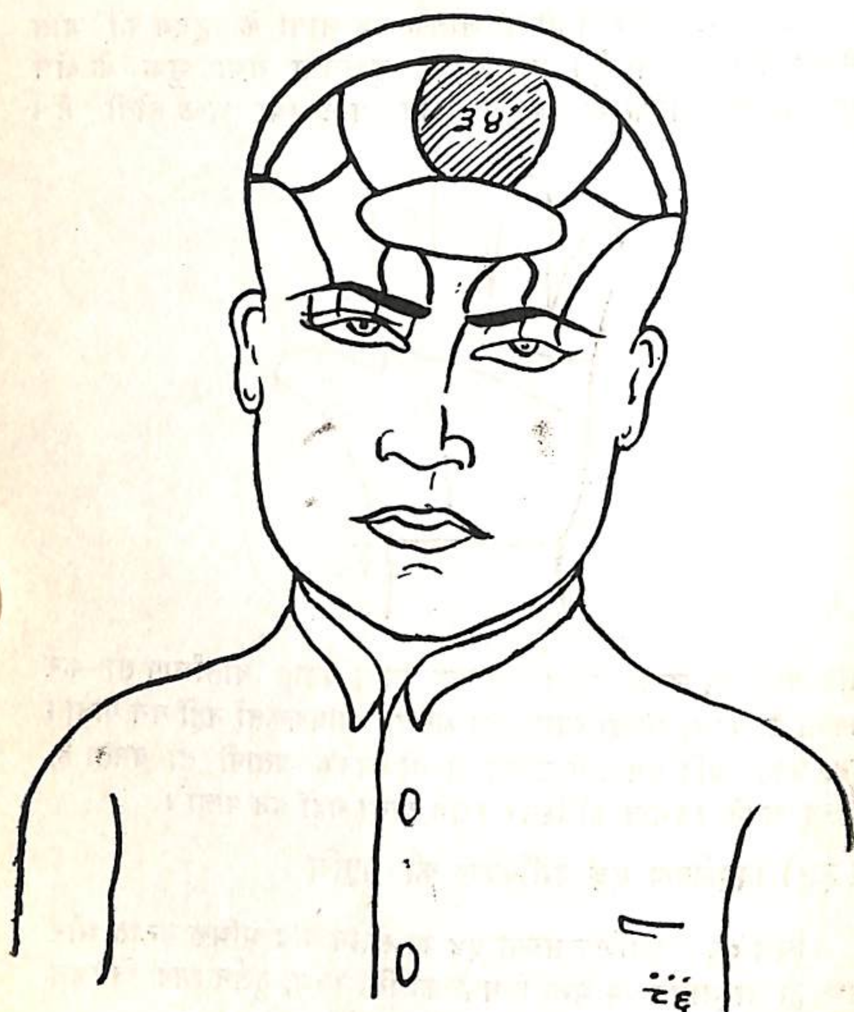


यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक धारा प्रवाह वार्तालाप तो कर सकता है, परन्तु अच्छा व्याख्याता अथवा भाषणकर्ता नहीं बन पाता। इसी प्रकार यदि सूर्य-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक प्रतापी तो बनता है, परन्तु अपने स्वभाव को स्थिर रखने वाला नहीं बन पाता।

(३४) विश्लेषण एवं वर्गीकरण की प्रवृत्ति

चित्र ८६ में प्रदर्शित संख्या ३४ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो तो जातक विभिन्न विषयों का विश्लेषण, तुलनात्मक विवेचन एवं आलोचना करने में विशेष सक्षम होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले जातक की हथेली में सूर्य-क्षेत्र उन्नत हो, सूर्य-रेखा स्पष्ट हो तथा बुध-क्षेत्र का झुकाव सूर्य-क्षेत्र की ओर हो तो



जातक में उक्त गुण और अधिक स्पष्ट होते हैं। चन्द्र तथा शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक की कल्पना-शक्ति भी अच्छी होती है।


३५
३५

यदि हृदय-रेखा अच्छी और लम्बी हो तथा मस्तक-रेखा भी अच्छी स्थिति में चन्द्र-क्षेत्र की ओर कुछ झुकी हुई हो तो जातक विश्लेषण, वर्गीकरण एवं आलोचना के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

(३५) जिज्ञासा-वृत्ति

चित्र ८७ में प्रदर्शित संख्या ३५ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो तो जातक में सहज जिज्ञासा-वृत्ति पाई जाती है।

ऐसे व्यक्ति दर्शन-शास्त्र का विशेष अध्ययन करते हैं तथा आध्यात्मिक एवं दार्शनिक अनुसंधानों में रुचि लेते हैं।



ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ मुलायम होते हैं, उंगलियां लम्बी, गांठदार तथा चमसाकार होती हैं, नाखून छोटे होते हैं, चन्द्र-क्षेत्र उन्नत होता है मस्तक-रेखा कांटेदार अथवा तीर की नोंक के समान चन्द्र-क्षेत्र को ओर झुकी-सी होती है। सूर्य-क्षेत्र सामान्य होता है अथवा नीचे की ओर दबा हुआ रहता है, परन्तु जिज्ञासा यदि सौम्य

सूर्य-क्षेत्र के कारण ही जाग्रत हो तो उस स्थिति में मस्तक-रेखा सीधी तथा लम्बी होती है और सूर्य-रेखा भी बहुत स्पष्ट होती है। ऐसे व्यक्ति की उंगलियां चिकनी होती हैं तथा उनके नाखून छोटे होते हैं (चित्र संख्या ८८)। ऐसे लक्षणों वाला व्यक्ति यदि बिना पढ़ा-लिखा मूर्ख भी हो तो भी, वह आध्यात्मिक-ज्ञान को सहज ही में प्राप्त कर लेता है।

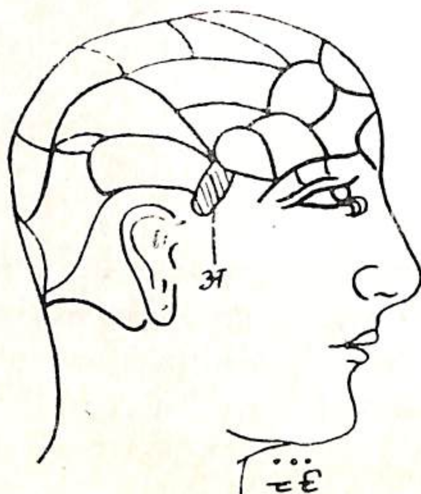
अन्य विषयों का ज्ञान

मस्तक के विविध उन्नत भागों की मानसिक वृत्तियों द्वारा जातक के जीवन-चरित्र तथा योग्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन पीछे किया जा चुका है।

मस्तिष्क-विज्ञान के कुछ अन्य विद्वानों ने उक्त पैंतीस स्थानों के अतिरिक्त तीन अन्य स्थानों का भी उल्लेख किया है; जो जातक की विभिन्न मानसिक-वृत्तियों पर प्रभाव डालने वाले सिद्ध होते हैं। उन स्थानों, मानसिक वृत्तियों तथा स्थान के उभार सम्बन्धी प्रभाव के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) खान-पान की प्रवृत्ति

चित्र संख्या ८६ में प्रदर्शित 'अ' स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो



८६

तो जातक खान-पान का बहुत अधिक शौकीन होता है। ऐसे व्यक्ति तगड़े शराबी भी हो सकते हैं। इन लोगों को नकली अथवा असली भूख हर समय बनी रहती है और ये अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए हर समय लालायित बने रहते हैं।

ऐसे उन्नत-स्थान वाले लोगों की प्रत्येक उंगली का तीसरा पर्व भीतर की ओर उठा (झूला) हुआ रहता है, उंगलियां चिकनी तथा नुकीली होती हैं, मस्तक-रेखा तुलनात्मक रूप से छोटी तथा सीधी होती है।

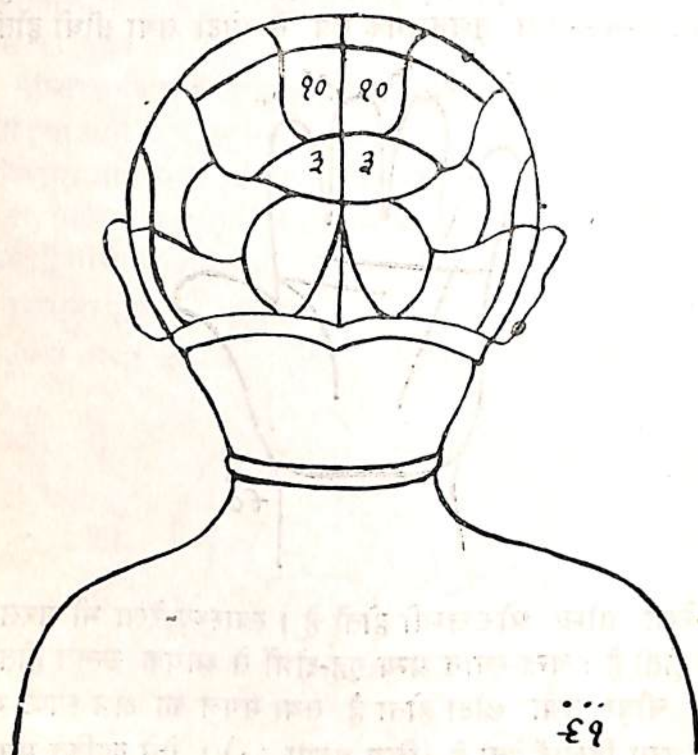


९०

हृदय-रेखा सौम्य और लम्बी होती है। स्वास्थ्य-रेखा भी सरल तथा स्पष्ट होती है। चन्द्र-स्थान अन्य गृह-क्षेत्रों से अधिक उन्नत होता है। अंगूठा चौड़ा तथा छोटा होता है तथा मंगल का क्षेत्र स्पष्ट रूप से उभरा हुआ दिखाई देता है (चित्र संख्या ९०)। ऐसे व्यक्ति मंगलीय-स्वभाव के होते हैं।

(२) एकाग्रता की भावना

चित्र ६१ में प्रदर्शित संख्या १० तथा ३ के बीच वाला स्थान यदि अधिक उन्नत हो तो जातक में एकाग्रता की भावना विशेष रूप से पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति ध्यान अथवा समाधि लगाने में विशेष प्रवीण होते हैं।



६१

ऐसे व्यक्ति कभी-कभी अपने काम में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि चीख-पुकार करके भी उनके ध्यान को बंटा पाना मुश्किल होता है।

ऐसा व्यक्ति अपने विचारों को स्वयं क्रियान्वित करने में तथा अपनी सुचिन्तित योजनाओं को दूसरों द्वारा क्रियान्वित कराने में विशेष कुशल होता है। वह अपने मित्रों तथा साथियों का चुनाव बड़ी सावधानी से करता है तथा अपनी महत्वाकांक्षा का प्रदर्शन बिल्कुल नहीं करता।



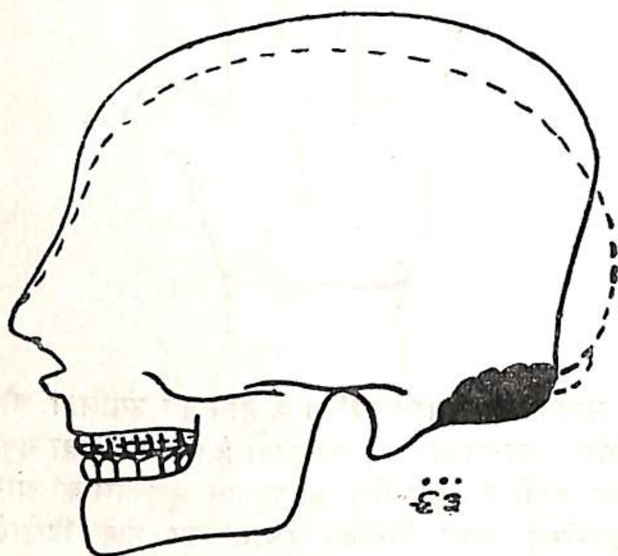
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ की उंगलियां चौकोर होती हैं तथा अंगूठा औसत लम्बाई का होता है। मस्तक-रेखा संकरी, सीधी तथा लम्बी होती है। बुध-क्षेत्र का झुकाव सूर्य-क्षेत्र की ओर होता है तथा सूर्य-रेखा अपने निश्चित स्थान पर ठीक दिखाई देती है (चित्र संख्या ६२)।

ऐसे कुछ जातकों के हाथ में मंगल तथा चन्द्रमा—इन दोनों के क्षेत्र समान रूप से उन्नत भी पाये जाते हैं और ये दोनों ही क्षेत्र रेखा-हीन होते हैं। बृहस्पति का क्षेत्र भी कुछ उठा हुआ होता है, परन्तु वह इतना उन्नत नहीं होता कि बुध अथवा सूर्य-क्षेत्र को प्रभावित कर सके। ऐसे व्यक्ति की हथेली सम्वेदनशील होती है।

(३) भाषा की स्मृति

यदि आंख के नीचे की वतुर्लाकार हड्डी कुछ उठी (फूली) हुई-सी हो तो जातक में विविध प्रकार की भाषाओं को स्मरण रखने की विशेष क्षमता पाई जाती है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च पाया जाता है तथा उसी के आधार पर इस सम्बन्ध में निश्चय किया जाता है।



[स्त्री की खोपड़ी]

ललाट और उसकी रेखाएं

सिर के खुले हुए अग्रभाग को, जिसे सामान्य बोल-चाल की भाषा में 'माथा' कहते हैं, 'ललाट' कहा जाता है। इस ललाट पर भी अनेक रेखाएं पाई जाती हैं, जो अपने फलस्वरूप जातक के जीवन को प्रभावित करती हैं।

ललाट की आकृति तथा उस पर पाई जाने वाली रेखाओं के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य—दोनों ही स्थानों के विद्वानों द्वारा विचार किया गया है। उनके मत के सारांश को इस प्रकरण में दिया जा रहा है। सर्वप्रथम भारतीय विद्वानों के मत का उल्लेख किया जाता है।

प्राच्य-मत

ललाट की आकृति के सम्बन्ध मे विभिन्न भारतीय ग्रंथों निम्नानुसार उल्लेख पाये जाते हैं—

"ललाटेनार्धचन्द्रेण भवन्ति पृथिवीश्वराः।
विपुलेन ललाटेन महानरपतिः स्मृतः॥
श्लक्ष्णेन तु ललाटेन नरो धर्मरतस्तथा॥"

(भविष्य पुराण)

× × ×

"निःस्वा विषम भालेन दुःखिता ज्वर जर्ज्जराः।
परकर्म करा नित्यं प्राप्यन्ते वधबंधनम् ।।"

(समुद्र ऋषि)

× × ×

"शुक्ति विशालैराचार्याः शिरा सन्नतैरधर्मरताः ।।"

(वृहत् संहिता)

× × ×

"श्री वत्स कामुर्काद्या यस्य शिरारोमभिः कृताभाले ।
रेखाभिर्वा नृपतिर्भोगी व जायते सपदि ।।"

(समुद्र तिलक)

× × ×

भावार्थ—जिस पुरुष का ललाट अर्द्धचन्द्र के आकार का हो वह भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा ऐश्वर्य युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का ललाट उन्नत और फैला हुआ हो, वह राजा अर्थात् उच्च पद को प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का ललाट चिकना हो, वह धर्म में रुचि रखने वाला होता है।

× × ×

यदि ललाट-ऊंचा नीचा (विषम) हो तो जातक दुःखी, ज्वर-पीड़ित तथा दूसरों की सेवा (नौकरी) करने वाला
व्यक्ति कष्ट प्राप्त करता है।

× × ×

यदि ललाट सोप को भांति ऊंचा तथा विशाल (फैला हुग्रा) हो तो जातक उच्च कोटि का विद्वान् होता है।

× × ×

यदि ललाट पर नसें उभरी हुई दिखाई देती हों तो मनुष्य ग्रधर्म-परायण ग्रर्थात् पाप-कर्म करने वाला होता है।

× × ×

यदि ललाट में रेखाग्रों, नसों ग्रथवा रोम द्वारा श्रीवत्स, धनुष ग्रादि के शुभ-चिन्ह हों तो जातक राजा (ऐश्वर्यवान), भोगी तथा उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है।

ललाट के सम्बन्ध में विविध मतों का सारांश नीचे लिखे ग्रनुसार समझना चाहिए—

(१) यदि ललाट नीचा हो, तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र-सुख ग्रल्प मात्रा में मिलता है। इसे दरिद्रता का लक्षण भी समझना चाहिए।

(२) यदि ललाट ऊंचा-नीचा हो तो जातक दरिद्र होता है।

(३) यदि दोनों ग्रांखों के ऊपरी भाग वाली ललाट की हड्डी बड़ी, फैली हुई तथा ऊंची उठी हुई हो ग्रर्थात् ललाट लम्बा-चौड़ा ग्रौर उभरा हुग्रा हो तो ऐसे व्यक्ति धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न तथा ग्रत्यधिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले होते हैं।

(४) यदि ललाट बहुत नीचा हो ग्रौर उसमें नसें उभरी हुई दिखाई देती हों तो जातक पाप-कर्मों में लीन बना रहता है।

(५) यदि ललाट की नसों द्वारा 'स्वस्तिक' जैसा चिन्ह बनता हो तथा ललाट ऊंचा हो तो जातक धनवान होता है।

(६) ग्रधिक उन्नत ललाट वाले व्यक्ति स्वतन्त्रता प्रिय तथा शासन करने वाले होते हैं।

(७) नीचे ललाट वाले व्यक्ति क्रूर-कर्म करने वाले तथा हिंसक वृत्ति के होते हैं। यदि अन्य लक्षण भी अशुभ हों तो उन्हें जेल-यात्रा करनी पड़ती है अथवा अत्यधिक कठिनाइयों से संघर्ष करना पड़ता है।

(८) संकरे (कम चौड़े) अथवा गोल ललाट वाले व्यक्ति कृपण होते हैं।

(९) ऊंचे-नीचे (विषम) ललाट वाले व्यक्ति दया-रहित होते हैं।

(१०) जिनके ललाट में त्रिशूल, वज्र अथवा धनुष के चिन्ह हों, वे सबके स्वामी अर्थात् उच्च पद वाले एवं स्त्रियों के प्रिय होते हैं।

(११) अत्यधिक लम्बे-चौड़े तथा ऊपर को उठे हुए ललाट वाला व्यक्ति मूर्ख होता है :

(१२) जिसका ललाट ऊपर की ओर से ढलवां तथा स्वच्छ हो, जिस पर रेखा दिखाई न देती हो, परन्तु क्रोध के समय रेखा उभरती हो, ऐसा व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान् होता है।

(१३) नाक के बराबर ऊंचा तथा नाक की लम्बाई से दूने चौड़े ललाट तथा श्रेष्ठ कनपटी वाला व्यक्ति श्रेष्ठ पुरुष होता है।

(१४) हँसते समय जिसके ललाट में भृकुटी के बीच दो खड़ी रेखाएं बन जाती हों, उसे श्रेष्ठ समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति सद्-गुणी तथा सुखी होता है।

(१५) यदि ललाट पर नीली नसों के उभरने के कारण तिलक जैसा चिन्ह बन जाये और ललाट का आकार अर्द्धचन्द्रमा जैसा हो तो ऐसा व्यक्ति लक्ष्मीवान् होता है।



(१६) यदि कपाल की सबसे ऊपर की रेखा केशों के समीप अखण्ड, सीधी तथा उत्तम हो तो जातक बुद्धिमान् होता है। यदि रेखा टेढ़ी अथवा खण्डित हो तो लोभी होता है (चित्र संख्या ९४)।



(१७) यदि पहली रेखा से नीचे वाली दूसरी रेखा अखण्ड तथा उत्तम हो तो जातक ईमानदार होता है। यदि रेखा अच्छी न हो तो भोगी होता है (चित्र संख्या ९५)।



(१८) यदि पूर्वोक्त रेखा से नीचे की तीसरी रेखा अखण्ड और सुन्दर हो तो जातक सैनिक वृत्ति का साहसी तथा बलवान् होता है। यदि यह रेखा खण्डित हो तो जातक झगड़ालू प्रकृति का, क्रोधी तथा उग्र स्वभाव का होता है (चित्र संख्या ९६)।



(१९) पूर्वोक्त तीसरी रेखा से नीचे दांई भृकुटी के ऊपर वाली रेखा यदि उत्तम हो तो जातक धन-सम्पत्ति सम्पन्न होता है। यह रेखा यदि खण्डित हो तो लोभी (कृपण) होता है (चित्र संख्या ९७)।



(२०) पूर्वोक्त रेखा के सामने बाईं भृकटी के ऊपर वाली रेखा यदि उत्तम हो तो जातक देशाटन करने वाला (यात्रा-प्रेमी) होता है। यदि यह रेखा खण्डित हो तो वह असत्यवादी (झूठा) होता है (चित्र संख्या ६८)।



(२१) दोनों भौंहों के बीच वाली रेखा यदि उत्तम हो तो जातक सबको प्रिय होता है। यदि यह रेखा खण्डित हो तो वह दुःख भोगने वाला होता है (चित्र संख्या ६६)।



(२२) यदि ललाट के नीचे नासिका के ऊपर (दोनों भृकुटियों के बीच में) तीन रेखाएं हों तो ऐसा जातक अत्यधिक बोलने वाला (बकवास करने वाला) होता है (चित्र संख्या १००)।

ललाट की रेखाओं द्वारा आयु-विचार

ललाट की रेखाओं द्वारा जातक की आयु का निश्चय करने के सम्बन्ध में भी भारतीय विद्वानों के मत अलग-अलग पाये जाते हैं। यहां पर उन सबके मतों का सारांश दिया जा रहा है।

'शब्द कल्पद्रुम' में लिखा है—

"तिस्रोरेखाः शत जीविनां ललाटायताः स्थितायदिता ।
चतुस्त्रभिरवनीशत्व' नवतिश्चायुः सपंचाब्दा ।।
विच्छिन्नाभिश्चगम्यागामिनो नवति रण्य रेखेण ।
केशांतोपगताभि रेखाभिरशीति वर्षायुः ।।
पंचभिरायूः सप्ततिरेकाग्रावस्थिता भिरपिषष्टिः ।
बहुरेखेण शतार्धं चत्वारिंश चवक्राशिः ।।
त्रिंशद्भ्रूलग्नाभिर्विंशति कचैश्व वाम वक्राभिः ।
क्षुद्राभि स्वल्पायुर्न्यूनाभिश्चांतरेकल्प्यं ।।
त्रिशूलं पट्टिशंवापि ललाटेयस्य दृश्यते ।
धनपुत्र समायुक्तः सजीवेत् शरदः शतम् ।।"

उक्त श्लोकों का भावार्थ नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

(१) यदि ललाट के ऊपर कानों तक लम्बी, अखण्ड तथा एक जैसी तीन रेखाएं स्पष्ट दिखाई देती हों, तो जातक की आयु १०० वर्ष की होती है।

(२) यदि ललाट पर चार अखण्ड रेखाएं हों तो जातक राजा (ऐश्वर्यवान्) होता है और वह ९५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(३) यदि ललाट की रेखाएं विच्छिन्न हों अथवा ललाट रेखा-विहीन हो तो ऐसा व्यक्ति ९० वर्ष की आयु तक जीवित रहता है तथा अगम्यागमन करने वाला होता है।

(४) यदि ललाट की रेखाएं केश पर्यन्त गई हों, तो जातक की आयु ८० वर्ष की होती है।

(५) यदि ललाट पर पांच रेखाएं स्पष्ट दिखाई देती हों तो जातक की आयु ७० वर्ष की होती है।

(६) यदि सब रेखाएं अपने अन्तिम भाग में एकत्रित हो गई हों तो ऐसे जातक की आयु साठ वर्ष की समझनी चाहिए।



१०१

(७) यदि ललाट पर पांच से अधिक बहुत-सी रेखाएं हों तो जातक की आयु ५० वर्ष की समझनी चाहिए। (चित्र संख्या १०१)।

(८) यदि ललाट पर पांच से अधिक बहुत-सी रेखाएं टेढ़ी-मेढ़ी हों तो जातक ४० वर्ष तक जीवित रहता है।

(६) यदि ललाट की रेखा भ्रू भाग से मिली हुई हो तो जातक को आयु ३० वर्ष की होती है।

(१०) यदि ललाट-रेखा ललाट के बाएं भाग में टेढ़ी होकर नीचे की ओर झुक गई हो तो जातक की आयु २० वर्ष की समझनी चाहिए।

(११) यदि ललाट पर बहुत महीन-महीन रेखाएं हों (चित्र संख्या १०२) तो जातक अल्पायु होता है।



(१२) यदि ललाट पर केवल एक या दो बहुत छोटी-छोटी रेखाएं ही हों तो जातक को आयु बहुत कम होती है।

(१३) यदि ललाट पर त्रिशूल अथवा पट्टिश के समान चिन्ह हो तो जातक सौ वर्ष तक जीवित रहता है।

'भविष्य पुराण' का मत इससे भिन्न पाया जाता है। वह इस प्रकार है—

(१) यदि ललाट पर पांच पूर्ण रेखाएं हों तो जातक ऐश्वर्यवान् होकर १०० वर्ष तक जीवित रहता है।

(२) यदि ललाट पर चार रेखाएं हों तो जातक की आयु ८० वर्ष की होती है।

(३) यदि ललाट पर तीन सम्पूर्ण रेखाएं हों तो जातक ७० वर्ष तक जीवित रहता है।

(४) यदि ललाट पर दो सम्पूर्ण रेखाएं हों तो जातक ६० वर्ष की आयु पाता है।

(५) यदि ललाट पर केवल एक रेखा सम्पूर्ण हो तो केवल ४० वर्ष की आयु होती है।

(६) यदि ललाट पर एक भी रेखा न हो तो जातक की आयु २५ वर्ष की समझनी चाहिए।

सभी भारतीय शास्त्रकार इस बात पर एकमत हैं कि यदि ललाट की रेखाएं छोटी तथा कटी हुई हों तो जातक अल्पायु तथा व्यभिचारी होता है। रेखाओं का टेढ़ा-मेढ़ा, कटा-टूटा अथवा छोटा होना अच्छा लक्षण नहीं समझना चाहिए।

ललाट की रेखाओं द्वारा आयु गणना किसी भी मत से क्यों न की जाये, रेखाओं की लम्बाई, छोटाई, अखण्डता एवं खण्डता के अनुपात से ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

स्त्रियों के ललाट के सम्बन्ध में 'बृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के अगले 'स्त्री-सामुद्रिक' शीर्षक खण्ड में वर्णन किया गया है।

पाश्चात्य-मत

पाश्चात्य विद्वानों ने ललाट तथा उसकी रेखाओं के सम्बन्ध में अपना जो मत व्यक्त किया है, उसका सार-संक्षेप नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) ललाट पर केशों के नीचे जो सबसे पहली रेखा होती है, उसके स्वामी शनि हैं, अतः उसे 'शनि-रेखा' कहा जाता है।

(२) शनि-रेखा के नीचे दूसरी रेखा के स्वामो बृहस्पति हैं, अतः उसे 'गुरु-रेखा' कहा जाता है।

(३) गुरु-रेखा के नीचे तीसरो रेखा के स्वामो मंगल हैं, अतः इसे 'मंगल-रेखा' कहा जाता है।

(४) दाईं ओर की भौंह पर जो रेखा होती है, उसके स्वामी सूर्य हैं, अतः उसे 'सूर्य-रेखा' कहा जाता है।

(५) बाईं भौंह पर जो रेखा होती है, उसके स्वामी चन्द्रमा हैं, अतः उसे 'चन्द्र-रेखा' कहा जाता है।

(६) दोनों भौंहों के बीच में जो रेखा होती है, उसके स्वामी शुक्र हैं, अतः उसे 'शुक्र-रेखा' कहा जाता है।

(७) नासिका के सेतु पर जो रेखा होती है, उसके स्वामी बुध हैं, अतः उसे 'बुध-रेखा' कहा जाता है।

यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति के ललाट पर ये सातों हो रेखा अवश्य पाई जाएं। किसो के ललाट पर कम और किसी के ललाट पर

अधिक रेखाएं होती हैं। जातक के ललाट पर इनमें से जो भी रेखाएं हों, उन्हीं के अनुसार उनके फल का विचार करना चाहिए। चित्र संख्या १०३ में ललाट की इन रेखाओं को प्रदर्शित किया गया है।

उक्त मुख्य रेखाओं का फल निम्नानुसार बताया गया है—

शनि रेखा – यदि यह रेखा सीधी, स्पष्ट तथा अखण्ड हो तो जातक निश्चयात्मक बुद्धि वाला, समझदार, दूरदर्शी तथा गंभीर होता है। यदि यह रेखा टेढ़ी-मेढ़ी अथवा टूटी-फूटी हो तो अगंभीर, उदासीन शिकायती तथा चिड़चड़े स्वभाव का होता है।

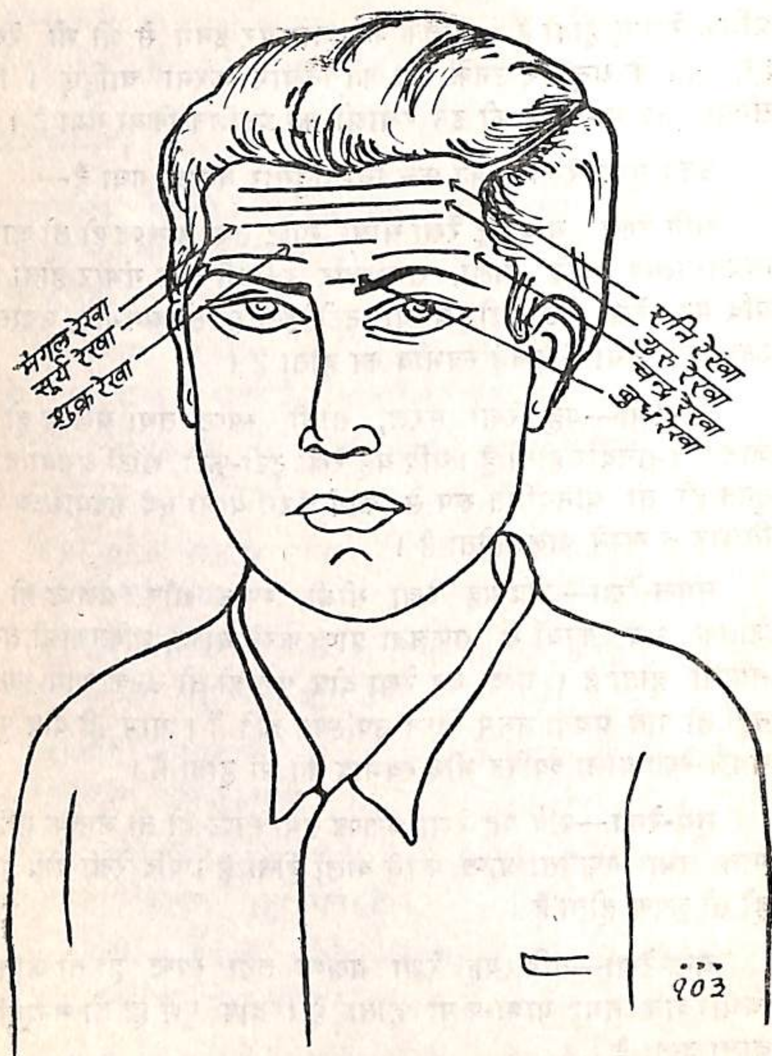
गुरु-रेखा—यह रेखा सरल, सीधी, स्पष्ट तथा अखण्ड हो तो जातक ईमानदार होता है। यदि यह रेखा टूटी-फूटी, छोटी अथवा दोष-युक्त हो तो अनियमित रूप से कार्य करने वाला एवं भक्ष्याभक्ष्य का विचार न रखने वाला होता है।

मंगल-रेखा—यदि यह रेखा सीधी, स्पष्ट और अखण्ड हो तो जातक सब कार्यों में सफलता प्राप्त करने वाला, शक्तिशाली तथा साहसी होता है। यदि यह रेखा दोष पूर्ण हो तो उसके कार्य सफल नहीं हो पाते अथवा उनमें विघ्न उपस्थित होते हैं। साथ ही दोष पूर्ण मंगल-रेखा वाला व्यक्ति भीरु स्वभाव का भी होता है।

सूर्य-रेखा—यदि यह रेखा अखण्ड तथा स्पष्ट हो तो जातक बुद्धि-मान तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है। यदि रेखा दोष पूर्ण हो तो कृपण होता है।

चन्द्र-रेखा—यदि यह रेखा अखण्ड तथा स्पष्ट हो तो जातक विचारवान तथा यात्रा-प्रेमी होता है। दोष पूर्ण हो तो मन्दबुद्धि वाला होता है।

शुक्र-रेखा—यदि यह रेखा अखंड तथा स्पष्ट हो तो जातक स्त्री-



[ललाट की रेखाएं]

सुख सम्पन्न, सच्चा प्रेमी तथा श्रेष्ठ स्वभाव वाला होता है। यदि रेखा दोष पूर्ण हो तो सच्चा प्रेमी नहीं होता।

बुध-रेखा—यदि यह रेखा स्पष्ट तथा अखंड हो तो जातक विद्वान् तथा श्रेष्ठ भाषणकर्त्ता होता है। यदि दोष पूर्ण हो तो बातूनी एवं विवादी होता है।

उपर्युक्त सातों रेखाओं के मिश्रित फलादेश को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) यदि गुरु की रेखा वृत्ताकार चिन्ह युक्त स्पष्ट, परन्तु टेढ़ी हो तो जातक सांसारिक दुःखों से पीड़ित तथा भ्रमित चित्त वाला होता है।

(२) यदि गुरु की रेखा बीच में टेढ़ी तथा स्पष्ट हो तो जातक ज्ञानी, धनी, यशस्वी तथा सरल स्वभाव का होता है।

(३) यदि शनि की रेखा टेढ़ी तथा मंगल की रेखा धनुषाकार हो तो जातक मद्यपी, मूर्ख तथा स्त्री-हीन होता है।

(४) यदि शनि, गुरु तथा मंगल की तीनों रेखाएं स्पष्ट, चमकीली तथा निर्दोष हों तो जातक सरल, सर्वप्रिय, नीतिमान, सौभाग्यशाली, सच्चरित्र, यशस्वी, विद्वान तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है।

(५) यदि शनि-रेखा छिन्न-भिन्न हो, गुरु-रेखा छोटी हो, मंगल-रेखा दोष पूर्ण हो तथा सूर्य और चन्द्रमा की रेखाएं छोटी, परन्तु निर्दोष हों तो जातक गुणवान्, यशस्वी तथा परिश्रमी होते हुए भी चिन्ताशील, चंचल स्वभाव का तथा सौभाग्य विहीन होता है।

(६) यदि शनि तथा मंगल की रेखाएं सीधी हों और उन दोनों के बीच गुरु की रेखा टेढ़ी हो तो जातक महाबलशाली, मानी, सौभाग्यवान तथा सम्पत्तिवान होता है।

(७) यदि शनि-रेखा स्पष्ट और सरल हो तथा गुरु-रेखा सर्पाकार हो तो जातक धनभिलाषी, व्यवसायी तथा धूर्त होता है।

(८) यदि मस्तक में बहुत-सी छिन्न-भिन्न रेखाएं हों तो जातक स्त्री-विहीन, दुर्भाग्यशाली तथा अनेक प्रकार के दुःख भोगने वाला होता है।

(९) यदि शनि-रेखा अपने दोनों किनारों पर खंडित हो, गुरु की रेखा टेढ़ी और तीन खंडों वाली हो तथा मंगल-रेखा छोटी हो तो जातक का धन नष्ट होता है। इस लक्षण को अत्यन्त अनिष्टकर समझना चाहिए।



(१०) यदि शनि-रेखा सीधी हो, परन्तु बीच में दो छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो, साथ ही गुरु तथा मंगल की रेखाएं भी अपने मध्य भाग में टूटी हुई हों (चित्र संख्या १०४) तो जातक की सम्पत्ति नष्ट होती है तथा उसे और भी अनेक प्रकार की हानियां उठानी पड़ती हैं।

(११) यदि शनि तथा गुरु की रेखाएं धनुषाकार हों और मंगल की रेखा गहरी हो तो जातक दुर्जन तथा नीच प्रकृति का होता है।

(१२) यदि शनि की रेखा लम्बी और गहरी हो तथा गुरु की



रेखा वक्राकार हो (चित्र संख्या १०५) तो जातक अपनी स्त्री से अनाहत होकर भय एवं कष्ट प्राप्त करता है।

(१३) यदि शनि-रेखा बीच में कटी हुई हो, गुरु-रेखा नीचे तथा ऊपर के भाग में टूटी हुई और टेढ़ी हो तथा मंगल की रेखा सर्पाकार और टूटो हुई हो तो जातक हत्यारा, वेश्यागामी, जुआरी, स्त्रियों का अपहरण करने वाला तथा मनमौजी होता है और किसी समय भय के कारण उसका अपने आप ही प्राणान्त हो जाता है।

(१४) यदि ललाट में केवल एक ही गहरी तथा धनुषाकार-रेखा हो, तो ऐसा जातक पर्यटनशील, नीच तथा अधम स्वभाव का होता है।

(१५) यदि शनि-रेखा बीच में टूटी हुई हो तथा गुरु-रेखा अपने बायें भाग में तीन शाखाओं वाली हो तो जातक मिथ्याभाषी, चंचल स्वभाव वाला, परन्तु प्रभावशाली होता है।

(१६) यदि ललाट में चार रेखाएं हों और उनमें पहली तथा चौथी रेखा बीच में कटी हुई हो (चित्र संख्या १०६) तो जातक बुद्धिमान्, सच्चरित्र एवं सरल स्वभाव का होता है।

(१७) यदि शनि-रेखा सांप के फन के समान हो तथा मंगल-रेखा और गुरु-रेखाएं टेढ़ी हों, तो जातक किसी ऊंचे स्थान से गिरकर मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि अन्य लक्षण दीर्घजीवन के हों तो ऊंचाई से गिरकर गम्भीर रूप से घायल होता है।

(१८) यदि शनि-रेखा टेढ़ी तथा बीच में से टूटी हुई, गुरु-रेखा अपने निचले भाग में भग्न तथा छोटी हो, मंगल-रेखा ऊपरी भाग में अलग तथा सीधी हो, सूर्य-रेखा बीच में कटी हुई और टेढ़ी हो, शुक्र-रेखा छोटी हो तथा चन्द्र-रेखा दो रेखाओं से कटी हुई हो तो जातक कभी धनी, कभी, दरिद्र कभी सुखी और कभी दुःखी बना रहता है।


१०६

(१९) यदि ललाट पर केशों के नीचे अर्द्ध चन्द्राकार छोटी-छोटी सात रेखाएं हों तथा गुरु एवं मंगल रेखाएं बड़ी तथा सर्पाकार हों



(चित्र संख्या १०७) तो जातक भ्रान्त, दुःखी, भय तथा चिन्ताओं से ग्रस्त एवं चंचल स्वभाव वाला होता है। वह किसी समय पानी में भी डूबता है।

(२०) यदि शनि तथा मंगल-रेखाएं बीच में टूटी हुई हों और गुरु-रेखा दोनों के बीच में झुकी हुई हो (चित्र संख्या १०८) तो जातक बुद्धिमान्, धनवान्, दूरदर्शी तथा सौभाग्यशाली होता है।



(२१) यदि शनि तथा गुरु की रेखाएं परस्पर मिली हुई तथा बीच में से टूटी हुई हों तो ऐसा जातक किसी की हत्या करता है और स्वयं भी प्राणदण्ड पाकर अपना जीवन समाप्त कर बैठता है।

(२२) यदि शनि की रेखा गहरी तथा झुकी हुई हो, गुरु की रेखा छोटी हो, मंगल की रेखा टेढ़ी हो तथा उस पर मस्सा भी हो तो ऐसा

जातक वज्र के समान कठोर हृदय वाला एवं हिंसक (हत्यारा) होता है ।



(२३) यदि शनि की रेखा सीधी हो, गुरु की रेखा अपने निचले भाग में टेढ़ी हो तथा मंगल की रेखा छोटी (चित्र संख्या १०९) तो जातक धनी और भाग्यशाली होता है ।

(२४) यदि ललाट में सर्पाकृति की एक ही रेखा हो तथा दोनों भौंहों के बीच में बहुत-सी सीधी रेखाएं हों तो जातक बहुत अच्छा वक्ता, शक्तिशाली तथा स्त्रियों के साथ विहार करने में रत बना रहता है ।

(२५) यदि ललाट पर अनेक रेखाएं छिन्न-भिन्न स्थिति में हों

तो जातक महत्वाकांक्षी, अनेक प्रकार का काम करने वाला तथा सब लोगों द्वारा सम्मानित होता है।

(२६) यदि मंगल तथा शनि की रेखाएं अपने निचले तथा ऊपर के भाग में सर्पाकार हों तथा दोनों के बीच में एक वज्राकार चिन्ह भी हो तो ऐसी रेखाओं वाला जातक निश्चित रूप से मृत्युदण्ड पाता है और उसकी मृत्यु फांसी लगकर होता है।



(२७) यदि शनि की रेखा लम्बी हो, गुरु की रेखा टेढ़ी हो, मंगल की रेखा बीच में से टूटी हुई हो, सूर्य-रेखा लम्बी, गहरी तथा कुछ टेढ़ापन लिये हुए हो (चित्र संख्या ११०) तो ऐसा जातक अत्यन्त धनी, दानी,

दयालु, विलासी, बुद्धिमान्, सबको सुख देने वाला, यशस्वी तथा सौभाग्यशाली होता है।

(२८) यदि शनि तथा गुरु की रेखाएं बीच में से टूटी हुई हों, मंगल-रेखा लम्बी तथा सीधी हो, सूर्य-रेखा छोटी हो तथा शुक्र-रेखा अपनी बाईं ओर को कुछ टेढ़ी हो तो ऐसा व्यक्ति सच्चरित्र, सौभाग्यशाली, शास्त्रों का ज्ञाता, निश्छल, धनवान्, प्रत्युत्पन्नमति चतुर परन्तु परम क्रोधी होता है।

(२९) यदि शनि की रेखा छोटी और टेढ़ी हो, गुरु की रेखा बीच में से टूटी तथा सर्पफण के समान हो एवं मंगल की रेखा शाखायुक्त तथा लचीली हो तो ऐसा जातक महामूर्ख तथा मनुष्यों की हत्या करने वाला होता है।



(३०) यदि शनि को रेखा गहरी हो, गुरु की रेखा छोटी हो, मंगल की रेखा गहरी तथा पतली हो तथा सूर्य की रेखा झुकी हुई, गहरी एवं दो रेखाओं से कटी हुई हो (चित्र संख्या १११) तो ऐसा जातक कामी, क्रोधी, कलहप्रिय, लड़ाकू प्रवृत्ति तथा युद्ध-क्षेत्र में किसी हथियार द्वारा प्राण गंवाने वाला होता है।

(३१) यदि शनि-रेखा टेढ़ी तथा अपने निचले भाग में टूटी हुई हो, गुरु की रेखा छोटी हो, मंगल की रेखा गहरी तथा टेढ़ी हो एवं सूर्य की



रेखा बीच में से टूटी हुई तथा वक्राकार हो (चित्र संख्या ११२) तो

ऐसा जातक उपद्रवी, मूर्ख, छली, शठ, धूर्त, मनमौजी, कठोर स्वभाव वाला, असत्यवादी तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है।

(३२) यदि शनि-रेखा स्थान-स्थान पर टूटी हुई तथा टेढ़ी हो, गुरु की रेखा लम्बी तथा सीधी हो, मंगल की रेखा बीच से कटी हुई तथा टेढ़ी हो, सूर्य की रेखा धनुषाकार हो तथा शुक्र की रेखा बीच में से कटी



हो (चित्र संख्या ११३) तो ऐसा जातक सत्यवादी, सरल, विनम्र, विजयी, नेता, रसज्ञ तथा रमणियों में प्रीति रखने वाला होता है।

(३३) यदि शनि-रेखा अपने दायें भाग में टूटी तथा टेढ़ी हो, गुरु की रेखा गहरी तथा लचीली (झुकी हुई) हो तथा मंगल की रेखा छोटी

तथा टेढ़ी हो तो पुरुष कपटी होते हुए भी विनयी स्वभाव का होता है।

(३४) यदि शनि की रेखा बीच में से टूटी हुई तथा टेढ़ी हो, गुरु की रेखा बीच में से टेढ़ी तथा अपने दायें भाग में टूटी हुई हो मंगल तथा सूर्य की रेखाएं अपनी दाईं ओर को सर्पाकार हों (चित्र संख्या ११४) तो जातक प्रत्युत्पन्न मति, परन्तु धन-हीन होता है।



(३५) यदि शनि की रेखा लम्बी, गहरी तथा कुछ झुकी हुई हो और उसके दायें भाग में मस्सा हो, गुरु की रेखा ऊपरी भाग में अलग तथा टेढ़ी हो तथा मंगल की रेख सर्पाकार हो तो ऐसा जातक पवित्रा-

त्मा, निरभिमानी, ज्ञानी परन्तु महाखिन्न स्वभाव का एवं भ्रमित-बुद्धि का होता है। वह किसो ऊंचे स्थान से गिरता है तथा भयभीत होकर सांघातिक कष्ट पाता है।

(३६) यदि शनि तथा गुरु की रेखाएं ललाट के ऊपरी भाग में अर्द्ध-चन्द्राकार चिन्ह से युक्त हों तथा सूर्य एवं चन्द्रमा की रेखा परस्पर मिल रही हों (चित्र संख्या ११५) तो ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली होता है।



११५

(३७) यदि शनि की रेखा ऊपरी भाग में कटो तथा झुकी हुई हो, गुरु की रेखा लम्बी तथा झुकी हुई हो, मंगल-रेखा बीच में से

कठो हुई तथा टेढ़ो हो तथा दोनों भौहों के बीच में त्रिशूलाकार चिन्ह हो तो ऐसा जातक परम-स्नेही, सदैव प्रसन्न रहने वाला, सबका मनोरंजन करने वाला तथा वनिता विलासी होता है, परन्तु वह किसी समय ऊपर से गिरकर अथवा किसी अन्य कारण से शरीर में गहरी चोट पाता है।

(३८) यदि शनि-रेखा सर्पाकार हो, गुरु-रेखा छोटी हो तथा मंगल रेखा अपनी दाईं ओर तीन शाखा वाली तथा बाईं ओर एक शाखा



वाली हो (चित्र संख्या ११८)तो ऐसा जातक विश्वासघाती, धूर्त, छली, अत्यन्त चंचल, ऐश्वर्य-विहीन परन्तु लोगों द्वारा सम्मानित होता है।

(३९) यदि शनि-रेखा धनुषाकार हो, गुरु-रेखा सर्पाकार हो तथा मंगल-रेखा टेढ़ी होकर अपने बायें भाग में कटी-फटी हो तो जातक मनुष्यघाती होता है।

(४०) यदि गुरु-रेखा आकार में तो छोटी हो परन्तु उसका मुंह सर्पाकार और बड़ा हो, साथ ही वह शनि-रेखा के समीप पहुंच रही हो तथा बुध की रेखा टेढ़ी हो तो जातक कलह-प्रिय, विवादी एवं हिंसक-वृत्ति का होता है।

(४१) यदि शनि-रेखा पतली हो, गुरु-रेखा दायें भाग में दीर्घाकार हो, मंगल-रेखा बीच में छिन्न-भिन्न और टेढ़ी हो तथा अपने निचले भाग में गहरी होकर बायें कान तक चली जाए तो ऐसा व्यक्ति जुआरी, व्यभिचारी, क्रोधी तथा दूसरों का अनिष्ट करने वाला होता है।



(४२) यदि शनि-रेखा छोटी हो, गुरु की रेखा बीच में से कटी हुई परन्तु स्पष्ट हो, मंगल-रेखा लम्बी, टेढ़ी तथा एक ओर को झुकी हुई हो तथा शुक्र-रेखा अपने दायें भाग में कटी हुई तथा मध्य भाग में टूटी हुई हो (चित्र संख्या ११७) तो ऐसा जातक मानी, अभिमानी, दानी, क्रोधी, मित्रों द्वारा तिरस्कृत, व्यभिचारी तथा कामातुर होता है।



(४३) यदि शनि-रेखा गहरी तथा छोटी हो, गुरु-रेखा झुकी हुई हो तथा भौहों के बीच का हिस्सा केश युक्त हो अर्थात् भौहें परस्पर मिली हुई हों (चित्र संख्या ११८) तो जातक धनी, ऐश्वर्यवान्, यशस्वी तथा अनेक भार्याओं वाला होता है।

(४४) शनि-रेखा छोटी, गुरु-रेखा टेढ़ो हो तथा निकटवर्ती अर्द्धाकृति से युक्त हो, दाईं भौंह पर एक छोटी-सी शृंखलाकार रेखा हो, दोनों भौंहें परस्पर मिली हुई एवं घने बालों वाली हों तो ऐसे जातक के मस्तक में चोट लगती है अथवा उसे सर्प आदि दुष्ट जीव डसते हैं। ऐसे व्यक्ति पर विष प्रयोग भी होता है, जिसके कारण वह भयभीत तथा क्रुद्ध बना रहता है।

(४५) यदि शनि-रेखा गहरी तथा टेढ़ी हो, गुरु-रेखा लम्बी तथा झुकी हुई हो और सूर्य-रेखा बीच में से टूटी हुई हो (चित्र संख्या ११६)



११६

तो जातक सुन्दर, सुखो, उदार, विद्वान, यशस्वी, महापुरुषों का सेवक,

धर्मात्मा, भाई-बन्धुओं के लिए सुखदायक तथा सौभाग्यशाली होता है।

(४६) यदि शनि-रेखा अपने निचले तथा ऊपरी भाग में अलग हो गुरु-रेखा कटी हुई तथा छोटी हो; बुध की रेखा छिन्न-भिन्न तथा टेढ़ी हो, भौंहों के बीच का भाग स्पष्ट रेखाओं से युक्त हो, तो ऐसा जातक विद्वान्, गुणवान्, मधुरभाषो, परिणामदर्शी, प्रत्युत्पन्नमति, साहसो, चतुर, कला-कुशल, ग्लानि रहित तथा सौभाग्यशाली होता है।

(४७) यदि शनि-रेखा धनुषाकार हो, गुरु की रेखा टेढ़-मेढ़ी हो; मंगल-रेखा लम्बी तथा अपने वाम भाग में टेढ़ी हो, सूर्य-रेखा शाखा-



युक्त अपने बाईं ओर को टेढ़ी हो तथा शुक्र-रेखा बीच में कटी हुई हो (चित्र संख्या १२०) तो ऐसा जातक अत्यन्त पराक्रमी, शान्ति-रहित, अत्यन्त लोभी तथा अपने सभी कार्यों में असफलता प्राप्त करने वाला होता है।

(४८) यदि शनि-रेखा अपने निचले भाग में टूटी हुई तथा सीधी हो, गुरु-रेखा के बायें भाग में धनुषाकार चिन्ह हो तथा उसका निचला मध्य का तथा ऊपरी भाग भग्न हो, मंगल की रेखा शाखायुक्त होकर अपने निचले भाग में अलग हो, सूर्य-रेखा सर्पाकार हो तथा शुक्र-रेखा अपने उपरी भाग में गहरी तथा बीच में कटी हुई हो (चित्र संख्या १२१) तो ऐस जातक गुणवान्, विद्वान्, दानी, धर्मात्मा, उपदेशक,


१२१

यशस्वी, सुवक्ता, यात्रा-प्रेमी तथा धनवान होता है। उसे अपने जीवन में किसी भी विघ्न-बाधा का सामना नहीं करना पड़ता।

(४९) यदि ललाट में त्रिशूल अथवा मछली पकड़ने की वंशी जैसा चिन्ह हो तो जातक धन-पुत्रादि से युक्त होकर सौ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(५०) एक प्राचीन कहावत के अनुसार ललाट पर एक रेखा वाला व्यक्ति धनी, दो रेखाओं वाला विद्वान् पण्डित, तीन रेखाओं वाला राजा (ऐश्वर्यशाली) तथा चार रेखाओं वाला योगी होता है। आयु प्रमाण के लिए यह कहावत है कि एक रेखा वाला तीस वर्ष की, दो रेखाओं वाला चालीस वर्ष को, तीन रेखाओं वाला साठ वर्ष की तथा चार रेखाओं वाला अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

आवश्यक निर्देश

(१) ललाट की बनावट तथा विभिन्न रेखाओं की स्थिति पर भली-भांति विचार करने के उपरान्त ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

(२) यदि किसी जातक को हथेली पर आयु-रेखा न हो तो उसकी आयु के सम्बन्ध में ललाट-रेखाओं द्वारा विचार करना चाहिए।

मुख-मण्डल पर विभिन राशियों का निवास

सामुद्रिक-विद्या के पश्चिमी विद्वानों ने मनुष्य के मुखमण्डल पर बारह राशियों की स्थिति बताई है। उनमें से अधिकांश राशियों की अवस्थिति ललाट प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में होती है। पाश्चात्य विद्वानों ने इन राशियों के 'प्रतीक-चिन्ह' भी निर्धारित किए हैं। चित्र संख्या १२२ में मुखमण्डल पर द्वादश राशियों की अवस्थिति को प्रदर्शित किया गया है।

राशियों की अवस्थिति के विषय में निम्नानुसार समझना चाहिए—

मेष—इस राशि का स्थान बाएं कान के ऊपरी भाग में है। इसके प्रतीक-चिन्ह का स्वरूप अंकुश जैसा होता है।

वृष—इसका स्थान ललाट के मध्य भाग में है। इसका प्रतीक-चिन्ह हिन्दी के चार के अंक (४) जैसा होता है।

मिथुन—इसका स्थान बाएं कान के ऊपरी भाग में मेष राशि के समीप ही है। इसका प्रतीक चिन्ह दो खड़ी रेखाओं जैसा होता है।

कर्क—इसका स्थान ललाट के ऊपरो भाग में है। हिन्दी के सात के दो अंकों को परस्पर उलट कर रख दिया जाये। ऐसा इसका प्रतीक-चिन्ह होता है।

सिंह—इसका स्थान दायीं भौंह के ऊपर है। इसका प्रतीक-चिन्ह ऋ की मात्रा में जुड़े हुए वृत्ताकार चिन्हों जैसा होता है।

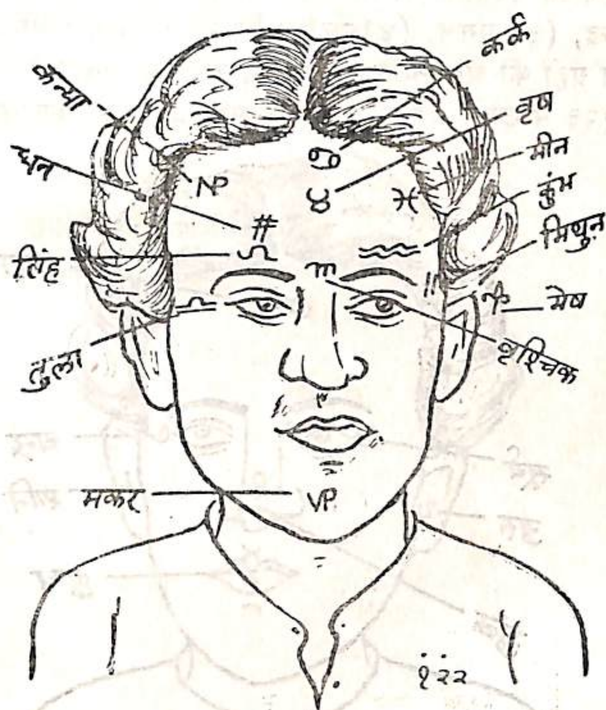
कन्या—इसका स्थान ललाट के ऊपरी भाग में दाईं ओर को है। अंग्रेजो के N तथा P इन दो अक्षरों के संयुक्त रूप जैसा इसका प्रतीक-चिन्ह कहा गया है।

तुला—इसका स्थान दाएं कान के ऊर्ध्वभाग में है। धनुषाकार आकृति के नीचे एक पड़ी रेखा जैसा इसका प्रतीक-चिन्ह बताया गया है।

वृश्चिक—इसका स्थान नाक के ऊर्ध्वभाग में दोनों भौंहों के बीच वाले भाग से कुछ ऊपर की ओर है। इसका प्रतीक-चिन्ह अंग्रेजी के M अक्षर की भांति होता है।

धन—इसका स्थान दाएं नेत्र के ऊपरी भाग में है। इसका प्रतोक चिन्ह खजूर वृक्ष की शाखा जैसा बताया गया है।

मकर—इसका स्थान चिबुक (ठोड़ी) के ऊपरी भाग में है। अंग्रेजी के V तथा P अक्षरों के सम्मिलित रूप जैसा इसका प्रतीक-चिन्ह कहा गया है।



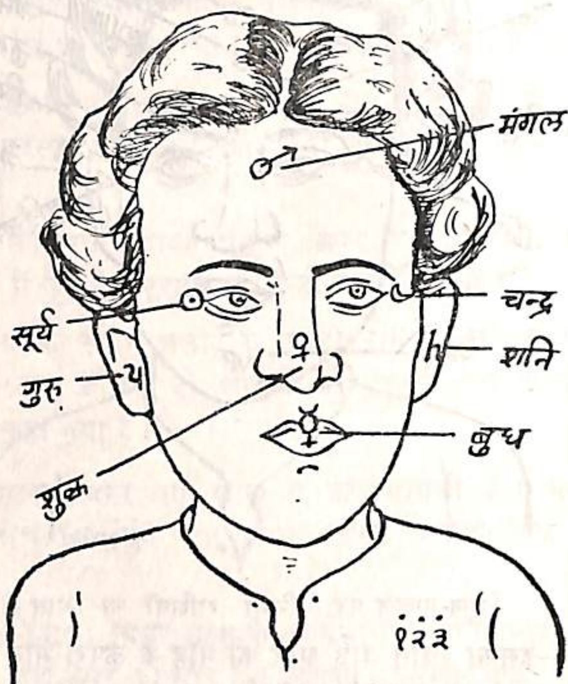
[मुख-मण्डल पर विभिन्न राशियों का स्थान]

कुम्भ—इसका स्थान बाईं ओर की भौंह के ऊपरी भाग में है। इसका प्रतीक-चिन्ह दो लहरदार रेखाओं जैसा माना गया है।

मीन—इसका स्थान ललाट के ऊर्ध्व भाग में बाईं ओर है। इसका प्रतीक-चिन्ह हिन्दी के ३ और ६ अंक के सम्मिलित रूप जैसा बताया गया है।

मुख-मण्डल पर विभिन्न ग्रहों का स्थान

पाश्चात्य विद्वानों ने विभिन्न राशियों की भांति ही (१) सूर्य, (२) चन्द्र, (३) मंगल, (४) बुध, (५) गुरु, (६) शुक्र तथा (७) शनि—इन सात ग्रहों की अवस्थिति भी मुख-मण्डल पर बताई है, जिसे चित्र संख्या १२३ में उनके प्रतीक-चिन्हों के साथ प्रदर्शित किया गया है।



[मुख मण्डल पर विभिन्न ग्रहों का स्थान]

संक्षेप में मुख-मण्डल पर ग्रहों की स्थिति के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सूर्य—इसका निवास दाएं नेत्र में है।

चन्द्र—इसका निवास बाएं नेत्र में है।

मंगल—इसका निवास ललाट में है।

बुध—इसका निवास मुख में है।

गुरु—इसका निवास दाएं कान में है।

शुक्र—इसका निवास नासिका में है।

शनि—इसका निवास बाएं कान में है।



हाथ के द्वारा चरित्र-परीक्षा

हाथ की बनावट तथा हाथ की रेखाओं तथा चिह्न द्वारा मनुष्य के चरित्र, स्वभाव आदि की परीक्षा करना भी 'लक्षण-शास्त्र' का ही एक अंग है, परन्तु यह विषय (हस्त-परीक्षा) बहुत बड़ा है और उस पर प्राच्य (भारतीय) तथा पाश्चात्य (पश्चिमी) विद्वानों के मत का उल्लेख करते हुए 'वृहद्-सामुद्रिक-विज्ञान' के पिछले १० खण्डों में पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है। अतः यहां उसकी पुनरावृत्ति न करके हस्त-रेखाओं की परीक्षा द्वारा मनुष्य के चरित्र, स्वभाव तथा जीवन में घटने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में 'कार्तिकेयन-पद्धति' का उल्लेख इस प्रकरण में किया जा रहा है।

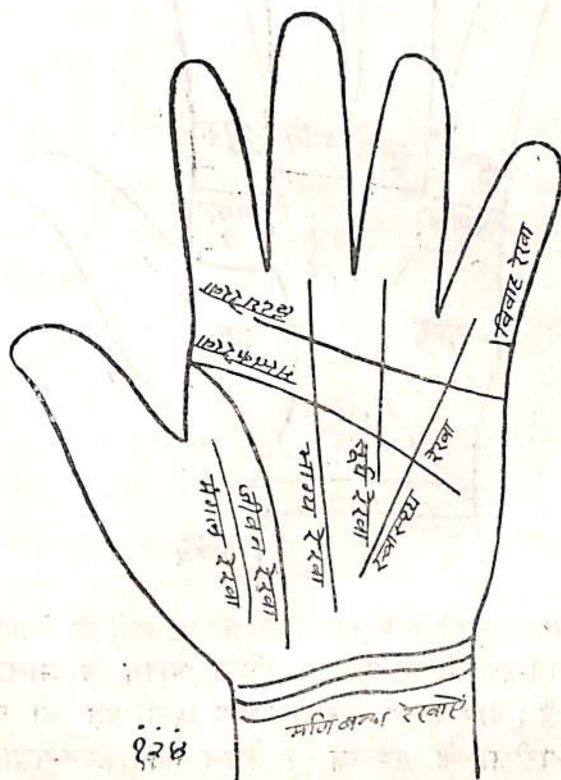
'वृहद्-सामुद्रिक-विज्ञान' के 'जीवन-रेखा' खण्ड में 'जीवन-रेखा' के सम्बन्ध में 'कार्तिकेयन-पद्धति' के विद्वानों का विस्तृत उल्लेख किया जा चुका है, अतः यहां उस रेखा का संक्षिप्त विवरण मात्र देकर अन्य रेखाओं के विषय में इस प्रणाली के विद्वानों के मत का सचित्र विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दाएं अथवा बाएं हाथ की उंगलियों तथा उनके मूल भाग पर पाई जाने वाली विभिन्न छोटी-छोटी रेखाओं की स्थति और प्रभाव आदि के सम्बन्ध में जितना वर्णन किया गया है, कार्तिकेयन-पद्धति में उससे कहीं बहुत अधिक बातें पाई जाती हैं। अतः हस्त-परीक्षा के अभ्यासियों तथा जिज्ञासुओं के लिए 'कार्तिकेयन-प्रणाली' का ज्ञान अत्यधिक लाभदायक सिद्ध होगा—ऐसा

हमारा विश्वास है। पाश्चात्य प्रणाली द्वारा मान्य हाथ की विभिन्न मुख्य रेखाओं तथा ग्रह-क्षेत्रों को चित्र संख्या १२४ तथा १२५ में पाठकों के स्मरण रखने मात्र की दृष्टि में प्रदर्शित किया जा रहा है, ताकि 'कार्तिकेयन-प्रणाली' के अन्तर को भली-भांति समझा जा सके।

कार्तिकेयन- प्रणाली

हस्त-परीक्षा की कार्तिकेयन-प्रणाली के जन्मदाता भगवान् शंकर



[पाश्चात्य-प्रणाली के अनुसार हाथ पर विभिन्न मुख्य रेखाओं की स्थिति]

के पुत्र 'स्वामी कार्तिकेय' माने जाते हैं। स्वामी कार्तिकेय का एक नाम 'स्कन्द' भी है। अतः इस पद्धति को 'स्कन्द-प्रणाली' भी कहते हैं।



[पाश्चात्य-प्रणाली के अनुसार हथेली पर ग्रह-क्षेत्रों की स्थिति]

कार्तिकेयन-प्रणाली का प्रचलन दणिण भारत के मालावार-क्षेत्र में अत्यधिक है। वहां के हस्त-परीक्षक अन्य किसी मत को स्वीकृत न करके हस्त-परीक्षा के सम्बन्ध में केवल कार्तिकेयन-पद्धति को ही प्रमाण मानते हैं और इसी के आधार पर वे आश्चर्यजनक फलादेश करते हुए पाये जाते हैं।

काल-गणना

कार्तिकेयन-प्रणाली में हाथ की रेखाओं द्वारा काल-गणना के लिए हाथी की पूंछ के बाल का प्रयोग किया जाता है। अर्थात् हाथी की पूंछ के बाल की चौड़ाई जितने रेखा-स्थान को जातक के जीवन का एक वर्ष का समय माना जाता है। हाथ की पूंछ के बाल की चौड़ाई विभिन्न आकार की हो सकती है, परन्तु यहां पर उसका अभिप्राय औसत चौड़ाई का बाल समझना चाहिए। इस विधि से वर्ष के सूक्ष्मांशों को भी ज्ञात किया जा सकता है।

हथेली पर मुख्य रेखाओं तथा विभिन्न स्थानों की स्थिति

कार्तिकेयन-प्रणाली के अनुसार हथेली पर मुख्य रेखाओं तथा विभिन्न स्थानों की जो स्थिति मानी गई, है उसे चित्र संख्या १२६ में प्रदर्शित किया गया है।

इनके स्थानादि के सम्बन्ध में शास्त्र में निम्नलिखित वर्णन पाया जाता है—

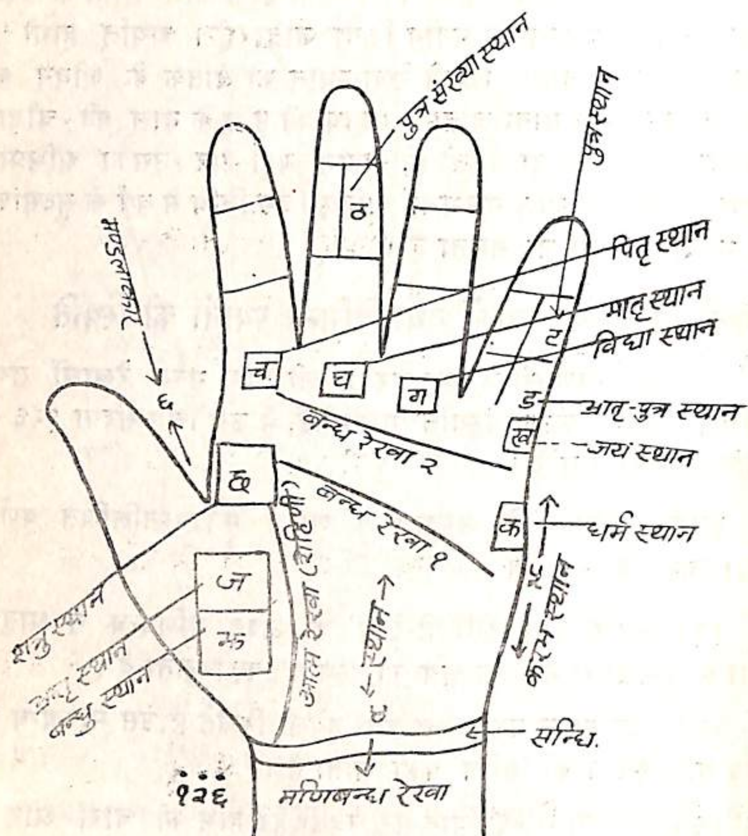
(१) 'करभ' तथा 'रोहिणी-रेखा' के ऊपर मणिबन्ध से आवृत्त तथा बन्ध-रेखा से नीचे के क्षेत्र को 'स्थान' कहा जाता है।

(२) जिस स्थान पर पहुंचा तथा हथेली मिलते हैं, उस मणिबन्ध के जोड़ वाले स्थान को 'सन्धि' कहा जाता है।

(३) जो रेखा सन्धि-स्थान पर रहती हुई हाथ को चारों ओर से घेरे रहती है, उसे 'मणिबंध-रेखा' कहा जाता है।

(४) जो रेखा पितृ-स्थान के नीचे से आरंभ होकर धर्म-स्थान की ओर बढ़ती है, उसे 'प्रथम-बंध-रेखा' कहा जाता है। यह रेखा दोनों हाथों पर पाई जातो है।

(५) जो रेखा करभ स्थान, धर्म तथा जप के स्थान के समीप से आरम्भ होकर मातृ-पितृ स्थान के बीच में कहीं पहुंचती है, उसे



[कार्तिकेयन-प्रणाली के अनुसार हथेली पर विभिन्न रेखाओं तथा स्थानों की स्थिति]

'द्वितीय बंध-रेखा' कहते हैं। यह रेखा भी दोनों हाथों पर पाई जाती है।

(६) कुछ हाथों में बंध-रेखा, मणिबंध-रेखा तथा कनिष्ठा उंगली के बीच तक के भाग में किसी भी स्थान पर पाई जाती है। कनिष्ठा उंगली की सीध में नीचे वाले इस क्षेत्र को 'करभ-स्थान' कहा जाता है।

(७) 'करभ-स्थान' से लगभग एक अंगुल की दूरी पर 'धर्म-स्थान' की स्थिति है। धर्म-स्थान के ऊपर तथा कनिष्ठा उंगली के समीप 'जप-स्थान' होता है।

(८) कनिष्ठा तथा अनामिका उंगलियों के मध्य भाग में जो एक स्थान उभरा हुआ-सा रहता है, उसे 'विद्या-स्थान' कहा जाता है।

(९) मध्यमा उंगलो के नीचे तथा तर्जनी उंगली के वामपार्श्व में जो उभरा हुआ स्थान होता है, उसे 'मातृ-स्थान' समझना चाहिए।

(१०) तर्जनो उंगली तथा द्वितीय बंध-रेखा के मध्य का स्थान पितृ-स्थान होता है।

(११) पितृ-स्थान के नीचे तथा रोहिणो-रेखा के ऊपर अंगुष्ठ मूल में जो गड्ढा होता है, उसे 'शत्रु-स्थान' समझना चाहिए।

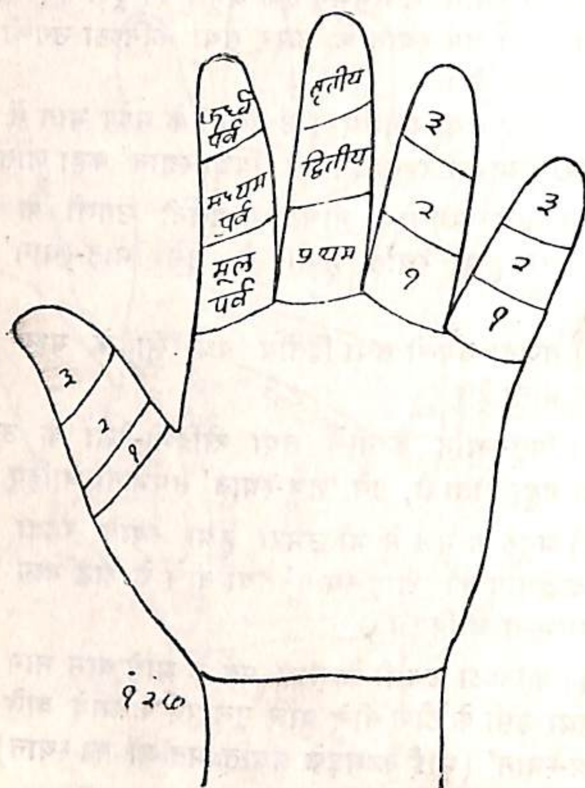
(१२) अंगूठे के मूल में जो उभरा हुआ स्थान रहता है, उसके ऊपर के अर्द्धभाग को 'भ्रातृ-स्थान' तथा नीचे के अर्द्ध भाग को 'बंधु-स्थान' समझना चाहिए।

(१३) कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व के आधे वाम भाग को 'पुत्र-स्थान' तथा उसी के ठीक नीचे वाले मूल पर्व के आधे वाले भाग को 'भ्रातृ-पुत्र-स्थान' (भाई के लड़के अर्थात् भतीजों का स्थान) समझना चाहिए।

(१४) मध्यमा अंगुली के मध्य पर्व के आधे वाम भाग को 'पुत्र-संख्या-स्थान' अथवा 'संतान-संख्या-स्थान' समझना चाहिए।

(१५) अंगूठे के मूल भाग से हथेली के किनारे वाले पितृ-स्थान तक के बीच वाले क्षेत्र को 'मण्डलाकार' कहते हैं।

(१६) चारों उंगलियों के मूल का क्षेत्र, 'पितृ-स्थान' तथा अंगूठे के मूल का क्षेत्र—इस सम्पूर्ण स्थान को 'अस्पष्ट वंध' के नाम से पुकारा जाता है।



[उगलियों के विभिन्न पर्व]

(१७) दसों उंगलियों में से प्रत्येक में तीन-तीन संधियां होती हैं, उन संधियों को 'पर्व' कहा जाता है। हथेली के समीप वाली सन्धि

को 'पहला पर्व', मध्य की सन्धि को 'दूसरा पर्व' तथा उंगली के सबसे ऊपर के भाग को 'तीसरा पर्व' कहा जाता है। अंगूठे में भी तीन ही पर्व माने जाते हैं।

चित्र संख्या १२७ में उंगलियों के विभिन्न पर्वों को प्रदर्शित किया गया है।

हाथ की रेखाओं का वर्णन

अब हम कार्तिकेयन-प्रणाली के आधार पर हाथ की रेखाओं की स्थिति और उनके प्रभाव का वर्णन करते हैं। जो निम्नानुसार है—

दाएं हाथ की रेखाएं

दाएं हाथ में पाई जाने वाली रेखाओं के नाम तथा उनके प्रभाव के सम्बन्ध में 'कार्तिकेयन-पद्धति' के विद्वानों के मत का सारांश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

रोहिणी

रोहिणी-रेखा दाएं हाथ में मणिबंध से आरम्भ होकर हथेली के बीच से होती हुई सीधी तर्जनी उंगली के मूल भाग तक जाती है (चित्र संख्या १२८)। इस रेखा का रंग रक्तिम होता है। इस प्रकार की बिना झुकी तथा अभग्न रेखा वाला जातक सौ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है। यदि किसी स्थान पर इस रेखा में कोई अन्तर दिखाई दे, तो उसे किसी असाध्य-रोग अथवा दुघटना का लक्षण समझना चाहिए।

यह रेखा दोनों हाथों में पाई जाती है। यदि दोनों ही हाथों में यह रेखा समान स्थानों पर टूटी हुई दिखाई दे, तो उसी वयोमान में जातक की मृत्यु हो जाती है। इस रेखा के विषय में 'वृहद सामुद्रिक विज्ञान' के 'जीवन-रेखा' शीर्षक खण्ड में विस्तृत प्रकाश डाला जा



१२८

चुका है। अतः स्थिति एवं प्रभाव के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए उक्त खण्ड का अध्ययन करना चाहिए।

पाशा

यह रेखा वृत्ताकार होती है तथा हथेली के मध्य भाग में पाई



१२९

जाती है (चित्र संख्या १२६)। यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो, वह तीनों लोकों में विजय प्राप्त करने वाला तथा त्रिलोकी को अपने वशीभूत करने वाला होता है।

बाला

यह रेखा या तो रोहिणी-रेखा के मूल भाग से निकलती है अथवा उसके कुछ दाईं ओर से निकलकर आगे बढ़ती हुई धर्म-स्थान की ओर मुड़ जाती है (चित्र संख्या १३०)। इस रेखा का रंग सुनहरा



होता है। यह स्पर्श में कोमल होती है। इस रेखा के प्रभाव से वृद्ध-पुरुषों में भी युवकोचित प्रवृत्तियां पाई जाती हैं। यह रेखा प्रसन्नता, उत्साह तथा आनन्द को देने वाली होती है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति श्रेष्ठ जौहरी होता है। उच्च कोटि के जौहरियों के हाथ में ऐसी रेखा पाई जाती है।

मही

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के मूल से उत्पन्न होकर करभ-स्थान तक जाती है (चित्र संख्या १३१) । यह रेखा बहुत स्पष्ट तथा वक्र (टेढ़ी) होती है । जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह सभी शास्त्रों का ज्ञाता होता है । यदि हाथ में अन्य लक्षण भी शुभ हों तो यह रेखा



राजयोग-कारक भी बन जाती है, परन्तु इस रेखा का शुभ फल तभी होता है जबकि यह किसी अन्य रेखा अथवा रेखाओं द्वारा कटी हुई न हो । कुछ विद्वानों के मतानुसार इस रेखा का फल तभी प्राप्त होता है जबकि अन्य रेखाओं के द्वारा इसके प्रभाव की पुष्टि हो सके ।

हृद्गत सत्वदा जाया

बंध-रेखा तथा मही-रेखा के मध्य भाग में कुछ वक्राकृति लिये हुए जो रेखाएं दिखाई देती हैं, उन्हें 'हृद्गत सत्वदा जाया' रेखा कहा जाता है (चित्र संख्या १३२) । इन रेखाओं द्वारा जातक को पत्नियों

के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है। अर्थात् ये रेखाएं संख्या में जितनी होती हैं, जातक की उतनी ही स्थाई अथवा अस्थाई पत्नियां होती हैं। कुछ विद्वान् इन रेखाओं को 'जाया-रेखा' (पत्नी-रेखा) के


१३२

नाम से भी पुकारते हैं। नौकरी, आनन्द, सन्तानों का जन्म तथा स्त्री-सुख आदि विषयों का इन रेखाओं द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

इन्दिरा

यह रेखा मणिबंध-रेखा से आरम्भ होकर ऊपर को उठती है तथा 'रोहिणी-रेखा' के दाईं ओर मध्यमा उंगली के नीचे 'हारा-रेखा' तथा 'बंध-रेखा' तक पहुंचती है (चित्र संख्या १३३)। यह रेखा जातक को सभी क्षेत्रों में सफलता प्रदान करती है। यदि अन्य किसी रेखा से संयोग होने के कारण इस रेखा की आकृति 'मत्स्य' जैसी हो जाय तो जातक दीर्घायु, अच्छा स्वास्थ्य, धन तथा विद्या प्राप्त करता है।



पुंजिका

धर्म-स्थान से नीचे पाये जाने वाले रेखाओं के समूह को 'पुंजिका'



नाम से पुकारा जाता है (चित्र संख्या १३४)। इस रेखा के प्रभाव से युवावस्था में जातक की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

कन्धु

यह रेखा करभ-स्थान के ऊपर, धर्म-स्थान के समीप, तर्जनी उंगली की ओर झुकी हुई पाई जाती है, (चित्र संख्या १३५)। यह रेखा



जिस व्यक्ति के हाथ में होती है वह सदैव दुःखी तथा रोगी बना रहता है, भले ही उसकी चिकित्सा स्वयं धनवन्तरि ही क्यों न करें। यह रेखा जातक को मस्तक सम्बन्धी रोगों से भी पीड़ित रखती है। स्त्रियों के लिए यह रेखा सन्तोषदायक तथा शुभ मानी गई है।

कमला

यह रेखा इन्दिरा-रेखा के बाईं ओर हथेली के मध्य भाग पर और कभी-कभी इन्दिरा रेखा के समान ही लम्बी तथा रक्तिम वर्ण वाली होती है (चित्र संख्या १३६)।

जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह दीर्घजीवी तथा विपुल-सम्पत्ति का स्वामी होता है। यहां दीर्घ-जीवन से तात्पर्य सम्पन्नता पूर्ण चौंसठ वर्षों से समझना चाहिए।



काम हरिन्तका

यह रेखा अनामिका उंगली के मूल के मध्य भाग तथा बन्ध-रेखा के बीच में स्थित रहती है (चित्र संख्या १३७)।



इस रेखा वाला व्यक्ति श्रेष्ठ पुत्रों का सुख तथा विविध प्रकार के आनन्द प्राप्त करता है। यदि यह रेखा किसी स्त्री के हाथ में हो तो उसे सुख, धन तथा सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

रतिप्रदा

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के मूल भाग में स्थित रहती है। यह आकार में छोटी, पतली परन्तु स्वर्ण के समान आभायुक्त होती है



(चित्र संख्या १३८)। यह रेखा विवाह सम्बन्धी सुख तथा रति के आनन्द को देने वाली कही गई है।

हेमवल्ली

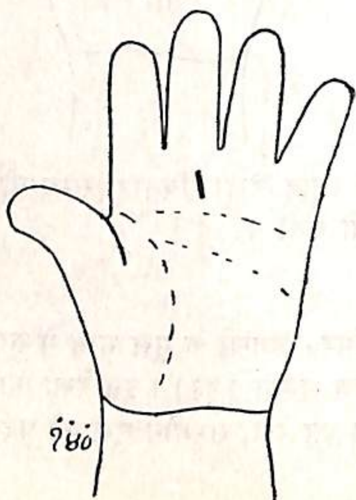
यह रेखा अनामिका उंगली के मूल भाग में कुछ टेढ़ापन लिये हुए स्थित रहती है (चित्र संख्या १३९)। इस रेखा का रंग स्वर्ण के समान चमकदार होता है। यह रेखा सम्भोग सुख को प्रदान करने [illegible] गई है।



ऐसी रेखा वाला जातक विविध सहवास-सुखों को प्राप्त करता है।

पत्

यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल भाग में स्थित रहती है तथा कुछ मोटी होती है (चित्र संख्या १४०)।



ऐसी रेखा वाला जातक भ्रातृ-सुख, अनन्त ज्ञान तथा अन्य सभी प्रकार के आनन्दों का उपभोग करता है। अन्तकाल में यह रेखा जातक को ब्रह्मपद (निर्वाण अथवा मोक्ष) देने वाली कही गई है।

पवित्र तनु

इस रेखा की अवस्थिति तर्जनी उंगली के मूल भाग में रहती है। यह रेखा आकृति में पतली; कुछ टेढ़ी तथा श्वेत रंग की होती है (चित्र संख्या १४१)।



१४१

जिस जातक के हाथ में यह रेखा पाई जाती है, वह मनसा-वाचा-कर्मणा शुद्ध स्वभाव का होता है।

इस रेखा वाले जातक का चरित्र तथा स्वभाव निर्मल एवं पवित्र होता है, वह समस्त सद्गुणों की खान तथा अवगुणों से रहित होता है।

कृता

यह रेखा अंगुष्ठ मूल एवं संधि-रेखा से कुछ अलग हटकर स्पष्ट होती है। यह आकार में टेढ़ी तथा छोटी होती है (चित्र संख्या १४२)। इसका रंग लालिमा लिए होता है।



१४२

यह रेखा जातक के कर्मों का शुभ फल प्रदान करने वाली होती है तथा स्त्री और पुरुष-दोनों में समान रूप से प्रभाव डालकर उनमें उत्साह तथा शक्ति का संचार करती है।

महामति

यह रेखा कनिष्ठा तथा अनामिका अंगुली के मध्य भाग में पाई जाती है। यह छोटी-बड़ी कई तरह के आकार की हो सकती है (चित्र संख्या १४३)।

यदि इस रेखा का झुकाव दाईं ओर (कनिष्ठा उंगली की ओर)



अधिक हो तो जातक श्रेष्ठ पहलवान होता है। ऐसी रेखा वाले स्त्री-पुरुष अत्यन्त बुद्धिमान, गुणवान तथा विद्वान् होते हैं।

पति

कनिष्ठा उंगली तथा मध्यमा उंगली के बीच से आरम्भ होकर जो रेखाएं नीचे की ओर बढ़ती हैं, उन्हें 'पति-रेखा' कहा जाता है। इन रेखाओं में जो भी रेखा अधिक लम्बी होती है, उसे 'महापति-रेखा' कहा जाता है और जो रेखा लम्बाई में सबसे कम होती है, उसे 'अल्प-पति रेखा' कहा जाता है (चित्र संख्या १४४)। जो रेखा इन 'महापति' तथा 'अल्पति' रेखाओं से छोटी होती है, उसे 'पतिरेखा' कहते हैं। यह रेखाएं गहरी, चौड़ी तथा चमकदार होती हैं। पति-रेखा यदि अनामिका उंगली के नीचे से आरम्भ हो तो यह अधिक सन्तान देने वाली होती है। यह रेखाएं काम-शक्ति में वृद्धि करने वाली होती हैं।



क्लेशा

यह रेखा तर्जनी तथा मध्यमा उंगली के बीच से नीचे का ओर जाती है (चित्र संख्या १४५)।



इस रेखा के प्रभाव से जातक हर समय विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं में डूबा रहने वाला होता है।

यह रेखा क्लेश को देने वाली कही गई है।

हार

यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल भाग में प्रतिपदा के चन्द्रमा की भांति पाई जाती है। (चित्र संख्या १४६)।



१४६

इस रेखा वाला पुरुष जातक राजाओं का प्रिय होता है तथा ऐसी रेखा वाली स्त्रियां मूल्यवान रत्नाभूषणों को धारण करने वाली तथा गौरव-गर्विता होती हैं।

यदि इस रेखा का उभार अत्यन्त स्पष्ट हो तो जातक को राजकीय सेवा का अवसर प्राप्त होता है। कुछ विद्वान इस रेखा को 'चन्द्र-रेखा' के नाम से भी पुकारते हैं।

मन्दोष्णादा

यह रेखा आकृति में 'हार' रेखा जैसी ही होती है, परन्तु यह तर्जनी तथा अनामिका अंगुलियों के नीचे रहकर मध्यमा उंगली के क्षेत्र को घेरे हुए दिखाई देती है (चित्र संख्या १४७)।



इस रेखा वाले व्यक्तियों का शरीर स्पर्श करने में अत्यन्त शीतल होता है। यह रेखा जातक को मन्द-बुद्धि बनाती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक कठिनाइयां उपस्थित करती है।

टिप्पण —यह रेखा 'शुक्र-मुद्रिका' जैसी ही होती है।

निष्ठा

यह रेखा अनामिका उंगली के मूल से आरम्भ होकर कनिष्ठा उंगली के मूल तक बढ़ती हुई तथा जप-स्थान को काटती हुई, धर्म-स्थान की ओर चली जाती है (चित्र संख्या १४८)। इसकी आकृति पतली होती है।



यह रेखा जितनी बड़ी आकृति की होती है, जातक उतना ही दीर्घ-जीवी होता है। ऐसी रेखा वाला जातक धार्मिक-भावनाओं से परिपूर्ण रहता है।

धात्री

यह रेखा मणिबंध से आरम्भ होकर 'रोहिणी-रेखा' के बाएं पार्श्व में जाती है। उसी के संयोग से अथवा किन्हीं अन्य रेखाओं के योग से

यह रेखा मत्स्य अथवा शंख की आकृति ग्रहण कर लेती है (चित्र संख्या १४६)।

इस रेखा में अनेक ऊपर की ओर उठी हुई उप-रेखाएं भी पाई जाती हैं।

यह रेखा जातक को सब प्रकार के ऐश्वर्य तथा भू-सम्पत्ति देने वाली कही गई है।



गोपी

यह रेखा मणिबंध से आरम्भ होकर सम्पूर्ण हथेली को पार करता



हुई अनामिका तथा कनिष्ठा उंगली के मूल के मध्य भाग में जाकर समाप्त होती है (चित्र संख्या १५०)।

यह रेखा जातक को राजा अथवा राज्य के भय से मुक्त करती है तथा जीवन को उन्नत बनाती है।

प्रियव्रता

यह रेखा करभ-स्थान से निकलकर ऊर्ध्वगामी होती हुई कनिष्ठा उंगली के मूल तक जाती है (चित्र संख्या १५१)। यह रेखा धर्म के फल को प्रदान करने वाली कही गई है। ऐसी रेखा वाला जातक धर्मात्मा तथा पुण्यात्मा होता है।



यह रेखा पूर्व जन्म के शुभ कर्म तपस्या के आधार पर श्रेष्ठ गुणा को देने वालो होती है। कुछ विद्वान् इस रेखा को 'मागधो' नाम से भी पुकारते हैं।

धेनुका

यह रेखा मणिबंध से आरम्भ होकर 'इन्दिरा-रेखा' के वाम पार्श्व

में होती हुई मध्यमा उंगली के मूलभाग तक जाती है (चित्र संख्या १५२)। यह रेखा आकार में पतली होती है।



ऐसी रेखा वाले जातक की समस्त आकांक्षाएं आनुपातिक रूप में पूरी होती हैं।

इस रेखा वाला व्यक्ति अनेक गायों का स्वामी होता है। इसे अत्यन्त शुभ माना जाता है।

धर्मा

यह रेखा हथेली के मध्य भाग में कोणाकृति की पाई जाती है। यह अपने मूलभाग में भग्न होती है (चित्र संख्या १५३)।

ऐसी रेखा वाला जातक स्थायी रूप से धर्मात्मा होता है। उसकी धर्म में निरन्तर अभिरुचि बनी रहती है। यह रेखा जातक की समस्त आकांक्षाओं को पूर्ण करने वाली कही गई है।



धनप्रदा

यह रेखा मणिबंध से आरम्भ होकर 'इन्दिरा-रेखा' के वाम पार्श्व



में होती हुई मध्यमा उंगली के मूल स्थान तक सीधी चली जाती है (चित्र संख्या १५४)।

यह रेखा जातक की इच्छा के अनुसार धन प्रदान करने वाली तथा सुख-सम्पत्ति में वृद्धि करने वाली होती है।

गोदा

यह रेखा 'रोहिणी-रेखा' के वाम पार्श्व से उत्पन्न होकर, ऊर्ध्वगामिनी बनकर कनिष्ठा उंगली के मूल स्थान तक जाती है (चित्र संख्या १५५)।



यदि यह रेखा टूटी-फूटी न होकर स्पष्ट आकृति की हो तो जातक को धन-धान्य से पूर्ण करने वाली सिद्ध होती है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार इस रेखा का प्रारम्भ कभी-कभी आत्म-रेखा से होते हुए भी देखा गया है।

हन्त्री

यह रेखा धर्म-स्थान से आरम्भ होकर इन्दिरा तथा रोहिणी-

रेखाओं को काटती हुई अंगूठे के मूल भाग तक जाती है (चित्र संख्या १५६)।


१५६

यह रेखा जातक के सम्पूर्ण धन-धान्य एवं सम्पत्ति का नाश कर देने वाली कही गई है।

गोमती

यह रेखा रोहिणी-रेखा के मूल भाग से आरम्भ होकर हथेली के मध्य भाग को पार करती हुई अनामिका उंगली के मध्य पर्व तक जा पहुंचती है (चित्र संख्या १५७)।

ऐसी रेखा वाला जातक समस्त ज्ञान-विज्ञान एवं कलाओं का ज्ञाता तथा ऐश्वर्यवान् होता है। कुछ विद्वान इस रेखा को 'विद्या-रेखा' अथवा 'ज्ञान-रेखा' भी कहते हैं।



धनिला

यह रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होकर रोहिणी-रेखा की भांति



सम्पूर्ण हथेली को पार करती हुई अनामिका उंगली के उच्च पर्व तक जाती है (चित्र संख्या १५८)।

यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में होती है, उसे प्रचुर मात्रा में धन प्राप्त होता है।

कुछ विद्वान् इस रेखा को 'त्रिद्याधार-रेखा' भी कहते हैं।

ऊर्ध्व-रेखा

यह रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होकर सम्पूर्ण हथेली को पार करती हुई मध्यमा उंगली के ऊपर तक जाती है (चित्र संख्या १५९)। यह



रेखा यदि शाखा-रहित और अविछिन्न हो तो जातक सौ वर्ष की आयु तक सुखी तथा सम्पन्न-जीवन व्यतीत करता है तथा मृत्यु के पश्चात् परम-पद को पाता है।

ऊर्ध्व पद प्राप्त कराने वाली होने के कारण ही इसका नाम 'ऊर्ध्व-रेखा' पड़ा है। यदि यह रेखा शाखायुक्त अथवा टूटी-फूटी हो तो इसका फल अशुभ होता है।

माधवी

यह तिर्यक्-रेखा अंगूठे के ऊपरी भाग पर पाई जाती है (चित्र संख्या १६०)।



यदि यह रेखा अनेक शाखाओं में विभक्त हो अर्थात् अंगूठे के ऊपरी भाग पर यदि ऐसी एक से अधिक रेखाएं हों, तो यह और भी प्रभावशाली सिद्ध होती है।

ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के होती है, वह व्यक्ति सदैव प्रसन्न बना रहता है तथा मद्यपान से घृणा करता है।

मति

यह रेखा अंगूठे के मूल भाग में पाई जाती है (चित्र संख्या १६१)।

यदि यह रेखा आकृति में लहरदार हो, तो जातक मन्द-बुद्धि होता है। यदि इस रेखा में से कुछ शाखा-रेखाएं ऊपर की ओर जा रही हों तो जातक की आकृति (चेहरा) भी खराब होती है सामान्यतः इस



रेखा का प्रभाव मति-भंगकारक है। यदि संधि-स्थान पर ऐसी दो से अधिक रेखाएं हों तो वे परिचायत्मक परिणाम देने वाली होती हैं।

कण्डु

यह रेखा अंगूठे के मूल भाग में पाई जाती है। इसकी आकृति



भाले जैसी होती है अर्थात् इस रेखा के मूल से दो अन्य रेखाएं निकल-कर दोनों ओर को इस प्रकार फैल जाती हैं कि वहां तीर की नोंक अथवा भाले जैसा चिन्ह वन जाता है (चित्र संख्या १६२)।

यह रेखा यदि तर्जनी उंगली की ओर झुकी हुई हो तो भाइयों की संख्या में वृद्धि की सूचक होती है। सामान्यतः यह रेखा मित्र, शुभ-चिन्तक, भाई-बन्धु, पुत्र तथा सम्बन्धियों को देने वाली कही गई है।

अपने नाम के अनुरूप ही यह रेखा जातक को कण्डु (खुजली) आदि त्वचा-रोग भी देती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार यह रेखा सीप अथवा शंख जैसी आकृति की भी होती है, परन्तु उससे इसके प्रभाव में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

कनिष्ठा

यह रेखा अंगूठे के नीचे भ्रातृ-स्थान से आरम्भ होकर तर्जनी उंगली की ओर मुड़ जाती है। यदि ऐसी रेखाएं एक से अधिक हों (चित्र संख्या १६३) तो उनसे जातक के भाई-बहनों की संख्या का पता चलता है। मोटी रेखाएं भाइयों की तथा पतली रेखाएं बहनों की सूचक समझनी चाहिएं।

यदि ये रेखाएं बंधु-स्थान के सिरे से परे तर्जनी, मध्यमा, अनामिका अथवा कनिष्ठा उंगलियों की ओर जाएं, परन्तु उंगलियों का स्पर्श न करती हों, तो उन्हें भी भाइयों की संख्या का सूचक ही समझना चाहिए, परन्तु यदि ये रेखाएं नीचे (मणिबन्ध) की ओर जा रही हों तो ऐसा फल नहीं होता।

यदि ये रेखाएं अपरिपक्वावस्था में भ्रातृ-स्थान पर स्थित हों तो इन्हें सम्बन्धियों की सूचक समझना चाहिए।



सौराष्ट्रिका

यह रेखा अंगूठे के मूल पर्व से आरम्भ होकर उसके ऊपरी पर्व तक फैली रहती है (चित्र संख्या १६४)।



जातक के हाथ में ऐसी जितनी भी रेखाएं होती हैं, उसके उतने ही शत्रु होते हैं। यदि यह रेखा 'स्फुरत्तनु-रेखा' का (जिसका वर्णन आगे किया गया है) स्पर्श करती हो तो जातक शत्रुओं द्वारा दुःख प्राप्त करता है।

यदि ये रेखाएं एक से अधिक संख्या में हों और उनमें से कोई रेखा मण्डलाकार होकर नीचे की ओर जाए तो जातक अपने पद से नीचे गिर जाता है।

यदि इन रेखाओं को किसी अन्य रेखा द्वारा काट दिया गया हो, तो जातक द्वारा धर्म-परिवर्तन कर लेने की सम्भावना रहती है।

यदि यह रेखा देखने में लहरदार हो, तो जातक स्वतन्त्र-प्रकृति का होता है, वह पराधीन नहीं रहता। ऐसी रेखा यदि किसी राजा के हाथ में हो तो वह सम्पन्नता एवं परोक्षता प्रदान करने वाली होती है।

स्फुरत्तनु

यह रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होकर रोहिणी-रेखा के दाईं ओर



होती हुई शत्रु-स्थान तक जाती है (चित्र संख्या १६५)। यह रेखा मण्डलाकार मोड़ लेती है।

यह रेखा शरीर की कान्ति बढ़ाने वाली तथा मंगल वस्तुओं को प्रदान करने वाली होती है।

रुक्मप्रभा

यह रेखा अंगूठे के ऊर्ध्व पर्व पर पाई जाती है (चित्र संख्या १६६)। इसकी आकृति दीप-शिखा जैसी होती है।



जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा पाई जाती है, वह विश्व नेता के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। इस रेखा का प्रभाव अत्यन्त शुभ, यश, धन, मान-प्रतिष्ठा तथा सुख की वृद्धि करने वाला होता है।

भवित्री

यह रेखा अंगूठे के ऊपरी अथवा मध्य भाग से आरम्भ होकर नाखून के सिरे तक पाई जाती है (चित्र संख्या १६७)। यदि यह रेखा गहरी, श्याम वर्णयुक्त तथा पुरानी हो तो इसके प्रभाव से जातक तीनों



लोकों का प्रिय होता है अर्थात् उसे संसार के सभी प्राणी स्नेह करते हैं ।

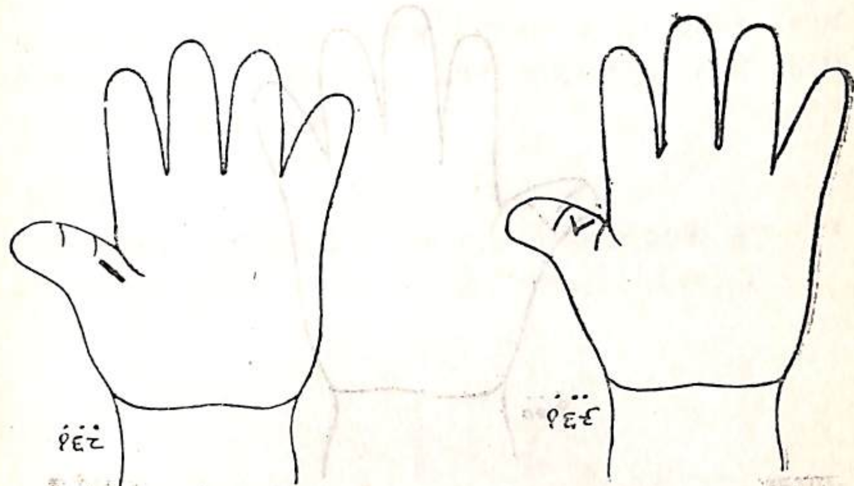
कपिला

यह रेखा अंगूठे के मूल भाग से कुछ ऊपर की ओर जाती हुई तथा मोटापन लिये हुए दिखाई देती है (चित्र संख्या १६८) ।

ऐसी रेखा वाला व्यक्ति धन-धान्य, स्वास्थ्य, सन्तान, स्त्री, सम्बन्धीजन आदि सब प्रकार के सुखों को विपुल मात्रा में प्राप्त करता हुआ सौ वर्ष तक जीवित रहता है ।

कामवल्ली

यह रेखा 'कपिला' (जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है) तथा 'युक्ता' (जिसका वर्णन आगे किया जाएगा) के ऊपरी भाग में पाई जाती है । यह रेखा अपने मध्य भाग से घुमावदार अर्थात् कोण जैसे आकार की होती है (चित्र संख्या १६९) ।



यह रेखा मन-वांछित फल प्रदान करतो है। इस रेखा के प्रभाव से जातक स्त्रियों को वशीभूत करने वाला, अत्यन्त आकर्षक, समृद्ध तथा यशस्वी होता है।

कन्दली

यह रेखा अंगूठे के ऊपरी भाग पर पाई जातो है तथा आकार में कुछ मोटी होती है (चित्र संख्या १७०)।

यदि पुरुष जातक के हाथ में यह रेखा हो तो उसे सम्राट् अथवा विपुल ऐश्वर्यशाली बनाती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में यह रेखा हो तो उसे दाम्पत्य-सुख तथा अन्य सभी प्रकार के सुख विपुल मात्रा में प्राप्त होते हैं। कुछ विद्वान् इस रेखा को 'युक्ता' के नाम से भी पुकारते हैं।



-युक्ता

यह रेखा अंगूठे के प्रथम तथा द्वितीय पर्व के बीच में पाई जाती है। इसका आकार सन्धि-रेखा के समान अर्द्ध चन्द्राकार होता है (चित्र संख्या १७१)।



यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो वह सम्राट् अथवा विपुल ऐश्वर्यवान् होता है। ऐसे जातक अपने बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों द्वारा पर्याप्त ख्याति अर्जित करते हैं।

गुलिनी

यह रेखा तर्जनी उंगली के मध्य भाग में अथवा उसके कुछ नीचे की ओर गोलाई लिये हुए पाई जाती है (चित्र संख्या १७२)।


१७२

इस रेखा के प्रभाव स्वरूप जातक के जोवन तथा ख्याति में कुछ कमी आ जाती है। यदि यह रेखा मध्य पर्व से कुछ ऊपर की ओर हो तो जातक दीर्घ-जीवन तथा यश—दोनों को ही प्राप्त करता है।

अरुणा

यह रेखा गुलिनी से ऊपर अर्थात् तर्जनी उंगली के मध्य पर्व में पाई जाती है (चित्र संख्या १७३)। इस रेखा का रंग लाल होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में यह रेखा हो तो उसके शरीर का रंग कुछ लालिमा लिये हुए होता है। यदि यह रेखा गहरी हो तो जातक को अशुभ फल प्रदान करती है ।



इस रेखा के प्रभाव के सम्बन्ध में विशेष विवरण नहीं मिलता, परन्तु इस रेखा वाला व्यक्ति अभिनयात्मक प्रवृत्ति का होता है। यह रेखा ऊर्ध्वगामी होती है।

वीरकण्टका

तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व में छोटी-छोटी पांच सीधी खड़ी रेखाओं को 'वीरकण्टका-रेखा' कहा जाता है (चित्र संख्या १७४)।

ये रेखाएं योद्धाओं को युद्ध क्षेत्र में सफलता प्रदान करने वाली होती हैं, परन्तु यदि इन रेखाओं की संख्या कम हो तो वे योद्धाओं को कण्टक स्वरूप अर्थात् हानि पहुंचाने वाली होती हैं।



हस्ता

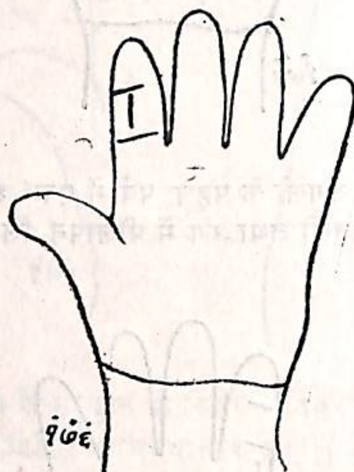
यह रेखा तर्जनी उंगली के पहले पर्व में एक ओर को खड़ी रहती है। यह आकार में पतली तथा रंग में पीलापन लिए होती है (चित्र संख्या १७५)।



इस रेखा वाला व्यक्ति खुले हाथों से दान करने वाला होता है। इस रेखा के प्रभाव से जातक अवगुण तथा हाथ के रोगों से मुक्त भी रहता है।

महिष्ठः

यह रेखा तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व के मध्य भाग में अथवा उससे कुछ नीचे की ओर पाई जाती है (चित्र संख्या १७६)।



यह रेखा अपने नाम के अनुरूप ही जातक को शुभ फल देने वाली कही गई है।

गुर्त्रिणी

यह रेखा तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व के मध्य भाग में द्वीप के आकार की होती है अथवा यों कहिए कि महिष्ठः रेखा के चारों ओर घेरा बनाती है (चित्र संख्या १७७)।

यह रेखा जातक को शारीरिक-शक्ति प्रदान करती है, परन्तु उसकी अवनति का कारण भी बन जाती है।



१७७

ऐसी रेखा वाला पुरुष स्थूल शरीर का होता है तथा ऐसी रेखा वाली स्त्रियों में सन्तानोत्पादन शक्ति अधिक पाई जाती है।

धन्विनी

यह रेखा तर्जनी उंगली के तीनों पर्वों पर फैली रहती है, परन्तु मध्य भाग में न रहकर, उंगली के दाएं किनारे पर होती है (चित्र संख्या १७८)।

यह रेखा जातक को ख्याति-रहित गर्व तथा धन-रहित दीर्घायु प्रदान करती है।



ऐसी रेखा वाला जातक दरिद्र होता है ।

रागदन्तिका

यह रेखा तर्जनी उंगली के मूल से निकलकर नीचे हथेली की ओर, रोहिणी-रेखा के ठीक विपरीत दशा में बढ़ती है । यदि इस रेखा में



'मत्स्य' की आकृति बन जाए (चित्र संख्या १७६) तो वह जातक को त्रैलोक्य-विजयी बना देती है।

सामान्य रूप से यह रेखा स्त्री-पुरुषों को मनवांछित फल प्रदान करने वाली होती है। ऐसी रेखा वाले स्त्री-पुरुष पान खाने के अधिक शौकीन होते हैं।

गौ

यह रेखा तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व पर पाई जाती है तथा कुछ टेढ़ापन लिए रहती है। यह आकार में मोटी, श्वेत रंग वाली, लम्बी तथा स्पर्श में मुलायम होती है (चित्र संख्या १८०)।



ऐसी रेखा वाला जातक अनेक गायों को पालता है। यदि किसी स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा हो तो उसे विशेष ख्याति प्रदान कराती है।

कालहृत्

यह रेखा तर्जनी उंगली के अग्रभाग पर रहती है। यह आकार में छोटी, श्याम वर्ण की तथा कुछ टेढ़ापन लिए रहती है (चित्र संख्या १८१)।



यदि यह रेखा स्पष्ट और अभग्न हो तो जातक के दुःख और परेशानियों को समाप्त करने वाली तथा उसे आजीवन आनन्द प्रदान करने वाली होती है।

कृता

यह रेखा तर्जनी उंगली के मध्य पर्व पर कुछ टेढ़ापन लिये हुए पाई जाती है। यह स्थूल (मोटी अथवा गहरी) तथा जर्जर (लहरदार अथवा टूटी-फूटी) होती है (चित्र संख्या १८२)।

यह रेखा जातक को प्रतिदिन दुःख देने वाली कही गई है। यह



रेखा जातक के पूर्व जन्म कृत पापों के परिणाम स्वरूप प्रकट होती है।

विष्णुगीः

यह रेखा तर्जनी उंगली के मध्य पर्व के मध्य भाग से कुछ नीचे की



ओर, सीधी दक्षिण पार्श्व में होती हुई ऊपर की ओर बढ़ती है। यह रेखा 'वीर कण्टक रेखा', जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है, को काटती है (चित्र संख्या १८३)।

यह रेखा जिस जातक के हाथ में होती है, वह सदैव ही अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त बना रहता है तथा अनेक प्रकार के दुःख, कष्ट तथा चिन्ताओं का सामना करता है, परन्तु ऐसी रेखा वाला व्यक्ति भगवद्-भजन करने वाला अवश्य होता है।

वरिष्ठा

यह रेखा तर्जनी रेखा के प्रथम पर्व में स्थित रहती है। यह अत्यन्त चमकदार; दुहरी तथा अन्य अनेक लगभग समान आकृति वाली छोटी-छोटी रेखाओं से घिरी रहतो है। (चित्र संख्या १८४)।



इन रेखाओं द्वारा जातक अपने अनेक सम्बन्धियों से घिरा रहता है तथा अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सम्बन्धियों की निरन्तर सहायता भी लेता रहता है।

देवी

यह रेखा तर्जनी उंगली के अग्रभाग पर स्थित गहरी, कटी हुई तथा चक्करदार होती है (चित्र संख्या १८५)। यह रेखा जातक को चमकदार आकृति तथा निम्न कोटि का शुभ फल प्रदान करती है।



ऐसी रेखा वाला जातक चतुर, आत्मज्ञानी, निपुण, सर्वप्रिय परन्तु धूर्त होता है।

महोत्पाता

यह वर्तुलाकार रेखा तर्जनी उंगली के मध्य पर्व पर स्थित पाई जाती है (चित्र संख्या १८६)। यह रेखा अन्य (सन्धि) रेखाओं से जुड़ी हुई हो या न हो, दोनों ही स्थितियों में एक जैसा प्रभाव प्रदर्शित करती है।

इस रेखा के फलस्वरूप जातक जीवन भर दुःख और सङ्कटों से घिरा रहता है। वह सदैव दुष्ट-वचन बोलता है। विद्वानों की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति पापी होता है।



१८६

यदि यह रेखा जातक के दोनों हाथों में हो तो वह दुष्ट होने के साथ ही कृतघ्नी भी होता है ।

स्मृतिः

यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल स्थान पर पाई जाती है तथा प्रथम



१८७

पर्व की सन्धि रेखा को काटती है। यह लम्बरूपा, चमकदार अथवा वर्तुलाकार होती है (चित्र संख्या १८७)।

ऐसी रेखा वाला जातक अध्ययनशील तथा तीव्र स्मरण-शक्ति-सम्पन्न होता है। वह अतीत की स्मृतियों को बनाए रखता है।

ऊह्या

यह रेखा पूर्वोक्त 'स्मृति-रेखा' के ऊपरी भाग में पाई जाती है। यह कांटेदार, चमकीले धब्बों वाली तथा तिर्यक् (टेढ़ी) प्रकार की होती है (चित्र संख्या १८८)।



ऐसी रेखा वाला जातक वैदिक-विषयों का श्रेष्ठ जानकार होता है और उसमें तर्क-विचार तथा कल्पना-शक्ति विशेष मात्रा में पाई जाती है।

केलिका

यह रेखा मध्यमा उंगली के मध्य पर्व पर कुछ तिर्यक् (टेढ़े) आकार की होती है (चित्र संख्या १८९)। इसकी बनावट बहुत स्पष्ट होती है।



यह रेखा इन्द्रिय-निग्रह, स्वतन्त्र-वृत्ति तथा क्रीड़ा-वृत्ति को जन्म देने वाली होती है।

वृत्ति

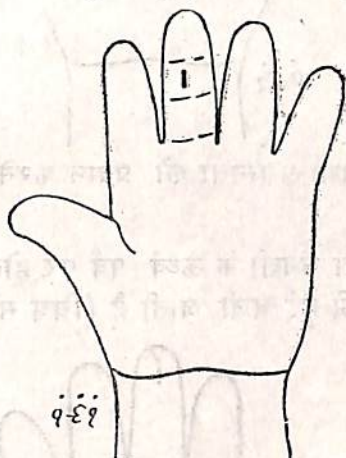
यह रेखा मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर युग्म-रूप में, लम्बरूपा तथा मुकुट के समान पाई जाती है (चित्र संख्या १६०)।



ऐसी रेखा वाला जातक धार्मिक तथा जातीय-नियमों का पालन करने वाला, शंकालु तथा विपुल सुखों का उपभोग करने वाला होता है।

आश्रयपात्रनी

यह रेखा मध्यमा उंगली के मध्य पर्व के मध्य भाग में पाई जाती है। यह आकृति में मोटी तथा 'केलिका रेखा' (जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है) के नीचे होती है (चित्र संख्या १६१)।



यह रेखा जातक को अपने आश्रयदाताओं से स्वतन्त्रता प्रदान करने वाली होती है।

राजी

यह रेखा मध्यमा उंगली के मध्य पर्व पर आड़े रूप में पाई जाती है। इसकी आकृति शृंखलाकार होती है। (चित्र संख्या १६२) और यह अंगूठी की तरह चमकती है।

ऐसी रेखा वाले जातक के शरीर की त्वचा अत्यन्त कोमल होती हैं।



यह प्रचुर धन तथा प्रसन्नता को प्रदान करने वाली कही गई है।

नीडा

यह रेखा मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर होती है तथा उंगली के नाखून तक उंची उठी हुई चली जाती है (चित्र संख्या १९३)। सामा-



न्य रूप से यह रेखा जातक को दीर्घ जीवन तथा विपुल धन प्रदान करती है। उसे कृषि-कार्यों द्वारा अत्यधिक सम्पत्ति प्राप्त होती है, परन्तु यदि यह रेखा थोड़ी-सी भी झुकी हुई हो तो अशुभ फल प्रदान करने वाली हो जाती है।

जाला

यह रेखा मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व भाग में शीर्ष स्थान पर पाई जाती है तथा अनेक रेखाओं द्वारा आवृत्ति होती है। ऐसी रेखा लहरदार अथवा वृत्ताकार रूप में भी पाई जाती है (चित्र संख्या १९४)।



ऐसी रेखा वाला जातक अनेक प्रकार के रत्नों तथा गहरे समुद्र से प्राप्त मोतियों आदि का स्वामी तथा प्रचुर धन-धान्य से युक्त बना रहता है।

मरालि नेत्रिका

यह रेखा अनामिका उंगली के मूल प्रदेश के ऊपरी भाग में स्थित

कुछ तिर्यक् (टेढ़े) स्वरूप को, श्याम वर्ण तथा आकार में छोटी-सी होती है (चित्र संख्या १९५)। यह रेखा स्त्रियों को परम सौभाग्य देने वाली होती है।



अपने नाम के अनुरूप ही यह रेखा जातक को मनोहर सौन्दर्य प्रदान करती है।

गोघ्नी

यह रेखा पूर्वोक्त 'मरालि नेत्रिका' रेखा से कुछ ऊपर पाई जाती है। यह रेखा गहरी तथा ऊपरी भाग में कुछ मुड़ी हुई द्विजिह्व आकार की होतो है (चित्र संख्या १९६)।

यह रेखा समस्त शुभ-अशुभ कर्मों तथा सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञान को हानि पहुंचाने वालो होती है।

ऐसी रेखा वाला जातक यदि गायों को पालता है, तो वे सब नष्ट हो जाती हैं।



बृत्ता

यह रेखा पूर्वोक्त 'गोघ्नी-रेखा' के सिरे को चीरती हुई अनामिका उंगली के द्वितीय पर्व की सन्धि-रेखा पर स्थित रहती है (चित्र संख्या १९७)।



ऐसी रेखा वाला जातक वर्णाश्रम धर्म तथा जातीय नियमों का पालन करने वाला होता है।

शतहृदा

यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल पर्व पर वर्तुलाकार रूप में पाई जाती है (चित्र संख्या १९८)।



१९८

इस रेखा के प्रभाव से जातक की मित्रता चंचल-वृत्ति के लोगों के साथ ही होती है। ऐसे जातक के अनेक शत्रु पाये जाते हैं।

मेदुरा

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व पर अन्य रेखाओं से आवृत पाई जाती है। यह आकृति में कृश होती है (चित्र संख्या १९९)।

यह रेखा जातक के शरीर को स्फूर्ति प्रदान करने वाली तथा धन-



१९९

धान्य, स्वास्थ्य, पुत्र, मित्र एवं बंधु-बान्धवों की वृद्धि कर सौभाग्य देने वाली होती है।

रात्रि

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के मूल पर्व पर पाई जाती है। इस रेखा का रंग काला होता है (चित्र संख्या २००)।



२००

यह रेखा जातक की बुद्धि का नाश करने वाली, मोह तथा मति-भ्रम करने वाली होती है।

इस रेखा के फलस्वरूप जातक में अनेक प्रकार के अशुभ लक्षण पाये जाते हैं।

अत्युच्चा

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के अग्रभाग में, अन्य रेखाओं से आवृत्त, तिर्यत् आकृति में परन्तु स्पष्ट रूप में पाई जाती है (चित्र संख्या २०१)



२०१

ऐसी रेखा वाला जातक स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होता है। यह रेखा जातक को सम्पूर्ण कार्यों में सफलता तथा उच्च जीवन बिताने का अवसर प्रदान करती है।

कमठध्वस्तिका

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर पाई जाती है। यह किंचित् तिर्यक तथा मोटी होती है (चित्र संख्या २०२)।

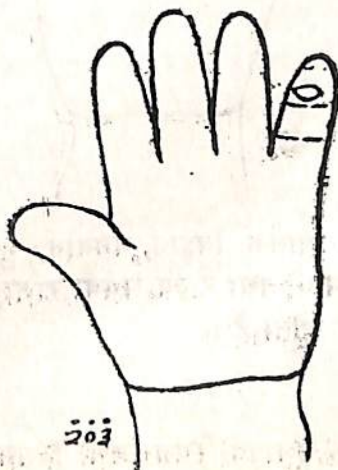


२०२

यह रेखा जातक को अवसर के अनुकूल कर्कश तथा जड्ड बनाने का कार्य करती है और उसे विभिन्न क्षेत्रों में विजय प्रदान करती है।

अमला

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर सन्धि-रेखा के ऊपर यव



२०३

अथवा द्वीप जैसी आकृति की होती है अर्थात् उक्त स्थान पर सन्धि-रेखा के समीप दो छोटी-छोटी रेखाएं ऊपर-नीचे अर्द्ध चन्द्राकार रूप में मिलकर ऐसी आकृति ग्रहण करती हैं (चित्र संख्या २०३)।

यह रेखा जातक के मन को निर्मल बनाये रखती है।

वाणी

यह रेखा तर्जनी उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर यव अथवा द्वीप जैसी आकृति की होती है (चित्र संख्या २०४)।



२०४.

ऐसी रेखा वाला जातक विद्वान्, धनवान, गुणवान तथा सम्पन्न होता है। वह मिष्टभाषी तथा राज्य अथवा राजाओं के द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला भी होता है।

हेमवेत्रिका

यह रेखा अंगूठे के मूल पर्व स्थित स्वर्ण के समान चमकदार होती

है। यह चाहे एक रेखा से संयुक्त हो अथवा दो रेखाओं से—इसका प्रभाव एक जैसा ही होता है (चित्र संख्या २०५)।



यह रेखा जातक को सब प्रकार की धन-सम्पत्ति प्रदान करने वाली होती है। इस रेखा के प्रभाव से जातक का शरीर भी स्वर्ण के समान कान्तिमय होता है। यह रेखा चूंकि धन प्रदान करने वाली होती है, अतः कुछ विद्वान् इसे 'श्री रेखा' भी कहते हैं।

बाएं हाथ की रेखाएं

बाएं हाथ में पाई जाने वाली रेखाओं के नाम तथा उनके प्रभाव के सम्बन्ध में 'कीर्तिकेयन पद्धित' के विद्वानों के मत का सारांश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

रोहिणी

'रोहिणी-रेखा' जिस प्रकार दाएं हाथ में पाई जाती है, उसी प्रकार बांएं हाथ में भी पाई जाती है।

बाएं हाथ में भी रोहिणी-रेखा का प्रभाव ठीक दाएं हाथ की तरह ही होता है।

कोर्परा

यह रेखा अनामिका उंगली के मूल प्रदेश से नीचे की ओर बढ़ती है। यह रेखाएं संख्या में तीन, चार या पांच तक होती हैं (चित्र संख्या २०६) परन्तु प्रत्येक स्थिति में (चाहे जितनी संख्या होने पर भी) इनका प्रभाव एक जैसा ही होता है।



यह रेखाएं जातक को यशपूर्ण यात्राएं, सब प्रकार के सुख, काव्यात्मकता तथा कान्तिमय व्यक्तित्व प्रदान करती हैं। ये रेखाएं अपना बचाव चाहने वाले व्यक्ति को स्वतन्त्र सहायता प्रदान करती हैं तथा इनके प्रभाव से जातक निश्चित रूप से जिज्ञासु एवं अनुसंधानात्मक वृत्ति का भी होता है।

करिनी

यह रेखा पितृ-स्थान से प्रारंभ होकर तर्जनी उंगलो के मूल तक जाती है। यह हाथी के सूंड के समान चक्राकृति की तथा तर्जनी उंगली की प्रथम सन्धि-रेखा का कुछ स्पर्श-सी करती है (चित्र संख्या २०७)।



यह रेखा जातक के गुप्त दोषों को सर्वसाधारण के बीच प्रकट कर देती है। यदि यह रेखा अन्य उप-रेखाओं के साथ किसी अन्य उंगली की ओर मोड़ लेती हो तो जातक बहुत पक्का शराबी होता है। यह रेखा 'मद' की ओर जातक के आकर्षण को प्रकट करती है।

मेहा

इस रेखा को दाएं हाथ की 'इन्दिरा-रेखा' का स्थानापन्न समझना चाहिए। यह मणिबन्ध से आरम्भ होकर मध्यमा उंगली के मूल तक निर्बाध रूप से जाती है (चित्र संख्या २०८)।



यह रेखा जातक को सम्पूर्ण सुख, यश,आनन्द तथा प्रसन्नता प्रदान करने वाली कही गई है ।

लोहिका

यह रेखा 'रोहिणी' के मूल से निकलकर अंगूठे के बीच में होती

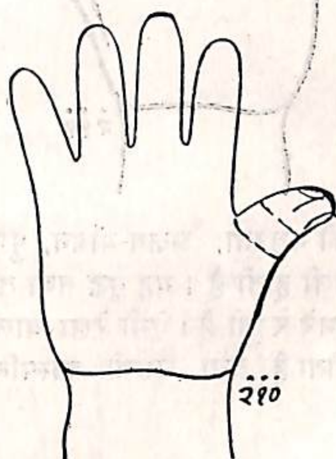


हुई सीधी उसके नाखून तक चली जाती है। इस रेखा में एक या दो सींग जैसी रेखाएं भी निकली हुई रहती हैं (चित्र संख्या २०६)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक विद्या तथा वैभव को प्राप्त करता है।

करिदन्तुग

यह रेखा अंगूठे के निम्न भाग से उदय होकर नाखून की ओर जाती है तथा इसमें हाथी के दांत जैसी दो शाखा-रेखाएं भी निकली रहती हैं (चित्र संख्या २१०)।



इस प्रकार की रेखाओं वाले जातक के दांत बाहर की ओर निकले रहते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा हो, उसके शारीरिक अंग टेढ़े-मेढ़े होते हैं तथा उसकी आकांक्षाएं घुटी-घुटी रहती हैं।

बालहृदया

यह रेखा अंगूठे के मूल भाग से आरम्भ होकर संपूर्ण अंगूठे को पार करती हुई ऊपर तक चली जातीं है (चित्र संख्या २११)।


२११

यह रेखा हृदय की मधुरता, अक्षय-यौवन, पुत्र, कीर्ति तथा सौभाग्य प्रदान करने वाली होती है। यह वृद्ध तथा तरुण—सभी के हृदय में यौवन का उत्साह भरे रहती है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति बालकों के समान क्रीड़ा-प्रिय होता है तथा उसकी काल्पनिक प्रवृत्तियां श्रेष्ठ होती हैं।

वसुप्रेखा

इस रेखा का प्रारम्भ पूर्वोक्त 'बालहृदया-रेखा' से होता है अर्थात् यह रेखा 'बालहृदया-रेखा' के अधोभाग से ऊपर की ओर जाती है। (चित्र संख्या २१२)।

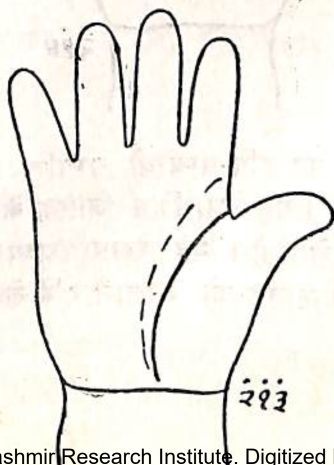
इस रेखा के प्रभाव से जातक धनवान होता है तथा वह धन कहीं



खो न जाए अथवा चोरी न चला जाय—इस भय से उसकी विशेष रूप से देखभाल करता रहता है ।

चेतसा

यह रेखा 'रोहिणी-रेखा' के मूल भाग से निकलकर शत्रु-स्थान पर समाप्त होती है (चित्र संख्या २१३) ।



यह रेखा जातक को दीर्घजीवन, धन-धान्य तथा आरोग्य प्रदान करती है। ऐसी रेखा वाले जातक में धन कमाते रहने की प्रवृत्ति विशेष रूप से पाई जाती है।

धनिः

यह रेखा यव अथवा द्वीप जैसी आकृति की होती है जो बाएं हाथ के अंगूठे की दोनों सन्धियों पर मिल जाती है (चित्र संख्या २१४)।



यह रेखा जातक को कृषि-सम्बन्धी सम्पत्ति तथा अन्य प्रकार के लाभ प्रदान करती है। यह रेखा जिस जातक के हाथ में होती है वह बहुत धन संचय कर लेता है। यह रेखाएं अव्यवस्थित अथवा बीच में से टूटी हुई हो, तो जातक को कालान्तर में खेती-बाड़ी द्वारा लाभ प्राप्त होता है।

यवक्या

यह रेखा 'धनि-रेखा' से कुछ नीचे ही बाएं हाथ के अंगूठे पर खड़ी, परन्तु कुछ तिर्यक् स्थिति में पाई जाती है (चित्र संख्या २१५)।


२१५

ऐसी रेखा वाला जातक व्यवसाय तथा कृषि-कार्य—दोनों के माध्यम से धनोपार्जन करता है। यह रेखा जातक को प्रचुर धन-धान्य तथा सम्पत्ति प्रदान करती है।

रागग्रधिरा

यह रेखा 'यवक्या-रेखा' से कुछ ही नीचे ऊपर की ओर जाती है। इस रेखा की आकृति लहरदार तथा वर्ण लालिमा लिये हुए होता है। (चित्र संख्या २१६)।

यह रेखा जातक की अभिलाषाओं को पूरा नहीं होने देती तथा उसकी अभीत्सिक वस्तुओं एवं प्रियजनों से विछोह करा देती है।



मदयन्तिका

यह रेखा पूर्वोक्त 'रागबधिरा' नामक रेखा से कुछ नीचे की ओर बाएं हाथ के अंगूठे के मूलभाग में होती है (चित्र संख्या २१७)।



यह रेखा जातक के पैतृक-गर्व अर्थात् अपने कुल का गर्व, धन, सम्पत्ति, सम्पन्नता एवं प्रचुर मात्रा में प्रसन्नता प्रदान करती है।

हेमवती

यह रेखा बाएं हाथ के अंगूठे के मूल भाग से कुछ ऊपर स्वर्ण जंजीर जैसी आकृति की पाई जाती है (चित्र संख्या २१८)।



इस रेखा के प्रभाव से जातक निष्कपट, सरल, यशस्वी तथा स्वर्णाभूषणों को धारण करने वाला होता है।

रतिः

यह रेखा बाएं अंगूठे के मूल भाग में, युग्म रूप में सन्धि-रेखा के नीचे स्थित पाई जाती है (चित्र संख्या २१९)।

यह रेखा जातक की कामुकता (यौन-सम्बन्ध) को दृढ़ करने वाली तथा अन्य प्रकार के सुख और आनन्द को देने वाली होती है।



हृद्या

यह रेखा पूर्वोक्त 'रतिः रेखा' के नीचे (बाएं हाथ के अंगूठे की



प्रथम सन्धि-रेखा से नीचे) कुछ तिर्यक् (तिरछे) रूप में स्थित रहती है (चित्र संख्या २२०)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक सर्वलोक अत्यन्त प्रिय (विश्व-प्रिय) होता है, परन्तु यदि यह रेखा कहीं-कहीं दोषपूर्ण (टूटी-फूटी) हो तो जातक के जीवन में ऐसे अवसर भी आ सकते हैं, जबकि उसे कुछ अपयश भी प्राप्त हो।



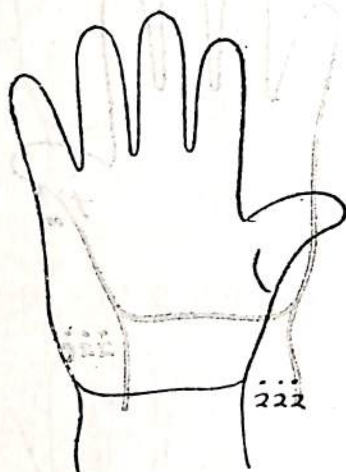
वसुघ्नी

यह रेखा बाएं अंगूठे की प्रथम सन्धि-रेखा के नीचे गुणक-चिन्ह की भांति होती है और 'रोम विस्रसुः' नामक रेखा को (जिसका वर्णन आगे किया गया है) काटती है अर्थात् जो एक आड़ी रेखा 'रोम विस्रसुः रेखा' को काटती है, उसे 'वसुघ्नी' कहते हैं (चित्र संख्या २२१)।

यह रेखा 'रोम विस्रसुः रेखा' के प्रभाव को नष्ट करने वाली कही गई है। रोम विस्रसु रेखा के प्रभाव के विषय में आगे लिखा जा रहा है।

रोम विस्रसुः

यह रेखा पूर्वोक्त 'वसुघ्नी-रेखा' के तल भाग से आरम्भ होकर हाथ के पृष्ठ-भाग के उस प्रदेश तक पहुंचती है; जोकि रोम युक्त होता है। अर्थात् यह रेखा बाएं हाथ के अंगुष्ठ मूल की प्रथम-सन्धि रेखा से आरम्भ होकर पृष्ठ के रोम प्रदेश तक जाती है।



इस रेखा के प्रभाव से जातक को रोम (केश या बाल) सम्बन्धी-क्षीणता का शिकार होना पड़ता है।

गजाह्वया

यह रेखा बाएं हाथ के अंगूठे की प्रथम-सन्धिरेखा या उसके समीप से निकलकर कुछ नीचे की ओर तथा कुछ ऊपर की ओर झुकती हुई स्पष्ट रूप से पृष्ठ भाग की ओर ऐसे मुड़ जाती है, जैसे वह उस भाग को देख रही हो (चित्र संख्या २२३)।



ऐसी रेखा वाला जातक कुशाग्र-बुद्धि तथा अजेय होता है, परन्तु वह दूसरे लोगों के आश्रित ही बना रहता है।

धरणी

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल पर्व के मध्य भाग पर



स्थित एक ओर को कुछ ऊपर की ओर उठी हुई रहती है (चित्र संख्या २२४)।

यह रेखा पुरुष-जातक को भूमि से सम्बन्धित प्रचुर सम्पत्ति प्रदान करती है तथा स्त्रियों में मितव्ययिता का गुण उत्पन्न करती है।

मेचक:

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व के मध्य भाग में स्थित गहरी तथा प्राय: श्याम वर्ण की होती है। कभी यह रेखा श्वेत रंग की भी पाई जाती है (चित्र संख्या २२५)।

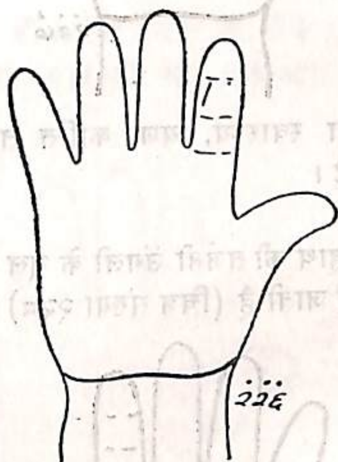


जिस व्यक्ति के हाथ में ऐसी रेखा होती है, वह अपने प्रत्येक प्रयत्न द्वारा प्रचुर धन सम्पत्ति उपार्जित करता रहता है।

मोचिका

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मध्यपर्व पर ऊपरी सन्धि-रेखा के नीचे कुछ तिर्यक् आकृति की होती है (चित्र संख्या २२६)।

इस रेखा के प्रभाव स्वरूप चोरी करने के अपराध में दण्ड पाने वाला बन्दी भी मुक्त हो जाता है। अर्थात् ऐसी रेखा वाला व्यक्ति यदि चोरी भी करे तो भी उसे दण्ड नहीं भोगना पड़ता। किन्हीं-किन्हीं हाथों



में जब यह रेखा कुछ निचले भाग में होती है तब अनेक शाखाओं से युक्त भी दिखाई देती है।

मुचिः

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल स्थान में नीचे की ओर कुछ मुड़ी हुई-सी दिखाई देती है (चित्र संख्या २२७)।

यह रेखा जातक को निर्धनता एवं रोगों से मुक्ति प्रदान करती है।



सामान्यतः यह रेखा स्वास्थ्य, यश, कान्ति तथा धन प्रदान करने वाली मानी जाती है।

असिघ्नी

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल पर्व से कुछ ऊपर की ओर बढ़ती हुई पाई जाती है (चित्र संख्या २२८)।



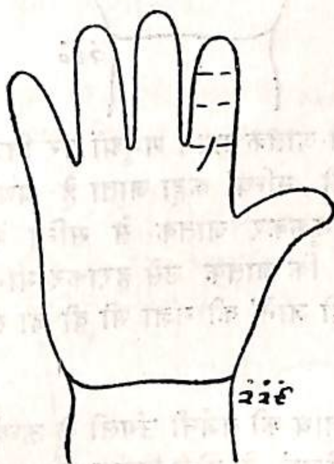
यह रेखा तलवार की तरह टेढ़ी होती है।

इस रेखा प्रभाव से जातक की २३ वर्ष की अल्पायु में ही मृत्यु का योग बनता है—ऐसा कीर्तिकेयन-मत के विद्वानों का कहना है।

टिप्पणी—हाथ के अन्य लक्षणों तथा रेखाओं का मिलान करने के उपरान्त ही अल्पायु योग का निश्चय करना चाहिए।

सुरुचिः

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के नीचे पूर्वोक्त 'असिध्नी-रेंखा' वाले स्थान से कुछ ऊपर की ओर पाई जाती है (चित्र संख्या २२६)।



यह रेखा जातक को सुन्दर शरीर तो प्रदान करती है, परन्तु इसे अकाल मृत्यु की सूचक भी समझना चाहिए।

पाटी

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली की दूसरी सन्धि-रेखा से आलिंगनबद्ध अर्द्ध चन्द्राकार जैसी होतो है (चित्र संख्या २३०)।



ऐसी रेखा वाला जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। ऐसी विजय को 'पाटी सन्धि' कहा जाता है अर्थात् जातक का शत्रु उस समय स्वयं ही झुककर जातक से सन्धि कर लेता है, जब वह अनुभव कर लेता है कि जातक उसे हराकर मानेगा। इसे 'युद्ध-स्तर पर शत्रुओं से मेल हो जाने' की संज्ञा भी दी जा सकती है।

लुटिः

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊर्ध्व पर्व की सन्धि-रेखा तथा पूर्वोक्त 'पार्टी-रेख़ा' के बीच तिर्यक् रूप से अवस्थित रहती है। (चित्र संख्या २३१)।

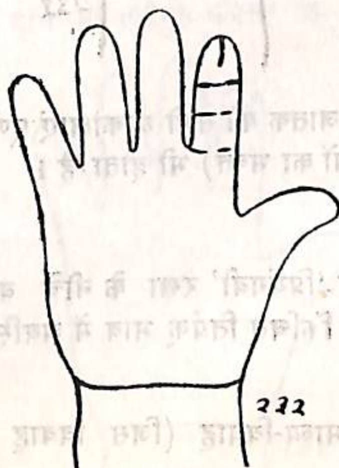
ऐसी रेखा वाले जातक को भोजन प्राप्त करने में भी अनेक कठिनाइयां उठानी पड़तो हैं। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति की पारिवारिक-



परिस्थितियां ऐसी बन जाती हैं और उसका खर्च ऐसा होता है कि वह सदैव चिन्तित बना रहता है।

तण्डुः

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर ऊपर की ओर स्थित होती है तथा उंगली के नख तक पहुंचती है (चित्र संख्या २३२)।



ऐसी रेखा वाला व्यक्ति किसी कार्य अथवा क्रीड़ा में रत रहते समय भी विभिन्न प्रकार के विचारों की शृंखला में उलझा रहता है।

प्रियंगवी

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊर्ध्व पर्व के मध्य भाग में तिर्यक् (तिरछे) रूप में स्थित रहती है (चित्र संख्या २३३)।



२३३

ऐसी रेखा वाले जातक की सभी आकांक्षाएं पूर्ण होती हैं और ऐसा व्यक्ति गौ प्रिय (गायों का भक्त) भी होता है।

ज्योत्स्नी

यह रेखा पूर्वोक्त 'प्रियंगवी' रेखा के नीचे बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊर्ध्वपर्व में किंचित् तिर्यक् भाव में अवस्थित रहती है (चित्र संख्या २३४)।

यह रेखा असम्भाव्य-विवाह (जिस विवाह के होने की कोई



सम्भावना न हो) को कराने वाली होती है। इस रेखा के प्रभाव से जातक के हृदय में स्त्रियों के प्रति मधुर भावनाओं का उदय होता है।

हताशा

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊर्ध्व पर्व में पूर्वोक्त



'ज्योत्स्नी-रेखा' के कुछ ऊपरी भाग में तिर्यक् (तिरछी) तथा कुछ स्थूल आकृति की पाई जाती है (चित्र संख्या २३५)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक के पुत्र की अकाल मृत्यु होती है और यह सम्भावना भी रहती है कि रक्त-वमन के कारण ही उसकी मृत्यु हो। इस रेखा के इस प्रभाव के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं करना चाहिए। मृत्यु का समय कभी भी आ सकता है।

देवद्विट्

बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व की सन्धि-रेखा से कुछ ही ऊपर पृष्ठ भाग स्थित रोम-स्थान के विपरीत मांसल स्थान पर पाई जाती है (चित्र संख्या २३६)।



जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह नास्तिक, मूर्तियों का खण्डन करने वाला तथा देवताओं का द्वेषी होता है।

कपर्दिः

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली पर पूर्वोक्त 'देवद्विट्-रेखा' के स्थान से कुछ नीचे की ओर अर्द्धचन्द्राकार स्वरूप में पर्व सन्धि-



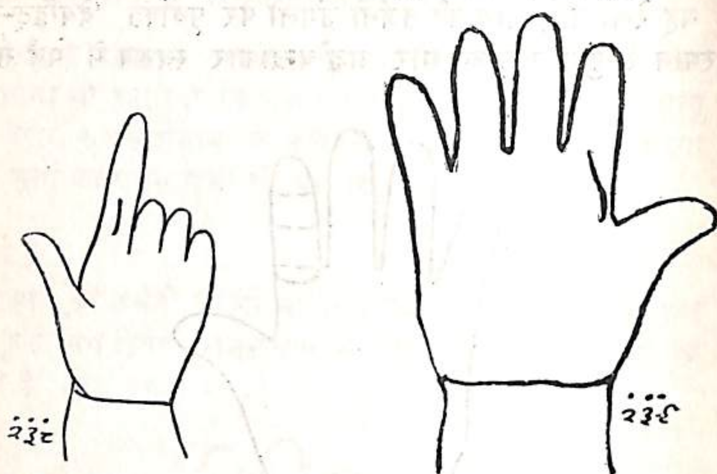
रेखा से मिली हुई पाई जाती है। यह अपने दोनों सिरों पर कुछ मुड़ी हुई-सी रहती है (चित्र संख्या २३७)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक की स्त्री की मृत्यु का (भार्या-भंग) योग बनता है। इस रेखा के प्रभाव से जातक के केश (बाल) कड़े होते हैं।

अपराजिता

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के पृष्ठ भाग पर स्थित होती है और ऊपर की ओर जाती हुई दिखाई देती है (चित्र संख्या २३८)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक के बच्चों की मृत्यु हो जाती है। यह रेखा जातक के सम्पूर्ण सुखों पर अपना दुष्प्रभाव डालती है।



दुग्धा

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल से उत्पन्न होकर नीचे की ओर झुकती है अर्थात् अधोमुखी होती है (चित्र संख्या २३९)।

यह रेखा जातक को अल्पायु बनाती है। ऐसी रेखा वाला जातक दूध पीने का प्रेमी अवश्य होता है।

मुग्धा

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल भाग में पूर्वोक्त 'दुग्धा-रेखा' के उद्‌गम स्थान से कुछ नीचे की ओर वृत्ताकार रूप में अथवा घूमकर जाती हुई गोलाकार-सी दिखाई देती है (चित्र संख्या २४०)।

यह रेखा पुरुष जातक को अत्यन्त सम्मान देती है, परन्तु स्त्रियों के लिए विपरीत फल प्रदान करती है। जिस जातक के हाथ में यह



रेखा होती है, उसमें आकर्षण-शक्ति विशेष रूप से पाई जाती है। फलतः ऐसे व्यक्ति की ओर सब लोग अधिक आकर्षित होते हैं।

सोर्मिः

बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल भाग पर यदि पूर्वोक्त 'मुग्धा'



रेखा का पूर्ण वृत्त न बन पाये और वह अर्द्ध चन्द्राकृति हो (चित्र संख्या २४१) तो उस रेखा को 'सोर्मिः' कहते हैं।

यह रेखा जातक को समस्त मनोकामना को पूर्ण करने वाली कही गई है। इस रेखा वाले जातक के शारीरिक अंग भी बड़े होते हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार यह रेखा उक्त आकृति की कनिष्ठा उंगली के नीचे भी पाई जाता है और ऐसा हो प्रभाव करती है।

अमुका

पूर्वोक्त 'सोर्मिः' रेखा के समोप वाले स्थान से उद्भूत होकर तर्जनी उंगली के रोमयुक्त पृष्ठ भाग की ओर जाने वाली तथा कुछ स्थूल आकार की होती है (चित्र संख्या २४२)।



यह रेखा साहस तथा ऐन्द्रिक (काम वासना) सम्बन्धित से सुखों को देने वाली कहो गई है। यह स्त्रियों की प्रत्येक अभिलाषा को पूर्ण करती है, परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार इस रेखा का प्रभाव केवल पुरुषों पर हो होता है, स्त्रियों पर नहीं होता।

कोर्पर स्थितिः

यह रेखा बाएं हाथ को मध्यमा उंगली के ऊर्ध्वपर्व से उत्पन्न होकर सन्धि-रेखा को पार करती हुई मध्य पर्व तक आती है (चित्र संख्या २४३)।



इस रेखा के प्रभाव से जातक विभाजित प्रज्ञा वाला होता है। उसके भाग्य में निरन्तर दुःख ही बदे रहते हैं।

इस रेखा के प्रभाव का विचार करते समय पूर्व कथित 'कोर्परा-रेखा' के प्रभाव का भी अध्ययन करना चाहिए।

कर्मेन्द्रिधी

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के मूल पर्व पर के मध्य-भाग में पाई जाती है (चित्र संख्या २४४)।

यह रेखा स्त्री-जातक को सुख की सम्पूर्ण वस्तुएं प्रदान करती है। यह सौम्य-स्वभाव, आनन्द तथा प्रसन्नता देने वाली कही गई है।

इस रेखा का महत्व केवल स्त्रियों के लिए ही कहा गया है, पुरुष



के हाथ में यदि यह रेखा हो तो उसकी संन्यास-वृत्तियों को जागृत् करती है।

श्लथा

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के मूल पर्व के पार्श्व भाग



से उद्भूत होकर तिरछी होती हुई मध्य भाग तक ग्राकर मोड़ लेती है (चित्र संख्या २४५)।

यह रेखा स्निग्ध वर्ण, विजय तथा सफलता प्रदान करने वाली कही गई है ।

गुर्वी

यह रेखा स्त्रियों के बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के मूल पर्व पर ऊपर की ग्रोर मध्य भाग में स्थित होती है (चित्र संख्या २४६)।



यह रेखा गात्र-गौरव (स्थूल-शरीर) को देने वाली तथा भाग-प्रसंग से सम्बन्धित चिन्ताएं एवं क्लेश उत्पन्न करने वाली होती है। इस रेखा का प्रभाव केवल स्त्रियों पर पड़ता है। जिस स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा हो, उसकी भोगेच्छा प्रबल तथा ग्रशान्त होती है। ऐसी स्त्रियां ग्रनेक ग्रवैध सम्बन्ध करने वाली चरित्रभ्रष्टा होती हैं।

दमना

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के मध्य पर्व के उच्च स्थान पर तिर्यक् (तिरछे) रूप में स्थित रहती है (चित्र संख्या २४७), परन्तु एकदम ऊपर की ओर नहीं होती ।



यह रेखा जिन स्त्री-पुरुषों के हाथ में होती है, वे सदैव अस्वच्छ, अपवित्र तथा मैले-कुचैले रहते हैं ।

वंशबंधिनी

यह रेखा बाएं हाथ को मध्यमा उंगली के मध्य पर्व पर सीधी खड़ी रहती है (चित्र संख्या २४८) ।

इस रेखा के प्रभाव से जातक के सम्बन्धियों की संख्या में अधिक वृद्धि होती है ।

दूसरे शब्दों में ऐसी रेखा वाला जातक अपने अधिक सम्बन्धियों



के कारण परेशान तथा घिरा हुआ-सा रहता है जैसे किसी ने उसे बन्धन में डाल दिया हो ।

पूता

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर संधि-रेखा



के समीप अथवा उसके मध्य भाग में पहुंचती हुई पाई जाती है (चित्र संख्या २४६)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक अनेक विषयों का ज्ञाता, बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न तथा बुद्धिमान होता है।

कुछ विद्वानों ने इस रेखा को 'लूटा' नाम से भी सम्बोधित किया है।

प्रियालिका

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व के मध्य भाग में सीधी खड़ी हुई पाई जाती है (चित्र संख्या २५०)।



इस रेखा के प्रभाव से जातक अपने सम्बन्धियों तथा संसार के सभी लोगों का 'प्रिय' बनता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति विश्व-प्रिय होते हैं। यह रेखा स्त्री-पुरुषों को समान रूप से फलदायक कही गई है।

देवी

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व के उच्चतम शिखर पर स्थित रहती है (चित्र संख्या २५१)।



यह रेखा जातक के मन की चंचल-स्थिति पर प्रकाश डालती है।

इस रेखा के प्रभाव से जातक की स्थिति तथा स्थान में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं।

महापूर्वा

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के मध्य पर्व की सन्धि-रेखा पर पाई जाती है (चित्र संख्या २५२)। इसका सिरा कुछ लम्बा होता है।

यह रेखा पुरुष-जातक को महान् यश प्रदान करने वाली तथा स्त्री-जातक को यौन-सुख प्रदान करने वाली कही गई है।

महान्-यश से तात्पर्य यह है कि इस रेखा के प्रभाव से जातक अपने



परिश्रम के फलस्वरूप प्रभावशाली बनता है तथा स्त्रियां अपने कर्तव्य-पालन के फलस्वरूप दाम्पत्य-सुख का पूर्ण उपभोग करती हैं।

देविका

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के मूल पर्व पर सन्धि-



रेखा वाले स्थान पर स्थित होती है (चित्र संख्या २५३)। यह रेखा गहरी होती है।

ऐसी रेखा वाला जातक जीवन में मनोवांछित ऐश्वर्य तथा अन्त में मुक्ति को प्राप्त करता है अर्थात् मनुष्य जीवन के अन्त के बाद वह जातक मोक्ष पद प्राप्त कर लेता है, उसका पुनर्जन्म नहीं होता।

परिस्तीर्णा

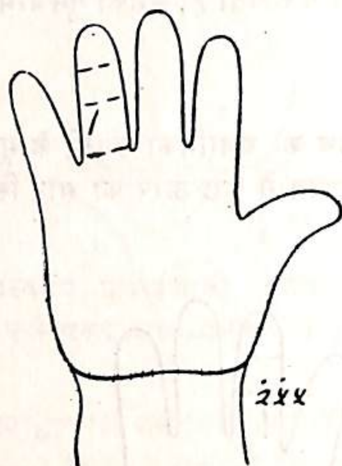
यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के मूल पर्व में पूर्वोक्त 'देविका-रेखा' वाले स्थान से कुछ ऊपर की ओर स्थित रहती है (चित्र संख्या २५४)।



ऐसी रेखा वाला जातक अपने पारिवारिक-जीवन की सनातन जटिलताओं में घिरा रहता है। यह रेखा जातक के घर में धन-धान्य तथा सम्पत्ति की वृद्धि करने वाली कही गई है।

परिधि

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के प्रथम पर्व के मध्य भाग में कुछ तिर्यक् (तिरछे) रूप में स्थित पाई जाती है (चित्र संख्या २५५)।



ऐसी रेखा वाला जातक यज्ञ-हवन तथा अन्य धार्मिक कृत्यों को करते रहने वाला तथा नित्य-नियमों का पालन करने वाला होता है। यह रेखा जातक को अन्तिम मुक्ति मोक्ष प्रदान करने वाली कही गई है।

वर्तुला

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के मूल भाग में वर्तुलाकार रूप में स्थित रहती है (चित्र संख्या २५६)। यह देखने में अत्यन्त स्पष्ट होती है।

ऐसी रेखा वाला जातक मन्त्री-पद को प्राप्त करता है। 'मन्त्री-



पद' से तात्पर्य राज्य में किसी अत्यन्त ऊचे पद को ग्रहण करने से भी है।

सिंहिका

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगलो के मूल पर्व में कुछ तिर्यक् (तिरछे) रूप में स्थित रहती है (चित्र संख्या २५७)।



यह रेखा राजाओं को शत्रुओं पर विजय तथा ब्राह्मणों को सत्य की खोज अथवा तत्त्व-निर्णय में सहायता प्रदान करने वाली होती है। अन्य वर्ण वालों को यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय एवं सफलता प्रदान करती है।

मनुः

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के प्रथम पर्व में द्वितीय सन्धि-रेखा के नीचे तथा पूर्वोक्त 'सिंहिका-रेखा' से कुछ ऊपरी भाग में पाई जाती है (चित्र संख्या २५८)।



यह रेखा आकार में छोटी तथा गहरी होती है और बहुत कम हाथों में पाई जाती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह मन्त्राभ्यास करने वाला तथा मन्त्रों का ज्ञाता होता है।

यविष्ठा

यह रेखा बाएं हाथ को मध्यमा उंगलो के प्रथम तथा द्वितीय पर्व को अलग करने वालो पहलो सन्धि-रेखा पर पूर्वोक्त 'मनु-रेखा' से कुछ ऊपर वाले स्थान पर पाई जाती है (चित्र संख्या २५९)।

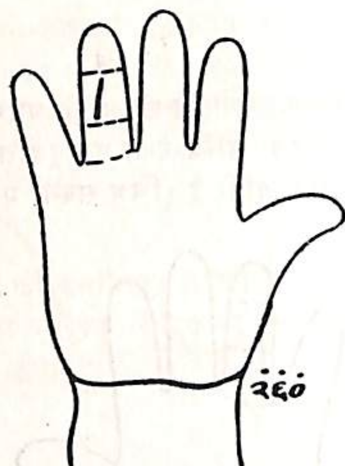

२५९

यह रेखा जातक को असाधारण प्रकार की ज्ञान-शक्ति प्रदान करती है। इस रेखा के प्रभाव से जातक को मन्त्र-सिद्धि प्राप्त होती है और वह उस मन्त्र-सिद्धि के द्वारा लाभ उठाता है।

भूति

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के मध्य पर्व के मध्य भाग में स्थित रहती है। यह रेखा कुछ पतली होतो है (चित्र संख्या २६०)।

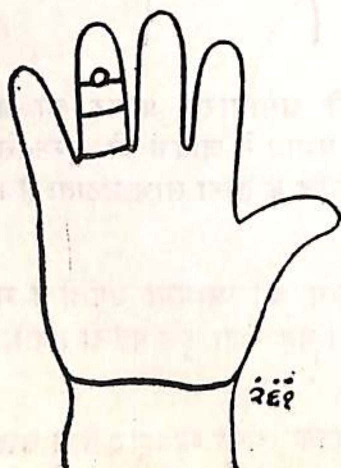
ऐसी रेखा वाला जातक श्रेष्ठ व्यवहार तथा उत्तम चरित्र वाला



होता है । यह जातक को अभिलाषित वस्तुएं प्रचुर मात्रा में प्रदान करती है ।

अधिका

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व के ऊपरी



भाग में, सन्धि-रेखा के ठीक ऊपर पतली तथा वर्तुलाकार आकृति में स्थित होती है (चित्र संख्या २६१)।

इस रेखा के प्रभाव स्वरूप जातक तर्क-शक्ति में प्रवीण तथा युक्ति-विज्ञ होता है।

दण्डी

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल पर्व की सन्धि-रेखा के मध्य भाग में स्थित रहती है (चित्र संख्या २६२)।

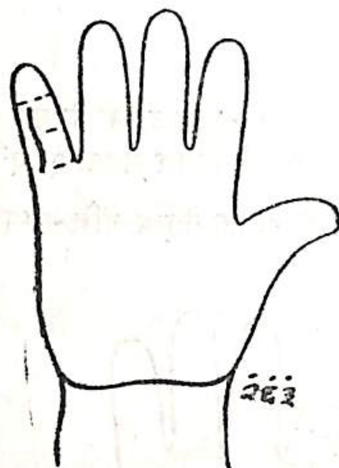
इस रेखा के प्रभाव से जातक नेतृत्व-शक्ति-सम्पन्न तथा सैन्य संचालक होता है।



कुछ विद्वानों ने इस रेखा का फल दूरदर्शित तथा सम्भाषण-कला में प्रवीनता भी बताया है। कुछ विद्वान् इस रेखा को 'दण्डिनी' नाम से भी पुकारते हैं।

रुता

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल से आरम्भ होकर वाम पार्श्व में होती हुई ऊपर की ओर जाती है। (चित्र संख्या २६३)।



यह रेखा जातक को शत्रुओं पर विजय दिलाने वाली कही गई है। ऐसी रेखा वाले जातक के शत्रुओं की स्त्रियां रुदन करती रहती हैं।

वास्तोष्पति

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल से आरम्भ होकर वाम पार्श्व में होती हुई ऊपर की ओर जाती है (चित्र संख्या २६४)। ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में होती है, वह व्यक्ति सजा हुआ मकान प्राप्त करता है अर्थात् ऐसी रेखा वाले व्यक्ति भली भांति सजे हुए मकान के स्वामी तथा ऐश्वर्यशाली होते हैं।



केशगण्डस्थला

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल भाग से आरम्भ



होकर पर्वों के मध्य भाग में से होती हुई ऊपर की ओर जाती है (चित्र संख्या २६५)।

ऐसी रेखा वाला व्यक्ति अपने जीवन का क्रमशः धीरे-धीरे विकास करता है। जिन लोगों के हाथ में ऐसी रेखा होती है, उनमें से कुछ व्यक्तियों के सिर पर एक गुम्मट (मांस का छोटा-सा गोल पिण्ड) उत्पन्न हो जाता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसी रेखा वाले जातक और उसके पिता के बीच मतभेदों की एक चौड़ी खाई बनी रहती है अथवा उसके और पिता के बीच झंझट और परेशानियों का सिलसिला चलता रहता है।

पतिः

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के प्रथम पर्व पर उत्पन्न होकर द्वितीय सन्धि रेखा से जाकर मिल जाती है (चित्र संख्या २६६)।



यह रेखा पुरुष जातक को कल्याण एवं कैवल्य पद प्रदान करती है तथा स्त्री जातक को सन्तान एवं दाम्पत्य-सुख देती है। ऐसी रेखा वाली स्त्रियां सद्गृहणी होती हैं।

पंगुः

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व पर सन्धि रेखा के ऊपर उससे मिली हुई दिखाई देती है (चित्र संख्या २६७)।


२६७

ऐसी रेखा वाला जातक लंगड़ा होता है।

कुछ विद्वान् इस रेखा को 'क्लेशा' के नाम से भी पुकारते हैं तथा इसे जातक के लिए क्लेश-दायिनी बताते हैं।

अनन्तकः

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व के मध्य भाग में गहरी दिखाई देती है (चित्र संख्या २६८)।

ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में होती है, वह जातक अग्नि-दुर्घटना का शिकार होता है। यह दाह्य-तैल-जन्म कष्ट को भी सूचित



करती है अर्थात् इस रेखा के प्रभाव से जातक अग्नि में जलने आदि से उत्पन्न हुए कष्टों को भोगता रहता है, परन्तु उसकी मृत्यु नहीं होती है।

श्रीवल्ली

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा ऊंगली के ऊर्ध्व पर्व के उच्चत्तम



स्थान पर अर्द्ध चन्द्राकार तिर्यक रूप में पाई जाती है। (चित्र संख्या २६९)।

ऐसी रेखा वाला जातक धनी, परन्तु कुरूप आकृति का होता है। यह जातक की टांग में फोड़ा, तथा कृमि-पीड़ा को उत्पन्न करती है। ऐसी रेखा वाला जातक व्रण आदि के कष्ट को भोग कर ७० वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार बेल सूख जाने पर भी वृक्ष को नहीं छोड़ती है, उसी प्रकार यह रेखा भी जातक के जीवन पर निरन्तर प्रभाव डाले रखती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसी रेखा वाले जातक की आयु ७३ वर्ष की होती है।

रोहितं

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के सर्वोच्च भाग पर नाखून की ओर बढ़ती हुई पाई जाती है तथा अरुण वर्ण की होती है। (चित्र संख्या २७०)।



इस रेखा के प्रभाव से जातक अग्नि-दुर्घटना तथा रक्त-वमन आदि का शिकार बनता है। प्राय: १४ अथवा २८ वर्ष की आयु में यह रोग होने की सम्भावना रहती है। इस रेखा का प्रभाव विशेषकर स्त्रियों पर अधिक होता है।

कम्बु:

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के नाखून के नीचे मांसल पार्श्व भाग पर पाई जाती है (चित्र संख्या २७१)।



इस रेखा के प्रभाव से जातक को 'गल घोंट' (जिसमें गला घुट-सा जाता है रोग होने की संभावना रहती है।

इस रेखा का प्रभाव भी स्त्रियों पर अधिक होता है।

सिरा

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के नाखून के नीचे वृत्ताकार रुप में पाई जाती है। (चित्र संख्या २७२)।

ऐसी रेखा वाले जातक स्नायविक-रोगों से ग्रस्त रहते हैं। इस



रेखा के प्रभाव से जातक की मान-हानि होने की संभावना भी रहती है।

नीरा

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के नाखून के नीचे उंगली के ऊर्ध्व पर्व के पृष्ठ भाग पर पाई जाती है।



इसमें दो शिराएं होती हैं जो परस्पर मिली हुई दिखाई देती है। (चित्र संख्या २७३)।

ऐसी रेखा जिस जातक के हाथ पर दिखाई दे, वह दीर्घ-जीवन प्राप्त करता है।

श्ववृत्ता

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व पर द्वितीय सन्धि-रेखा के ऊपर पाई जाती है। यह रेखा अपने दोनों पार्श्वों के दोनों सिरों पर वर्तुलाकार मुड़ी हुई रहती है (चित्र संख्या २७४)।

यह रेखा बालक को अभिलाषित सम्पत्ति प्रदान करती है।



यदि इस रेखा का कोई भाग यदि सन्धि-रेखा बन गया हो तो उसका प्रभाव नष्ट हो जाता है। उस स्थिति में यह रेखा जातक के हृदय में स्वामी-भक्ति की भावना को भरती है। ऐसी रेखा वाला जातक कुत्ते के समान स्वामि भक्त होता है।

लामा

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल पर्व में स्थित होती है तथा इसकी दो शिराएं रहती हैं (चित्र संख्या २७५)।



इस रेखा के प्रभाव से जातक या तो प्रभावशाली वक्ता (भाषण-कर्ता) बनता है या फिर बहरा हो जाता है। ऐसी रेखा वाले जातक के ऊपर लक्ष्मी की विशेष कृपा बनी रहती है अर्थात् वह धनवान् होता है।

मातुलानी

यह रेखा पूर्वोक्त 'लामा-रेखा' के नीचे, बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल पर्व पर पाई जाती है। यह रेखा आकार में छोटी तथा पतली होती है (चित्र संख्या २७६)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक अपने मामा के घर की स्त्रियों का दास जैसा बन जाता है।



अन्य विद्वानों के मतानुसार ऐसी रेखा वाला जातक अपने जीवन के निम्नस्तर से ऊंचा नहीं उठ पाता। उसमें हीनता की भावना अत्यधिक मात्रा में पाई जाती है।

माधवी

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल भाग में एक तरफ



दाईं ओर को झुकी हुई 'मही-रेखा' के समीप तक जाती है। इसकी आकृति पतली होती है (चित्र संख्या २७७)।

ऐसी रेखा वाले व्यक्ति सत्कर्मों का अनुष्ठान करते हैं तथा उन्हें अनन्त सौभाग्य की प्राप्ति होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा हो, उसकी मृत्यु बसन्त ऋतु में होती है—ऐसा विद्वानों का कहना है।

महिष्ठा

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के प्रथम पर्व के मध्य भाग में स्थित ऊपर की ओर बढ़ती हुई दिखाई देती है (चित्र संख्या २७८)।



जिस व्यक्ति के हाथ में ऐसी रेखा होती है वह राजाओं का प्रिय तथा शीलगुण युक्त होता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा जातक केवल मध्य आयु (५० वर्ष) तक ही जीवित रहता है।

रुक्मकण्ठिका

यह रेखा बाएं हाथ की हथेली पर धर्मस्थान से उत्पन्न होकर 'माधवी रेखा' के कुछ नीचे की ओर स्थित रहती है (चित्र संख्या २७९)।



ऐसी रेखा वाले जातक को मनवांछित लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति या तो स्वर्ण भूषणों को स्वयं धारण करता है अथवा उसके पास बहुत-सा सोना (स्वर्ण) होता है।

रोहिष्ठा

यह रेखा बाएं हाथ की हथेली पर पूर्वोक्त 'रुक्म-कण्ठिका' रेखा से कुछ नीचे की ओर पाई जाती है (चित्र संख्या २८०)।

जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह विपुल सम्पत्ति, रत्न, मोती तथा आभूषणादि का स्वामी होता है। यह रेखा अत्यन्त ऐश्वर्य प्रदान करने वाली कही गई है।



विशेष टिप्पणी—यदि किसी रेखा की वृद्धि बीच में ही रुक जाए अथवा कोई रेखा बीच में ही टूट जाए अथवा उसमें कोई अन्य दोष हो तो उसका प्रभाव भी उसी के अनुसार कम होता है। जिन रेखाओं के रंग का वर्णन किया गया है, वे यदि उसी रंग की न हों तो या तो अपना पूर्ण प्रभाव प्रदर्शित नहीं करतीं या फिर उनका प्रभाव नष्ट हो जाता है—ऐसा विद्वानों का मत है।

रेखाओं के विशेष योग

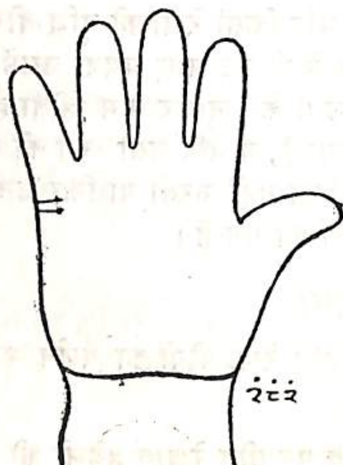
अब हम कुछ विशिष्ट रेखा योगों का वर्णन कार्तिकेयन-प्रणाली के आधार पर करते हैं।

(१) यदि मणिबंध पर तीन रेखाएं हथेली की ओर झुकी हुई हों



(चित्र संख्या २८१) तो ऐसा व्यक्ति राजा अर्थात् विपुल ऐश्वर्य का स्वामी होता है ।

(२) यदि कनिष्ठा उंगली के नीचे धरातल पर दो स्पष्ट छोटी-छोटी रेखाएं हों तो ऐसे जातक के दो पत्नियां होती हैं । एक



विवाह के समय से तथा दूसरी पहली पत्नी की मृत्यु हो जाने के बाद से।





(३) यदि कोई रेखा कनिष्ठा उंगली के मूल स्थान से उठकर धरातलीय स्तर पर अभग्न स्थिति में तर्जनी उंगली के मूल तक चली जाय (चित्र संख्या २८३) तो जातक की आयु का परिमाण १०० वर्ष का होता है। परन्तु यदि यह रेखा बीच में ही खण्डित अथवा अन्य प्रचार के दोषों से युक्त हो तो जातक की आयु में उतनी ही कमी आ जाती हैं।

(४) यदि जातक के ललाट पर पांच धरातलीय (पड़ी) रेखाएं हों उनमें से कोई टूटी-फूटी न हो तथा उनके रंग में कोई परिवर्तन नहीं हुआ हो (चित्र संख्या २८४) तो जातक की आयु सौ वर्ष की होती है। यदि किसी रेखा में कोई त्रुटि दिखाई दे तो प्रति रेखा दस वर्ष के हिसाब से आयु को कम कर देना चाहिए। यदि केवल दो ही रेखाएं मस्तक पर हों तो जातक बलिदानी स्वभाव का होता है।

(५) यदि अंगूठे पर चार स्पष्ट रेखाएं हों, (चित्र संख्या २८५) तो जातक चिरंजीवी, धन-धान्य से सम्पन्न तथा परम यशस्वी होकर सुखी जीवन व्यतीत करता है।





यदि अंगूठे पर मछली का चिह्न हो तो उक्त शुभ फल सौ गुना अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। यदि अंगूठे पर मकर जैसी आकृति हो तो हजार गुना फल मिलता है। यदि कमल अथवा शंख जैसी आकृति हो तो करोड़ गुना फल मिलता है।

(६) यदि हथेली पर अथवा पांव के तलवे में कुंडल, चक्र, त्रिशूल अथवा मयूर जैसी आकृति हो (चित्र संख्या २८६) तो जातक राजा अथवा परम ऐश्वर्यवान होता है।

(७) यदि अंगूठे के मध्य भाग में स्पष्ट यव चिह्न दिखाई दे (चित्र संख्या २८७) तो जातक सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला तथा सुरुचि-पूर्ण स्वादिष्ट भोजनों का सेवन करने वाला होता है।





(८) अंगूठे के मूल भाग से निकल कर मध्यमा उंगली के मूल तक यदि कोई रेखा पहुंच रही हो (चित्र संख्या २८८) तो वह भी जातक को श्रेष्ठ भोजन तथा सब प्रकार के सुख प्रदान करती है।

(९) अंगूठे के मूल से निकलने वाली रेखाएं सन्तान सूचक होती





हैं। (चित्र संख्या २८६)। इनमें जो गहरी रेखाएं हों उन्हें पुत्र जन्म की सूचक तथा जो पतली रेखाएं हों उन्हें कन्याओं के जन्म की सूचक समझना चाहिए। निर्दोष रेखाएं दीर्घजीवी तथा कटी-फटी दोष युक्त रेखाएं अल्पायु सन्तान की सूचक होती हैं।

(१०) हाथ में अधिक रेखाओं का होना (चित्र संख्या २९०) अत्यधिक चिन्ताओं का द्योतक होता है। अत्यधिक कम रेखाएं भी जातक को धन-हीन बनाती हे।

(११) जिस स्थान पर एक रेखा दूसरी रेखा को काटती है (चित्र संख्या २९१) उस आयु में जातक को किसी बीमारी अथवा दुर्घटना



का शिकार बनना पड़ता है। काल निर्धारण के लिए हाथी की पूंछ के बाल से नापना चाहिए।

आवश्यक—(१) कार्तिकेतन पद्धति द्वारा हस्त परीक्षा के सारांश को इस प्रकरण में दिया गया है। हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह

भारतीय अथवा पाश्चात्य विधि से हस्त-परीक्षा करते समय इस कार्तिकेयन पद्धति के फलादेश को भी ध्यान में अवश्य रक्खें। इससे उसे अधिक सही निष्कर्ष निकालने में सहायता मिल सकेगी।

(२) हाथ की रेखाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के योगों का ज्ञान अर्थात् कौन व्यक्ति राजा होगा, कौन मन्त्री, व्यवसायी, लेखक, चिकित्सक, कलाकार नौकर आदि होगा—इस विषय को प्रस्तुत खन्ड की पृष्ठ संख्या बढ़ जाने के भय से यहां नहीं दिया जा रहा है। वृहद सामुद्रिक विज्ञान के अगले तथा अन्तिम खन्ड 'स्त्री-सामुद्रिक' के अन्तर्गत 'परिशिष्ट के रूप में इस विषय पर विस्तार-पूर्वक प्रकाश डाला जायेगा।

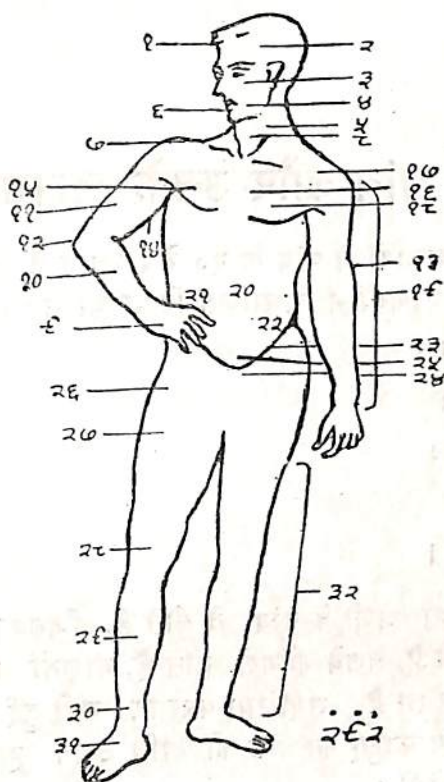
मनुष्य-शरीर के अन्य अङ्ग

मनुष्य-शरीर के मुख्य अंग सिर और ललाट की बनावट तथा उसके प्रभाव, ललाट की रेखाएं तथा हस्त-रेखाओं द्वारा कार्तिकेयन-पद्धति से मनुष्य के शुभाशुभ का ज्ञान आदि विषयों पर पिछले प्रकरणों में पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है, अब हम मानव-शरीर के अन्य अंगों की बनावट तथा उसको जातक के जीवन, चरित्र तथा स्वभाव आदि पर प्रभाव विषयों का वर्णन करते हैं ।

मानव-शरीर के विभिन्न अंग

मनुष्य-शरीर के विभिन्न अंगों को चित्र संख्या २९२ में प्रदर्शित किया गया है । चित्र में जो विभिन्न संख्याएं दी गई हैं, उन अंगों का विवरण नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) मस्तक या ललाट, (२) कनपटी, (३) गाल, (४) जबड़ा, (५) गर्दन, (६) ठोड़ी, (७) गला, (८) हंसली, (९) हाथ, (१०) सामने की बांह, (११) ऊपरी हाथ का बाज, (१२) दाईं कुहनी, (१३) बाईं कुहनी, (१४) बगल, (१५) दाईं छाती, (१६) छाती या हृदय-स्थान, (१७) कन्धा, (१८) बाईं छाती, (१९) बांह, (२०) पेट, (२१) कलेजा, (२२) तिल्ली, (२३) कमर, (२४) नितम्ब, (२५) नाभि, (२६) कूल्हा, (२७) ऊपरी जांघ. (२८) घुटना, (२९) पिंडली, (३०) टखना, (३१) पांव, (३२) टांग का पूरा हिस्सा ।



[मनुष्य-शरीर के विभिन्न अंग]

चित्र में प्रदर्शित अंगों के अतिरिक्त मनुष्य-शरीर में शिश्न, वृषण, गुदा तथा और भी अनेक अंग होते हैं। सिर और हाथों के बाद पांवों का उनमें मुख्य स्थान है, अतः अब हम सर्वप्रथम पांवों का वर्णन करते हैं। अगले प्रकरण में पांव की बनावट, उनमें पाई जाने वाली रेखाओं तथा पांव से सम्बन्धित अन्य विषयों पर विचार किया जायेगा, तदुपरान्त शरीर के अन्य अंगों के सम्बन्ध में लिखा जायेगा।

मनुष्य के पांव और उनके लक्षण

प्राचीन शास्त्रकारों ने पांव के २० भेद बताए हैं, परन्तु उन सबको निम्नलिखित ५ श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—

(१) सर्वोत्तम।

(२) उत्तम।

(३) मध्यम।

(४) अधम।

(५) निकृष्ट।

सर्वोत्तम—इस श्रेणी के पांव वे होते हैं, जिनका रंग कमल के समान लाल होता है, तलवे कोमल होते हैं, नाखूनों का रंग तांबे के समान रक्ताभ होता है, उंगलियां परस्पर सटी हुई होती हैं तथा उनका ऊपरी भाग कछुए की पीठ की भांति उन्नत होता है, जिस पर नसें दिखाई नहीं देतीं।

ऐसे पांवों के तलवों में पसीना नहीं आता, गुल्फ छिपे रहते हैं, एड़ियां सुन्दर होती हैं तथा ऊपरी भाग में उष्णता बनी रहती है।

ऐसे पांव वाले व्यक्ति राजा-महाराजा, विपुल ऐश्वर्यवान्, धनवान्, गुणवान्, यशस्वी, सौभाग्यशाली, दीर्घायु तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाले महापुरुष होते हैं। इनकी सभी आकांक्षाएं पूर्ण होती रहती हैं।

उत्तम—इस श्रेणी के पांव 'सर्वोत्तम कोटि' से कुछ ही कम होते हैं। इनकी उंगलियां लम्बी तथा परस्पर मिली हुई, नाखून सामान्यतः लम्बे तथा त्वचा स्पर्श में कोमल होती है। शेष सभी गुण पूर्वोक्त प्रकार के ही समझने चाहिएं। ऐसे पांवों वाले व्यक्ति नीतिज्ञ, कार्य-कुशल, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छी सलाह देने वाले, साहित्य-प्रेमी, यशस्वी, धनी, यात्रा-प्रिय, तथा सर्वत्र सम्मान एवं सुख प्राप्त करने वाले होते हैं।

मध्यम—इस श्रेणी के पांवों के तलवे कोमल तथा गेरुए रंग के, नाखून सर्पाकार तथा हल्के गुलाबी गेरुआ अथवा पीले रंग के होते हैं। उन पर नसें सामान्य रूप से उभरी होती हैं तथा उंगलियों पर बहुत ही सामान्य बाल होते हैं।

ऐसे पांवों वाले व्यक्ति परिश्रमी, व्यवहार-कुशल, निर्भीक, दूर-दर्शी, विद्वान्, गणित अथवा विज्ञान में रुचि रखने वाले, साहित्यिक, पारिवारिक-चिन्ताओं से ग्रस्त तथा एक सीमित-क्षेत्र में यश-सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं। उंगलियां कुछ मिली तथा कुछ छितरी हुई होती हैं।

अधम—इस श्रेणी के पांवों के तलवे कुछ-कुछ भूरापन लिए हुए श्वेत रंग के होते हैं, त्वचा स्पर्श में कठोर, रूखी, तथा ठण्डी होती है। इनके भाग पर पसीना आता है। उंगलियां चौड़ी होती हैं और उनके ऊपर बाल जमे रहते हैं। नाखून चपटे, लम्बे अथवा अधिक चौड़े होते हैं। गुल्फ बाहर की ओर निकला रहता है। नाखूनों का रंग पीला अथवा सफेद होता है।

ऐसे पावों वाले व्यक्ति अपने कुल के अभिमान में डूबे रहने वाले, विद्याओं के विशेष-प्रेमी, परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति की इच्छा रखने वाले, कामुक-प्रवृत्ति के तथा दरिद्री होते हैं।

निकृष्ट—इस श्रेणी के पांवों के तलवों का रंग मिट्टी जैसे रंग का होता है। एड़ी मोटी तथा स्थान-स्थान पर फटी हुई, त्वचा स्पर्श में कठोर, ऊपरी भाग पर नसें उभरी हुई। उंगलियां टेढ़ी-मेढ़ी तथा उनके ऊपर अधिक बाल जमे हुए, गुल्फ बाहर की ओर काफी निकले हुए तथा नाखून छोटे, चपटे और कालापन अथवा नीलापन लिए हुए रहते हैं।

ऐसे पांवों वाले व्यक्ति दरिद्री, बीमारियों से ग्रस्त रहनेवाले, दास-वृत्ति के, लम्बे समय तक अपने घर से दूर रहने वाले, मिथ्याभिमानी, क्रोधी, निश्चिन्त, गंवार, मूर्ख तथा कुसंगति में रहने वाले होते हैं।

स्कन्द पुराण में लिखा है—

"पादौ समांसलौ रक्तौ समौ सूक्ष्मौ सुशोभनौ।
समगुल्फौ स्वेदहीनौ स्निग्ध वैश्वर्य सूचकौ।"

अर्थात् मांसल, रक्ताभ, सुन्दर, समान गुल्फ वाले, स्वेद-हीन, स्निग्ध तथा छोटे पांव ऐश्वर्य के सूचक होते हैं।

परन्तु अन्य ग्रन्थ में लिखा है—

"विशाल चरणो धनी"

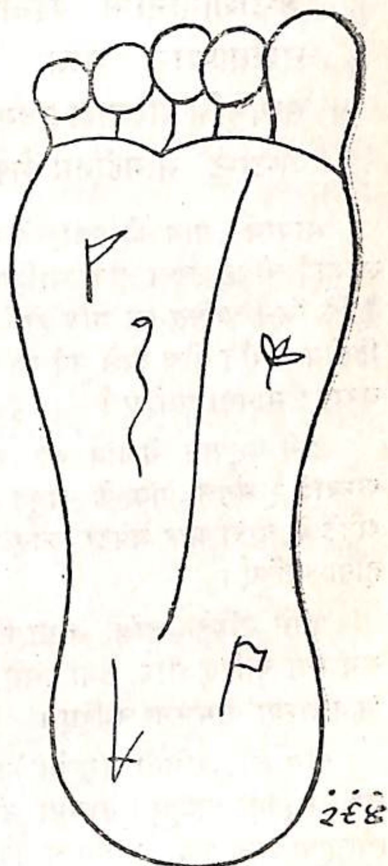
अर्थात् बड़े पांवों वाला व्यक्ति धनी होता है। अधिकांश विद्वानों के मत से पांव का छोटा होना शुभ लक्षण नहीं है। अब यहां पर विचार करने की बात यह रह जाती है कि पांव छोटा या बड़ा—इसका निश्चय कैसे किया जाए?

शरीर के अनुपात से पांव की छोटाई-बड़ाई ज्ञात करने का तरीका शास्त्रकारों ने यह बताया है—

"आपार्ष्णि ज्येष्ठान्तं तलमत्र चतुर्दशांगुलायाम।
विस्तारेण षडङ्गुल मंगुष्ठो व्यङ्गुलायामः॥



बायां पांव



दायां पांव

पञ्चांगुल परिणाहः पादोनं तन्नखोऽङ्गुलं दैर्ध्यात ।
अङ्गुष्ठ समा ज्येष्ठा मध्या तत्षोडशांशोना ।।

अष्टांशोनानामा कनिष्ठिका षष्ठभाग परिहीना ।
सर्वासाष्यासां नखाः स्वपर्व त्रिभाग मिताः ॥
सत्र्यंगुलि परिणाहा प्रथमाङ्गुली विस्तृताङ्गली भवति।
अष्टाष्ट भागहीनाः शेषाः क्रमशः परिज्ञेयाः ॥"

भावार्थ—पांव की एड़ी से पांव की तर्जनी उंगली तक पांव की लम्बाई चौदह उंगल होनी चाहिए । लम्बाई के उंगल का परिमाण यह है कि जिस व्यक्ति का पांव हो, उसी के हाथ की मध्यमा उंगली के द्वितीय अर्थात् बीच वाले पर्व की जितनी चौड़ाई हो, उसे एक उंगल के बराबर मानना चाहिए ।

इसी अनुपात से पांव की चौड़ाई ६ अंगुल, पांव के अंगूठे की लम्बाई २ अंगुल, पांव के अंगूठे का परिणाह (अर्थात् यदि धागे को अंगूठे के चारो ओर लपेटा जाए तो उस धागे की लम्बाई) ४ अंगुल होनी चाहिए ।

इससे अधिक लम्बा तथा मोटा पांव सामान्य से 'अधिक बड़ा' समझना चाहिए और तथा इससे छोटा तथा पतला पांव सामान्य से 'कम लम्बा' समझना चाहिए ।

पांव की प्रदेशिनी (तर्जनी)उंगली की लम्बाई पांव के अंगूठे के बराबर होनी चाहिए। मध्यमा उंगली की लम्बाई तर्जनी उंगली से सोलहवां भाग कम, अनामिका की लम्बाई मध्यमा से आठवां भाग कम तथा कनिष्ठका की लम्बाई मध्यमा से छठा भाग कम होनी चाहिए। अर्थात् अंगूठे और तर्जनी की लम्बाई तो बराबर की हो उसके बाद क्रमशः सभी उंगलियां एक दूसरी से कम लम्बी रहनी चाहिए ।

इन सभी उंगलियों के नाखून, पांव की उंगली के पर्व की लम्बाई

से एक तिहाई लम्बे होने चाहिएं। प्रदेशिनी (तर्जनी) उंगली की मोटाई का परिणाह तीन अंगुल का होना चाहिए। प्रदेशिनी उंगली जितनी मोटी हो, मध्यमा उंगली उससे आठवां भाग कम मोटी, मध्यमा की मोटाई से अनामिका उंगली आठवां भाग कम मोटी तथा अनामिका की मोटाई से कनिष्ठा उंगली की मोटाई का आठवां भाग कम होनी चाहिए।

इस प्रकार पांव की न्यूनाधिक लम्बाई का आनुपातिक परिमाण ज्ञात कर लेने के बाद उसके प्रभाव के सम्बन्ध में विचार करना उचित रहता है।

प्राच्य विद्वानों के मतानुसार पांवों के शुभ-अशुभ लक्षण इस प्रकार हैं—

(१) जो पांव मांसल, कछुए की पीठ की भांति उन्नत तथा नस-विहीन हो अर्थात् जिसके ऊपर नसें दिखाई न देती हों, उसे श्रेष्ठ समझना चाहिए।

(२) जिन पावों के तलवे कमल पुष्प की भांति गुलाबी रंग के तथा मुलायम होते हैं, वे शुभ कहे जाते हैं।

(३) पांवों की उंगलियों का आपस में एक दूसरी से मिले हुए होना, नखों का सुन्दर होना, एड़ियों का मांसल तथा गोलाई लिए हुए होना तथा टखनों को हड्डियों का दबा रहना—शुभ लक्षण है।

(४) पावों में पसीना आना, टखनों की हड्डियों का अधिक निकला रहना तथा पांव के ऊपरी भाग पर नसों का दिखाई देना—अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

(५) पांव यदि स्पर्श करने पर कुछ उष्ण (गरम) प्रतीत हों तो उसे शुभ और यदि शीतल (ठण्डे) प्रतीत हों तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

(६) पांव आगे से बहुत चौड़े तथा पीछे से बहुत सिकुड़े हुए हों, सूखे से प्रतीत हों अथवा जिनकी उंगलियां छितरी हुई हों तो उन्हें अशुभ समझना चाहिए। ऐसे पांवों वाला जातक दुःखी तथा दरिद्र होता है।

(७) जिनके पांवों के तलवों का रंग सफेद हो वह व्यक्ति अभक्ष्य-भक्षण करने वाला होता है।

(८) जिसके पांवों के तलवों का रंग पीला हो, वह व्यक्ति कामी तथा व्यभिचारी होता है।

(९) पांवों की उंगलियों के नाखून पीलापन अथवा सफेदी लिए हों तथा रूखे हों तो ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार के कष्ट भोगते हैं।

(१०) जिनके पांव बीच में कुछ अधिक उठे हुए (ऊंचे) हों, वे यात्राएं अधिक करते हैं।

(११) जिनके पांवों का रंग कषाय वर्ण का हो उनका वंश आगे नहीं चलता।

(१२) जिनके पांवों का रंग जली हुई मिट्टी के रंग जैसा हो, वे लोग पापी तथा हिंसक-स्वभाव के होते हैं। ऐसे लोग ब्रह्म-हत्या तक कर बैठते हैं।

(१३) जिनके पांवों के तलवों में रेखाएं न हों, जो कठोर, फटे हुए अथवा रूखे हों, ऐसे व्यक्ति दुःखी रहते हैं।

(१४) जिनके पांव के तलवे मांस-रहित से प्रतीत हों, वे लोग रोगी बने रहते हैं।

(१५) जिनके पांव के तलवों का मध्य भाग उठा हुआ हो, वे लोग यात्रा-प्रेमी होते हैं।

(१६) जिनके पांव की उंगलियों के नख सूप के समान फैले हुए, लम्बे, टेढ़े अथवा श्वेत रंग के हों, वे लोग दरिद्र होते हैं।

(१७) जिनके पांव के तलवों का रंग काला अथवा कत्थई हो, उनका वंश नष्ट हो जाता है।

(१८) यदि पांव के तलवे में पाई जाने वाली लम्बी ऊर्ध्व-रेखा सरल, सुन्दर, स्पष्ट, निर्दोष तथा एड़ी से लेकर तर्जनी उंगली के मूल तक गई हो, तो ऐसा व्यक्ति राजा अथवा परम ऐश्वर्यशाली होता है। इस रेखा की लम्बाई तथा बनावट जिस प्रकार की हो, वैसा ही उसका न्यूनाधिक शुभ अथवा अशुभ फल समझना चाहिए।

(१९) जिस पुरुष के पांव में अंकुश के समान रेखा हो, वह जीवन पर्यन्त सुखों का उपभोग करता है।

(२०) जिन लोगों के पांवों के तलवे में ध्वजा, कमल, वज्र, तलवार, शंख, छत्र, धनुष, शक्ति, बाण, चामर, कुण्डल, व्यंजन, सर्प, आदि के चिन्ह स्पष्ट हों, वे व्यक्ति भाग्यशाली होते हैं। यदि ये चिन्ह अस्पष्ट हों अथवा किन्हीं अन्य रेखा के द्वारा कटे हुए हों तो जातक को अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में इनके शुभ फल तथा ऐश्वर्य का भोग प्राप्त होता है।

(२१) यदि पांव के तलवों में तोता, चूहा, शृगाल, कौवा, साही आदि की आकृति बनी हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसी आकृतियों वाले जातक दरिद्री होते हैं।

(२२) यदि किसी पांव में पर्व-रेखा के भीतर कोई अन्य रेखा दिखाई दे तो उसे खेतो से लाभ प्राप्त होता है।

पांव का अंगूठा

पांव के अंगूठे के सम्बन्ध में 'सामुद्र तिलक' में लिखा है—

"वृत्तो भुजग फणाकृति स्तुंगो मांसल शुभोऽङ्गुष्ठः।
सशिरो ह्रस्वाश्चिपिटो वक्रो विपुलः स पुनर शुभः ॥"

भावार्थ—"पांव का अंगूठा यदि सर्प के फण के समान गोल आकृति वाला, उन्नत तथा मांसल हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। यदि अंगूठे पर नसें दिखाई देती हों, वह बहुत छोटा या बहुत बड़ा, टेढ़ा अथवा चिपटा हो तो उसे अशुभ जानना चाहिए।"

पांव के अंगूठे के विषय में अन्यत्र इस प्रकार कहा गया है—

"वृत्तैस्ताम्रनखै रक्तै रंगुष्ठै राज्यभागिनः ।
अङ्गुष्ठा पृथुला येषां ते नारा भाग्यवर्जिताः ॥
क्लिश्यन्ते विकृताङ्गुष्ठास्ते नरा वन गामिनः ।
चिपिटैर्विक्षतैर्भग्नैरङ्गुष्ठैः रतिनिन्दिताः ॥
वक्रैः रूक्षैस्तथा ह्रस्वैरङ्गुष्ठैः क्लेश भागिनः ॥"

भावार्थ :—पांव का अंगूठा यदि गोल, ताम्रवर्ण नख वाला तथा लालिमा लिए हुए हो तो ऐसे व्यक्ति राज्याधिकार (ऐश्वर्य) प्राप्त करते हैं। जिन लोगों के पांव का अंगूठा बड़ा होता है, वे भाग्यहीन होते हैं। टेढ़े-मेढ़े अंगूठे वाले व्यक्ति जंगलों में (इधर-उधर) भटकने वाले तथा कष्ट पाने वाले होते हैं। चपटे, कटे-फटे तथा टूटे हुए अंगूठे वाले व्यक्ति रति-निन्दित होते हैं तथा टेढ़े, रूखे और अधिक छोटे अंगूठे वाले व्यक्ति क्लेश उठाते हैं।

पांवों की उंगलियां

पुरुषों के पावों की उंगलियों के सम्बन्ध में शास्त्रकारों ने लिखा है—

"प्रदेशिनी यदा दीर्घा अंगुष्ठं च व्यति क्रयेत् ।
स्त्री भोगंलभते नित्यं पुरुषो नात्र संशयः ॥
मध्यमा यांतु दीर्घायां भार्याहानिर्विनिर्दिशेत् ।
अनामिकातु दीर्घायां विद्याभोगी भवेन्नरः ॥
सच ह्रस्वाभवेद्यस्य तत्वेद्या परदारगं ।
यस्य प्रदेशिनी स्थूला भर्तिश्चैव कनिष्ठिका ॥
ह्रस्वा क्लेशाय भोगायां गुल्ठाद्दीर्घा प्रदेशिनीः ।
समातुमध्यमा श्रेष्ठा श्रिये दीर्घा कनिष्ठिका ॥
आयतयामध्यमया कार्यविनाशो ह्रस्वया दुखं ।
धनया समया पुत्रोत्पत्ति स्तोकं नृणामायुः ।
असंहताभिह्रस्वाक्षि रंगुलीभिस्तु मानवः ।
दासोवादासकर्मोवा समुद्र वचनं यथा ॥
अंगुल्यपि समादीर्घा संहता श्चसमुन्नता ।
तेषां प्रदच्छिणावर्ता पृथिव्यास्तेन संशयः ॥
दीर्घा कनिष्ठिका पिस्याद्यस्य स्वर्णभाजनं सनरः ।
यदि सापिपुनर्लध्वी परदारापरायणः सततम् ॥"

भावार्थ—यदि पांव की तर्जनी उंगली अंगूठे से आगे निकली हुई (लम्बी) हो तो जातक को स्त्री-भोग का सुख नित्य प्राप्त होता है।

यदि यह तर्जनी उंगली छोटी हो तो क्लेशकारक होती है। यदि अंगूठे के बराबर की हो तो मध्यम फल समझना चाहिए। अंगूठे से बड़ी तर्जनी उंगली शुभ फल देने वाली समझनी चाहिए।

यदि मध्यमा उंगली अंगूठे से बड़ी हो तो जातक की पत्नी की हानि (मृत्यु) होती है। यदि तर्जनी के बराबर लम्बी हो तो श्रेष्ठ फल देने वाली कही गई है। (अधिक मोटी हो तो फल अशुभ होता है)।

यदि अनामिका उंगली लम्बी हो तो पुरुष विद्यानुरागी होता है। यदि छोटी हो तो पर-स्त्री गामी होता है। (इसकी लम्बाई का विचार मध्यमा उंगली की लम्बाई से करना चाहिए)।

यदि तर्जनी उंगली स्थूल तथा कनिष्ठा उंगली लम्बी हो तो जातक सुखी और धनी होता है।

यदि कनिष्ठा उगली छोटी हो तो पर-स्त्री-गामी होता है।

यदि कनिष्ठा उंगली छोटी तथा लट्टू के समान मोटी हो तो जातक को बाल्यावस्था में ही मातृ-वियोग का दुःख उठाना पड़ता है।

यदि मध्यमा उंगली अधिक लम्बी हो तो अपयश प्राप्त होता है। यदि अधिक छोटी हो तो जातक दुःखी रहता है। यदि अन्य उंगलियों के समान ही लम्बी हो तथा सभी उंगलियां परस्पर मिली हुई हों तो जातक पुत्रोत्पत्ति की क्षमता से युक्त, परन्तु अल्पायु होता है।

यदि पांव की सभी उंगलियां छोटी-छोटी और फैली हुई हों तो जातक दास अथवा दास वृत्ति जैसा काम करने वाला होता है।

यदि सब उंगलियां समान आनुपातिक लम्बाई, पुष्ट, ऊंची उठी हुई तथा एक दूसरी से मिली हुई हों तो उन्हें शुभ फलदायक समझना चाहिए।

पांवों की उंगलियों के सम्बन्ध में अन्य विद्वानों के मत का सार-संक्षेप यह है—

(१) यदि पांवों की उंगलियां समान आनुपातिक लम्बाई की हों, कुछ दाईं ओर को झुकी हुई हों, कोमल, उन्नत, अग्रभाग पर गोल, चिकनी, चमकदार तथा परस्पर मिली हुई हों तो ऐसा जातक अत्यन्त ऐश्वर्यशाली, उच्च-पदाधिकारी तथा यशस्वी होता है।

(२) यदि मध्यमा उंगली अनामिका उंगली से छोटी हो तो स्त्री-हानि होती है।

(३) यदि अनामिका उंगली मध्यमा से बड़ी हो तो जातक को स्वर्ण का लाभ होता है।

पांव की उंगलियों के नाखून

(१) यदि पांव की उंगलियों के नाखून लाल रंग के, शंख की भांति घुमाव वाले तथा चमकदार हों तो ऐसे जातक उच्च-पद प्राप्त करते हैं।

(२) यदि पांवों के नाखून चिकने तथा श्वेत-बिन्दु-चिन्ह से युक्त हों तो जातक सौभाग्यशाली होता है। उंगलियों के नाखूनों पर श्वेत-बिन्दु-चिन्हों के विषय में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। कुछ लोग इन्हें शुभ तथा कुछ लोग अशुभ मानते हैं।

(३) कुछ विद्वानों के मतानुसार यदि दाएं पांव के नाखूनों में सफेद, पीले, काले अथवा लाल रंग के बिन्दु-चिन्ह हों तो उन्हें 'उत्पात जनक' समझना चाहिए। यदि दाएं पांव के अंगूठे के नख में ऐसे चिन्ह हों तो जातक के धन का विनाश होता है तथा उसे अपयश प्राप्त होता है। यदि तर्जनी उंगली के नाखून पर ऐसे चिन्ह हों तो जातक का किसी से झगड़ा होता है। यदि मध्यमा उंगली के नाखून पर ऐसे चिन्ह हों तो

वे जातक के लिए चिन्ता एवं उद्वेगजनक होते हैं। यदि अनामिका उंगली के नाखून पर ऐसे चिन्ह हों तो ये जातक के लिए शुभ होते हैं। यदि कनिष्ठा उंगली के नाखून पर ऐसे चिन्ह हों तो नवीन सन्तान का जन्म होता है अथवा पुत्र को धन-लाभ होता है। बाएं पांव के नाखूनों में इसका उल्टा फल समझना चाहिए।

पांव का ऊपरी भाग

पांव का ऊपरी भाग मांसल, उन्नत तथा कोमल हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। यदि इस भाग पर नसें दिखाई देती हों, पसीना आता हो अथवा बाल (केश) हों तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

गुल्फ (टखने)

पांव के टखने मांस से ढके हुए हों तो उन्हें शुभ समझना चाहिए। टखनों का टेढ़ा होना अशुभ होता है। शूकर की गुल्फ जैसे गुल्फ वाले व्यक्ति कष्ट उठाते हैं। तथा भैंसे के टखनों की भांति टखने वाले व्यक्ति पापी तथा दुःखी होते हैं। यदि गुल्फों पर रोम हों तो सन्तान का अभाव होता है अथवा पुत्र-सुख कम प्राप्त होता है।

एड़ी

यदि एड़ी बड़ी हो तो जातक दीर्घायु होता है : पांव के अनुपात के बराबर हो तो कभी दुःखी और कभी सुखी रहता है। यदि एड़ी छोटी हो तो जातक दरिद्र होता है और यदि एड़ी उठी हुई हो तो शत्रुओं पर विजय पाता है। एड़ी गुदगदी हो तो उत्तम होती है और कड़ी हो तो सन्तान-सुख में कमी रहती है।

अन्य बातें

(१) यदि पुरुष के दाएं पांव के तलवे में पसीना आता हो तो उसे

अशुभ तथा भयकारक समझना चाहिए। ऐसे लोगों को यात्राएं करनी पड़ती हैं।

(२) यदि पुरुष के दाएं पांव के तलवे में पसीना आता हो तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

(३) यदि पांव में खुजली मचे तो रोग, यात्रा अथवा धन की हानि आदि अशुभ फल होते हैं। पांव की खुजली का प्रभाव एक पखवाड़े (१५ दिन) के भीतर प्रकट हो जाता है।

पिडली, जांघ और टांग

(१) यदि पांव की पिंडलियां गोल, गुदगुदी तथा रोमरहित हों तो उन्हें शुभ अथवा अशुभ समझना चाहिए।

(२) गोल, छोटी, गुदगुदी तथा हाथी की सूंड की भांति ढलवां जांघों वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है। पतली जांघों वाले मनुष्य दरिद्र होते हैं।

(३) ऊपर के धड़ से अधिक लम्बी टांगे शुभ होती हैं, ऐसा व्यक्ति शीघ्रगामी होता है। यदि टांगे कम लम्बी हों तो शूरवीर होता है।

(४) टांगों का निचला आधा भाग हिरन अथवा घोड़े जैसा हो तो जातक भाग्यवान होता है!

(५) व्याघ्र अथवा सिंह जैसी पिंडलियों वाले व्यक्ति धनी होते हैं।

(६) मछली जैसी जांघ वाले व्यक्ति ऐश्वर्यवान होते हैं।

(७) सियार कुत्ता, गधा अथवा रीछ जैसी जांघों वाले व्यक्ति दुर्भाग्यशाली तथा कौए जैसी टांगों वाले दुःखी होते हैं।

(८) जांघ का अधिक बड़ा तथा मोटा होना तथा पिंडलियों पर अधिक रोमों का होना दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए।

(६) कम तथा मुलायम रोमों वाली जांघें शुभ तथा सौभाग्यदायक होतो हैं।

रोमें

(१) यदि रोम-कूप से ही एक ही रोम निकले तो जातक अत्यन्त उच्च-पद प्राप्त करता है। यदि एक रोम-कूप में से दो-दो रोम निकले तो जातक परम-विद्वान् तथा बुद्धिमान् होता है। यदि एक रोम-कूप में से तीन अथवा अधिक रोम निकलें तो जातक दुःखी तथा दरिद्र होता है।

(२) भ्रमर के समान काले, चिकने, पतले, सुन्दर तथा मुलायम रोमों वाला व्यक्ति अत्युच्चपद प्राप्त करता है। अधिक घने रोमों वाला व्यक्ति विद्वान् तथा बुद्धिमान् होता है। रोम-हीन अंगों वाला व्यक्ति सन्यासी होता है। पीतवर्ण रोमों वाला व्यक्ति पापी होता है। मोटे तथा रूखे रोमों वाला व्यक्ति अधम होता है। यदि रोम अपने अग्रभाग में चिरे हुए हों तो जातक धनी होता है।

यह फलादेश शरीरस्थ किसी भी अंग पर पाए जाने वाले रोगों के सम्बन्ध में लागू होता है। पांव के रोगों पर भी यही फल समझना चाहिए।

घुटने

(१) जिस व्यक्ति के घुटने भीतर को धंसे हुए हों, वह अपनी स्त्री अथवा अन्य स्त्रियों के वश में रहता है तथा उसकी मृत्यु परदेश में होती है।

(२) खूब मोटे तथा मांसल घुटनों वाला व्यक्ति ऐश्वर्यशाली, भू-स्वामी तथा दीर्घजीवी होता है।

(३) हाथी के समान घुटनों वाला व्यक्ति भोगी होता है।

(४) घोड़े के समान घुटनों वाला व्यक्ति दुर्गति को प्राप्त होता है।

(५) तालफल जैसे घुटनों वाला व्यक्ति अत्यन्त दुःख प्राप्त करता है।

(६) टेढ़े-मेढ़े, विकराल अथवा बहुत छोटे घुटनों वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

(७) ऊंचे-नीचे तथा कमजोर घुटनों वाला व्यक्ति दरिद्र होता है तथा दास-वृत्ति (नौकरी) करता है।

(८) यदि घुटनों पर मांस एक जैसा न हों—कहीं कम और कहीं अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति निर्धन होता है। ऐसे घुटनों को अशुभ समझना चाहिए।

अन्य अङ्गों के लक्षण

शरीर के अन्य अंगों के लक्षण नियमानुसार समझना चाहिए।

आंखें

आंखों के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का सार यह है—

(१) जिस जातक की आंखें आगे को बहुत उभरी हुई हों, वह किसी काम को समाप्त किए बिना अधूरा नहीं छोड़ता। वह छोटी से छोटी बातों को भी विस्तार से स्मरण रखता है।

(२) बड़ी गोल तथा स्वच्छ आंखों वाले व्यक्ति विपरीत-यौन वालों को अपनी ओर अधिक आकर्षित करते हैं। ऐसे व्यक्ति निर्भीक, अग्रगामी तथा साहसी होते हैं।

(३) जिनकी दोनों आंखें दूर-दूर हों, वे स्पष्टवादी तथा खरे होते हैं। उनका दृष्टिकोण सीधा और साफ होता है।

(४) यदि आंखें एक-दूसरी के समीप हों तो जातक चालाक और चंचल होता है।

(५) तिरछी आंखों वाला व्यक्ति कांइयां तथा तिकड़मी होता है, परन्तु वह दूसरों के अधिकारों का भी ध्यान रखता है।

(६) अनार के पुष्प जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति भू-स्वामी होता है।

(७) व्याघ्र के समान नेत्रों वाला व्यक्ति क्रोधी होता है।

(८) मुर्गे जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति झगड़ालू होता है।

(९) बिल्ली जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति चालाक, धूर्त, हिंसक और अधम परन्तु धनी होता है।

(१०) मोर अथवा नेवले जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति मध्यम श्रेणी के होते हैं।

(११) काली आंखों वाला व्यक्ति वासनात्मक प्रवृत्ति का, कांइयां तथा तिकड़मी होता है।

(१२) भूरी आंखों वाला व्यक्ति सज्जन, स्वार्थ-हीन तथा अस्थिर स्नेह वाला होता है।

(१३) नीली आंखों वाला व्यक्ति लोक-प्रिय तथा दृढ़ निश्चयी होता है।

(१४) स्लेटी रंग की आंखों वाला व्यक्ति मनमौजी तथा रंगीन तबियत वाला (आशिक मिजाज) होता है। ऐसे लोग विलासी भी होते हैं।

(१५) आंखों की सफेदी गाय के दूध जैसी हो और पुतलियां काली हों तो उसे अत्यन्त शुभ लक्षण समझना चाहिए।

(१६) गधा, भैंसा अथवा सर्प जैसी आंखों वाले व्यक्ति की मृत्यु शस्त्राघात से होती है।

(१७) ऊंट जैसी आंखों वाले व्यक्ति पापी तथा निर्दयी होते हैं।

(१८) बड़े और टेढ़े नेत्रों वाले पुरुष स्त्रियों के वश में रहते हैं।

(१९) बैल अथवा कौंच जैसे नेत्रों वाले व्यक्ति राजा अथवा परम ऐश्वर्यशाली होता है।

(२०) हंस अथवा घोड़े जैसे नेत्रों वाले व्यक्ति प्रजा-पालक, नेतृत्व-शक्ति सम्पन्न तथा लोकप्रिय होते हैं।

(२१) औड़ी आंखों वाले व्यक्ति क्रूर होते हैं।

(२२) हरिण जैसी आंखों वाले पुरुष पाप-बुद्धि होते हैं।

(२३) नेत्र-प्रान्तों में कुछ लालिमा हो तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

(२४) एक ओर को ढालू अथवा टेढ़े नेत्रों वाले व्यक्ति चोर होते हैं।

(२५) हाथी जैसी आंखों वाले व्यक्ति सेनापति होते हैं।

(२६) कमलदल जैसी आंखों वाले व्यक्ति धनवान् होते हैं।

(२७) जिनकी आंखों की पुतलियां अत्यधिक काली हों, वे महा-दुष्ट होते हैं।

(२८) एक आंख वाले (काने) व्यक्ति धूर्त और चालाक होते हैं।

(२९) मेंढक अथवा कौए जैसी आंखों वाले व्यक्ति अधम, परन्तु दीर्घजीवी होते हैं।

(३०) मटमैली आंखों वाले व्यक्ति भी अधम परन्तु दीर्घजीवी होते हैं।

(३१) उन्नत नेत्रों वाले व्यक्ति सौभाग्य शाली होने पर भी अल्पायु होते हैं।

भ्रू (भौंह)

भौंहों के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का सार संक्षेप निम्नानुसार समझना चाहिए।

(१) यदि भौंहें द्वितीया के चन्द्रमा के समान टेढ़ी तथा गोलाई लिये हुए हों, (चित्र संख्या २९५) तो उन्हें शुभ समझना चाहिए, ऐसी



भौंहों वाला जातक धनवान तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(२) यदि भौंहें बड़ी तथा परस्पर मिली हुई हों (चित्र संख्या २९६) तो प्राच्य विद्वानों के मतानुसार इसे शुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति कलात्मक रुचि का, सौन्दर्य प्रमो भोगी तथा सुखी जीवन व्य-



तीत करने वाला होता है। परन्तु पाश्चात्य विद्वानों के मत से दोनों भौंहों के बीच में स्थान जितना कम होता है, जातक उतना ही कम स्पष्ट वादी तथा सन्देहशील होता है। यहां तक कि कभी-कभी वह बेईमानी भी कर बैठता है।

(३) नाक के ऊपरी भाग से आरम्भ होकर दोनों दिशाओं में गोलाई लिए हुए एक दूसरी से अलग बड़ी, उन्नत, लम्बी, पतली, श्याम रंग वाली तथा मुलायम रोएं वाली भौंहें प्राच्य विद्वानों के



मतानुसार शुभ होती हैं (चित्र संख्या २६७) पाश्चात्य-विद्वानों के मत में ऐसी भौंहों वाला जातक अधिक निर्भीक तथा स्पष्टवादी होता है।

(४) यदि दोनों भौंहें बीच में से खण्डित हों अर्थात् उनके रोएं बीच में से उड़े हुए दिखाई दें अथवा अन्य किसी कारण से वे एकसार



रोएं वाली न हो (चित्र संख्या २९८) तो ऐसा जातक निर्धन तथा दुःखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है। यदि केवल एक ही भौंह खण्डित हो तो अशुभ फल आधे परिमाण में होता है।

(५) यदि भौंहें ऊंची-नीची हों तो मनुष्य दरिद्री होता है।

(६) यदि भौंहें बीच में झुकी हुई हों तो उसका पर-स्त्रियों से प्रेम होता है।

(७) यदि भौंहों पर रोम बहुत अधिक, बहुत कम, बहुत कड़े अथवा पीले रंग के हों तो ऐसी भौंहों को अशुभ समझना चाहिए।

(८) हल्की तथा कमानीदार भौंहों वाला व्यक्ति कलात्मक रुचि का तथा कोमल हृदय वाला होता है।

(९) यदि भौंहें आंखों से अधिक ऊंची उठी हुई हों तो जातक निर्बल मन का तथा अनिश्चयी होता है।

(१०) यदि भौंहें बहुत नीची हों और उनमें वक्रता का अभाव हो तो जातक दृढ़ संकल्प वाला होता है।

(११) मोटी और सीधी भौंहों वाला व्यक्ति व्यवहारिक स्वभाव का होता है और वह किसी भी काम को आरम्भ करके उसे पूरा किए बिना चैन नहीं लेता।

(१२) विषम, घनी और झाड़ीदार भौंहें व्यक्ति के ढीले-ढालेपन को प्रकट करती हैं। ऐसा व्यक्ति उल्लेखनीय रूप से चतुर, दूसरों को प्रभावित करने वाला, विलक्षण विचारों वाला, परन्तु अस्थिर व्यक्तित्व का होता है।

बरौनी

सूक्ष्म, सुदृढ़, सघन तथा एकदम काली बरौनियों वाले जातक दीर्घायु, सौभाग्यशाली तथा धनी होते हैं। भिन्न प्रकार की बरौनियों वाले व्यभिचारी तथा पापी होते हैं।

पलकें

(१) जिस व्यक्ति की पलक नहीं झपकती, वह धनहीन होता है। पांच सैकिण्ड में एक बार पलक गिराने वाले व्यक्ति निर्धन, दस सैकिंड

में एक बार पलक गिराने वाले दूसरों के आश्रित, पन्द्रह सैकिण्ड में एक बार गिराने वाले धनी, तथा बीस या पच्चीस सैकिण्ड में एक बार पलक गिराने वाले व्यक्ति धनी, भोगी तथा दीर्घायु होते हैं।

दृष्टि

(१) जिनकी दृष्टि में चिकनाई हो वे धनवान् तथा भोगी होते हैं।

(२) जिनकी दृष्टि में दैन्य हो वे दरिद्र होते हैं।

(३) जिनकी दृष्टि गूढ़ हो वे महत्ताशाली होते हैं।

(४) मोची दृष्टि से देखने वाले क्रूर तथा अविचारी होते हैं।

(५) सूक्ष्म दृष्टि से देखने वाले निर्धन होते हैं।

(६) स्थूल दृष्टि से देखने वाले भाग्यशाली होते हैं।

(७) नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि रखने वाले व्यक्ति विद्वान् होते हैं।

(८) जिनकी दृष्टि में श्यामता हो, वे भाग्यवान होते हैं।

(९) ऊंची दृष्टि से देखने वाले पुण्यात्मा होते हैं।

(१०) नीची दृष्टि से देखने वाले पापी होते हैं।

(११) तिरछी दृष्टि से देखने वाले क्रोधी होते हैं।

(१२) सीधी दृष्टि से देखने वाले सामान्य तथा सरल होते हैं।

(१३) सर्प जैसी दृष्टि से देखने वाले क्रूर होते हैं।

(१४) मुर्गे तथा बिल्ली की दृष्टि से देखने वाले पापी होते हैं।

कान

(१) छोटे कानों वाले व्यक्ति भीरु, कृपण, परन्तु परिमार्जित रुचि के और स्नेही-प्रकृति के होते हैं।

(२) पाश्चात्य मतानुसार कान जितने बड़े होते हैं, जातक के स्वभाव में उतनी ही रूक्षता होती है।

(३) कान सिर के समीप स्थित हों तो जातक भावुक स्वभाव का होता है, परन्तु संकट के समय अच्छे साहस का परिचय देता है।

(४) कान सिर से बाहर की ओर निकले हुए हों तो व्यक्ति कृपण तथा असंस्कृत रुचि का होता है।

(५) प्राच्य मतानुसार बड़ कानों वाले व्यक्ति धनी होते हैं।

(६) लम्बे तथा मांसल कानों वाले व्यक्ति सुखो होते हैं।

(७) जिनके कानों के ऊपर रोएं हों, वे दोर्घायु होते हैं।

(८) चपटे कानों वाला व्यक्ति अधिक सुख भोगता है।

(९) मांसहीन कानों वाला व्यक्ति अपमृत्यु का शिकार होता है।

(१०) जिसके कानों में नसें दिखाई देती हों वह व्यक्ति हिंसक स्वभाव का होता है।

(११) मुलायम, गोल तथा सुन्दर कानों वाला व्यक्ति सुखी होता है।

(१२) चूहे जैसे कानों वाला व्यक्ति बुद्धिमान् होता है।

(१३) भाले की नोक जैसे कानों वाला व्यक्ति सेनापति होता है।

(१४) कुरूप कानों वाले व्यक्ति अल्पायु तथा दरिद्र होते हैं।

(१५) कान बड़े हों परन्तु कान के छिद्र छोटे हों तो ऐसे व्यक्ति राजा अथवा अत्यन्त ऐश्वर्यशालो होते हैं।

(१६) जो कान कनपटी के साथ सुन्दरतापूर्वक जुड़े हुए हों, वे श्रेष्ठ माने जाते हैं।

नाक

(१) तोते जैसी नाक वाले व्यक्ति राजा होते हैं अथवा उच्चपद प्राप्त करते हैं।

(२) बड़ी नाक वाले व्यक्ति भोगी होते हैं।

(३) सीधी नाक वाले व्यक्ति धर्मात्मा होते हैं।

(४) टेढ़ी-मेढ़ी अथवा आगे से मोटी नाक वाले व्यक्ति पापी होते हैं।

(५) सूखी हुई-सी नाक वाले व्यक्ति दीर्घजीवी होते हैं।

(६) टेढ़ी नाक वाले व्यक्ति चोर होते हैं।

(७) चपटी नाक वाले पुरुष की मृत्यु स्त्री के कारण होती है।

(८) आगे से कुछ झुकी हुई नाक वाले व्यक्ति धनी होते हैं।

(९) जिनकी नाक दाईं ओर को झुकी हुई हो, वे क्रूर होते हैं।

(१०) जिनकी नाक आगे से दो भागों में विभक्त-सी हो, वे निर्धन होते हैं।

(११) बहुत बड़ी या बहुत छोटी नाक वाले व्यक्ति निर्धन होते हैं।

(१२) नाक के छिद्र छोटे हों तो उन्हें शुभ समझना चाहिए।

(१३) नीचे को ओर झुकी हुई नाक वाला व्यक्ति मनमौजी होता है।

(१४) छोटी तथा चपटी नाक वाला व्यक्ति विनोदी स्वभाव का तथा दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

(१५) नाक के छिद्र बड़े हों तो जातक विषयासक्त होता है।

छींकना

(१) धनी लोग केवल एक बार छींकते हैं।

(२) एक साथ दो या तीन बार छींकने वाला व्यक्ति दीर्घजीवी होता है।

(३) एक साथ चार बार छींकने वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

(४) इससे भी अधिक बार एक साथ छींकना अशुभ तथा दोष-युक्त माना गया है।

होंठ और अधर

ऊपर के होंठ का 'होंठ' अथवा 'ओष्ठ' कहा जाता है तथा नीचे के होठ को 'अधर' कहा जाता है। इन दोनों के लक्षणों को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिनके अधर बिम्ब फल के समान लाल, पतले तथा सीधे हों, वे धनाढ्य तथा ऐश्वर्यशाली होते हैं।

(२) जिनके अधर पएल-पुष्प की भांति लाल हों, वे विद्वान् होते है।

(३) जिनके अधर मूंगे के समान कांतियुक्त हों, वे उच्च अधि-कारी होते हैं।

(४) जिनके अधर कोमल, चिकने तथा मुलायम हों, वे धनी तथा सुखी होते हैं।

(५) ऊपर का होंठ कटा हुआ, रूखा तथा भद्दे रंग का हो तो जातक दरिद्र होता है।

(६) ऊपर का होंठ मोटा हो तो जातक भाग्यशाली होता है, परन्तु यदि अधिक बड़ा हो तो भीरु स्वभाव का होता है।

(७) ऊपर का होंठ छोटा हो तो जातक भोगी होता है, यदि अधिक छोटा हो तो दुःखी होता है।

(८) मोटे होंठ विषय-लोलुपता के चिन्ह समझने चाहिए, परन्तु उसका स्नेह निष्कपट होता है।

(९) जिसका निचला होंठ (अधर) बाहर की ओर निकला हुआ हो, वह भोजन-भट्ट होता है, परन्तु दूसरों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखने वाला होता है।

(१०) यदि ऊपर का होंठ नीचे की ओर लटका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति झमेलों में नहीं पड़ना चाहता, परन्तु किसी विपत्ति के समय वह उत्तरदायित्व का निर्वाह करने वाला तथा औरों के लिए सहायक भी सिद्ध हो सकता है।

(११) जिस व्यक्ति के होंठ दोनों किनारों पर नीचे की ओर मुड़े हों, वो मनहूस तथा निराशावादी होता है। यों, उसमें दृढ़ता, सच्चाई तथा ईमानदारी पूर्ण मात्रा में पाई जाती है।

(१२) यदि दोनों होंठ परस्पर सटे हुए न रहते हों और जिनके कारण मुंह हर समय खुला हुआ प्रतीत होता हो, तो ऐसे होठों वाले जातक में गम्भीरता का अभाव होता है। वो जीवन के सुखों का शौकीन, परन्तु निम्न श्रेणी की बुद्धि वाला होता है।

(१३) जिसके दोनों होंठ दृढ़ता से बन्द रहते हों, वह व्यक्ति दृढ़ निश्चयी होता है। ऐसे व्यक्ति पर पूरा भरोसा किया जा सकता है।

(१४) ऊपर का होंठ आगे की ओर निकला हुआ हो तो जातक बुद्धिमान् तथा मधुरभाषी होता है।

(१५) नीचे का होंठ बहुत पतला तथा अधिक लम्बा हो तो जातक दरिद्र होता है।

(१६) ऊपर का होंठ फटा हुआ हो तो उसे दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए ।

(१७) यदि होंठ इस प्रकार खुले रहते हों कि उनके भीतर से दांतों का ऊपरी मसूढ़ा दिखाई दे तो जातक स्वार्थी होता है ।

दांत

(१) श्वेत, चमकीले, एकसार पंक्तिबद्ध, समान आकार के स्वच्छ सुन्दर दांतों वाला व्यक्ति सुखी तथा धनवान् होता है ।

(२) लम्बे, बड़े तथा बाहर निकले हुए दांतों वाला व्यक्ति विद्वान् होता है । यदि ऐसे दांत बड़े हों तो दीर्घायु और सब पर दया करने वाला होता है, यदि छोटे हों तो अल्पायु होता है ।

(३) दांतों के मसूढ़े दिखाई न देते हों तो जातक सत्यवादी होता है ।

(४) चूहे के समान छोटे, अत्यन्त तीक्ष्ण तथा परस्पर मिले हुए दांतों वाला व्यक्ति भाग्यवान होता है ।

(५) यदि दांत पर दांत रहते हों तो जातक बन्धु नाशक होता है ।

(६) राक्षस अथवा बन्दर के समान विकृत, रूखे तथा थोड़े-थोड़े अन्तर पर रहने वाले दांत अशुभ होते हैं । टेढ़े तथा विषम(कोई छोटा तथा कोई बड़ा) दोनों अशुभ फलकारक होते हैं ।

(७) चिकने दांतों वाला व्यक्ति धनवान् तथा गुणवान होता है ।

(८) मुंह में सब मिलाकर २८ दांतों वाला व्यक्ति सुखी, २९ दांतों वाला व्यक्ति दुःखी, ३० दांतों वाला कभी सुख और कभी दुःख पाने वाला, मतान्तर से धनी, ३१ दांतों वाला भोगी तथा ३२ दांतों वाला ऐश्वर्यवान् , गुणवान, विद्वान्, यशस्वी, सुखी तथा राजा अथवा राजा के समान होता है ।

जिह्वा

(१) जीभ का अग्रभाग चिकना, छोटा, नीचा तथा लाल हो तो जातक विद्वान् तथा श्रेष्ठ वक्ता होता है।

(२) कमल-पत्र की भांति फैला हुई उचित परिमाण वाली लाल रंग की जीभ हो तो जातक उच्चपद प्राप्त करता है।

(३) जिसकी जीभ का रंग पीला हो, वह व्यक्ति दुःखी तथा मूर्ख होता है।

(४) जीभ का रंग काला हो तो जातक दास वृत्ति करता है।

(५) जीभ का रंग सफेदी लिए हो तो जातक आचारहीन होता है।

(६) यदि सम्पूर्ण जीभ का रंग एक समान न हो; यह दो रंग की-सी दिखाई देती हो तो जातक पापी होता है।

(७) मोटी जीभ वाला रूखे स्वभाव का होता है।

तालु

(१) तालु का रंग काला हो तो जातक दुःखी, निर्धन तथा कुल को नष्ट करने वाला होता है।

(२) तालु में कुछ पीलापन हो तो उसे शुभ समझना चाहिए।

(३) लाल रंग का तथा बड़े आकार का तालु शुभ होता है।

(४) तालु का रंग सफेद हो तो जातक धनी होता है।

(५) उत्तम रंग वाले, उत्तम आकृति वाले तथा चिकने तालु को शुभ तथा खुरदरे, फटे, रूखे तथा विकृत तालु को अशुभ फलदायक समझना चाहिए।

कपोल

(१) कमलदल के समान कान्तियुक्त, भरे हुए तथा उन्नत कपोलों

(गाल) वाला व्यक्ति ऐश्वर्यशाली, उच्चपदाधिकारी, धनी, सुखी तथा भोगी होता है।

(२) भीतर को धंसे हुए, मांस हीन तथा कम रोएं वाले गालों वाला जातक दीन, दुःखी, पापी, दास वृत्ति करने वाला तथा भाग्यहीन होता है।

चिबुक और हनु

होंठ के नीचे वाले भाग को 'चिबुक' अथवा ठोड़ी, तथा दोनों गालों के नीचे एवं ठोड़ी के दोनों ओर के भाग को 'हनु' कहते हैं।

(१) गोल तथा भरी हुई ठोड़ी (चिबुक) कही गई है। ऐसी ठोड़ी वाला व्यक्ति भाग्यशाली तथा सुखी होता है। ऐसे व्यक्ति जीवन के आनन्द का पूरा-पूरा उपभोग करते हैं।

(२) पतली, बहुत बड़ी तथा दो भागों बंटी हुई ठोड़ी वाला व्यक्ति दरिद्री होता है।

(३) कोमल तथा मोटी ठोड़ी वाला व्यक्ति सुखी होता है।

(४) चपटी ठोड़ी वाला जातक कठोर हृदय का तथा लोभी होता है।

(५) नुकीली ठोड़ी वाला जातक बुद्धिमान्, अहंकारी तथा विवेकशील होता है।

(६) छोटी ठोड़ी वाला व्यक्ति डरपोक होता है।

(७) गुदगुदी ठोड़ी वाला जातक भोगी होता है।

(८) गुदगुदी ठोड़ी में गड्ढा भी हो तो जातक सुख एवं विविध प्रकार के भोगों का उपभोग करने वाला होता है।

(९) अधिक बड़ी, अधिक कृश तथा अधिक छोटी ठोड़ी वाला व्यक्ति निर्धन तथा भ्रमणशील होता है।

(१०) ठोड़ी और होंठ के मध्य भाग (हनु-प्रदेश) में गहरा गड्ढा हो तो ऐसे जातक की बुद्धि अत्यन्त तीव्र होती है।

(११) हनु-प्रदेश दीर्घ हो तो जातक में दृढ़ता होती है।

(१२) हनु-प्रदेश टेढ़ा हो तो दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

(१३) यदि हनु-प्रदेश के दोनों भाग बड़े हों तो जातक विजयी तथा यशस्वी होता है

ग्रीवा (गर्दन)

(१) चपटी, शुष्क तथा शिरा युक्त ग्रीवा (गर्दन) वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

(२) भैंसे के समान मोटी गर्दन वाला व्यक्ति शूर-वीर होता है।

(३) बैल जैसी गर्दन वाले व्यक्ति की मृत्यु शस्त्राघात से होतो है।

(४) जिसकी ग्रीवा में तीन रेखाएं पड़ती हों वह राजा अथवा परम ऐश्वर्यशाली होता है।

(५) बहुत छोटी (कोत) गर्दन वाले व्यक्ति साहसी, बलवान, अविश्वासी, धूर्त तथा आक्रामक प्रवृत्ति के होते हैं।

(६) लम्बी गर्दन वाले व्यक्ति भीरु स्वभाव के होते हैं। यदि ऐसी गर्दन पतली भो हो तो जातक डरपोक स्वभाव का होने के साथ ही लज्जाशील भी होता है। यह अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों के आदेश को तुरन्त मान लेता है।

(७) यदि गर्दन आगे की ओर झुकी हुई हो तो जातक व्यवहार-कुशल होता है।

(८) यदि गर्दन पीछे की ओर हो तो जातक भौतिक-जीवन से कम सम्बन्ध रखने वाला, काल्पनिक-वृत्ति का होता है।

(९) यदि गर्दन एकदम सीधी हो तो जातक मध्यम श्रेणी का होता है ।

(१०) टेढ़ी, सूखी तथा पतली गरदन वाले व्यक्ति निर्धन होते हैं।

(११) बहुत अधिक लम्बी गरदन वाले व्यक्ति भोगी होते हैं ।

(१२) गोल घड़े के आकार की गर्दन हो तो जातक धनी तथा दीर्घजीवी होता है ।

(१२) टेढ़ी गर्दन वाला व्यक्ति चुगलखोर होता है ।

(१४) चपटी गर्दन वाला व्यक्ति दरिद्री होता है ।

(१५) गर्दन के पिछले भाग में रोएं हों, नसें उभरी हुई हों अथवा वह भाग टेढ़ा-मेढ़ा या अधिक बड़ा हो तो जातक रोगी तथा निर्धन होता है ।

कांख

(१) उन्नत, पुष्ट, सुगन्धित, मांसल तथा बिना पसीने वाली कांख हो तो जातक ऐश्वर्यशाली होता है ।

(२) नीची, गड्ढेदार तथा विषम कांख होने से जातक निर्धन, कपटी तथा बेईमान होता है ।

(३) सम कांख हो तो जातक भोगी होता है ।

कंधा

(१) ऊंचे, बड़े तथा मांसल कंधों वाला व्यक्ति वीर तथा साहसी होता है ।

(२) हाथी, सुअर अथवा बैल जैसे कंधों वाला जातक महाधनी, महाभोगी तथा उच्च पद पाने वाले होता है ।

(३) मांसहीन, गड्ढेदार अथवा छोटे कंधों वाला व्यक्ति दुःखी रहता है।

(४) कंधे पर रोएं हों तो उन्हें दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए।

(५) बकरे की भांति अथवा केले के खम्भे की भांति कंधों वाले व्यक्ति अत्यन्त बलवान धनी, तथा यशस्वी होते हैं।

बाहु (भुजा)

(१) हाथी के सूंड के समान गोल तथा घुटनों तक लम्बी भुजाओं वाला जातक शूर-वीर, प्रतापी तथा परम ऐश्वर्यमान होता है।

(२) समान मोटी भुजाओं वाला व्यक्ति देशाटन करने वाला होता है।

(३) बाहुओं में नसें दिखाई दें, उनमें अधिक रोम हों अथवा छोटी हों तो जातक दरिद्री होता है।

(४) सामान्य रोमयुक्त भुजाओं वाला व्यक्ति दीर्घायु तथा धनी होता है।

(५) ऊंची-नीची बाहुओं वाला जातक चोर होता है।

(६) छोटी बाहुओं वाला व्यक्ति सेवावृत्ति (नौकरी) करता है।

हंसली

(१) हंसली निकली हुई हो अर्थात् हड्डी ऊपर को अधिक उभरी हुई हो तो जातक दरिद्री होता है।

(२) हंसली मांसल तथा उन्नत हो तो जातक धनी तथा भोगी होता है।

वक्षःस्थल (छाती)

(१) छाती समतल हो तो जातक धनवान होता है।

(२) छातो पुष्ट और मोटी हो तो जातक शूर-वीर होता है।

(३) छाती ऊंची-नीची हो तो जातक को मृत्यु शस्त्राघात से होती है।

(४) छातो जितनी अधिक चौड़ो, उन्नत, कठोर तथा स्थिर हो उसे उतना ही शुभ समझना चाहिए।

(५) चौड़ी तथा सेम युक्त छाती वाला व्यक्ति वीरो, बहादुर और दयालु होता है।

(६) छाती पर जितने अधिक बाल हों, वे उतने ही शुभ होते हैं।

(७) छाती के रोएं ऊपर (गरदन की) ओर जाते हैं तो जातक में वीरता अत्यधिक होती है।

(८) पतली छातो वाला व्यक्ति धन-हीन होता है।

(९) यदि छाती पर रोम न हों तो ऐसा जातक निर्दयो, डरपोक, चंचल तथा धोखेबाज, विश्वास न करने योग्य होता है। वह किसी भी उत्तरदायित्व का गंभीरता पूर्वक निर्वाह नहीं कर सकता।

उर-स्थल (हृदय)

(१) उर-स्थल एक समान हो तो जातक धनी होता है।

(२) उर-स्थल कृश हो तो जातक दरिद्र होता है।

(३) उर-स्थल ऊंचा-नोचा हो तो जातक की मृत्यु शस्त्राघात से होती है।

(४) उर-स्थल और कण्ठ का सन्धि-भाग ऊंचा-नीचा हो तो जातक क्रूर स्वभाव का होता है।

(५) उर-स्थल गहरा हो तो जातक दरिद्र और उन्नत हो तो धनी होता है।

(६) उर-स्थल बिना रोम का हो तो शुभ है। यदि मृदु रोम हों तो वह भी शुभ माना गया है।

स्तनाग्र-भाग

(१) स्तनाग्र भाग ऊंचा हों तो जातक धनी होता है।

(२) स्तनाग्र भाग सम हो तो जातक दुःख भोगता है।

(३) स्तनाग्र भाग असमान हो तो जातक दुःखी होता है।

(४) कठिन, पुष्ट तथा गहरे स्तनों वाला जातक सुखी होता है।

पेट (उदर)

(१) म.र, मण्डूक तथा हरिण जैसे पेट वाला व्यक्ति राजा होता है।

(२) व्याघ्र तथा सिंह जैसे पेट वाला व्यक्ति धनी, सियार जैसे पेट वाला अधम तथा घोड़े जैसे पेट वाला जातक दरिद्र होता है।

(३) उदर छाती के बराबर हो तो जातक धन-ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

(४) घड़े की तरह पेट वाला व्यक्ति बहुभोजी होता है।

(५) सांप की तरह पेट का होना अशुभ समझना चाहिए।

(६) बहुत पतले पेट वाला मनुष्य पापी होता है।

(८) पेट में बल (सलवटें) पड़ना शुभ लक्षण है। यदि सीधी बल

पड़ती हों तो जातक सुखी तथा सदाचारी होता है। यदि ऊंची-नीची अथवा टेढ़ी बल पड़ती हों तो व्यभिचारी होता है। एक सीधी बल पड़ती हो तो जातक विद्वान् होता है, दो सीधी बल पड़ें तो भोगी, तीन पड़ें तो अनेक शास्त्रों का ज्ञाता होता है तथा चार पड़ें तो पूतवान् होता है, परन्तु एक भी बल न पड़े तो उसे भी शुभ लक्षण ही समझना चाहिए।

नाभि

(१) वर्तुलाकार, गहरी तथा विस्तीर्ण नाभि वाला जातक वीर, गुणी, विद्वान्, सुखी तथा ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

(२) ऊंची उठी हुई, छोटी अथवा अदृश्य नाभि वाला जातक दरिद्र होता है।

(३) यदि नाभि पर रोम हों तो अधिक सन्तानें होती हैं।

(४) यदि नाभि के बीच में घुमाव अथवा रेखा हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

(५) नाभि का घुमाव बाईं ओर को हो तो जातक दुष्ट एवं कपटी स्वभाव का होता है परन्तु यदि दाईं ओर को हो तो अत्यन्त बुद्धिमान् तथा विद्वान् होता है।

(६) यदि नाभि नीचे की ओर अधिक फैली हो तो जातक विशेष धनी होता है, परन्तु यदि ऊपर की तरफ अधिक फैली हो तो उसे धन तथा सम्मान-दोनों ही प्रचुर परिमाण में मिलते हैं। नाभि गहरी तथा मध्य में कुछ उठी हुई सी भी हो तो जातक अत्यन्त प्रभावशाली होता है।

कुक्षि

(१) कुक्षि छोटी हो तो पुरुष ऐश्वर्यशाली होता है।

(२) कुक्षि सम हो तो जातक भोगी होता है।

(३) कुक्षि नीची हो तो धन का नाश होता है।

(४) कुक्षि हाथी के समान हो तो जातक कपटी होता है।

(५) पुरुष की कुक्षि पर दक्षिणावर्त भौंरो हो तो श्रेष्ठ और वामावर्त्त हो तो क्लेशदायक समझनो चाहिए।

पार्श्व

(१) मांसल तथा मुलायम पार्श्व हो तो शुभ समझना चाहिए।

(२) विस्तृत, कोमल तथा मांसल पार्श्व वाला जातक धनी तथा सुखी होता है।

(३) टेढ़े-मेढ़े गड्ढेदार पार्श्व वाला मनुष्य दरिद्र होता है।

(४) पार्श्व के बाल (रोम) बराबर के तथा कोमल हों और वे दाईं ओर को घूमे हुए हों तो सौभाग्य का लक्षण और इसके विरुद्ध हो तो दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

पीठ

(१) सिंह के समान पीठ वाला व्यक्ति धनवान, परन्तु बंधन पाने वाला, व्याघ्र जैसी पीठ वाला, सेनानायक, कछुए जैसी पीठ वाला ऐश्वर्यशाली तथा घोड़े जैसी पीठ वाला पृथ्वीपति होता है।

(२) चिकनी, मांसल, रोम-होन तथा जिनके बीच में गड्ढा न हो, ऐसी पीठ वाले जातक धनी होते हैं।

(३) पीठ के ऊपर केशों का होना दरिद्रता कारक समझना चाहिए।

कटि (कमर)

(१) सिंह जैसी कमर वाला व्यक्ति राजा समान, बन्दर अथवा हाथी के बच्चे जैसी कमर वाला धनहीन तथा कुत्ता, सियार अथवा रीछ जैसी कमर वाला व्यक्ति निर्धन होता है।

(२) छोटी कमर वाला जातक दुर्भाग्यशाली होता है।

(३) मोटी तथा बड़ी कमर वाला व्यक्ति (मतान्तर से) धनी होता है।

(४) यदि कमर पर बहुत अधिक रोएं हों तो जातक दरिद्र होता है।

(५) जिसकी कमर ऊंट अथवा गधे की तरह कटी हुई हो, वह दरिद्री होता है।

नितम्ब

(१) अत्यन्त मोटे नितम्बों वाला व्यक्ति निर्धन होता है।

(२) मांसल तथा सामान्यतः पुष्ट नितम्बों वाला जातक सुखी रहता है।

(३) जिसके नितम्ब मेंढक के समान हों, वह धनी तथा ऐश्वर्य-शाली होता है।

शिश्न (पुरुष-जननेन्द्रिय)

(१) छोटी, पतली, काली, कोमल तथा जिस पर पतली नसें दिखाई देती हों, ऐसी जननेन्द्री उत्तम मानी गई हैं। इस प्रकार के शिश्न वाला व्यक्ति धनी, सुखी तथा भोगी होता है।

(२) स्थूल, अधिक बड़ी; जिस पर मोटी नसें दिखाई देती हों, तो उस जननेन्द्री को अशुभ एवं निर्धनता कारक समझना चाहिए।

(३) शिश्न का झुकाव बाईं ओर को हो तो जातक दरिद्र होता है, नीचे की ओर हो तो भी निर्धन होता है।

(४) शिश्न सीधा तथा कठोर हो तो जातक पुत्रवान् होता है।

(५) मोटी गांठों वाले शिश्न का स्वामी सुखी रहता है।

(६) शिश्न ढीला हो तो जातक की प्रमेह आदि रोगों से मृत्यु होती है।

(७) शिश्न की सुपारी (शिश्न का अग्रभाग) में नीचे थोथे के रंग जैसी रेखा हो और वह कपास के पुष्प जितनी ऊंची हो तो ऐसा व्यक्ति पृथ्वीपति होता है।

(८) शिश्नाग्र भाग खुरदरा अथवा कड़ा हो तो जातक दरिद्र होता है।

अण्डकोष

(१) यदि एक ही अण्डकोष हो तो जातक को जल में अथवा जलीय तत्त्वों के कारण मृत्यु होती है।

(२) एक अण्डकोष छोटा, दूसरा बड़ा हो तो जातक विषयी होता है।

(३) दोनों अण्डकोष एक समान हों तो सुखी, धनी और ऐश्वर्यशाली होता है।

(४) यदि अण्डकोष गोल, छोटे, सीधे तथा लम्बे हों, तो जातक धनी होता है।

(५) अण्डकोष ऊपर की ओर चढ़े हुए हों, तो जातक अल्पायु होता है।

(६) अण्डकोष ढीले हों तो जातक धनहीन होता है।

मूत्र की धार

(१) मूत्र-धार सशब्द हो तो जातक सुखी होता है।

(२) मूत्र-धार निःशब्द हो तो जातक दरिद्र होता है।

(३) मूत्र की धार केवल दाईं ओर को ही गिरे तो जातक सुन्दर तथा पुत्रवान होता है।

(४) मूत्र की धार चारों ओर को प्रदिक्षा की तरह गिरे तो जातक राजा होता है, परन्तु यदि बिखरी हुई गिरे तो धनहीन होता है।

हंसी

(१) आंखें बन्द करके हँसने को दुष्टता का लक्षण समझना चाहिए।

(२) कम्प-रहित हास्य शुभ माना जाता है।

रुदन

रोते समय आंसू तो गिरे, परन्तु चेहरे पर दैन्यभाव न हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। रोते समय दैन्य एवं कण्ठ में रूखापन आ जाए तो उसे अशुभ समझना चाहिए।

मुख

आंख, नाक, कान, ओठ, ठोड़ी, ललाट आदि अंगों सहित गर्दन के ऊपरी भाग को मुख अथवा चेहरा कहा जाता है। इसके सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) चन्द्रबिम्ब के समान गोलमुख वाला व्यक्ति धर्मातमा होता है।

(२) मृग के पेट के समान मुख वाला भाग्यहीन होता है।

(३) छोटे मुख वाला लोभी, चौड़े मुंह वाला घमण्डी तथा मन्द भागी एवं लम्बे, टेढ़े, नीचे तथा कुरूप मुंह वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

इसके अतिरिक्त जिस मनुष्य का मुख जिस पशु-पक्षी की आकृति से मिलता-जुलता हो, वह वैसे ही स्वभाव का होता है—इस सम्बन्ध में पहले ही लिखा जा चुका है।

(४) जिस पुरुष का मुंह देखने में स्त्री के मुंह जैसा प्रतीत हो वह सन्तानहीन होता है।

मस्तक के केश

(१) सिर के बाल चिकने, काले, नुकीले, लम्बे, कोमल तथा शाखा रहित हों तो उन्हें शुभ समझना चाहिए।

(२) यदि सिर पर बाल बहुत कम हों तो जातक दीर्घायु होता है।

(३) यदि सिर गंजा हो तो जातक धनवान्, संन्यासी या फिर दरिद्र होता है।

(४) यदि केश घने हों तो जातक बुद्धिमान् होता है।

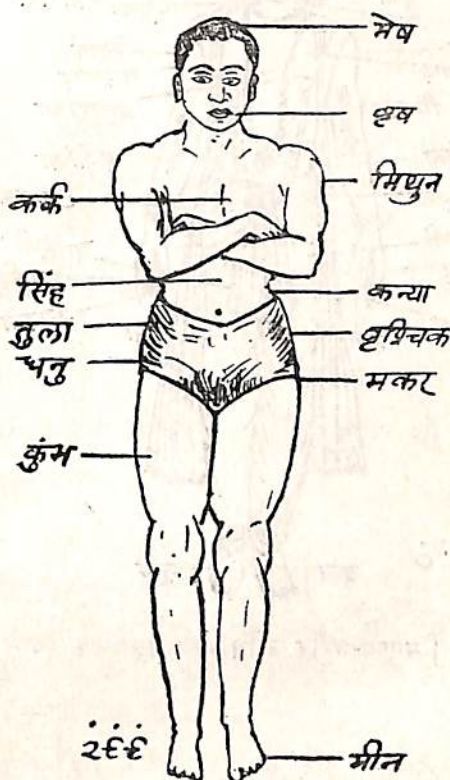
(५) यदि केशों का रंग लाल हो तो जातक स्त्रियों में आसक्त बना रहता है।

आवश्यक ज्ञातव्य

'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रस्तुत 'शरीर-लक्षण विज्ञान' खण्ड में जो भी लक्षण दिये गए हैं वे सब केवल पुरुषों के लक्षण हैं। स्त्रियों के लक्षणों के विषय में जानने के लिए 'स्त्री-सामुद्रिक' शीर्षक अगला खण्ड पढ़ना चाहिए।

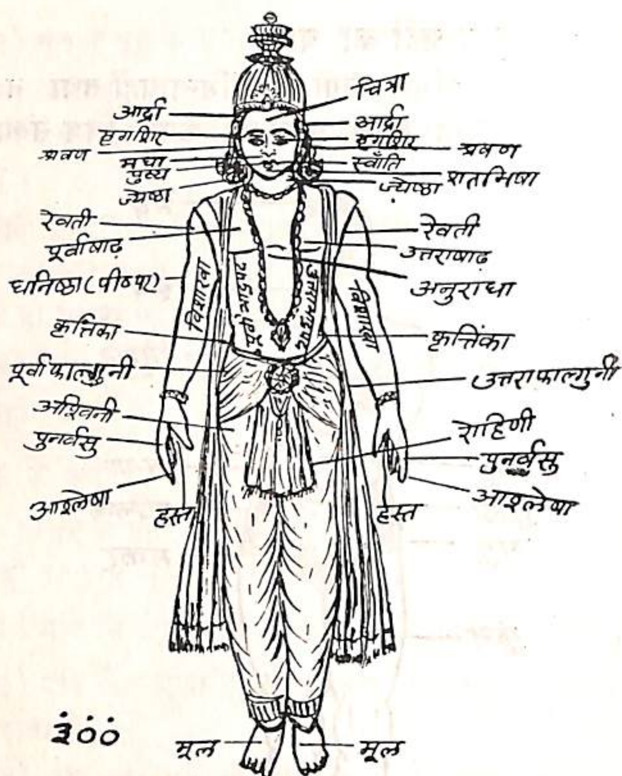
शरीर में नक्षत्रों तथा ग्रहों का वास

मनुष्य शरीर के विभिन्न भागों में विभिन्न ग्रहों तथा नक्षत्रों का वास माना गया है, उन्हें अगले पृष्ठों पर क्रमशः चित्र संख्या २९९



[मनुष्य-शरीर में विभिन्न ग्रहों के स्थान]

तथा चित्र संख्या ३०० में प्रदर्शित किया गया है। किस अंग में किस ग्रह अथवा नक्षत्र का वास रहता है—इसे चित्रों के साथ ही प्रकट कर दिया गया है।



[मनुष्य-शरीर में विभिन्न नक्षत्रों के स्थान]

तिल-विचार

तिल दो रंग के होते हैं—

(१) शहद के समान लाल रंग वाले और

(२) काले रंग वाले।

शहद के समान लाल रंग वाले तिल प्रायः शुभ तथा काले रंग के तिल (अंगानुसार) अशुभ माने जाते हैं। ये तिल-चिह्न भी मनुष्य-शरीर पर विभिन्न ग्रहों के प्रभाव के कारण ही प्रकट होते हैं।

रंग के अतिरिक्त तिल के दो मुख्य प्रकार और भी बताये गए हैं:

(१) उत्तर वाले तिल।

(२) बिना उत्तर वाले तिल।

उत्तर वाले तिल मुख के जिस स्थान पर होते हैं, वैसा ही तिल-चिह्न शरीर के किसी अन्य अंग-विशेष पर भी दैवी-नियमानुसार निश्चित रूप से पाया जाता है। अंग्रेजी में ऐसे उत्तर वाले तिल-चिह्न को 'सिस्टर-मार्क' कहा जाता है।

बिना उत्तर वाले तिल शरीर के किसी भी भाग पर हो सकते हैं और उनका कोई उत्तर वाला दूसरा तिल-चिह्न नहीं होता।

तिलों के फलाफल के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों ने अलग-अलग खोजें की हैं। यहां पर उक्त दोनों ही मतों को उद्धत किया जाता है।

प्राच्य (भारतीय) मत

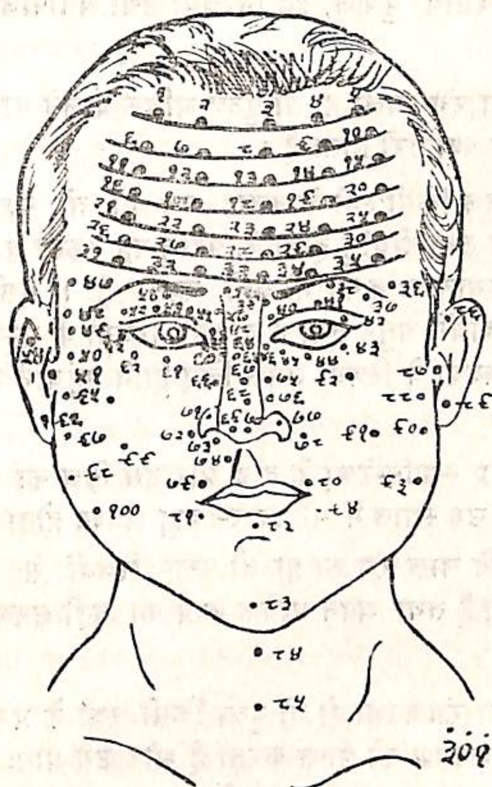
प्राच्य मत के अनुसार मनुष्य के ललाट पर (१) शनि, (२) गुरु, (३) मंगल, (४) सूर्य, (५) शुक्र, (६) बुध तथा (७) चन्द्र—इन सात ग्रहों की सात रेखाएं होती हैं। इनमें से प्रत्येक रेखा पर पांच-पांच तिल होते हैं, जिनका शुभाशुभ फल उनकी स्थिति के अनुसार अलग-अलग होता है। जिन लोगों के ललाट में उक्त सातों रेखाएं स्पष्ट न हों उनके ललाट पर स्थित तिलों का विचार करते समय चित्र संख्या ३० के अनुसार सम्पूर्ण ललाट पर सात रेखाओं की कल्पना करके, चित्र में प्रदर्शित स्थानों के तिलों से जातक के ललाट पर तिल वाले स्थान को निश्चित कर उसके प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारो प्राप्त करनी चाहिए।

ललाट की उक्त सात रेखाओं के अतिरिक्त मनुष्य के चेहरे पर दाएं और बाएं कपोल, नेत्र, नासिका, कान, मुख तथा चिक्षुक आदि स्थानों पर दिखाई देने वाले कुल तिलों की संख्या सौ बताई गई है।

यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर उक्त सौ तिलों की संख्या अवश्य ही विद्यमान हो। बहुत-से लोगों के चेहरों पर तो एक भी तिल नहीं पाया जाता और कुछ लोगों के चेहरों पर एक-दो, चार या पांच आदि को न्यून संख्या में ही तिल दिखाई देते हैं। चेहरे के तिलों की संख्या सौ कहने का तात्पर्य केवल यही है कि यदि किसी व्यक्ति के चेहरे पर सर्वत्र तिल पाये जाएं तो उनकी संख्या सौ से अधिक नहीं होगी तथा वे उन्हीं स्थानों पर पाये जायेंगे, जिन्हें चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

उत्तर-चिह्न वाले तिल

अब हम प्रत्येक ग्रह की रेखा तथा अन्य स्थानों पर स्थित तिलों के प्रभाव तथा उनके उत्तर वाले तिलों का वर्णन करते हैं।



[मनुष्य के चेहरे पर पाये जाने वाले १०० तिल और उनका स्थान]

शनि-रेखा स्थित तिलों का फल

तिल संख्या १—ललाट-स्थित शनि-रेखा के दाईं ओर रेखा के ऊपर अथवा उसके नीचे तिल का चिह्न हो तो उसका उत्तर-चिह्न (अर्थात् दूसरा जवाबी तिल) वक्षःस्थल के दाईं ओर होता है।

यदि यह तिल लाल रंग का हो तो वह पुरुष अत्यन्त परिश्रमी,

तीक्ष्ण-बुद्धि, व्यवसाय कुशल, दृढ़ निश्चयी तथा धनोपार्जन में सक्षम होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो पुरुष अधिक बोलने वाला, अत्यन्त चतुर और कुशल व्यापारी होता है।

यदि ऐसा तिल किसी स्त्री के ललाट पर हो तो वह बुद्धिमती, गुणवती, धनवती तथा दीर्घायु होती है, परन्तु वह किसी वंश परम्परागत व्याधि से सामान्यतः दुःखी भी बनी रहती है। ऐसी स्त्री को विवाहोपरान्त स्वार्थी, चतुर तथा कलंकिनी स्त्रियों के सम्पर्क से बचे रहना चाहिए अन्यथा वे स्त्रियां उसके लिए हानि पहुंचाने वाली सिद्ध हो सकती हैं।

तिल संख्या २—शनि-रेखा के दाईं ओर इस तिल का चिह्न होने पर दाईं ओर के उरु स्थान में भी उत्तर-चिह्न अवश्य होता है।

यह तिल यदि लाल रंग का हो तो पुरुष स्त्रियों से विशेष प्रेम रखने वाला होता है तथा अपने प्रत्येक कार्य को बड़ी सरलता से सिद्ध कर लेता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो पुरुष किसी स्त्री के प्रेम में पड़कर मान-हानि तथा अपयश को प्राप्त करता है और उसे प्रायः सभी कामों में असफलता का सामना करना पड़ता है।

यदि ऐसा तिल किसी स्त्री के ललाट पर हो तो वह सदैव ,दुःखी बनी पहती है और उसकी इच्छाएं पूर्ण नहीं हो पातो। यदि तिल का रंग काला हो तो उसे और भी अधिक कष्ट भोगना पड़ता है।

तिल संख्या ३—शनि-रेखा के मध्य भाग में स्थित इस तिल का उत्तर-चिह्न पेट के मध्य भाग पर होता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काले रंग का, स्त्री-पुरुष-

दोनों को ही एक जैसा फल प्रदान करता है। इस तिल के प्रभाव से जातक भीरु (डरपोक) प्रकृति का होता है।

तिल संख्या ४ और ५—शनि-रेखा के बाएं भाग में स्थित इन तिलों का उत्तर-चिह्न पीठ पर बाईं ओर के भाग पर होता है।

ये तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष दोनों—पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक यात्रा-प्रेमी होता है और वह लम्बी-लम्बी यात्राएं करता है।

शुक्र-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ६ और ७—गुरु-रेखा के दाएं भाग में स्थित इन तिलों का उत्तर-चिह्न शरीर के दाएं पार्श्व तथा उरु-सन्धि पर पाया जाता है।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष दोनों पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। ये दोनों तिल जातक के लिए उन्नति-कारक तथा शुभ फलदायक माने जाते हैं।

तिल संख्या ८—गुरु-रेखा के मध्य भाग पर स्थित इस तिल का उत्तर चिह्न वक्षस्थल के नीचे पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री पुरुष–दोनों पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करता है। इस तिल के फलस्वरूप जातक बुद्धिमान तथा चतुर होता है।

तिल संख्या ९ और १०—ये दोनों तिल गुरु-रेखा के बाएं भाग में होते हैं और इनका उत्तर-चिह्न वक्षस्थल के नीचे अथवा पेट के बाईं ओर पाया जाता है।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों

पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक श्रेष्ठ भोजन तथा सुखी जीवन का उपभोग करता है।

मंगल-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ११ और १२—मंगल-रेखा के दाएं भाग में स्थित इन तिलों का उत्तर-चिह्न दाईं भुजा पर पाया जाता है।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। ये दोनों ही तिल जातक को श्रेष्ठ, यशस्वी तथा शूरवीर बनाने वाले माने गए हैं।

तिल संख्या १३—मंगल-रेखा के मध्य भाग में स्थित इस तिल का उत्तर-चिह्न पेट के वाम भाग पर होता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष–दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है। इस तिल के फलस्वरूप जातक भीरु स्वभाव का तथा निस्सन्तान होता है और उसे दत्तक पुत्र लेना पड़ता है।

तिल संख्या १४ और १५—मंगल-रेखा के बाएं भाग में स्थित इन तिलों का उत्तर-चिह्न पीठ के बाएं भाग में नीचे की ओर तथा बाईं भुजा के ऊपर पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं। इन तिलों के फल स्वरूपजातक दुःखी जीवन व्यतीत करता है, उसे समय पर भोजन भी प्राप्त नहीं होता तथा वह किसी-न-किसी लड़ाई-झगड़े का शिकार बना रहता है।

सूर्य-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या १६ और १७—सूर्य-रेखा के दाएं भाग में स्थित इन

तिलों का उत्तर-चिह्न पीठ के दाएं भाग तथा कमर के दाएं भाग में पाया जाता है।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले 'स्त्री-पुरुष'-दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

इन तिलों के फलस्वरूप जातक का जीवन परेशानी में व्यतीत होता है और उसकी जमीन-जायदाद अथवा सम्पत्ति की हानि होती है। इन तिलों का प्रभाव अशुभ फलदायक समझना चाहिए।

तिल संख्या १८—सूर्य-रेखा के मध्य भाग में स्थित इस तिल का उत्तर-चिह्न पेट के मध्य भाग में पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष-दोनों पर अपना समान प्रभाव डालता है।

इस तिल के फलस्वरूप जातक धन-धान्य तथा ऐश्वर्य से सम्पन्न होकर सुखी एवं शान्त जीवन व्यतीत करता है।

तिल संख्या १९ और २०—सूर्य-रेखा के बाएं भाग में स्थित इन तिलों के उत्तर-चिह्न वक्षःस्थल के बाईं ओर तथा बाएं कन्धे के नीचे पाये जाते हैं।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष दोनों को समान रूप से प्रभावित करते है।

इन तिलों के प्रभावस्वरूप दम्पति (पति-पत्नी) के बीच प्रेम की मात्रा कम होती है। उनमें परस्पर झगड़ा होता रहता है तथा किसी एक को दूसरे के द्वारा विशेष हानि उठानी पड़ती है।

शुक्र-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या २१ और २२—शुक्र-रेखा के दाएं भाग में स्थित इन

तिलों के उत्तर-चिह्न पेट के दाईं ओर तथा वक्ष.स्थल के मध्य भाग में पाये जाते हैं।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष–दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं। इनके फलस्वरूप पति-पत्नी में परस्पर विशेष स्नेह पाया जाता है और वे प्रत्येक कार्य को एक-दूसरे की सम्मति लेकर करते हैं।

तिल संख्या २३—शुक्र-रेखा के मध्य भाग पर स्थित इस तिल का उत्तर-चिह्न वक्षःस्थल पर पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष–दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है। इसके फलस्वरूप पति-पत्नी में पारस्परिक प्रेम अधिक होता है, वे सुखी जीवन व्यतीत करते हैं तथा उनमें साहस की मात्रा भी अधिक पाई जाती है।

तिल संख्या २४ और २५—शुक्र-रेखा के बाएं भाग में स्थित इन तिल-चिह्नों के उत्तर-चिह्न बाएं कंधे तथा पेट के बाईं ओर पाये जाते हैं।

यदि इन तिलों का रंग काला हो तो पुरुष कामी होता है तथा स्त्री व्यभिचारिणी होती है। यदि तिलों का रंग लाल हो तो वे स्त्री के लिए शुभ फलदायक हो जाते हैं और उसे अपने पति का सुख अच्छी मात्रा में प्राप्त होता है, परन्तु पुरुष के लिए उसके प्रभाव में कोई अन्तर नहीं आता।

बुध-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या २६ और २७—बुध-रेखा के दाएं भाग में स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह दाईं ओर के वक्षःस्थल पर पाये जाते हैं।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष–दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

इनके फलस्वरूप जातक के सभी कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाया करते हैं और उन्हें कभी किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होता।

तिल संख्या २८—बुध-रेखा के मध्य भाग में स्थित इस तिल का उत्तर-चिन्ह वक्षःस्थल के मध्य भाग में पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है।

इसके फलस्वरूप जातक की बुद्धि तीव्र होती है और उसे प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

तिल संख्या २९ और ३०—बुध-रेखा के बाएं भाग में स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह पसली के बाएं भाग में पाये जाते हैं।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष–दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

इन तिलों के प्रभाव स्वरूप जातक स्वभाव से कायर होता है और उसे कोई शुभ फल प्राप्त नहीं होता।

चन्द्र-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ३१ और ३२—चन्द्र-रेखा के दाएं भाग में रेखा के ऊपर अथवा नीचे स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह कमर के दाएं भाग में पाये जाते हैं।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष–दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

इनके फलस्वरूप जातक यात्रा-प्रेमी होता है और यात्राओं के द्वारा उसे लाभ भी प्राप्त होता है। इनका प्रभाव उत्तम कहा गया है।

तिल संख्या ३३—चन्द्र रेखा के मध्य भाग पर स्थित इस तिल का उत्तर-चिन्ह गुदा के ऊपर होता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है।

इस तिल के प्रभाव से जातक को गुदा सम्बन्धी गुदा रोग होते हैं तथा सदैव ही संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे तिल वाले पुरुष जातक अल्पायु होते हैं तथा स्त्रियां आत्महत्या करने को बाध्य हो जाती हैं।

तिल संख्या ३४ और ३५—चन्द्र-रेखा के बाएं भाग में स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह पेट के बाएं भाग में पाये जाते हैं।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

इनके फलस्वरूप जातक दूसरे लोगों को हानि पहुंचाकर स्वयं प्रसन्न होने वाले स्वभाव का होता है।

टिप्पणी—ललाट की रेखाओं पर स्थित तिल-चिन्हों के प्रभाव का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। अब हम मुंह के अन्य स्थानों पर स्थित तिलों के प्रभाव के विषय में लिखते हैं। इन सभी तिलों को चित्र संख्या   में प्रदर्शित किया गया है, अतः चित्र को देखकर इन तिलों के ठीक-ठीक स्थान के विषय में ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

बाईं कनपटी पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ३६—बाईं कनपटी (बाएं कान के ऊपर का भाग) पर स्थित तिल का उत्तर-चिन्ह बाईं उरु अथवा कमर पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का हो, स्त्री-पुरुष के जीवन पर बुरा

प्रभाव डालने वाला होता है। ऐसे तिल वाले जातकों को अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बहुत ही कष्ट में अपने दिन बिताने पड़ते हैं।

बाईं भौंह पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ३७, ३८ और ३९—बाईं भौंह पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह क्रमश: पेट के वामभाग, कमर तथा जंघा पर पाये जाते हैं।

इन तिलों का रंग काला हो तो पुरुष अहंकारी स्वभाव का होता है तथा स्त्री भी अभिमानिनी एवं रोगिणी होती है।

यदि तिलों का रंग लाल हो तो पुरुष अच्छे कुल में जन्म लेकर शुभ कर्म करने वाला, एकान्त-प्रिय तथा अल्प सम्पत्ति वाला होता है तथा स्त्री सुन्दर, परन्तु तुच्छ विचारों वाली होती है।

बाईं बरौनी पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ४०, ४१ और ४२—बाईं आंख की बरौनी पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह क्रमश: बाईं उरु, बाएं पुट्ठे तथा बाएं नितम्ब पर पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष पर अपना एक जैसा प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक किसी एक स्थान पर स्थित नहीं रह पाता और उसे प्रत्येक क्षेत्र में प्राय: असफलता और कष्टों का सामना करना पड़ता है।

बाईं नेत्र-पंक्ति के नीचे स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ४३, ४४, ४५, और ४६—बाईं नेत्र-पंक्ति के नीचे स्थित इन तिलों के उत्तर चिन्ह क्रमश: गुदा के बाएं भाग में, ऊपर-नीचे, मध्य में तथा दाएं किनारे की ओर पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष के लिए समान रूप से आयु-घातक सिद्ध होते हैं। विशेषकर इनके प्रभाव से स्त्री रोगी बनी रहती है और उसे आत्मघात करने की इच्छा पैदा होती है। यदि उत्तर-चिन्ह वाले गुदा पर स्थित तिल लाल रंग के हों तो उनका प्रभाव शुभ फलदायक हो जाता है।

दाईं कनपटी पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ४७—दाईं कनपटी (दाएं कान के ऊपर का भाग) पर स्थित तिल का उत्तर-चिन्ह दाईं बाहु पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का हो, स्त्री-पुरुष के लिए समान रूप से फलदायक होता है। इसके प्रभाव से स्त्री-पुरुष में परस्पर प्रेम की वृद्धि तथा सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है।

दाएं कान और आंख की बरौनी के मध्य स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ४८, ४९, ५० और ५१— दाएं कान और आंख की बरौनी के मध्य स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह पेट के तथा पार्श्व के दाएं भागों में पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष पर समान रूप से प्रभाव डालने वाले होते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करने वाला, कम साहसी तथा असफलताओं से घबरा जाने वाले स्वभाव का होता है।

दाईं भौंह तथा बरौनी के मध्य स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ५२, ५३, ५४, ५५ और ५६—दाईं भौंह तथा बरौनी के मध्य-स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह शरीर के दाएं भाग में कमर तथा कमर के निचले हिस्से में पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक को अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के अच्छे-बुरे परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। उसे कष्ट भी उठाने पड़ते हैं तथा उसकी नेत्र-ज्योति क्षीण होती है।

नासिका के ऊपरी दाएं भाग में स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ५७, ५८ और ५९—नासिका के ऊपरी दाएं भाग में स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह नाभि के मध्य भाग में अथवा वक्षःस्थल के नीचे पाये जाते हैं।

इन तिलों का रंग यदि लाल हो तो वे शुभ फलदायक होते हैं। ऐसे पुरुष सम्पत्तिशाली होते हैं तथा स्त्रियां अपने किसी सम्बन्धी से धन प्राप्त करके सुखी जीवन व्यतीत करने वाली होती हैं। यदि तिलों का रंग काला हो तो जातक की आयु के ३५ से ४५वें वर्ष के बीच में कोई दुर्घटना घटित होती है अथवा उसे किसी कष्टप्रद बीमारी का शिकार होना पड़ता है।

दाईं बरौनी पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ६०, ६१, ६२, और ६३—दाईं आंख की बरौनी के नीचे स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह के दाईं ओर के स्तन पर पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर अपना एक-सा प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

इन तिलों के फलस्वरूप जातक धनवान् तथा तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है।

नासिका के ऊपरी मध्य भाग पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९ और ७०—नासिका के

ऊपरी मध्य भाग पर स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह गुदा के दाएं भाग तथा कन्धे के ऊपरी भाग में पाये जाते हैं।

इन तिलों का रंग यदि काला हो तो पुरुष दुष्ट प्रकृति का होता है और उसे निरन्तर यात्रा करनी पड़ती है तथा स्त्री ३० वर्ष की आयु में जलोदर नामक रोग अथवा जल-सम्बन्धी किसी अन्य भय से पीड़ित होती है। यदि इन तिलों का रंग लाल हो तो वे स्त्री-पुरुषों के लिए शुभ फलदायक सिद्ध होते हैं।

नासिका के दाएं भाग पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ७१, ७२, ७३ और ७४—नासिका के दाएं नथुने पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह पुरुष की गुदा और शिश्न के मध्य भाग तथा स्त्री के गुप्तांग पर दाईं ओर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इनके फलस्वरूप स्त्री-पुरुषों में परस्पर आसक्ति, प्रेम एवं वासना की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु जीवन के अन्य क्षेत्रों में असफलता प्राप्त होती है।

नासिका के बाएं भाग पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ७५, ७६, ७७ और ७८—नासिका के बाएं नथुने पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह पुरुष की गुदा और शिश्न के मध्य भाग तथा स्त्री के गुप्तांग पर बाईं ओर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इनके फलस्वरूप जातक युवावस्था में अनेक प्रकार के दुःख, विपत्ति, संकट एवं चिन्ताओं का शिकार बनता है, परन्तु प्रौढ़ावस्था आरम्भ होने पर अपने पराक्रम द्वारा सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके सुख-सम्पत्ति को प्राप्त कर लेता है।

ऐसे पुरुषों को स्त्री से प्रेम नहीं होता।

कण्ठ (गर्दन) पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ८४ और ८५—कण्ठ गर्दन पर स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह उरु-संधि पर पाए जाते हैं।

तिल का रंग काला हो तो जातक के पानी में डूबने अथवा किसी ऊंचे स्थान से गिरने का भय रहता है। तिल का रंग लाल हो तो जातक को सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इन तिलों के प्रभाव-स्वरूप जातक बुद्धिमान् तथा धार्मिक विचारों वाला अवश्य होता है।

बाएं कान के ऊपरी भाग में स्थित तिल का प्रभाव

तिल संख्या ८६—बाएं कान के ऊपरी भाग में स्थित तिल का उत्तर-चिन्ह पेट के बाएं हिस्से पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का क्यों न हो, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालता है। इसके फलस्वरूप जातक अल्पायु होता है। ऐसे तिल वाली स्त्री के प्रथम गर्भ से कन्या का जन्म होता है।

बाएं कान के मध्य तथा निम्न भाग में स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ८७, ८८, ८९ और ९०—बाएं कान के मध्य तथा निम्न भाग में स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह बाएं पार्श्व में पाए जाते हैं।

ऊपरी ओठ पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ७९ और ८०—ऊपरी ओठ पर स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह दाएं घुटने पर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इनके फलस्वरूप जातक अत्यधिक विलासी तथा शौकीन तबीयत का होता है तथा अपनी सम्पत्ति को विलासिता में ही नष्ट कर देता है।

निचले ओठ पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ८१ और ८२—निचले ओठ (अधर) पर स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह जांघ पर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इनके फलस्वरूप जातक निर्धन तथा लोभी होते हैं और वे दरिद्रावस्था में ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

चिबुक (ठोड़ी) स्थित तिल का प्रभाव

तिल संख्या ८३—चिबुक (ठोड़ी या ढुड्डी) के मध्य भाग में तिल हो तो उसका उत्तर-चिन्ह जांघ पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का क्यों न हो, स्त्री-पुरुष के ऊपर समान रूप से प्रभाव डालता है। इसके फलस्वरूप जातक अशुभ फल प्राप्त करता है।

ये तिल लाल रंग के हों तो जातक की आयु में वृद्धि करते और यदि काले रंग के हों तो उसकी आयु में परिवर्तन के सूचक होते हैं। इन तिलों के प्रभाव स्वरूप स्त्री के प्रथम गर्भ से पुत्र का जन्म होत है।

बाएं गाल (कपोल) पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ९१, ९२ और ९३—बाएं गाल (कपोल) पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह बाईं उरु अथवा कूल्हे पर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष के जीवन को

समान रूप से प्रभावित करते हैं। इनके फलस्वरूप जातक के जीवन में धन को कमी बनी रहती है, फिर वह शान्तिपूर्वक अपनी गृहस्थी को चलाता रहता है।

दाएं कान पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ९४, ९५, ९६ और ९७—दाएं कान के ऊपरी, मध्य तथा निम्न भाग में स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह पेट के दाएं भाग पर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष के जीवन पर एक जैसा प्रभाव डालते हैं।

इन तिलों के फलस्वरूप जातक का स्वभाव सरल होता है। विवाह के पश्चात् वह सुखी जोवन व्यतीत करता है तथा युवावस्था से ही उसकी भाग्योन्नति आरम्भ हो जाती है। ऐसे जातक धार्मिक विचारों वाले, शान्त, सुखी तथा सन्तोषी होते हैं।

दाएं गाल (कपोल) पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ९८, ९९ और १००—दाएं गाल (कपोल) पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह दाएं कूल्हे पर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, इनके प्रभाव से पुरुष बुद्धिमान, प्रसन्नचित तथा बहुत-से मित्रों वाला होता है, परन्तु स्त्री पति के रहते हुए भी पति का सुख अल्प मात्रा में प्राप्त करने वाली तथा रोग-ग्रस्त होती है। उसके पति की मृत्यु उससे भी पहले ही हो जाती है।

आवश्यक टिप्पणी

ऊपर जिन तिलों का फलादेश कहा गया है, उनके सम्बन्ध में यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि ये सभी फलादेश पुरुष के अंगों पर पाए

जाने वाले तिलों के प्रभाव के हैं। पुरुष के दाएं अंग पर पाए जाने वाले तिल का जो प्रभाव होता है, वही प्रभाव स्त्री के बाएं अंग पर पाए जाने वाले तिल का होता है। पुरुष के दाएं अंग पर पाए जाने वाले तिल यदि शुभ प्रभाव देने वाले हों तो स्त्री के दाएं अंग पर पाए जाने वाले वही तिल अशुभ प्रभाव देने वाले होंगे। इसी प्रकार पुरुष के बाएं अंग पर पाए जाने वाले जो तिल अशुभ-प्रभाव देने वाले होते हैं, स्त्री के बाएं अंग पर पाए जाने वाले वे ही तिल शुभ-प्रभाव देने वाले सिद्ध होते हैं।

तिलों के सम्बन्ध में सामान्य नियम ये हैं—

(१) पुरुष के दाएं अंग में पाए जाने वाले काले तिल प्रायः शुभ-फल देने वाले होते हैं।

(२) पुरुष के बाएं अंग में पाए जाने वाले काले तिल प्रायः अशुभ-फल देने वाले होते हैं।

(३) स्त्री के दाएं अंग में पाए जाने वाले काले तिल प्रायः अशुभ-फल देने वाले होते हैं।

(४) स्त्री के बाएं अंग में पाए जाने वाले काले तिल प्रायः शुभ-फल देने वाले होते हैं।

(५) पुरुष के दाएं अंग तथा स्त्री के बाएं अंग में पाए जाने वाले लाल रंग के तिल शुभफल देने वाले होते हैं।

(६) पुरुष के बाएं अंग तथा स्त्री के दाएं अंग में पाए जाने वाले लाल रंग के तिलों का अशुभ-फल भी न्यून मात्रा में होता है।

(७) तिलों के उत्तर-चिन्हों के विषय में यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि उत्तर-चिन्ह के रूप में दूसरे स्थान पर तिल ही हो—यह आवश्यक नहीं है। उत्तर वाले तिल के स्थान पर मस्सा अथवा लहसन का चिन्ह भी हो सकता है।

बिना उत्तर-चिन्ह वाले तिल

उत्तर-चिन्ह वाले तिलों का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। अब हम भारतीय मतानुसार शरीर के विभिन्न-अंगों पर पाए जाने वाले उन तिलों के प्रभाव के विषय में लिखते हैं, जिनके उत्तर-चिन्ह शरीर के किसी अन्य स्थान पर नहीं पाए जाते।

सिर तथा ललाट पर पाए जाने वाले तिलों का प्रभाव

(१) यदि पुरुष के मस्तक के मध्य भाग में तिल हो तो वह सुखी धनवान तथा प्रतिष्ठित होता है।

(२) यदि पुरुष के सिर के दाएं भाग में तिल हो तो वह हंसमुख तथा उच्च-पदाधिकारी होता है और उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहती है।

(३) यदि पुरुष के सिर के बाएं भाग में तिल हो तो उसे जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। वह झगड़ालू प्रकृति का, गुणहीन तथा संकुचित मनोवृत्ति का होता है। फलस्वरूप सब लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

(४) यदि पुरुष-ललाट के दाईं ओर तिल हो तो उसे धन-सम्पत्ति प्राप्त होती है, परन्तु यदि बाईं ओर तिल हो तो उसका शुभफल न्यून हो जाता है फिर भी वह एकदम निष्फल नहीं होता।

भौंह तथा आंखों के स्थान पर स्थित तिलों का प्रभाव

(१) यदि पुरुष की दोनों भौंहों के किसी स्थान पर तिल हो तो वह यात्रा-प्रेमी होता है और यात्रा द्वारा ही लाभ उठाता है।

(२) यदि पुरुष की दोनों भौंहों के किसी स्थान पर लाल रंग का तिल हो तो वह व्यक्ति उच्च कुल में जन्म लेने वाला, साहित्य-प्रेमी,

राजनीतिज्ञ, धार्मिक नेता, दीर्घायु तथा शुभाशुभ घटनाओं का अनुभव करने वाला होता है। यही तिल काले रंग का हो तो जातक में उपर्युक्त सभी गुण तो पाए जाते हैं, परन्तु वह फिजूल खर्ची ,सम्पत्ति को नष्ट करने वाला तथा निरर्थक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(३) यदि पुरुष की आंखों के ऊपर अथवा नीचे के हिस्से में तिल हो तो वह धनवान, बुद्धिमान, तन्त्र शास्त्र का अभ्यासी, एकान्त सेवी तथा स्त्री से घनिष्ट-प्रेम करने वाला होता है; परन्तु अपनी आयु के पूर्व भाग में किसी स्त्री द्वारा धोखा खाने के कारण वह उससे घृणा भी करता है।

(४) यदि किसी पुरुष की आंख के बीच में तिल हो तो वह नेता अथवा अधिकारी होता है।

मुंह के किसी स्थान पर स्थित तिलों का प्रभाव

(१) यदि किसी पुरुष के मुंह पर तिल हो तो उसे बहुत धन मिलता है।

(२) यदि किसी पुरुष के दाएं गाल पर लाल रंग का तिल हो तो वह धनवान होता है। यदि काले रंग का तिल हो तो उसे सुन्दर पत्नी मिलती है। यदि बाएं गाल पर लाल रंग का तिल हो तो धनवान होने के साथ ही वह अपनी असावधानीवश असाध्य-बीमारी का शिकार बनता है। यदि बाएं गाल पर काले रंग का तिल हो तो अपनी असाध्य-बीमारी के कष्ट से छुटकारा पाने के लिए आत्मघात तक कर लेता है।

(३) यदि किसी पुरुष के ऊपरी ओठ पर तिल हो तो वह धनवान होता है और उसकी बात ऊंची बनी रहती है।

(४) यदि किसी पुरुष के निचले ओठ पर तिल हो तो वह लोभी होता है।

(५) यदि किसी पुरुष के कान पर तिल हो तो वह रत्नाभूषणों को धारण करता है।

(६) यदि किसी पुरुष की गर्दन (कण्ठ) पर तिल हो तो वह दीर्घायु तथा ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

वक्षःस्थल पर स्थित तिलों का प्रभाव

(१) यदि किसी पुरुष की छाती पर दाईं ओर को तिल हो तो उसे अच्छी पत्नी प्राप्त होती है।

(२) यदि किसी पुरुष की छाती पर बाईं ओर को तिल हो तो उसे लाभ कम होता है, परन्तु होता अवश्य है।

हाथों पर स्थित तिल-चिन्हों का प्रभाव

(१) यदि किसी पुरुष के दाएं हाथ पर तिल हो तो वह अपने बाहुबल से द्रव्योपार्जन करता और उसका सुख भोगता है।

(२) यदि किसी पुरुष के बाएं हाथ पर तिल हो तो धनोपार्जन के सम्बन्ध में उसका प्रभाव कम होता है, परन्तु उसके प्रयत्न एकदम व्यर्थ नहीं जाते।

(३) यदि किसी पुरुष के दाएं कन्धे पर तिल हो तो वह अधिक विद्वान अथवा श्रेष्ठ कलाकार (दस्तकार) होता है।

(४) यदि किसी पुरुष के बाएं कन्ध पर तिल हो तो वह कम विद्वान अथवा निम्न श्रेणी का कलाकार (दस्तकार) होता है।

(५) यदि किसी पुरुष के हाथ के पंजे पर तिल हो तो वह बहुत दिलेर तबीयत का तथा धनवान् होता है।

(६) यदि किसी पुरुष के दाएं हाथ की हथेली पर तिल हो तो वह कोषाध्यक्ष होता है।

(७) यदि किसी पुरुष के बाएं हाथ की हथेली पर तिल हो तो वह अपव्ययी होता है।

(८) यदि किसी पुरुष के दाएं हाथ के पिछले भाग (कर-पृष्ठ) पर तिल हो तो वह मितव्ययी होता है और बाएं हाथ के पृष्ठ भाग पर तिल हो तो धनवान होता है।

(९) यदि किसी पुरुष के हाथ की रेखाओं पर काले रंग का तिल हो तो वह उन रेखाओं के बुरे प्रभाव को और अधिक बढ़ा देता है। यदि लाल रंग का तिल हो तो वह रेखाओं के अच्छे प्रभाव में और अधिक वृद्धि करता है तथा रेखाओं के बुरे प्रभाव में कमी लाता है अथवा उनके कुप्रभाव को नष्ट कर देता है।

हाथ की रेखाओं पर स्थित तिलों के शुभाशुभ प्रभाव का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'हस्त-चिन्ह-विचार' नामक खण्ड में विस्तार पूर्वक किया जा चुका है, अतः इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए उक्त खण्ड का अध्ययन करना चाहिए।

(१०) यदि किसी पुरुष की दाईं भुजा अथवा कुहनी पर लाल रंग का तिल हो तो वह सैनिक अथवा पुलिस विभाग में विशेष उन्नति तथा सफलता प्राप्त करता है। ऐसे लोग घुड़दौड़, लाटरी, सट्टा, धातु अथवा पशुओं के व्यवसाय में भी पर्याप्त लाभ उठाते हैं।

(११) यदि किसी पुरुष की बाईं भुजा पर काले रंग का तिल हो तो उसे धन-सम्पत्ति, जायदाद आदि की हानि उठानी पड़नी है। घुड़-सवारी करने से भी उसे गिरने और चोट पहुंचने की आशंका रहती है तथा निरर्थक-यात्राएं करने से भी घाटा पड़ता है।

पांवों के किसी भाग में स्थित तिलों का प्रभाव

(१) यदि किसी पुरुष की दाईं जांघ पर तिल हो तो उसे सवारी का सुख मिलता है और सेना में भी सफलता प्राप्त करता है।

(२) यदि किसा पुरुष के दाएं पांव पर तिल हो तो वह अनेक स्थानों एवं देशों की यात्रा करता है तथा लाभ उठाता है। ऐसे लोग विशेष बुद्धिमान होते हैं।

(३) यदि किसो पुरुष के बाएं पांव पर तिल हो तो वह अधिक खर्चीला होता है।

स्त्रियों के विभिन अंगों पर तिलों का प्रभाव

पुरुष के दाएं अंग पर स्थित तिलों का जो प्रभाव होता है, वही फल स्त्रियों को भी प्राप्त होता है—यदि तिल उनके बाएं अंग में हो।

स्त्रियों के विभिन्न अंगों पर पाए जाने वाले तिलों का विशेष प्रभाव भारतीय मत से नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए। यहां पर जिन स्थानों पर दाएं-बाएं अंग का उल्लेख नहीं किया गया है, वहां पर स्त्रियों का बायां अंग ही समझना चाहिए। दाएं अंग पर होने से वह तिल अशुभ अथवा न्यून प्रभावकारी सिद्ध होगा।

(१) यदि किसी स्त्री के सिर के मध्य भाग में तिल हो तो वह पति का पूर्ण सुख प्राप्त करने वाली, शुद्ध हृदय तथा विपुल ऐश्वर्य-सम्पन्न रानी के समान होती है।

(२) यदि किसी स्त्री के सिर के दाईं ओर तिल हो तो वह समाज में प्रतिष्ठित तथा सुयोग्य होते हुए भी उदासीन-स्वभाव की बनी रहती है। ऐसी स्त्रियां विवाहोपरान्त अधिक समय तक विदेश अथवा परदेश में रहती हैं और उन्हें सन्तान का अल्प-सुख प्राप्त होता है।

(३) यदि किसी स्त्री के ललाट पर तिल हो तो उसे धनवान पति मिलता है।

(४) यदि किसी स्त्रो के सिर के बाईं ओर तिल हो तो उसे दुर्भाग्य का सूचक समझना चाहिए।

(५) यदि किसी स्त्री की दोनों भौंहों में से किसी स्थान पर काले रंग का तिल हो तो उसका स्वभाव ओछा होता है। उसे सिर दर्द का रोग रहता है तथा उसका विवाह भी किसी बेमेल पुरुष के साथ होता है।

(६) यदि किसी स्त्री की आंखों के ऊपर अथवा नीचे के हिस्से में तिल हो तो वह अनुचित प्रकारों से धन का संचय करने वाली तथा सन्तान-विहीना होती है। उसके शरीर में ज्वर जैसी उष्णता हर समय बनी रहती है तथा उचित प्रकार से स्वास्थ्य की देखभाल न कर पाने के कारण अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

(७) यदि किसी स्त्री की आंख में तिल हो तो उसके ऊपर पति की शुभ-दृष्टि बनी रहती है।

(८) यदि किसी स्त्री के बाएं गाल पर तिल हो तो वह ऐश्वर्य-शाली जीवन व्यतीत करती है।

(९) यदि किसी स्त्री के दाएं गाल पर काला तिल हो तो वह असाध्य रोगों का शिकार बनती है। उसका चाल-चलन अच्छा नहीं होता तथा उसकी प्रकृति भी झगड़ालू होती है।

(१०) यदि किसी स्त्री के कान पर तिल हो तो वह बहुत-से आभूषणों को धारण करती है।

(११) यदि किसी स्त्री के कण्ठ (गले) पर तिल हो तो वह अपने घर में हुकूमत करने वाली होती है।

(१२) यदि किसी स्त्री के बाएं गाल पर अथवा ओठ पर लाल रंग का तिल हो तो वह धन-धान्य, पुत्र, सौभाग्य आदि से सम्पन्न होकर सुखी जीवन व्यतीत करती है।

(१३) यदि किसी स्त्री की छाती पर तिल हो तो वह पुत्रवती होती है।

(१४) यदि किसी स्त्री के हाथ पर तिल हो तो वह अपने पति की प्रिय होती है।

(१५) यदि किसी स्त्री की बाईं भुजा पर तिल हो तो वह अत्यन्त सुन्दरी, बुद्धिमती, गुणवती तथा काव्य, साहित्य, संगीत व अभिनय आदि कलाओं में निपुण होती है और इन कलाओं के द्वारा धन तथा यश अर्जित करती है।

(१६) यदि किसी स्त्री की जांघ पर तिल हो तो उसके घर में नौकर-चाकर बने रहते हैं।

(१७) यदि किसी स्त्री के पांव में तिल हो तो वह यात्राएं बहुत करती है।

(१८) यदि किसी स्त्री के गुप्तांग पर तिल हो तो वह अत्यधिक कामुक एवं विलासिनी होती है।

टिप्पणी—स्त्री के बाएं अंग का तिल विशेष प्रभावशाली होता है, परन्तु दाएं अंग का तिल, जिसके फल के विषय में अलग से वर्णन नहीं किया गया है, वह भी न्यून फलदायक अवश्य होता है।

पाश्चात्य-मत

शरीर के विभिन्न अंगों पर पाए जाने वाले तिलों के शुभाशुभ फल के सम्बन्ध में भारतीय विद्वानों के मत का उल्लेख किया जा चुका है। अब हम तिलों के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों के मतों का सार-संक्षेप प्रस्तुत करते हैं।

प्राच्य विद्वानों की ही तरह पाश्चात्य विद्वानों ने भी 'उत्तर वाले' तथा 'बिना उत्तर वाले'—यह दो प्रकार के तिल माने हैं। इसी तरह उन्होंने तिलों के रंग भी दो प्रकार के बताए हैं तथा उन रंगों के अनुसार फल-भेद का भी वर्णन किया है।

पाश्चात्य मतानुसार स्त्री और पुरुषों के विविध अंगों पर पाए जाने वाले तिलों का वर्णन करने के हेतु हमने पाठकों की सुविधा के लिए उन्हें विभिन्न वर्गों में क्रमानुसार विभाजित कर दिया है जो इस प्रकार हैं—

(१) ललाट-प्रदेश के तिल।

(२) नेत्र-प्रदेश के तिल।

(३) नासिका-प्रदेश के तिल।

(४) कानों के समीप वाले तिल।

(५) कपोल-प्रदेश के तिल।

(६) हनु-प्रदेश के तिल।

(७) चिबुक-प्रदेश के तिल।

(८) अन्य स्थानों के तिल।

'ललाट-प्रदेश' से 'चिबुक-प्रदेश' तक के तिल 'उत्तर वाले तिल' होते हैं अर्थात् इन तिलों का उत्तर-चिन्ह शरीर के अन्य भागों पर भी पाया जाता है। 'अन्य स्थानों के तिल' 'उत्तर वाले' नहीं होते, अतः उनका कोई उत्तर-चिन्ह नहीं पाया जाता। अन्य स्थानों वाले तिलों का सम्बन्ध यदि पूर्वोक्त 'उत्तर वाले' तिलों से स्थापित हो तो उनका प्रभाव 'उत्तर वाले तिलों' के समान ही समझना चाहिए, परन्तु यदि पूर्वोक्त 'ललाट-प्रदेश' से 'चिबुक-प्रदेश' तक के तिलों का उत्तर-चिन्ह शरीर के अन्य निश्चित स्थानों पर न मिले तो इन तिलों का प्रभाव या तो न्यून मात्रा में होता है अथवा बिल्कुल नहीं होता। उत्तर-चिन्ह वाले तिलों का वर्णन भी प्रत्येक तिल के साथ ही किया गया है।

पाठकों की सुविधा के लिए हमने विभिन्न प्रदेशों पर पाये जाने वाले तिलों पर क्रम-संख्या देकर, उसी क्रम के अनुसार चित्रमय फलादेश का वर्णन किया है। यदि किसी व्यक्ति के किसी प्रदेश पर कोई

तिल चित्र में प्रदर्शित स्थान से कुछ हटा हुआ दिखाई दे तो वह तिल जिस क्रम संख्या वाले तिल के सबसे अधिक समीप बैठता हो, उसी के अनुसार उसका भी फल समझ लेना चाहिए। तिलों का ठीक-ठीक स्थान निर्धारित करते समय चित्रों की सहायता लेने से किसी भूल की गुंजायश नहीं रहेगी।

पाश्चात्य मतानुसार विभिन्न प्रदेशों में पाये जाने वाले विभिन्न रंग के तिलों का प्रभाव स्त्री अथवा पुरुष पर कैसा पड़ता है—इसका वर्णन एक साथ कर दिया गया है। इसमें पुरुष अथवा स्त्री के दाईं अथवा बाईं ओर तिल होने के सम्बन्ध में भारतीय मत वाला सिद्धान्त लागू नहीं होता।

ललाट-प्रदेश के तिल

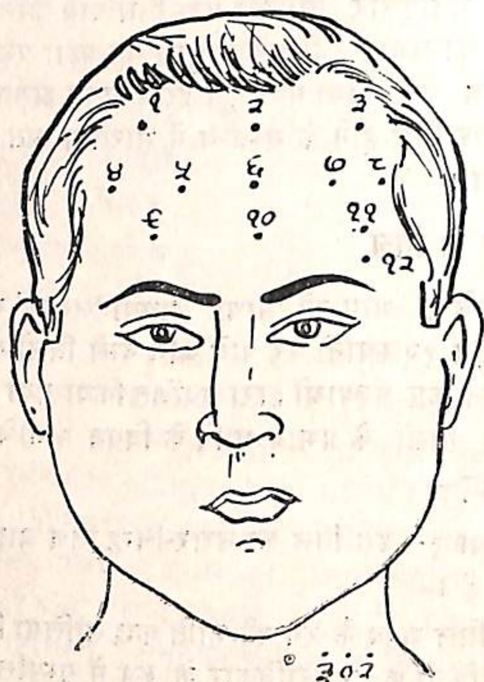
सिर से नीचे के भाग को 'माथा' अथवा 'ललाट' कहा जाता है। इस प्रदेश में कुल १२ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र संख्या ३०२ में विभिन्न क्रम संख्याओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। उन विभिन्न संख्याओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तर-चिन्ह तिल बाईं ओर की रीढ़ के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग की भांति कुछ लालिमा लिये हुए हो तो ऐसे पुरुष को किसी के उत्तराधिकार के रूप में सम्पत्ति प्राप्त होती है तथा जमीन-जायदाद से लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति प्रतिष्ठित होते हुए भी झगड़ालू स्वभाव के होते हैं।

यदि यह तिल काले रंग का हो तो पुरुष जातक के जीवन के अन्तिम २० वर्षों में स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर इस जगह तिल हो तो वह अच्छे स्वभाव की होती है, परन्तु उसे बहुत अधिक समय तक अपने जन्म-स्थान से दूर रहना पड़ता है। ऐसी स्त्री को सन्तान कष्ट होने की भी सम्भावना रहती है। ऐसा कष्ट 'हीरा' अथवा 'नोलम' नामक शुभ रत्न के धारण करने से दूर हो सकता हैं।



[ललाट प्रदेश के तिल]

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाएं हाथ की कुहनी के ठीक नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष सोना, चांदी, लोह

आदि धातुओं अथवा जानवरों के व्यवसाय अथवा ठेकेदारी के काम से लाभ उठाता है। सेना की नौकरी में भी उसे सफलता प्राप्त होती है। यदि हाथ की रेखाओं द्वारा भी पुष्टि होती हो तो ऐसे तिल वाले जातक को आकस्मिक धन-लाभ भी होता है।

यदि यह तिल काले रंग का हो तो उसे अशुभ फलकारक समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल हो तो वह कला-कुशल परन्तु कठोर-वचन कहने वाली होती है। इस दोष को कम करने के के लिए 'पन्ना' नामक रत्न धारण करना चाहिए।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं भुजा पर कुहनी के ऊपर तथा कन्धे के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को किसी मित्र द्वारा किये गए विश्वासघात के कारण कष्ट प्राप्त होता है और वह धनवान् नहीं हो पाता।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसे और भी अधिक अशुभ फल-दायक समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल (चाहे जिस रंग का) हो तो वह पति-सुख में कमी करने का सूचक होता है। ऐसी स्त्री स्वयं भी अच्छे स्वभाव की नहीं होती।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पेट के दाएं भाग के नीचे कमर तथा जांघ के बीच में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक की रुचि पठन-पाठन एवं ज्ञानोपार्जन की दिशा में अधिक होती है, वह धनी नहीं हो पाता। ऐसा पुरुष किसी स्त्री के द्वारा धोखा खाता है, जिसके कारण वह सम्पूर्ण स्त्री-जाति के प्रति ही विरक्त हो जाता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह अपना कोई विशेष प्रभाव प्रकट नहीं करता।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल हो तो वह उचित तथा अनुचित सभी उपायों से धन-संग्रह की इच्छुक बनी रहती है। उसके विचार तथा स्वभाव भी अच्छे नहीं होते। ऐसी स्त्री के हाथ में यदि जीवन-रेखा तथा हृदय-रेखा बलवान न हो तो उसकी अल्पायु होने की सम्भावना भी रहती है।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं ओर सीने के निचले भाग में पाया जाता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक धनोपार्जन में दक्ष तथा बुद्धिमान होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह अच्छा नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो वह दीर्घायु एवं धन-सम्पत्तिवान् होती है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) छाती पर बाईं ओर होता है।

यदि वह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को ३४-३५ वर्ष की आयु में किसी कठिन रोग का शिकार होना पड़ता है। इस लक्षण की पुष्टि के लिए जीवन-रेखा की स्थिति को भी देखना चाहिए।

यदि तिल का रंग काला हो तो जीवन का प्रारम्भिक तथा मध्य-भाग अच्छा व्यतीत नहीं होता, परन्तु वृद्धावस्था में परिश्रम द्वारा आर्थिक स्थिति ठीक हो जाती है।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल हो तो वह धनवान होती है और उसे अपने किसी सम्बन्धी द्वारा भी विशेष सम्पत्ति प्राप्त करने का योग होता है, परन्तु ३० वर्ष की आयु में उसे उदर-विकार अथवा

किसी अन्य दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है। दीर्घायु के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए जीवन-रेखा की स्थिति पर ध्यान देना चाहिए।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं ओर की पसली के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक स्वेच्छाचारी, अपव्ययी, ऐयाश, कामी, दुराग्रही तथा व्यभिचारी होता है। वह अनुचित कार्य करने में भी नहीं झिझकता, परन्तु अपनी मिलनसारी तथा शिष्ट स्वभाव से अन्य लोगों पर अच्छा प्रभाव बनाये रखता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को चालीस वर्ष की आयु में कोई शिरोरोग होने को सम्भावना रहती है। इसकी पुष्टि के लिए जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा की स्थिति को देखना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल हो तो वह स्वेच्छाचारिणी तथा अपव्ययो होती है। ऐसी स्त्री की दुष्ट वृत्तियां तीस वर्ष की आयु के बाद और अधिक बढ़ जाती है तथा वह अपने पति से द्वेष रखकर पर पुरुष गामिनी होती है।

तिल संख्या ८—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाएं हाथ की कलाई के ऊपर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो ऐसा पुरुष धनी तथा ऐयाश होता है, परन्तु उसका स्वभाव अच्छा नहीं होता।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्रो के ललाट पर ऐसा तिल हो तो वह पति-विद्वेषिणी कुलटा तथा दुष्टा होती है। उसे छूत को कोई भयंकर बीमारी (उपदंश आदि) भी हो सकती है।

तिल संख्या ९—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं पसली के निचले भाग में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को व्यवसाय के द्वारा धन का अधिक लाभ होता है और ३५ वर्ष की आयु में उसे यात्रा द्वारा विशेष आर्थिक सफलता प्राप्त होती है। इसकी पुष्टि के लिए हथेली में यात्रा-रेखाओं की स्थिति को भी देखना चाहिए।

यदि तिल का रंग काला हो तो यात्रा का परिणाम अनिष्टकर होता है।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसकी कल्पना शक्ति तीव्र होती है। पति का सुख सामान्य रहता है तथा उसकी एक सन्तान को कोई कठिन रोग होता है। शेष सभी सन्तानें स्वस्थ रहती हैं।

तिल संख्या १०—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्ष:स्थल के दाएं भाग में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक कुलीन, धनी, परोपकारी, यशस्वी तथा मान-प्रतिष्ठा युक्त होता है। यह अत्यन्त शुभ फलदायक कहा गया है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अव्ययी होता है, जिसके कारण उसे वृद्धावस्था में आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है तथा लम्बी बीमारियां भी भोगनी पड़ती हैं।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसे स्नायुओं की पीड़ा होती है। वह कर्कश स्वभाव की होती है तथा उसे पति का पूर्ण सुख भी प्राप्त नहीं होता।

तिल संख्या ११—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्ष: स्थल के बाएं भाग में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक जल्दबाज तथा लापरवाह होता है। उसे ३० वर्ष और ४० वर्ष की आयु के बीच किसी अनिष्टकर परिणाम को भोगना पड़ता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसका विवाह अल्पायु में ही हो जाता है और वह कई पुत्रों की माता होती है। उसके लिए 'मूंगा' तथा 'मोती' नामक रत्न पहनना शुभ रहता है।

तिल संख्या १२—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाएं नितम्ब पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो ऐसा पुरुष-जातक पारिवारिक लोगों से विवाद में उलझता है। विवाहोपरान्त उसके भाग्य में विशेष परिवर्तन होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो ३० से ४० की आयु के बीच जातक को उदर-विकार अथवा रक्त-विकार का शिकार होना पड़ता है।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसे कन्ठ-रोग होने की आंशका रहती है तथा उसकी वृत्तियां अत्यन्त चंचल होती हैं। हाथ की रेखाओं द्वारा भी इन लक्षणों की पुष्टि कर लेना आवश्यक है।

नेत्र-प्रदेश के तिल

दोनों आंखों के समीपवर्ती स्थान को नेत्र-प्रदेश कहा जाता है। इस प्रदेश में कुल ८ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र संख्या ३०३ में, विभिन्न क्रम संख्याओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न संख्याओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —



[नेत्र-प्रदेश के तिल]

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तार-चिन्ह (तिल) पेट के बाएं भाग पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग जा हो तो पुरुष-जातक पेट तथा दिल की बीमारियां से ग्रस्त बना रहता है। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य प्रायः जीवन भर खराब बना रहता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो दूर की यात्रा करने से अनिष्टकर परिणाम प्राप्त होता है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह मानसिक तथा शारीरिक दोनों प्रकार के दुःखों से दुःखी बनी रहती है और उसके लिए भी इसका प्रभाव अच्छा नहीं होता।

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्षःस्थल के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक निर्बुद्धि होता है। उसके स्वभाव में उद्दन्डता रहती है तथा उसके पांव में भी कुछ विकार होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं देता।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह अपने माता-पिता में श्रद्धा रखने वाली, पाक-विद्या में प्रवीण परन्तु मूर्ख और आलसी होती है। उसकी मृत्यु भी अपने जन्म-स्थान से बहुत दूर विदेश में होती है।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाएं उसके निचले भाग में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक कुछ झगड़ालू प्रकृति का तथा मुकद्दमेबाज होता है और अनेक प्रकार के कष्ट भी पाता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह पुरुष के लिए शुभ फलदायक होता है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह उसके लिए अशुभ फल देने वाला होता है। इस तिल के फलस्वरूप वह दुःख

श्रोर कष्ट पाती रहती है। यदि शरीर के अन्य लक्षण तथा हस्त-रेखाओं से भी पुष्टि होती हो तो ऐसे तिल वाली स्त्री अपनी चौबीस से तीस वर्ष की आयु के बीच किसी पर पुरुष से गुप्त प्रेम-सम्बन्ध भी स्थापित करती है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाएं अथवा दाएं पांव पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक के लिए बहुत शुभ होता है। ऐसे व्यक्ति भाग्यशाली होते हैं।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक भाग्यहीन, विपत्तियों वाला तथा वृद्धावस्था में अपस्मार आदि रोगों के कारण कष्ट पाने वाला होता है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र प्रदेश पर पट तिल हो और शरीर के अन्य लक्षणों तथा हस्त-रेखा में भी पुष्टि होती हो तो वह व्यभिचारिणी होती है। उसका गुप्त-प्रेम किसी निम्न श्रेणी के व्यक्ति से होता है, जिसका परिणाम अभिष्ट कर रहता है।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बगल (कांख) के नीचे बाईं भुजा के भीतर की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को आकस्मिक रूप से धन का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति विदेशों के लिए निर्यात-आयात के व्यवसाय द्वारा प्रचुर धन उपार्जित कर सकते हैं।

यदि तिल का रंग काला हो तो उपर्युक्त फल का विपरीत परिणाम होता है, अतः उसे अशुभ समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे अपने पति अथवा अन्य सम्बन्धियों द्वारा धन का लाभ होता है, परन्तु उसका स्वास्थ्य कमजोर रहता है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाएं हाथ की कुहनी के नीचे होना है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक घुड़दौड़, खेल-कूद आदि का विशेष प्रेमी होता है। उसे उच्चपदाधिकारियों द्वारा धन-सम्मान एवं सहायता की प्राप्ति होती है। यदि हाथ की रेखाओं द्वारा पुष्टि होतो हो तो ऐसे पुरुष को ३७ से ४७ वर्ष की आयु के बीच नेत्र-विकार होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को लाटरी, सट्टे अथवा शेयर के व्यवसाय में हानि उठानी पड़ती है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो उसे बाल्यावस्था में चोट लगने अथवा अग्नि से जलने का भय रहता है, परन्तु ३० वर्ष की आयु के बाद उसे किसी के उत्तराधिकार के रूप में धन की प्राप्ति होती है।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं ओर कमर पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को विदेशों से अयात-निर्यात के व्यवसाय में विशेष धन-लाभ होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को धार्मिक-संस्थाओं अथवा मुकद्दमेबाजी आदि के द्वारा हानि पहुंचने की आंशका रहती है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह दीर्घायु होती है तथा सुखी-जीवन व्यतीत करती है। स्त्रियों के लिए इस स्थान पर किसी भी रंग का तिल क्यों न हो, शुभ फल देने वाला माना गया है।

तिल संख्या ८—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) सोने की हड्डी के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक विलासी प्रवृत्ति का होता है और उसका अनेक स्त्रियों से शारीरिक-सम्बन्ध रहता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह पुरुषों की तरह ही घर से बाहर के कामों में दक्ष होती है। ऐसे तिल वाली स्त्री विलासिनी भी होती है और उसके अनेक पुरुषों से सम्बन्ध हो सकते हैं। इसकी पुष्टि के लिए शरीर के अन्य लक्षण तथा हस्त-रेखाओं की स्थिति पर भी विचार करना चाहिए।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाएं कन्धे पर होता है।

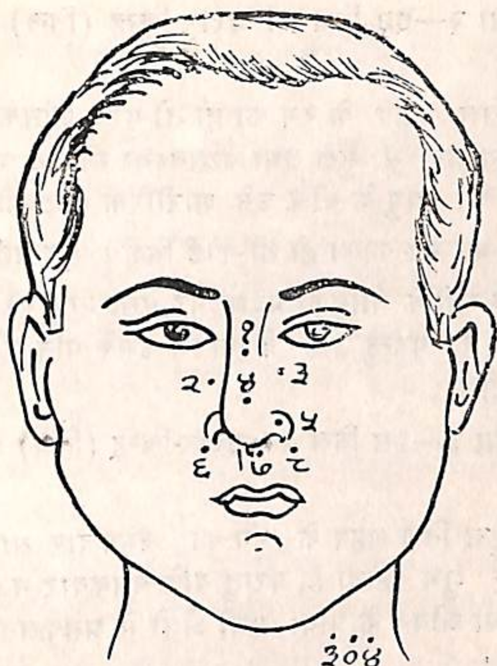
यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक को अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों द्वारा धोखा दिए जाने अथवा हानि पहुंचाये जाने की आशंका रहेगी।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक पर-स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध के कारण अपनी प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाता है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे अग्नि अथवा बिजली का भय बना रहेगा तथा उसका स्वास्थ्य भी खराब होगा। यदि अन्य लक्षणों तथा हस्त-रेखाओं द्वारा भी पुष्टि होती हो तो ऐसी स्त्री का चरित्र भी ठीक नहीं होता अर्थात् वह पर पुरुष-गामिनी हो सकती है।

नासिका-प्रदेश के तिल

नाक के ऊपर तथा उसके समीपवर्ती प्रदेश में कुल ८ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र संख्या ३०४ में, विभिन्न क्रम-संख्याओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न संख्याओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—



[नासिका प्रदेश के तिल]

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तार-चिन्ह (तिल) दाईं ओर के पुट्ठे पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक वाक्-चतुर तथा कला-कुशल होता है, परन्तु वह ऐसी स्त्रियों प्रेम-जाल में फंसा रहता है, जो उसके द्वारा अपने स्वार्थों की सिद्धि करती रहती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे शुभ-लक्षण समझना चाहिए। ऐसी स्त्रियां परम सौभाग्यशाली, सम्पत्ति-शालिनी, यशस्विनी तथा दीर्घायु प्राप्त करने वाली होती है।

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं बगल के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को जीवन के प्रथम तथा मध्यभाग में सुख तथा वृद्धावस्था में कष्ट प्राप्त होता है। ३० से ३५ वर्ष की आयु के बीच उसे शारीरिक कष्ट भी होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो अच्छे स्वभाव की होती है, परन्तु उसी के कारण उसके पति को कष्ट अवश्य भोगना पड़ता है।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं जांघ पर होता है।

यदि यह कुछ तिल शहद के रंग का चमकदार सा हो तो पुरुष-जातक के लिए शुभ होता है, परन्तु यदि चमकदार न हो तो भाग्य-जातक हीन तथा जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रो में असफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को बिजली अथवा किसी अन्य दुर्घटना के कारण मृत्यु हो जाने की आशंका रहती है।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो यह बुद्धिमती होती है, परन्तु अपने ही किसी सम्बन्धी अथवा सुपरिचित व्यक्ति के विश्वासघात के कारण उसे आर्थिक अथवा जमीन-जायदाद सम्बन्धी हानि उठानी पड़ती है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक संग्रहशील तथा

बुद्धिमान होता है और उसे उत्तराधिकार में किसी की सम्पत्ति भी प्राप्त होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को उदर एवं यकृत्-सम्बन्धी विकार बने रहते हैं।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो उसका शरीर दुर्बल होता है। प्रसव के समय उसे अत्यधिक कष्ट एवं भय का सामना करना पड़ता है। ऐसे तिल वाली स्त्री की नाक का अग्रभाग यदि कटा हुआ सा अथवा हड्डी से, अलग जैसा प्रतीत होता हो, तो वह अच्छे चरित्र की नहीं होती।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाएं घुटने के ऊपर दाईं जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को कृषि, जमीन जायदाद अथवा अपने बड़े-बूढ़ों द्वारा आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को ४० से ५० वर्ष की आयु के बीच किसी दुर्घटना का शिकार बनना पड़ता है। यदि हाथ की रेखाएं, विशेषकर जीवन-रेखा अच्छी हो तो उसकी प्राण-रक्षा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे अशुभ फलकारक समझना चाहिए। ऐसी स्त्री सदैव दुःखी बनी रहती है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाएं सीने के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अपव्ययी, अनेक प्रकार के दोषों तथा दुर्गुणों से युक्त होता है। उस पर फौजदारी के मुकद्दमे चलते हैं तथा न्यायालय द्वारा दण्ड प्राप्ति की सम्भावना रहती

है। ऐसे व्यक्तियों को घृणित तथा अपराध पूर्ण कार्यों से बचे रहने का प्रयत्न करना चाहिए। इस तिल का प्रभाव बहुत अशुभ फलकारक होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे बहुत ही अशुभ समझना चाहिए। ऐसी स्त्री का चरित्र भ्रष्ट होता है। वह स्वयं ही अपनी स्थिति का सर्वनाश कर लेती है। इसकी पुष्टि के लिए हाथ की रेखाओं की स्थिति पर ध्यान देना भी आवश्यक है।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तार-चिन्ह (तिल) पेट के बाएं भाग पर पसली के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक को सरकारी अधिकारियों द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। यदि ऐसे पुरुष की पत्नी अथवा कन्या स्वरूपवान हो तो उच्च स्थिति के लोग उसके द्वारा अपनी वासनापूर्ति की इच्छा से जातक को कष्ट पहुंचाते हैं।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसे और भी अनिष्टकर प्रभाव वाला समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो उसका स्वास्थ्य दुर्बल होता है तथा चित्त दुःखी बना रहता है। मूंगा धारण करने से इस दोष का कुछ परिहार हो जाता है।

तिल संख्या ८—इस तिल का उत्तार-चिन्ह (तिल) पीठ पर बाईं बगल के नीचे होता है।

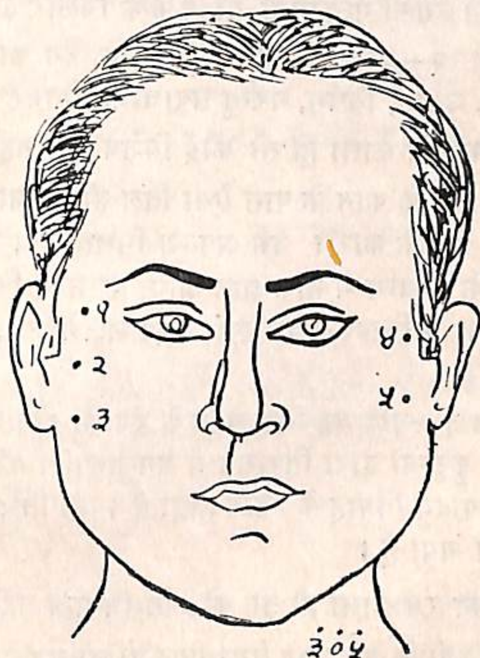
यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक ऊपर के दिखाने में बहादुर और साहसी परन्तु भीतर से कमजोर हिम्मत वाला होता है। उसे स्त्रियों के कारण, मुकद्दमेबाजी के कारण अथवा अन्य प्रकार के झगड़ों के कारण कष्ट उठाने पड़ते हैं।

यदि तिल का रंग काला हो तो तथा हाथ की रेखाओं से भी पुष्टि होती हो जातक के पानी में डूबने का भय रहता है।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो तथा हस्त रेखा एवं अन्य लक्षणों से भी पुष्टि होती हो तो वह चरित्र-भ्रष्ट होती है।

कानों के समीप वाले तिल

दोनों कानों के समीपवर्ती कुल ५ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र संख्या ३०५ में विभिन्न क्रम-संख्याओं द्वारा प्रदर्शित किया



[कानों के समीप वाले तिल]

गया है। इन विभिन्न संख्याओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय में आगे लिखे समझना चाहिए।

तिल संख्या १—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक का स्वभाव कुछ उद्दण्डतापूर्ण होता है। उसके सन्तान-सुख में बाधा पड़ती है तथा उसका बड़ा पुत्र आज्ञाकारी नहीं होता, परन्तु ऐसे तिल वाले जातक को अपने किसी कुटुम्बो द्वारा विरासत में धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक के साथ उसका ही दिल कोई विश्वासघात करके हानि पहुंचाता है।

यदि किसी स्त्री के चेहरे पर ऐसा तिल हो, उसे अशुभ फलदायक समझना चाहिए। उसकी मृत्यु पानी या कफ के विकार द्वारा होती है।

तिल संख्या २—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक चिन्तित, उदास, निर्धन, परन्तु सदाचारी होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के कान के पास ऐसा तिल हो तो आचार-व्यवहार खराब होता है, जिसके कारण उसे अपयश मिलता है। उसकी चारित्रिक अधोगति के सम्बन्ध में ठीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हथेली की सूर्य, हृदय तथा मस्तिष्क-रेखा एवं अन्य लक्षणों से विचार करना चाहिए।

तिल संख्या ३—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक को अपने किसी कुटुम्बो द्वारा विरासत में धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। उसका भाग्योदय विवाह के बाद होता है। यह तिल अत्यन्त शुभ फलदायक माना गया है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के चेहरे पर ऐसा तिल हो तो वह ऐश्वर्यशालिनी, गुणी तथा बुद्धिमती होती है, परन्तु अन्य स्त्रियों के साथ उसकी पटरी नहीं बैठती।

तिल संख्या ४—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अत्यन्त बुद्धिमान तथा चतुर होता है। वह व्यवसाय तथा अन्य कार्यों के द्वारा प्रचुर धन उपार्जित करता है।

यदि यह तिल काले रंग का हो तो उसे घोर समझना चाहिए। ऐसा तिल जातक की आर्थिक स्थिति को बिगाड़ता है तथा उसके पांव में चोट लगने का भय रहता है।

यदि किसी स्त्री के चेहरे पर ऐसा तिल हो तो वह विवाह से पहले चंचल चित्त वाली रहती है, परन्तु विवाहोपरान्त श्रेष्ठ पति-सुख प्राप्त करती है।

तिल संख्या ५—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अपने सम्बन्धियों से झगड़ मुकद्दमे आदि के कारण परेशानी उठाता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अपने ही गलत आचरणों के कारण दुःख पाता है।

यदि किसी स्त्री के कान के समीप ऐसा तिल हो तो वह सच्चरित्र नहीं होती। यदि उसके हाथ का अंगूठा छोटा हो तथा शुक्र-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो वह अत्यन्त कामातुरा तथा व्यभिचारिणी होती है।

कपोल प्रदेश के तिल

दोनों कपोल प्रदेश के कुल ७ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र संख्या ३०६ में विभिन्न क्रम संख्याओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न संख्याओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय में अग्र-लिखित अनुसार समझना चाहिए।



[दोनों कपोल प्रदेश के तिल]

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं पसली के नीचे कमर के आस-पास होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक विदेश में सामान्य नौकरी आदि करके अपना जीवन यापन करता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक की ३० वर्ष की आयु में किसी से घोर शत्रुता होती है।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो वह धार्मिक विचारों वाली तथा सदाचारिणी होती है। उसे सर्वत्र यश तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती रहती है।

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पेट पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अपनी चतुराई तथा वक्तृत्व-शक्ति के बल पर उच्च पद प्राप्त करने में सफल होता है। उसकी उन्नति में किसी उच्च अधिकारी की पत्नी का भी सहयोग रहता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो बातचीत में कुशल, चंचल स्वभाव वाली तथा अपव्ययी होती है। वह स्वयं से सम्बन्धित लोगों को कष्ट भी पहुंचाती रहती है।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्षःस्थल के वाम भाग के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अनियमित आहार-विहार के कारण रोगी होकर कष्ट उठाता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसे और भी अधिक अशुभ तथा भयंकर शारीरिक कष्टदायक समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो उस पर भी प्रायः वही प्रभाव होता है, जो पुरुष जातक के लिए बताया गया है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं ओर की जांघ की संधि पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक के जीवन का प्रारंभिक तथा मध्य भाग सामान्य आर्थिक स्थिति में व्यतीत होता है, परन्तु अन्तिम तीसरे भाग में धन की विशेष प्राप्ति होती है। ऐसे जातक के धन की हानि स्त्रियों के कारण भी होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक के किसी ऊंचे स्थान से गिरने की संभावना रहती है।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो वह चंचल-स्वभाव वाली तथा घूमने-फिरने की बहुत शौकीन होती है।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं ओर की छाती के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक का विशेष भाग्योदय अपनी जन्म-भूमि से बाहर किसी परदेश के स्थान में होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अपनी चतुराई तथा अन्य उपायों द्वारा धनोपार्जन करता है। परन्तु पचास-पचपन वर्ष की आयु में सट्टे आदि के द्वारा उसे अकस्मात् ही आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

यदि किसी स्त्री के बाएं कपोल पर ऐसा तिल हो तो वह अत्यधिक विलासिनी होती है और अनेक व्यक्ति, विशेषकर उससे कम आयु के लोग, उसके प्रेमी होते हैं। ऐसी स्त्रियों की काम-वासना अत्यन्त प्रबल होती है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्षःस्थल पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अस्थिर-चित्त वाला होता है तथा स्त्रियों के प्रभाव में अधिक रहता है, जिसके कारण वह नैतिकता से दूर हट जाता है और उसके सम्मान को भी हानि पहुंचती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो वह दुराग्रही, जिद्दी, स्वतन्त्र-प्रकृति की तथा स्वेच्छाचारिणी होती है। उसे किसी

भयंकर रोग का शिकार बनना पड़ता है, परन्तु कुछ समय बाद वह उससे मुक्त हो जाती है।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाएं नितम्ब पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। यदि हाथ में विवाह की दो रेखाएं हों अर्थात् जातक के दो विवाह होने के लक्षण दिखाई दें, तो पहली स्त्री के बाद जातक दूसरा विवाह तो कर लेता है, परन्तु उसे वैवाहिक-सुख की प्राप्ति नहीं होती।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक के विदेश में जाकर किसी वाहन अथवा पशु से टकरा जाने के कारण दुर्घटना होने की संभावना रहती है।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो उसका विवाह किसी धनवान् पुरुष के साथ होता है, परन्तु उसका स्वयं का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। कोई-न-कोई बीमारी उसे घेरे ही रहती है।

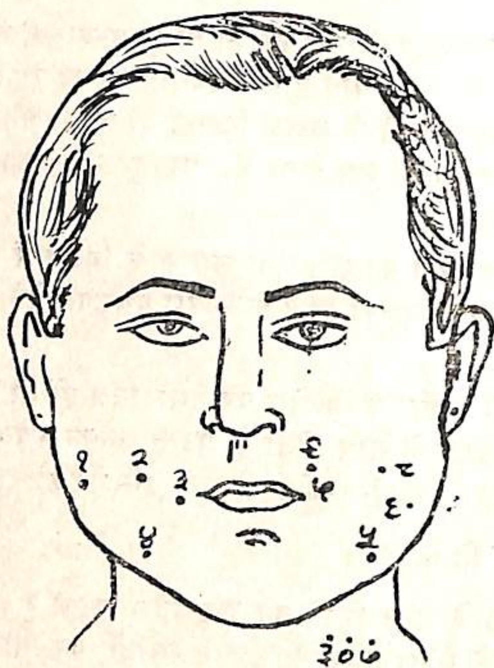
हनु प्रदेश के तिल

गालों के नीचे वाले हिस्से को 'हनु-प्रदेश' कहते हैं। यह भाग ठोड़ी के ऊपर होता है। इस प्रदेश के कुल ९ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र संख्या ३०७ में विभिन्न क्रम संख्याओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न संख्याओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पेट के दक्षिण भाग में नीचे की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक इन्द्रिय-लोलुप,

धोखे-बाज; मिथ्यावादी तथा विश्वास न करने योग्य (विश्वासघाती) होता है उस पर फौजदारी मुकद्दमे चलते हैं। तथा उसके यश को दाग लगता है।



[हनु-प्रदेश के तिल]

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक निर्धन होता है तथा अनियमित जीवन बिताने के कारण रोगी भी बना रहता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे सन्तान का सुख कम प्राप्त होता है तथा उसका चरित्र भी अच्छा नहीं होता। स्त्रियों के सम्बन्ध में इस तिल का प्रभाव घोर अशुभ समझना चाहिए।

चरित्र-हीनता आदि लक्षणों की पुष्टि हस्त-रेखाओं को देखकर भी कर लेनो चाहिए।

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं पसली के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अनुदार, कलुषित हृदय तथा विचारों वाला एवं दरिद्र होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को किसी पशु से भय अथवा अन्य दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह कलह-प्रिया तथा चरित्रहीन होती है। चरित्रहीनता के लक्षण की पुष्टि पांवों की उंगलियों की बनावट तथा हाथ की रेखाओं को देखकर भी कर लेनी चाहिए।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पेड़ू के समीप होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक एकान्त-प्रेमी, अध्ययन-शील, विद्वान् तथा भाग्यशाली होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह पतिव्रता एवं सौभाग्यशालिनी होती है। स्त्री के लिए काले अथवा लाल रंग के तिल से प्रभाव में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। यदि ऐसे तिल वाली स्त्रो के अन्य शारीरिक लक्षण भी शुभ हों तथा हाथ की रेखाएं भी श्रेष्ठ गुण वाली हों तो वह अत्यन्त यशस्विनी एवं ऐश्वर्यशालिनी भी होती है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाएं घुटने पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक दुर्बल-चित्त वाला तथा विषय-भोग में लीन रहने वाला होता है। वह किसी भी कार्य को करने में कुशल नहीं होता, अतः उसे जीवन के सभी क्षेत्रों में असफलताओं, निराशाओं, संकटों, अपयशों एवं दरिद्रता का शिकार बनना पड़ता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसका फल अत्यन्त अशुभ होता है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक कामासक्त बना रहता है। उसकी विवेक-बुद्धि नष्ट हो जाती है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे अस्वास्थ्य का सूचक समझना चाहिए।

तिल संख्या ५--इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाएं घुटने के भीतरी भाग में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक के अनेक शत्रु होते हैं और वे उसे हानि पहुंचाने का प्रयत्न करते रहते हैं, जिसके कारण उसकी भाग्योन्नति में बाधा पहुंचती रहती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अपने अनुचित आचार-विचार एवं व्यवहारों के कारण हानि उठाता रहता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो वह कामासक्त होने के साथ ही भाग्यशालिनी भी होती है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं जांघ पर भीतरी हिस्से में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक भाग्यवान होता है, परन्तु उसे अपनी अट्ठाईस से बत्तीस वर्ष की आयु के बीच के समय में किसी विशेष कठिनाई अथवा मुसीबत का सामना करना पड़ता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक का वैवाहिक-जीवन दुःख-पूर्ण होता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह धनी एवं सुखो-जीवन व्यतीत करने वाली होती है। परन्तु उसे अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग में पति का सुख अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। बाद में वह सुख भी उसे पर्याप्त मिलने लगता है।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं जांघ के नीचे के हिस्से में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक के पानी में डूबने, ऊपर से गिरने अथवा किसी अन्य प्रकार की दुर्घटना में फंस जाने की सम्भावना रहती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह अपना कोई विशेष प्रभाव प्रदर्शित नहीं करता।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और वह भाग्यहीना भी होती है। तीस अथवा इकत्तीस वर्ष की आयु में उसे किसी भयानक शारीरिक-रोग अथवा मानसिक कष्ट होने की आशंका भी रहती है।

तिल संख्या ८—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पीठ पर नीचे की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक विदेश-यात्रा का प्रेमी होता है और विदेशों से व्यवसाय द्वारा अर्थोपार्जन भी करता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अपनी ही दुर्बुद्धि के कारण अपने भाग्य को नष्ट कर लेता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और उसका चरित्र भी प्रायः अच्छा नहीं होता। चरित्रहीनता की पुष्टि के लिए शरीर के अन्य लक्षणों तथा हस्त-रेखाओं की स्थिति पर भी भली-भांति विचार कर लेना चाहिए।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं जांघ के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग हो तो पुरुष-जातक लोभी तथा क्षुद्र-हृदय का होता है। उसकी वृद्धावस्था सुखपूर्वक नहीं बीतती। इस तिल को अशुभ फलकारक ही समझना चाहिए।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक किसो ऊंचे स्थान से गिरता है अथवा किसो अन्य प्रकार की दुर्घटना का शिकार होता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो युवावस्था की अपेक्षा वृद्धावस्था में उसको आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हो जाता है अर्थात् यदि युवावस्था में धनाढ्य हो तो वृद्धावस्था में दरिद्र हो जाती है और युवावस्था में दरिद्र हो तो वृद्धावस्था में धनाढ्य हो जाती है।

चिबुक-प्रदेश के तिल

हनु-प्रदेश के नीचे चिबुक-प्रदेश (ठोड़ी) पर पाए जाने वाले कुल ५ तिलों को चित्र संख्या ३०८ में विभिन्न क्रम संख्याओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न संख्याओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक गुणवान तथा विद्वान् होता है। बड़े लोगों की सहायता एवं सम्पर्क के द्वारा उसकी भाग्योन्नति होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक धनवान एवं दीर्घायु होता है।

यदि किसी स्त्री के चिबुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह धनवान होती है तथा बाहर से सच्चरित्र भी दिखाई देती है, परन्तु यथार्थ में उसका चरित्र शुद्ध नहीं होता। उसकी चरित्रहीनता की पुष्टि के लिए हस्त-रेखाओं तथा शरीर के अन्य लक्षणों पर भी विचार करना चाहिए।



[चिबुक-प्रदेश के तिल]

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक बुद्धिमान तथा

धनोपार्जन करने में अत्यधिक कुशल होता है, परन्तु वह वातव्याधि से पीड़ित बना रहता है। यदि हाथ में जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा द्वारा अल्पायु-योग की पुष्टि होती हो तो ऐसे व्यक्ति की आयु कम होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को किसी ऊंचे स्थान से गिर कर चोट लगने की सम्भावना रहती है।

यदि किसी स्त्री के चिबुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह अधिक बुद्धिमती नहीं होती। वह या तो किसी ऊंचे स्थान से गिर कर चोट खाती है या फिर उसे प्रसव के समय अथवा बाद में प्रसव-सम्बन्धी किसी रोग का शिकार होना पड़ता है।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पीठ के बाएं भाग में नीचे की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक बुद्धिमान, मित्रों से मित्रता का निर्वाह करने वाला तथा शत्रुओं से शत्रुता का बदला लेने वाला होता है। उसे किसी धनी-महिला की विरासत द्वारा सम्पत्ति भी प्राप्त होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसका कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के चिबुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो जीवन के मध्य भाग में उसके किसी निकट-सम्बन्धी की मृत्यु हो जाती है। किसी समय किसी अनुचित औषधि का प्रयोग कर लेने के कारण वह अपने स्वयं के स्वास्थ्य को भी हानि पहुंचा बैठती है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं जांघ पर भीतर की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक का विवाह किसी निर्धन परिवार में होता है। यदि हाथ की रेखाओं तथा शरीर के अन्य अंगों के लक्षण शुभ न हों तो ऐसे व्यक्ति को व्यवसाय अथवा सट्टे में धन की अत्यधिक हानि भी उठानी पड़ती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह और भी अधिक अशुभ प्रभाव प्रदर्शित करता है। ऐसे जातक को धन-हानि के कारण अन्य अनेक कठिनाइयों तथा मुसीबतों का भी सामना करना पड़ता है।

यदि किसी स्त्री के चिबुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह धूर्ता, दुष्टा एवं मायाविनी होती है। यदि शरीर के अन्य लक्षणों तथा हस्त-रेखाओं से पुष्टि होती हो तो वह चरित्रहीन भी होती है। इस तिल का प्रभाव अनिष्टकर ही होता है।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्षःस्थल पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक भाग्यशाली एवं सभा में बैठकर अपनी बुद्धिमत्ता एवं चातुर्य्य का प्रदर्शन करने वाला होता है। अपनो पत्नी, रिश्तेदार महिला अथवा अन्य स्त्रियों की सहायता द्वारा उसके भाग्य की वृद्धि होती है। यदि भाग्य-रेखा भी अच्छी हो तो ऐसा व्यक्ति विशेष बलवान होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के चिबुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसकी नेत्र-दृष्टि दुर्बल होती है तथा अन्य प्रकार के नेत्र-विकार भो हो जाते हैं। ऐसी स्त्री अपने पति को बहुत कष्ट देने वालो होतो है।

अन्य स्थानों पर पाये जाने वाले तिल

मुखमण्डल के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर पाये जाने वाले तिल बिना

उत्तर-चिन्ह वाले होते हैं। उनका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) यदि ग्रीवा के दाईं ओर तिल हो तो पुरुष बुद्धिमान् होता है और स्त्री प्रसन्न रहती है।

(२) यदि ग्रीवा के बाईं ओर तिल हो तो स्त्री-पुरुष दोनों को एक-सा फल प्राप्त होता है। वे या तो किसी ऊंचे स्थान से गिरते हैं अथवा पानी में डूबते हैं।

(३) यदि ग्रीवा के मध्य भाग में तिल हो तो जातक चाहे स्त्री या पुरुष हो—उसकी आकस्मिक रूप से मृत्यु होती है।

(४) यदि पुरुष के दाएं स्तन के नीचे तिल हो तो शुभ होता है। स्त्री के दाएं स्तन के नीचे हो तो उसे पैतृक संपत्ति मिलती है।

(५) यदि पुरुष के बाएं स्तन के नीचे तिल हो तो वह परिश्रमी परन्तु कठोर स्वभाव का होता है। स्त्री के बाएं स्तन के नीचे हो तो वह पतिव्रता होती है।

(६) यदि पुरुष के दाएं कन्धे पर तिल हो तो वह धनवान होता है।

(७) यदि पुरुष के बाएं कन्धे पर तिल हो तो अशुभ फलदायक होता है।

स्त्री के लिए किसी भी कन्धे पर तिल-चिन्ह का होना अशुभ फलदायक ही होता है।

चित्र संख्या ३०६ में उक्त सातों तिलों के सातों स्थानों को प्रदर्शित किया गया है।

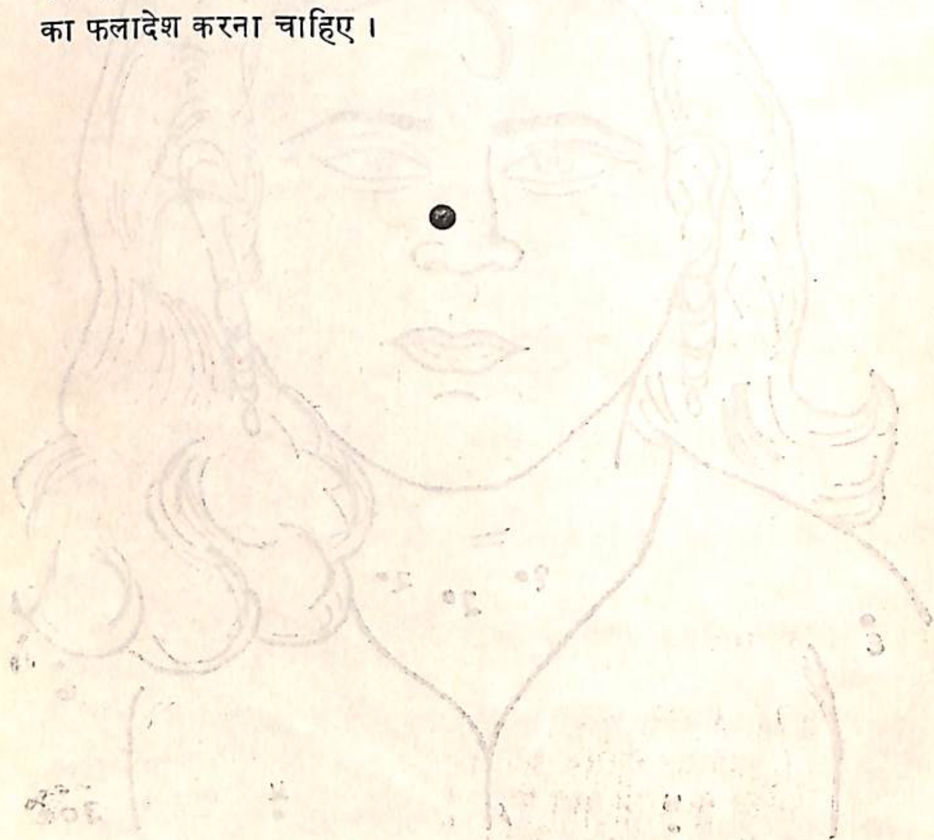
(८) यदि पुरुष के दाएं पांव पर तिल हो तो वह सभी विषयों का श्रेष्ठ जानकार होता है। स्त्री के दाएं पांव पर हो तो वह सुखी रहती है


१
२
३
६
७
४
५

(६) यदि बाएं पांव पर तिल हो तो वह स्त्री-पुरुष दोनों के लिए ही अशभ होता है।

विशेष ज्ञातव्य

यदि मुंह या शरीर के अन्य भागों पर एक से अधिक तिल हों, तो उन सबके प्रभाव पर विचार करने के उपरान्त जो निष्कर्ष निकले उसी का फलादेश करना चाहिए।



मस्सा, लहसन और भौंरी विचार

मस्सा

मस्से के तीन भेद कहे गए हैं—

(१) शरीर की त्वचा पर काले रंग का बाहर की ओर निकला (उठा) हुआ मांस बिन्दु ।

(२) त्वचा के भीतर दबा हुआ, परन्तु कुछ उभरा हुआ रोमयुक्त मांस-बिन्दु ।

(३) गेहुंआ रंग का मांस-बिन्दु, जो त्वचा के ऊपर रक्त विकार के कारण उभर आता है और कुछ समय बाद स्वय ही अथवा औषधोपचार से कटकर गिर जाता है ।

आकार के अनुसार मस्सा यदि राई अथवा बाजरे के दाने के बराबर हो तो वह अच्छा होता है। इससे बड़े आकार का हो तो वह शुभ नहीं होता ।

'वाराह मिहिर' के मतानुसार मस्सा यदि शरीर की त्वचा के वर्ण का हो अथवा उज्ज्वल कान्तियुक्त हो तो उसे ब्राह्मण के लिए विशेष शुभ समझना चाहिए ।

क्षत्रिय के शरीर पर यदि कुछ लालिमा लिये हुए श्वेत (उज्ज्वल कान्ति) का मस्सा हो, तो वह शुभ होता है ।

वैश्य के लिए कुछ लालिमा अथवा पीलापन लिये हुए उज्ज्वल कान्ति वाला मस्सा शुभ होता है ।

शूद्र के लिए उपर्युक्त तोनों रंगों में से किसी रंग का अथवा काले रंग का मस्सा हो तो वह शुभ होता है।

शरीर के किसी अंग पर मस्सा होने से उसका क्या प्रभाव होता है— इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए। यहां एक बात अवश्य ध्यान में रखने योग्य है कि मस्सों के प्रभाव का वर्णन करते समय दाईं अथवा बाईं ओर का उल्लेख नहीं किया गया है, अतः इस सम्बन्ध में सामान्य नियम यह समझना चाहिए कि पुरुष-शरीर पर दक्षिण भाग पर तथा स्त्री शरीर के वाम भाग पर स्थित मस्से को शुभ तथा पुरुष के वाम भाग पर तथा स्त्री-शरीर के दक्षिण भाग पर स्थित मस्से को अशुभ समझना चाहिए।

एक बात यह भी स्मरण रखने योग्य है कि जब कभी मस्से का जन्म होता है अर्थात् मस्से का उद्गम आरम्भ हो जाता है, उस समय जातक के मन में चिन्ताएं उत्पन्न होना आदि उसके प्रभाव आरम्भ हो जाते हैं। तदुपरान्त जब मस्सा पूर्ण हो जाता है तब वह अपना प्रभाव प्रदर्शित करना आरम्भ कर देता है।

पश्चिमी विद्वानों ने मस्सा तथा लहसन आदि का प्रभाव भी तिल के समान ही माना है, परन्तु भारतीय विद्वानों ने इन सबके प्रभाव के विषय में अलग-अलग वर्णन किया है। यहां पर 'भारतीय मत' को ही दिया जा रहा है। चित्र संख्या ३१० में चेहरे के विशेष स्थानों पर मस्सों को दिखाया गया है।

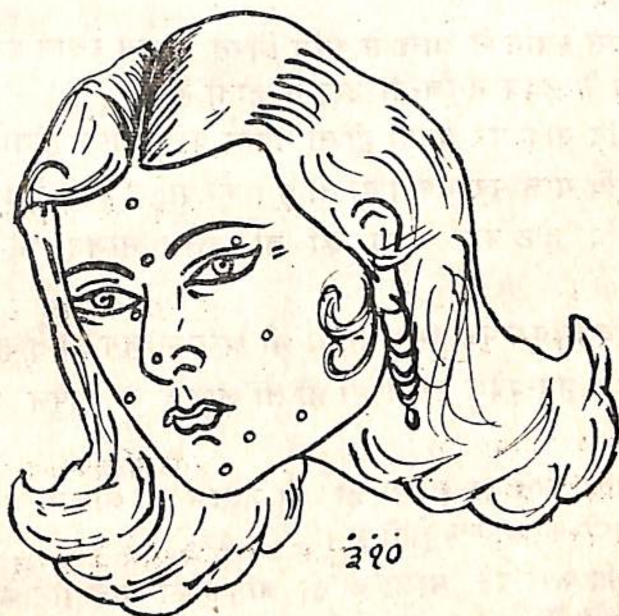
(१) यदि सिर के ऊपरी भाग पर मस्सा हो तो जातक को विपुल धन की प्राप्ति होती है।

(२) यदि सिर के पिछले भाग पर मस्सा हो तो उसे सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

(३) यदि ललाट पर मस्सा हो तो धन का आगम अधिक होता है।

(४) यदि मस्तक पर मस्सा हो तो जातक को हर जगह लाभ, यश एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

(५) यदि भौंह के ऊपर मस्सा हो तो उसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।



[चेहरे पर विभिन्न स्थानों पर मस्से]

(६) यदि दोनों भौंहों के बीच में मस्सा हो तो जातक स्वयं तो दुष्ट प्रकृति का होता है, परन्तु उसे प्रियजनों का साथ एवं सहयोग विशेष रूप से प्राप्त होता है।

(७) यदि आंख की पलकों के ऊपर मस्सा हो तो वह जातक को दुःख देने वाला होता है।

(८) यदि नेत्र पर मस्सा हो तो जातक को अपने प्रियजनों के दर्शन का सुख प्राप्त होता है।

(९) यदि कनपटी अथवा भौंह के ऊपर ललाट एवं आंख की हड्डी के संगम-स्थल पर मस्सा हो तो जातक सर्वस्व त्याग कर सन्यास ग्रहण करता है।

(१०) जिस स्थान से आंख से आंसू गिरते हैं, उस स्थान पर मस्सा हो तो जातक के हृदय में चिन्ता उत्पन्न होती है।

(११) यदि नाक पर मस्सा हो तो नवीन वस्त्र प्राप्त होता है।

(१२) यदि गाल पर मस्सा हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है।

(१३) यदि होंठ पर मस्सा हो तो उत्तम भोजन की प्राप्ति होती है।

(४) यदि चिबुक पर मस्सा हो तो भी श्रेष्ठ भोजन प्राप्त होता है

(१५) यदि हनु-प्रदेश पर मस्सा हो तो जातक को विपुल धन की प्राप्ति होती है।

(१६) यदि कान पर मस्सा हो तो जातक को आध्यात्मिक-ज्ञान अथवा आभूषणों की प्राप्ति होती है।

(१७) यदि कण्ठ पर मस्सा हो तो जातक को खाने-पीने के अच्छे पदार्थ प्राप्त होते हैं।

(१८) यदि हंसली (सिर और गर्दन के जोड़ वाला भाग) पर मस्सा हो तो लोहे के शस्त्र अथवा औजार द्वारा ग्रीवा पर चोट लगती है।

(१९) यदि हृदय अथवा वक्ष-स्थल पर मस्सा हो तो जातक को पुत्र की प्राप्ति होती है।

(२०) यदि पसली अथवा उसके नीचे मस्सा हो तो जातक को दुःख प्राप्त होता है।

(२१) यदि कन्धे पर मस्सा हो तो जातक निरर्थक भ्रमण करता है।

(२२) यदि कांख पर मस्सा हो तो जातक के धन का अनेक प्रकार से नाश होता है।

(२३) यदि पीठ पर मस्सा हो तो दुःख एवं चिन्ताओं से छुटकारा मिलता है।

(२४) यदि बाहु पर मस्सा हो तो शत्रुओं का नाश होता है तथा वस्त्राभूषणों की प्राप्ति होती है।

(२५) यदि कलाई पर मस्सा हो तो जातक स्वयं बन्धन को प्राप्त होता है।

(२६) यदि उंगलियों पर मस्सा हो तो उसे धनागम तथा सुख-सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

(२७) यदि पेट पर मस्सा हो तो वह दुःख-क्लेश कारक होता है।

(२८)यदि नाभि पर मस्सा हो तो उत्तम भोजन एवं पेय-पदार्थों की प्राप्ति होती है।

(२९) यदि नाभि के नीचे मस्सा हो तो चोरी के कारण जातक के धन की हानि होती है।

(३०) यदि वस्ति प्रदेश पर मस्सा हो तो जातक को धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

(३१) यदि पेडू पर मस्सा हो तो सुन्दर स्त्री तथा पुत्र की प्राप्ति होतो है।

(३२) यदि अण्डकोष पर मस्सा हो तो सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

(३३) यदि अण्डकोष के निचले भाग पर मस्सा हो तो धन की प्राप्ति होती है।

(३४) यदि जांघ पर मस्सा हो तो स्त्री तथा वाहन का लाभ होता है।

(३५) यदि घुटनों पर मस्सा हो तो जातक को शत्रुओं के कारण हानि उठानी पड़ती है। यह अशुभ होता है।

(३६) यदि पिंडलियों पर मस्सा हो तो शस्त्राघात से पीड़ा होती है।

(३७) यदि टखनों पर मस्सा हो तो जातक को बन्धन का दुःख अथवा यात्रा में कष्ट उठाना पड़ता है।

(३८) यदि नितम्ब पर मस्सा हो तो धन का नाश होता है।

(३९) यदि एड़ी पर मस्सा हो तो किसी से अनुचित सम्बन्ध स्थापित होता है तथा यात्रा करनी पड़ती है।

(४०) यदि पांव की उंगलियों पर मस्सा हो तो बन्धन का दुःख भोगना पड़ता है।

(४१) यदि पांव के अंगूठे पर मस्सा हो तो जातक को अन्य लोगों द्वारा सम्मान प्राप्त होता है।

लहसन

शरीर की त्वचा पर कुसुम के रंग के समान लाल अथवा काले

दाग को लहसन कहा जाता है। लहसन छोटे-बड़े कई आकार-प्रकार के होते हैं। लहसन का आकार जितना बड़ा होता है, उसका प्रभाव भी उतना ही अधिक होता है।

स्थान-भेद से लहसन का फल भी वही होता है, जो तिलों का बताया जा चुका है। केवल एक ही बात यहां विशेष रूप से कहनी है कि जिस पुरुष के दाईं भुजा पर लहसन होता है, वह अत्यन्त धनवान् होता है।



[लहसन का स्वरूप]

चित्र संख्या ३११ में लहसन के एक स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।

भौंरी

बालों का एक जो चक्कर-सा बन जाता है, उसे भौंरी कहते हैं। भौंरी दो प्रकार की होती है—

(१) दक्षिणावर्त।

(२) वामावर्त।

दक्षिणावर्त भौंरी में बालों का चक्कर दाईं ओर मुंह किए होता है और वामावर्त में बालों के चक्कर का मुंह बाईं ओर को होता है।

भौंरी शरीर के उसी स्थान पर पाई जाती है, जहां बाल अधिक होते हैं।

दक्षिणावर्त भौंरी पुरुष के दाएं अंग में हो तो वह शुभ फल देने वाली होती है। वामावर्त भौंरी किसी भी (दाएं अथवा बाएं) अंगों में हो, वह पुरुष के लिए अशुभ फलकारक ही सिद्ध होती है।

चित्र संख्या ३१२ में भौंरी के दोनों स्वरूपों को प्रदर्शित किया गया है।

भौंरी का पुरुषों पर क्या प्रभाव होता है—इसे संक्षेप में बताया जा चुका है। स्त्री के विभिन्न अंगों पर पाई जाने वाली भौंरी के फल का प्राचीन आचार्यों ने कुछ विस्तार पूर्वक वर्णन किया है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) स्त्री की नाभि, कान तथा उर-स्थल में दक्षिणावर्त भौंरी शुभ फलदायक होती है।

(२) स्त्री की पीठ के बाएं से दाएं भाग में स्थित दक्षिणावर्त भौंरी सुख देने वाली होती है।

(३) स्त्री के सीमन्त अथवा ललाट में यदि दक्षिणावर्त भौंरी हो

तो, उसे दूर से ही त्याग देना चाहिए, क्योंकि ऐसी भौंरी वाली स्त्री एक वर्ष के भीतर ही पति को मारने वाली होती है।

(४) यदि स्त्री के मस्तक में वामावर्त भौंरी एक अथवा दो की संख्या में हों तो वह दस दिन के भीतर ही अपने पति का नाश करने वाली होती है, अतः ऐसी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए।



[भौंरी के स्वरूप दक्षिणावर्त और वामावर्त]

(५) स्त्री की नाभि के समान ही पीठ के बीचो-बीच भाग में स्थित दक्षिणावर्त भौंरी आयु तथा पुत्र की वृद्धि करने वाली होती है।

(६) जिस स्त्री के कटिभाग में अथवा गुह्य स्थान में वामावर्त भौंरी हो, वह अपने पति तथा सन्तान का नाश करने वाली होती है।

(७) यदि स्त्री की योनि के मस्तक पर (ऊपर) दक्षिणावर्त भौंरी हो तो वह राजपत्नी अथवा किसी ऐश्वर्यशाली पुरुष की पत्नी होती है। ऐसी भौंरी यदि सघन हो तो वह बहुत से पुत्रों का सुख देखने वाली होती है।

(८) स्त्री के पेट अथवा पीठ पर भौंरी का होना शुभ नहीं होता। यदि इन स्थानों में से कहीं एक भौंरी हो तो वह स्त्री अपने पति को मारने वाली होती है और यदि दो भौंरी हों तो व्यभिचारिणी भी होती है

(९) यदि स्त्री के कण्ठ में दक्षिणावर्त भौंरी हो तो उसे दुःख तथा वैधव्य को देने वाली समझना चाहिए।

(१०) यदि स्त्री की कमर के बीच में भौंरी हो तो उसे त्याग देना चाहिए, क्योंकि वह अपने पति के लिए अशुभ कारक होती है। ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी भी होती है।

(११) यदि किसी स्त्री की नाभि में भौंरी हो तो वह पतिव्रता होती है।

(१२) यदि स्त्री के पीठ में भौंरी हो तो वह पति का नाश करने वाली अथवा व्यभिचारिणी होती है।

(१३) जिस स्त्री के कन्धे पर भौंरी हो, वह धनवती होती है।

(१४) स्त्रियों के मस्तक में भौंरी चाहे दक्षिणावर्त में हो, चाहे वामावर्त में—वह अशुभ फलकारक होती है।

(१५) यदि स्त्री सुलक्षण हो, परन्तु भौंरी का कुलक्षण हो गया हो तो वह स्त्री भी कुलक्षणी हो जाती है—ऐसा विद्वानों का मत है।

विशेष ज्ञातव्य

तिल, भौंरी, लहसन और मस्सा—ये चारों ही एक साथ जिस

पुरुष के शरीर पर दाईं ओर तथा जिस स्त्री के शरीर पर बाईं ओर दिखाई दें, वह पुरुष अथवा स्त्री यदि जंगल में भी जाकर रहने लगें तो भी लक्ष्मी उसके पीछे-पीछे भागी-भागी फिरती है अर्थात् ऐसे स्त्री-पुरुष कहीं भी क्यों न रहें, बड़े धनवान तथा भाग्यवान बने रहते हैं—यह प्राचीन भारतीय विद्वानों का कहना है।

इस सम्बन्ध में बृजभाषा का दोहा बहुत प्रसिद्ध है, जो इस प्रकार है—

तिल भौंरी लहसन मसौ, होय दाहिने अंग।
जाइ बसै बनखण्ड में, तऊ लच्मी संग॥



१२१२७० टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस, सोनीपत (निकट दिल्ली) में मुद्रित